THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC

FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.

-The TFIC Team.

श्री सेठिया-जैन-ग्रन्थमाला पुष्प न १०८

श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह

आठवाँ भाग

(सात भागों का विस्तृत विषयकोष)

संयोजक

भैरोंदान सेठिया

प्रकाशक

मन्त्री

अगरचन्द भैरोंदान सेठिया

जैन पारमार्थिक संस्था

बीकानेर (राजपूताना)

रामनवमी सं. २००२
वीर संवत् २४७१
ता.२२-३-१९४५ ई.

न्योछावर २)
(ज्ञान खाते में लगेगा)
पोस्टेज और रजिस्ट्री
खर्च ॥=)॥

प्रथमावृत्ति
६००

सेठिया प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर ता० २२-३-१९४५ ई०

श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह आठवें भाग के

खर्च का ब्यौरा

कागज २९॥ रीम, फी रीम ४३)	१२६८॥)
छपाई फार्म ४९ की, प्रति फार्म १३)	६३७)
जिल्द बँधाई ।।) एक प्रति	३००)
	२२०५॥)
विषयसूची बनाने, प्रमाण ग्रन्थों से मिलान करने तथा प्रेस कॉपी, प्रूफ संशोधन आदि का खर्च	२७००)
	४९०५॥)

कागज, बाइन्डिंग क्लाथ, कार्डबोर्ड, रोलर कम्पोजिशन तथा प्रेस की अन्य वस्तुओं के भाव बढ़ जाने और कम्पोज एवं छपाई खर्च कुछ अधिक लगने के कारण ऊपर लिखे हिसाब से एक प्रति की लागत कीमत ८) रूपये से अधिक पड़ी है। फिर भी ज्ञानप्रचार की दृष्टि से पुस्तक की कीमत केवल २) दो रूपया ही रखी गई है। शेष सारा खर्च श्री अगरचन्द भैरोंदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था, बीकानेर ने अपनी ओर से लगाया है।

नोट—श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के सभी भागों की कीमत लागत से बहुत ही कम रखी गई है। इसलिए इन पर कमीशन नहीं दिया जाता। श्री सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था की तरफ से जैन धर्म संबंधी अन्य पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं। विशेष जानकारी के लिए सूचीपत्र मँगाकर देखिये। पुस्तक मँगाने वाले सज्जनों को अपना पता, पोष्ट आफिस और रेल्वे स्टेशन का नाम साफ साफ लिखना चाहिए। पुस्तक वी. पी. से भेजी जाती है।

पुस्तक मिलने का पता:—

(१) पुस्तक प्रकाशन समिति
वूलन प्रेस बिल्डिंग्स

(२) अगरचन्द भैरोंदान सेठिया
जैन पारमार्थिक संस्था

बीकानेर (राजपूताना)

Agarchand Bhairodan Sethia
Jain Charitable Institution, Bikaner.

दो शब्द

श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के सातवें भाग के प्रकाशित होने के करीब तेरह महीनों के पश्चात् यह आठवाँ भाग पाठकों की सेवा में उपस्थित करते हुए हमें बड़े हर्ष और सन्तोष का अनुभव हो रहा है। आठवें भाग के साथ यह ग्रन्थ समाप्त हो रहा है। निरंतर छः वर्ष के परिश्रम से श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के ये आठ भाग तैयार हुए हैं। छः वर्ष पूर्व सोचे एवं स्वीकार किये हुए कार्य को पूरा कर आज हम अपने को भारमुक्त अतएव हल्का अनुभव कर रहे हैं।

यह आठवाँ भाग पहले के सात भागों का विषय कोष है। इस भाग में सातों भागों में आये हुए विषयों की विस्तृत सूची अकारादिक्रम से दी गई है। सात भागों के बोल जिन आगम एवं सिद्धान्त ग्रन्थों से उद्धृत किये गये हैं उन प्रमाणभूत ग्रन्थों का उल्लेख भी इस सूची में किया गया है। प्रमाणभूत ग्रन्थों का पूरा नाम देने से इसका बहुत अधिक विस्तार हो जाता अतएव यहाँ उनका निर्देश संकेत रूप से किया गया है। संकेतों के खुलासे के लिये प्रमाण ग्रन्थों की संकेत सूची पृथक् दी गई है और उसमें ग्रन्थों के पूरे नाम तथा ग्रन्थ कर्त्ताओं के नाम, प्रकाशन का स्थान और समय आदि दिये गये हैं।

इस अनुक्रमणिका में पाठकों की जिज्ञासा का ख्याल कर एक ही बोल दो चार तरह से बदल कर दिया गया है एवं बोल के अन्तर्गत भेद प्रभेदों का भी इसमें समावेश किया गया है। सूची तैयार करते समय यह भी ख्याल रखा गया है कि संख्या विशेष एवं विषय विशेष के बोल लगातार एक साथ आ जायँ। इसी तरह गाथाएं और कथाएं भी पास पास रखी गई हैं। शास्त्र विशेष के जितने अध्ययनों के अर्थ इन भागों में आये हैं वे भी एक साथ दिए गये हैं। इस प्रकार पाठकों की सुविधा का ख्याल कर हमने यह अनुक्रमणिका बहुत विस्तृत बनाई है। इस अनुक्रमणिका को तैयार करते समय सातों भागों का प्रमाण ग्रन्थों से, जिनसे कि इन भागों में बोल लिये गये हैं, भी मिलान किया गया है और सातों भागों के बोलों के प्रमाणों में जहाँ कहीं कमी या त्रुटि थी वह इस अनुक्रमणिका में यथासंभव ठीक कर दी गई है। यही कारण है कि इसे तैयार करने में इतना समय लगा है और समिति को इसके लिये पर्याप्त परिश्रम उठाना पड़ा है। सहृदय पाठकों से यह भी निवेदन है कि इस विषय सूची से सात भागों में दिये हुए प्रमाण में कुछ भिन्नता हो तो वे विषयसूची के अनुसार भागों में सुधार कर लेवें।

जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के सात भागों में कौनसा विषय किस भाग में कहाँ पर है? पाठकगण इस विषय सूची की सहायता से सुगमतापूर्वक इसका पता लगा सकेंगे तथा साथ में प्रमाण ग्रन्थ होने से शंका अथवा विशेष जिज्ञासा होने पर पाठक उन ग्रन्थों को देखकर आत्मसन्तोष कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त यह विषयकोष जैन पारिभाषिक

शब्दों के लिये जैन कोष का काम भी देगा और पाठक केवल इसी की सहायता से कौनसा विषय किस ग्रन्थ में कहाँ पर है? सहज ही जान सकेंगे।

जैन सिद्धान्त बोल सग्रह कोई मौलिक रचना नहीं है। प्राकृत, संस्कृत भाषा के सिद्धान्त ग्रन्थों में से चुने हुए विषय सरल हिन्दी भाषा में आवश्यक व्याख्या एव विवेचन के साथ इन भागों में दिये गये हैं। अतएव हम उन सभी ग्रन्थकारों के, जिनके ग्रन्थों से हमने बोलसग्रह में बोल लिये हैं, अत्यन्त ऋणी हैं। यदि हमारे अनुवाद, व्याख्या अथवा विवेचन में उन ग्रन्थकारों के आशय से कहीं स्खलना हुई हो तो हम उनसे क्षमा याचना करते हैं। पाठकगण से भी हमारा यह निवेदन है कि यदि उन्हें हमारे इस प्रकाशन में कोई त्रुटि या कमी प्रतीत हो तो हमें अवश्य सूचित करें ताकि हम आगामी संस्करण में उचित सुधार कर सकें। उनकी इस कृपा के लिए हम उनके कृतज्ञ रहेंगे।

इस आठवें भाग के छपाने में श्री प० हनुमानप्रसादजी शर्मा शास्त्री ने अध्यवसाय-पूर्वक बड़ा परिश्रम उठाया है अतएव हम उन्हें धन्यवाद देते हैं। अन्त में इस ग्रन्थ के लेखन, सकलन, सशोधन प्रकाशन आदि में हमें प्रत्यक्ष एव परोक्ष रूप से जिन जिन महानुभावों की सहायता प्राप्त हुई है उन सभी के प्रति आभार प्रदर्शित करते हुए हम अपना यह वक्तव्य समाप्त करते हैं।

पुस्तक प्रकाशन समिति
ऊन प्रेस बिल्डिंग्स, बीकानेर।

श्री सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था, बीकानेर

पुस्तक प्रकाशन समिति

अध्यक्ष—श्री दानवीर सेठ भैरोदानजी सेठिया।
मंत्री—श्री जेठमलजी सेठिया।
उपमंत्री—श्री माणकचन्दजी सेठिया।

लेखक मण्डल

श्री इन्द्रचन्द्र शास्त्री एम.ए., शास्त्राचार्य, न्यायतीर्थ, वेदान्तवारिधि।
श्री रोशनलाल जैन बी. ए., एलएल. बी., न्यायतीर्थ, काव्यतीर्थ, सिद्धान्ततीर्थ, विशारद।
श्री श्यामलाल जैन एम.ए., न्यायतीर्थ, विशारद।
श्री घेवरचन्द्र बाँठिया 'वीरपुत्र' न्यायतीर्थ, व्याकरणतीर्थ, सिद्धान्तशास्त्री।

भैरोंदान सेठिया

जन्म सं० १६२३ विजया दशमी

फोटो सं० १६६३ अक्षय तृतीया

श्रीमान् धर्मभूषण दानवीर

सेठ भैरोंदानजी सेठिया

की

संक्षिप्त जीवनी

दानवीर सेठ भैरोंदानजी सेठिया का जन्म जैन वीसा ओसवाल कुल में विक्रम संवत् १९२३ विजयादशमी के दिन हुआ। आप के पिता का नाम श्री धर्मचन्दजी था। आप चार भाई थे। श्री प्रतापमलजी और अगरचन्दजी आप से बड़े और हजारीमलजी आप से छोटे थे। आप दो वर्ष के ही थे कि आपके पिता का स्वर्गवास हो गया। सात वर्ष की अवस्था में बीकानेर में बड़े उपाश्रय में साधुजी नामक यति के समीप आपकी शिक्षा का आरम्भ हुआ। दो वर्ष यहाँ पढ़ कर विक्रम सं० १९३२ में आपने कलकत्ते की यात्रा की। वहाँ से लौटकर आप बीकानेर के समीप शिववाड़ी गांव में

रहे। मन्दिर, उद्यान और सरोवर से यह गाँव सुहावना है। उस समय राज्य की विशेष कृपादृष्टि होने से यहाँ का व्यापार बढ़ा चढ़ा था। यहाँ सदा बाजार में मेला सा लगा रहता था। यहाँ आप अपने ज्येष्ठ भ्राता श्री प्रतापमलजी के पास व्यापार का काम सीखने लगे। स० १९३६ में आपने वम्बई की यात्रा की। वहाँ अपने बड़े भाई श्री अगरचन्दजी के पास रह कर आपने वहीखाता जमा खर्च आदि व्यापारिक शिक्षा के साथ अंग्रेजी, गुजराती, आदि भाषाएं सीखीं। शिक्षा के साथ आपने यहाँ व्यावहारिक अनुभव भी प्राप्त किया। यहीं आपकी शिक्षा समाप्त नहीं होती। नवीन ज्ञान सीखने की लगन आपको जीवन भर रही और आज भी है। ज्ञान सीखने के प्रत्येक अवसर से आपने सदा लाभ उठाया है। दूसरे को पढ़ाने और सिखाने में भी आप सदा दिलचस्पी लेते रहे हैं। कई व्यक्तियों को व्यापार व्यवसाय का काम सिखा कर आपने उन्हें सफल व्यापारी बनाया है। आपने अपनी संस्था से भी कई सुयोग्य व्यक्ति तैयार किये हैं एवं उन्हें ऊँची से ऊँची शिक्षा दिलाई है।

संवत् १९४० में आप देश आये। इसी वर्ष आप का विवाह हुआ। कुछ समय देश में ठहर कर संवत् १९४१ में आप पुनः वम्बई पधारे। यहाँ आकर आप एक फर्म में, जिसमें चालानी का काम होता था, मुनीम के पद पर नियुक्त हुए। आपके बड़े भाई श्री अगरचन्दजी इस फर्म के साझीदार थे।

वम्बई में सात वर्ष रहकर सं० १९४८ में आप कलकत्ते गये और वहाँ आपने अपनी संचित पूँजी से मनिहारी और रंग की दूकान खोली और गोली सूता का कारखाना शुरू किया। सफल व्यापारी में व्यापारिक ज्ञान, अनुभव, समय की सूझ, साहस, अध्यवसाय, परिश्रमशीलता, ईमानदारी, वचन की दृढ़ता, नम्रता

तथा स्वभाव की मधुरता आदि जो गुण होने चाहिये वे सभी आप में विद्यमान थे। इसलिये थोड़े ही समय में आपका व्यापार चमक उठा। धीरे धीरे आपने प्रयत्न करके भारत से वाहर बेल्जियम, स्विज़रलैंड और बर्लिन आदि के रंग के कारखानों की तथा गबलंज (Gablonz) आष्ट्रिया के मनिहारी के कारखानों की सोल एजेन्सियाँ प्राप्त कर लीं। फलतः आपको अधिक लाभ होने लगा और काम भी विस्तृत हो गया। इसी समय आपके बड़े भाई श्री अगरचन्दजी भी आपकी फर्म में सम्मिलित हो गये। अब फर्म का नाम 'ए. सी. बी सेठिया एन्ड कम्पनी' रखा गया। कार्य के विस्तृत हो जाने से आपने कर्मचारियों को बढ़ाया। फर्म की सुव्यवस्था के लिये आपने एक अंग्रेज को असिस्टेन्ट मैनेजर के पद पर नियुक्त किया और पत्र व्यवहार के लिये एक वकील को रक्खा। कर्मचारियों के साथ आपका व्यवहार स्वामी-सेवक का नहीं किन्तु परिवार के सदस्य का सा रहा है। आप कर्मचारियों से काम लेना खूब जानते हैं और उन्हें सब तरह निभाते भी हैं। उक्त अंग्रेज आपके पास २७ वर्ष रहा और वकील बाबू आज भी आपके सुपुत्र श्री जेठमलजी साहब की फर्म में हैं।

आप स्वभाव से ही कर्मठ और लगन वाले हैं। आपने कार्य करना ही सीखा है, विश्राम तो आपने जाना ही नहीं। जिस कार्य को आपने हाथ में लिया, उसे पूरा किये बिना आपने कभी नहीं छोड़ा। व्यापारिक जीवन में ऐसी सफलता पाकर भी आपने विश्राम नहीं लिया। आप और आगे बढ़ना चाहते थे। फलस्वरूप आपने हावड़ा में 'दी सेठिया कलर एन्ड केमिकल वर्क्स लिमिटेड' नामक रंग का कारखाना खोला। यह कारखाना भारतवर्ष में रंग का सर्व प्रथम कारखाना था। कारखाने से तैयार होने वाले सामान की खपत के लिये आपने भारत के प्रमुख नगरों–कल-

कत्ता, बम्बई, मद्रास, कराची, कानपुर, देहली, अमृतसर और अहमदाबाद में अपनी फर्म की शाखाएं खोलीं । इसके सिवा जापान के ओसाका नगर में भी आपने ऑफिस खोला।

यहाँ यह बता देना भी अप्रासंगिक न होगा कि कारखाने और ऑफिस में विभिन्नकार्यों पर कुशल व्यक्तियों के नियुक्त होने पर भी आप आवश्यकता पर छोटे से बड़े सभी काम निस्संकोच भाव से कर लेते थे। शुरू से अन्त तक सभी कामों की जानकारी आप रखते थे। सर्वथा लोगों पर आपका कार्य निर्भर रहे यह आपको कतई पसन्द न था। यही कारण है कि रंगों के विश्लेषण के फॉर्मूले सीखने के लिये आपने एक जर्मन विशेषज्ञ को केवल दैनिक पाँच मिनिट के लिये ३००) मासिक पर नियुक्त किया एवं उसके लिये आपने निजी प्रयोगशाला स्थापित की ।

संवत् १९५७ में एक पुत्री (वसन्तकंवर) और दो पुत्रों (श्री जेठमलजी और पानमलजी) को छोड़कर आपकी धर्मपत्नी का स्वर्गवास होगया। आपकी पत्नी धर्मात्मा और गृहकार्य में बड़ी दक्ष थीं। इसी कारण आप गृह-व्यवस्था की चिन्ता से सदा मुक्त रहे एवं अपनी सभी शक्तियाँ व्यापार व्यवसाय में लगा सके थे। पहली धर्मपत्नी के स्वर्गवास होने पर आपका दूसरा विवाह हुआ। कर्त्तव्यनिष्ठ सेठियाजी का उस समय व्यापार-व्यवसाय की ओर ही विशेष ध्यान था। आप कुशलतापूर्वक व्यापार व्यवसाय में लगे रहे और उत्तरोत्तर उन्नति करने लगे। सं० १९७१ (सन् १९१४) के गत महायुद्ध में आपको रंग के कारखाने से आशातीत लाभ हुआ।

संवत् १९६५ में आप एक भयंकर बीमारी से ग्रस्त हो गये। इस समय आप कलकत्ते थे। वहाँ के प्रसिद्ध डॉक्टर और वैद्यों का इलाज हुआ पर आपको कोई लाभ न पहुँचा। अन्त में आपने

Agarchand Bhairodan Sethia
Jain Charitable Institution, Bikaner

श्री अगरचंद भैरोंदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था,

संस्था–भवन, बीकानेर

अज्ञानं तमसां पतिं विदलयन् सत्यार्थमुद्भासयन् ।
भ्रान्तान् सत्पथ दर्शनेन सुखदे मार्गे सदा स्थापयन् ॥
ज्ञानालोकविकासनेन सततं भूलोकमालोकयन् ।
श्रीमद्भैरवदानमान पदवी पीठः सदा राजताम् ॥

कलकत्ता के प्रसिद्ध होमियोपैथिक डॉक्टर प्रतापचन्द्र मजूमदार से इलाज करवाया और आप स्वस्थ हुए। इसी समय से आपको होमियोपेथी चिकित्सा-पद्धति में अपूर्व विश्वास हो गया। आपकी जिज्ञासा बढ़ी और उक्त डॉक्टर के सुयोग्य पुत्र डॉक्टर जतीन्द्रनाथ के पास आपने होमियोपेथी का अभ्यास किया एवं इसमें प्रवीणता प्राप्त की। तभी से आप होमियोपेथी साहित्य देखते रहे है एवं जनता में अमूल्य दवा वितरण करते रहे हैं। वर्षों के अनुभव ने आपको इस प्रणाली का विशेषज्ञ बना दिया है।

सेठ साहेब ने केवल धन कमाना ही नहीं सीखा पर आप

विक्रम संवत् १९६९ तदनुसार सन् १९१२ ई. में सेठ साहेब ने बीकानेर नगर में किंग एडवर्ड मेमोरियल रोड पर एक दूकान बी. सेठिया एन्ड सन्स के नाम से खोली। नाना प्रकार के फैन्सी बढ़िया सामान और नई नई फैशन की चीजों के लिये यह बीकानेर की प्रसिद्ध दूकान है। यहाँ से सेठ, साहूकार, रईस और ऑफिसर लोग सामान खरीदते हैं। इसे सफलता पूर्वक चला कर सेठ साहेब ने यह दूकान अपने द्वितीय पुत्र श्री पानमलजी को दे दी। दूकान के पीछे उससे जुड़ी हुई हवेली है। सेठ साहेब ने पानमलजी को दूकान और हवेली का पूरा मालिक बना दिया है और तारीख १४-१०-१९३० ई. को इन्हीं के नाम पर राज्य से इस जायदाद का पट्टा बनवा दिया है। पानमलजी ने आसपास और जमीन खरीद कर इस जायदाद को बढ़ाया है और काफी लागत लगा कर दूकान को दुबारा बनाया है जो कि नई फैशन का दुमंजिला विशाल भवन है। अभी पानमलजी और उनके पुत्र कुन्दनमलजी इस दूकान को बी. सेठिया एन्ड सन्स के नाम से ही चला रहे हैं।

सेठिया जैन पारमार्थिक संस्थाओं के विभिन्न विभागों द्वारा पिछले बाईस वर्षों में, समाज में शिक्षा एवं धर्म प्रचार के जो महत्वपूर्ण कार्य हुए वे समाज के सामने हैं।

सं० १९७९ में आपके पुत्र उदयचन्दजी का असामयिक देहान्त होगया। इस घटना से आप अत्यन्त प्रभावित हुए। व्यापार व्यवसाय से आप का मन हट गया। अतएव कलकत्ते का विस्तृत व्यापार समेट कर आप बीकानेर पधार गये। आपने पारमार्थिक संस्थाओं का कार्य हाथ में लिया और अपनी सारी शक्तियाँ संस्थाओं की उन्नति में लगा दीं। धार्मिक ज्ञानवृद्धि का भी आपने यह अच्छा सुयोग समझा। आपने थोकड़े, बोल और स्तवनों का स्वयं संग्रह किया और उन्हें प्रकाशित कराया। इसके सिवा आपने संस्कृत, प्राकृत, अर्द्धमागधी, आगम, न्याय, धर्मशास्त्र, हिन्दी, नीति और कानून विषयक पुस्तकें भी प्रकाशित कीं। इस वृद्धावस्था में भी आपने निरन्तर सं० १९९६ से पाँच वर्ष तक अथक परिश्रम कर अपूर्व लगन के साथ जैनसिद्धान्त बोल संग्रह के आठ भाग, सोलह सती और आर्हत प्रवचन ग्रन्थ तैयार करा प्रकाशित कराये हैं। आपकी ज्ञानपिपासा एवं ज्ञान प्रचार की भावना के फलस्वरूप संस्था से १०७ पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

आपकी दानवीरता एवं समाज तथा धर्म की सेवा का सम्मान कर सन् १९२६ में अखिल भारतवर्षीय श्रीश्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स के कार्यकर्त्ताओं ने आपको कॉन्फरन्स के बम्बई में होने वाले सप्तम अधिवेशन का सभापति चुना। कॉन्फरन्स का यह अधिवेशन बड़ा शानदार और सफल हुआ। आपकी दानशीलता के प्रभाव से उस अधिवेशन में एक लाख से अधिक फंड इकट्ठा हुआ।

समाज और धर्म की सेवा के साथ आपने बीकानेर नगर और राज्य की भी सेवा की। लगभग दश वर्ष तक आप बीकानेर म्यूनिसि-

पल बोर्ड के कमिश्नर रहे। सन् १६२६ में सबसे पहले जनता में से आप ही सर्व सम्मति से बोर्ड के वाइस प्रेसिडेन्ट चुने गये। सन् १६-३१ में राज्य ने आपको ऑनरेरी मजिस्ट्रेट बनाया। लगभग सवा दो वर्ष तक आप बेंच ऑफ ऑनरेरी मजिस्ट्रेट्स में कार्य करते रहे। आपके फैसले किये हुए मामलों की प्रायः अपीलें हुई ही नहीं, यदि दो एक हुई भी तो अपीलेट कोर्ट में भी आप ही की राय बहाल रही। इससे आपकी नीर-क्षीर विवेकिनी न्यायबुद्धि का सहज ही अन्दाज हो जाता है। । सन् १६३८ में म्यूनिसिपल बोर्ड की ओर से आप बीकानेर लेजिस्लेटिव एसेम्बली के सदस्य चुने गये। निस्स्वार्थभाव से बीकानेर की जनता की सेवा कर आप उसके कितने विश्वस्त एवं प्रिय बन गये, यह इससे स्पष्ट है।

सन् १६३० में संयोगवश सेठियाजी को पुनः व्यवसायक्षेत्र में प्रवेश करना पड़ा। बीकानेर में बिजली की शक्ति से चलने वाला ऊन की गाँठें बाँधने का एक प्रेस बिकाउ था। योग्य कार्यकर्त्ताओं के अभाव से वह बन्द पड़ा था। प्रेस के मालिक उसे चला न सके थे। क्रियात्मक शिक्षा देकर अपने पुत्रों को व्यापार-व्यवसायमें कुशल बनाने के उद्देश्य से आपने उक्त प्रेस खरीद लिया। राज्य ने आपको रियासत भर के लिये प्रेस की मोनोपोली दी। आपने प्रेस को एवं बीकानेर के ऊन के व्यापार को उन्नति देने का निश्चय किया। प्रेस के अहाते में आपने इमारतें, गोदाम और मकानात बनवाये और व्यापारियों के लिये सभी सहूलियतें प्रस्तुत कीं। आपने कमीशन पर व्यापारियों का खरीद फरोख्त का काम भुगताना, आर्डर सप्लाई एवं यहाँ से सीधा विलायत में माल चढ़ाने का काम शुरू किया। माल पर पेशगी रकम देकर भी आपने व्यापारियों को प्रोत्साहित किया। आपने प्रयत्न करके व्यापारियों के हक में राज्य एवं बीकानेर स्टेट रेल्वे से सुविधाएँ प्राप्त कीं। सभी प्रकार की सुवि-

धाओं के होने से बीकानेर राज्य एवं बाहर के व्यापारी यहाँ काफी तादाद में आने लगे। ऊन का कारबार करने वाली बड़ी बड़ी कम्पनियाँ भी यहाँ अपने कर्मचारी रखने लगीं। इस प्रकार उत्तरोत्तर प्रेस का काम बढ़ने लगा। सन् १९३४ में आपने ऊन के फॉटों से ऊन निकालने के लिये ऊल वरिंग फेक्टरी (Wool Buring Factory) खरीदी। राज्य ने इसके लिये भी आपके हक में मोनोपोली स्वीकृत की। इस प्रकार कुछ ही वर्षों में आपकी लगन और परिश्रम ने आपके संकल्प को कार्य रूप में परिणत कर दिया। आज ऊन प्रेस सन् १९३० के ऊन प्रेस से कुछ और ही है। यहाँ सैंकड़ों मजदूर लगते हैं और हजारों मन ऊन का व्यापार होता है। हजारों गाँठें बँधती हैं और विलायत भेजी जाती हैं। प्रेस की साख ने लिवरपूल के मार्केट को भी प्रभावित कर रखा है। प्रेस के मार्के वाली गाँठें वहाँ अपेक्षाकृत ऊँचे भाव में बिकती हैं।

सेठ सा० की धार्मिकता एवं परोपकार-भावना के फलस्वरूप ऊनप्रेस में भी गाय गोधों के घास एवं कबूतरों के चुगे के लिये, होमियोपेथिक एवं आयुर्वेदिक औषधियों के लिये तथा साधारण सहायता आदि के लिये पृथक् पृथक् फंड कायम किये हुए हैं और सभी में अलग अलग रकम जमा कराई हुई है। रकम के व्याज की आय से उपरोक्त सभी कार्य नियमित रूप से चल रहे हैं। ऊनप्रेस के आढ़तिये भी गाय गोधों के घास एवं कबूतरों के चुगे के लिये लागा देते हैं।

इस प्रकार ऊन प्रेस को सब भाँति समुन्नत कर सेठ साहेब ने उसे अपने सुयोग्य पुत्र श्री लहरचंदजी, जुगराजजी, और ज्ञानपालजी के हाथ सौंप दिया है एवं आप व्यापार व्यवसाय से सर्वथा निवृत्त हो धर्मध्यान में संलग्न हैं। पिछले पाँच वर्षों से धार्मिक साहित्य पढ़ना, सुनना और तैयार करवाना ही आपका कार्यक्रम रहा है।

परिवार की दृष्टि से सेठ सा० जैसे भाग्यशाली विरले ही मिलते हैं। आप के पाँच पुत्र हैं। सभी शिक्षित, संस्कृत एवं व्यापारकुशल हैं। सभी जुदे किये हुए हैं एवं जुदे २ व्यापार व्यवसाय में लगे हुए हैं। पाँचों पुत्र सेठजी के आज्ञानुवर्ती हैं एवं सभी भाइयों में परस्पर सराहनीय प्रेम है। यही नहीं आपके छः पौत्र, दो प्रपौत्र, दो पौत्री और दो प्रपौत्री हैं। सेठजी के दो पुत्रियों में से छोटी पुत्री मौजूद है एवं तीन दोहिते और पाँच दोहितियाँ हैं।

सेठजी सफल व्यापारी, समाज और राज्य में प्रतिष्ठा प्राप्त, बड़े परिवार के नेता एवं सम्पन्न व्यक्ति हैं। आप दानवीर और परोपकारपरायण हैं। धर्म और परोपकार के कार्यों में आपने उदारता के साथ धन ही नहीं बहाया किन्तु तन और मन का योग भी आपने दिया है। बचपन में माता और बड़ी बहिनों से धार्मिक संस्कार प्राप्त करने वाले एवं धर्मस्थान में शिक्षा का श्रीगणेश करने वाले सेठ साहेब की प्रवृत्ति सांसारिक कार्यों के बीच रहते हुए भी सदा धार्मिक रही है। सांसारिक वैभव में जलकमलवत् निर्लिप्त रह कर आपने नाम से ही नहीं, कर्म से भी धर्मचन्द का पुत्र होना सिद्ध किया है। आपने बचपन में ही श्री हुक्मीचन्द जी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री केवलचन्द जी महाराज से धर्म श्रद्धा ग्रहण की थी। आप गुणों के ही पुजारी हैं। पंच महाव्रतधारी निर्मल आचारवाले सभी साधु आपके लिये पूज्य हैं। आपने अपने जीवन में कभी चाय, भंग, तमाखू या अफीम का सेवन नहीं किया। सात व्यसनों का आपके त्याग है तथा रात्रिभोजन का भी आपके नियम है। आपने श्रावक के बारह व्रत धारण किये हैं और जीवन के पिछले वर्षों में आपने शीलव्रत भी धारण किया है। ग्रहण किये हुए त्याग प्रत्याख्यान आप दृढ़ता के साथ पालन करते रहे हैं।

आपकी सब से बड़ी विशेषता यह है कि आप स्वनिर्मित हैं। आप सदा स्वावलम्बी, साहसी, अध्यवसायशील एवं कर्मठ रहे हैं। सभी प्रकार से सम्पन्न होकर भी आप सर्वथा निरभिमान हैं। 'सादा जीवन और उच्च विचार' इस महान् सिद्धान्त को आपने जीवन में कार्य रूप दिया है। आपका चरित्र पवित्र एवं अनुकरणीय है। आप में परमहंसों का सा त्याग, साधुओं का सा कर्मसंन्यास और वीरों की सी कर्मनिष्ठा है। आपने क्या नहीं किया और क्या नहीं पाया परन्तु सांसारिक विभूति के मोह बन्धन में आपने अपने को कभी नहीं बाँधा। आपके इन्हीं गुणों से प्रभावित होकर जैन गुरुकुल शिक्षण संघ, ब्यावर ने आपको 'धर्म भूषण' की उपाधि से विभूषित किया है। यह उपाधि सब तरह से आप जैसे महापुरुष को शोभा देती है। हमारी परमात्मा से यही प्रार्थना है कि आप चिरायु हों।

बीकानेर (राजपूताना)
भादवा सुद ७ वि० सं० २००१
ता० २६-७-४४ ई०

रोशनलाल जैन
बी.ए., एल एल. बी.,
न्याय-काव्य-सिद्धान्ततीर्थ, विशारद.

श्रीमान् सेठ धर्मचन्दजी का वंश

श्रीमान् सेठ धर्मचन्दजी के चार पुत्र और पाँच पुत्रियाँ हुईं। उनके नाम—श्रीप्रतापचन्दजी, श्रीअगरचन्दजी, श्रीभैरोंदानजी, श्री हजारीमलजी, चाँदाबाई, घमाबाई, पन्नीबाई, मीराबाई और टुगीबाई। श्रीमान् प्रतापचन्दजी के तीन पुत्रियाँ और तीन पुत्र हुए। उनके नाम-तख्खुबाई, सुगनीबाई, मानबाई। सुगनचन्दजी, हीरालालजी, चनणमलजी। इन तीनों के कोई सतान न हुई। इन तीनों का तरुणावस्था में ही स्वर्गवास होगया। श्रीमान् चनणमलजी की धर्मपत्नी अभी मौजूद है। उन्होंने श्रीमान् जेठमलजी सेठिया के ज्येष्ठ पुत्र श्री माणकचन्दजी को गोद लिया।

श्रीमान् अगरचन्दजी के कोई सन्तान न हुई। उन्होंने अपने लघुभ्राता श्रीमान् भैरोंदानजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री जेठमलजी को गोद लिया।

श्रीमान् भैरोंदानजी के ६ पुत्र और दो पुत्रियाँ हुईं। वे इस प्रकार हैं-१ बसंतकुंवर, २ जेठमलजी, ३ पानमलजी, ४ लहरचन्दजी, ५ उदयचन्दजी, ६ जुगराजजी, ७ ज्ञानपालजी, ८ और मोहिनीबाई। संवत् १९९६ मिति काती सुद ९ को वसन्तकुंवर बाई का स्वर्गवास हो गया। उनके दो पुत्र और तीन पुत्रियाँ हैं।

श्रीमान् जेठमलजी के चार पुत्र और एक पुत्री हुई। उनके नाम-माणकचन्दजी, केशरीचन्दजी, मोहनलाल, जसकरण और स्वर्णलता। १९९४ में केवल आठ वर्ष की अवस्था में ही जसकरण का स्वर्गवास हो गया। श्री माणकचन्दजी के इस समय एक पुत्र कुसुमकुमार और एक पुत्री आशालता है।

श्रीमान् पानमलजी के इस समय एक पुत्र श्री कुन्दनमलजी (भवरलालजी) है। कुन्दनमलजी के एक पुत्र रविकुमार और एक पुत्री लीला है।

श्रीमान् लहरचन्दजी के इस समय एक पुत्र श्री खेमचन्दजी और एक पुत्री चित्ररेखा है।

संवत् १९७९ में श्रीमान् उदयचन्दजी का केवल १५ वर्ष की अवस्था में ही स्वर्गवास हो गया। उनके स्वर्गवास के पश्चात् करीब १६ महीनों के बाद उनकी धर्मपत्नी का भी स्वर्गवास होगया

श्रीमान् जुगराजजी के इस समय एक पुत्र श्रीचेतनकुमार है। बाबू ज्ञानपालजी अभी अविवाहित है।

मोहिनीबाई के इस समय एक पुत्र और दो पुत्रियाँ हैं।

श्रीमान् भैरोंदानजी से छोटे भाई श्रीमान् हजारीमलजी थे। उनका स्वर्गवास युवावस्था में ही हो गया। उनकी धर्मपत्नी श्री रत्नकुंवरजी को बचपन से ही धर्म के प्रति विशेष रुचि एवं प्रेम था। सवत् १९३९ में केवल छः वर्ष की अवस्था में आपने रतलाम में पूज्यश्री उदयसागरजी महाराज के पास सम्यक्त्व ग्रहण की थी। पति का स्वर्गवास हो जाने पर धर्म के प्रति आपकी रुचि और भी तीव्र हो गई। आपको संसार की असारता का अनुभव हुआ और वैराग्य भावना जागृत होगई। संवत् १९६५ में समस्त सांसारिक वैभवों का त्याग कर श्रीमज्जैनाचार्य पूज्यश्री श्रीलालजी महाराज के पास श्रीरंगूजी महाराज की सम्प्रदाय में श्री मैनाजी महाराज की नेश्राय में पूर्ण वैराग्य के साथ दीक्षा अंगीकार की। ३६ साल हुए आप पूर्ण उत्साह के साथ संयम का पालन करती हुई आत्म कल्याण की साधना में अग्रसर हो रही हैं।

भादवा सुद ७ वि० संवत् २००१

१

२

३

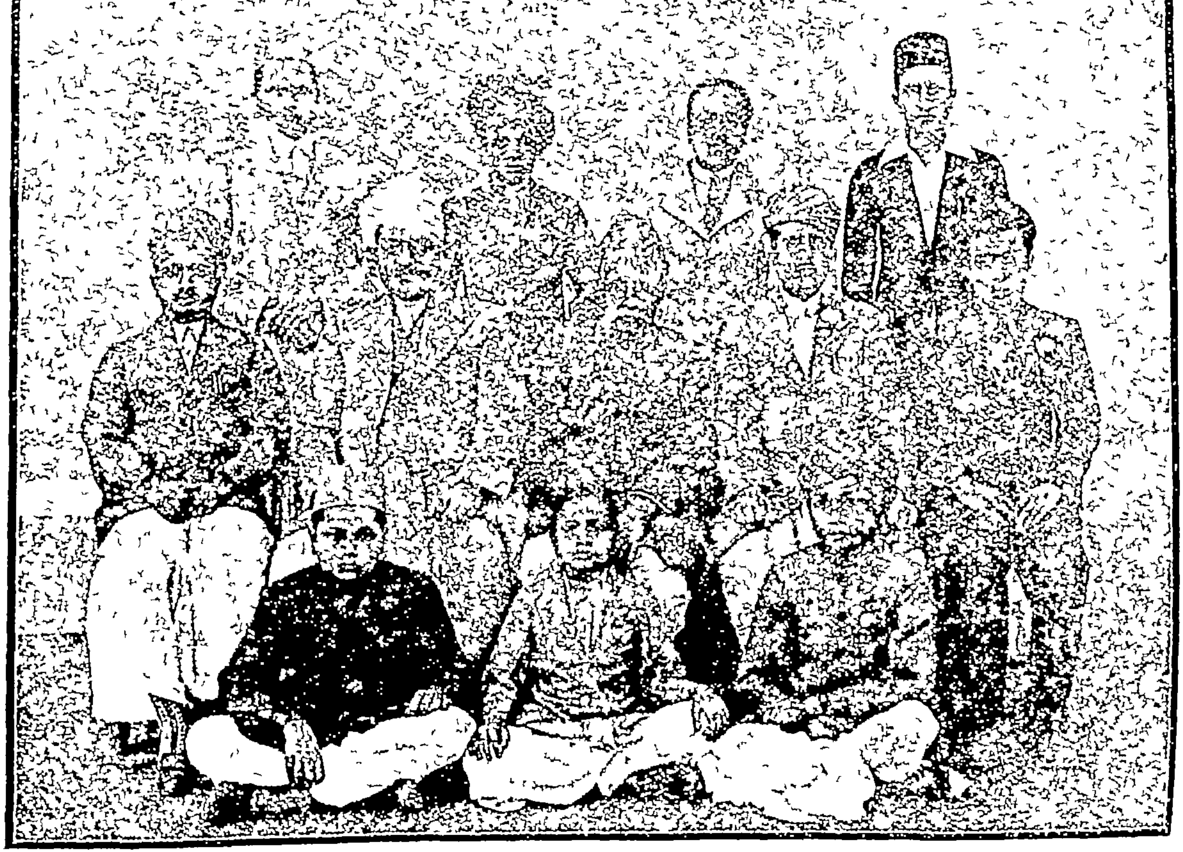

१ पक्ति— माणकचन्द, केशरीचन्द, जुगराज, कुनणमल

२ ,, लहरचन्द, जेठमल, भैरोंदानजी, पानमल ज्ञानपाल

की पढ़ाई चलती रही है। एफ. ए. परीक्षा में कुल १२ छात्र प्रविष्ट हुए थे जिनमें ८ उत्तीर्ण हुए। मैट्रिक परीक्षा में ३० छात्रों में २७ पास हुए। इस वर्ष कालेज में बी ए. कक्षा नहीं रखी गई किन्तु आगामी सेशन से पुन बी ए. कक्षा खोल दी जायगी।

कन्या पाठशाला

इस पाठशाला में पूर्ववत् पहली से लेकर चौथी तक चार कक्षाएं चलती रही हैं। इन कक्षाओं में कन्याओं को हिन्दी, गणित, स्वास्थ्य, धर्म, भूगोल, वाचिका, सिलाई और कशीदा आदि विषयों का ज्ञान कराया जाता रहा है। छात्राओं की साल भर में सख्या ७० और ८० के बीच में रही।

समाज सेवा विभाग

इस विभाग द्वारा समाज सेवा सबधी सभी प्रकार के कार्य किये जाते रहे हैं। इन में श्री श्वेताम्बर साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्था के आय व्यय का हिसाब रखना तथा ग्राम्य पाठशालाओं के संचालन की देखरेख एव प्रबंध का कार्य होता रहा है।

इस विभाग द्वारा संत मुनिराजों एवं महासतियों के विहारादि सबधी पत्रव्यवहार और दीक्षार्थी भाई बहनों के लिये भण्डोपकरण का प्रबध भी होता रहा है।

इस विभाग द्वारा इस वर्ष ४२३।।।≈)।। मूल्य की सस्था द्वारा प्रकाशित पुस्तकें भिन्न भिन्न संस्थाओं और व्यक्तियो को भेंट स्वरूप दी गई हैं इसके अतिरिक्त बिना मूल्य की १०२ पुस्तकें भी इस विभाग द्वारा भेंट दी गई।

प्रिन्टिंग प्रेस (छापाखाना)

इस विभाग में इस वर्ष सेठिया ग्रन्थमाला की १०५ से १०७ तक की नवीन पुस्तकों का मुद्रण हुआ। युद्ध जन्य कठिनाइयों के कारण इस साल प्रेस का काम मद गति से चला। कर्मचारियों तथा कागज की कमी के कारण केवल नीचे लिखी पुस्तकें छप सकीं। समय को देखते हुए यह भी सतोषजनक ही है। (१) आर्हतप्रवचन (२) श्रीप्रतिक्रमणसूत्र मूल ७ वीं आवृत्ति (३) श्री सामायिकसूत्र सार्थ ५ वीं आवृत्ति (४) श्री जैनसिद्धान्त बोल सग्रह सातवाँ भाग (५) श्रीमान् सेठ भैरोंदानजी सा सेठिया की सक्षिप्त जीवनी (६) हिन्दी बाल शिक्षा दूसरी प्राइमर। अभी श्री जैन सिद्धान्त बोल सग्रह के आठवें भाग की छपाई हो रही है।

ग्रन्थालय और वाचनालय

इस वर्ष भिन्न भिन्न भाषाओं की कुल ३१० नई पुस्तकें ग्रन्थालय में आई। दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक और त्रैमासिक पत्र पत्रिकाएँ इस वर्ष भी आती रही हैं और उन्हें वाचनालय में रखा जाता रहा है। इस वर्ष १२७ सदस्यों ने ३३६३ पुस्तकें पढने के लिए पुस्तकालय से लीं तथा वाचनालय से लाभ उठाया।

ग्रन्थालय में इस समय हिन्दी, सस्कृत, गुजराती, अंग्रेजी, पत्राकार, हस्तलिखित आदि कुल मिलाकर ६६०६ पुस्तकें संगृहीत हैं। विवरण नीचे लिखे अनुसार है –

हिन्दी	**३६८१**
कोष और व्याकरण	१२७
इतिहास और पुरातत्त्व	१४५
दर्शन और विज्ञान	१४६
धर्म और नीति	१३७३
साहित्य और समालोचना	२५६
काव्य और नाटक	४४२
उपन्यास और कहानी	३८४
जीवन चरित्र	१२२
राजनीति और अर्थशास्त्र	१३७
ज्योतिष और गणित	३७
स्वास्थ्य और चिकित्सा	१८७
भूगोल और यात्राविवरण	३४
कानून	८४
बाल साहित्य	२१३
विविध	२६४

संस्कृत	**६४३**
कोष और व्याकरण	१६५
साहित्य, काव्य, नाटक, चरित्र और कथा	२३५
आर्ष ग्रन्थ	१३४
दर्शन शास्त्र	६६
धर्म शास्त्र और नीति	१८४
स्तुति स्तोत्रादि	३१
आयुर्वेद (वैद्यक)	५२
ज्योतिष शास्त्र	२०
विविध	२३

अंग्रेजी	**१६८०**
Works of reference	170
History and Geography	213
Theology, Philosophy and Logic	287
Law & Jurisprudence	83
Literature	264
Fiction	225
Politics & Civics	8
Business & Economics	45
Science and art of medicine	157
Science & mathematics	56
Biography & auto-biography	109
Industrial science	50
Art of teaching	13

जर्मन, फ्रेंच आदि	**१०३**
पत्राकार शास्त्र एवं ग्रन्थ	**५३०**
हस्तलिखित ग्रन्थ	**१२३८**

ग्रंथ निर्माण विभाग

इस साल छापाखाना विभाग में छपने वाले समस्त ग्रन्थों का संशोधन इसी विभाग के कर्मचारियों द्वारा हुआ। श्रीश्वेताम्बर साधुमार्गी जैन हितकारिणी सस्था की दशवर्षीय

रिपोर्ट लिखी तथा संशोधित की गई। श्रीजैनसिद्धान्त बोल संग्रह के आठवें भाग की पांडुलिपि तैयार की गई और आवश्यक संशोधन परिवर्तन कर प्रेसकापी तैयार की गई।

सन् १९४४ के आय-व्यय का संक्षिप्त विवरण

१६६०३॥-)। कलकते के मकानों के किराये के मास बारह के

१७८२॥।=)। ब्याज

२०१) श्रीमान् लहरचंदजी सेठिया से प्राप्त हुए शास्त्र तथा दीक्षोपकरणादि में खर्च करने के लिये

१०१) श्रीमगनबाई स्वर्गीय धर्मपत्नी जेठमलजी सेठिया से प्राप्त हुए शास्त्रतथा दीक्षोपकरणादि में खर्च करने के लिये

५२००) श्रीमान् सेठ भैरोंदानजी सा सेठिया से प्राप्त हुए
- २०००) छात्रवृत्ति देने के लिये
- २०००) बोर्डिंग के लिये
- १२००) सहायता में देने के लिये

११६८५॥-) श्रीसेठिया जैन पारमार्थिक संस्था में खर्च हुए

६३७॥।)। सेठिया प्रिंटिंग प्रेस में

४५) बोर्डिंग खाते खर्च हुए

१००१) सहायता में दिये श्री स्थानकवासी जैन लायब्रेरी श्रीनगर काश्मीर को

५१) श्रीमहावीर जैन लायब्रेरी श्रीरायसिंहनगर में दिये

१२८॥-)॥ विविध खुदरा सहायता में दिये

३४४६) विद्यालय में वेतन के

१७३५।)॥ बाल पाठशाला में

८८८।=)। कन्या पाठशाला में

१२७५॥।)॥। सेठिया नाइट कालेज

५५२॥)॥। हेड ऑफिस में खर्च हुए

७४७=) सेठिया लायब्रेरी में पुस्तक व समाचारपत्र आदि में

७४॥) खर्च बिजली तथा पंखे का

१२६७) कर्मचारियों को महगाई भत्ते के दिये

५०॥-) परचुरण खर्च

८४॥।) मकानों की मरम्मत में

७०७४-) कलकते के मकानों का ता० २१ सितम्बर १९४४ को नया डीड ऑफ ट्रस्ट बनवाया उसमें स्टाम्प, रजिस्ट्री व एटर्नी की फीस के खर्च हुए

संस्था की कलकत्ता स्थित स्थावर संपत्ति

का

नवीन ट्रस्ट नामा

श्री सेठिया जैन पारमार्थिक सस्था के संस्थापक महोदयों ने संस्था के स्थायित्व के लिये कलकते और बीकानेर में स्थावर सपत्ति प्रदान कर कलकत्ता और बीकानेर में उसकी लिखापढ़ी कर दी थी। कलकते की संपत्ति के अलग अलग तीन डीड्स आफ सेटलमेन्ट रजिस्टर्ड कराये गये थे। किन्तु उनमें कुछ कमी महसूस कर सस्थापक महोदयों ने उन्हें रद्द कर दिया एव सस्था के स्थायित्व के लिये उनके बदले ता० २१ सितम्बर १९४४ तदनुसार मिति आसोज सुदी ६ स० २००१ शनिवार को नीचे लिखी सपत्ति का नया डीड ऑफ ट्रस्ट बनाकर उसकी सबरजिस्ट्रार कलकत्ता के दफ्तर में रजिस्ट्री करा दी। उक्त नवीन डीड आफ ट्रस्ट के अनुसार सेठिया जैन पारमार्थिक सस्था के वर्तमान में निम्नलिखित तीन ट्रस्टी है —

१ श्रीमान् दानवीर सेठ भैरोंदानजी सेठिया
२ „ बाबू जेठमलजी सेठिया
३ „ „ माणकचदजी सेठिया

उक्त डीड के अनुसार ट्रस्टियों की संख्या ६ तक हो सकेगी। ट्रस्ट कमेटी के अधीन सस्था की व्यवस्था के लिये जनरल कमेटी, प्रवन्धकारिणी कमेटी तथा आवश्यकतानुसार अन्य सब कमेटियां स्थापित की जायँगी एव यथासमय उनके लिये नियम उपनियम निर्धारित किये जायेंगे।

कलकत्ते की स्थायी संपत्ति

१. मकान न १६०-१६०।१ पुराना चीना बाजार

२ मकान न. ३,५,७,९,११ और १३ क्रोस स्ट्रीट (मूँगापट्टी) तथा न १२३ और १२५ मनोहरदास स्ट्रीट

३. मकान न ६ जेक्शनलेन तथा १११, ११२, ११३, ११४ और ११५ केनिंग स्ट्रीट का दो तिहाई हिस्सा

नोट—उक्त जेक्सनलेन और केनिंग स्ट्रीट का एक तिहाई हिस्सा श्रीमान् बाबू जेठमलजी सा सेठिया ने सस्था को दिया वह नवीन ट्रस्ट डीड में है और एक तिहाई हिस्सा ता १९ ७-४० को संस्था ने खरीदा है। इस प्रकार इस मकान में संस्था का दो तिहाई हिस्सा है और एक तिहाई हिस्सा श्रीमान् गोविन्दरामजी भीखणचन्दजी भनसाली का है।

कलकते की उक्त स्थावर सपत्ति के सिवा बीकानेर नगर में सस्था की नीचे लिखी स्थावर सपत्ति है—

बीकानेर की स्थावर संपत्ति

१--मोहल्ला मरोटियों का विशाल भवन (जिसमें आगे तीन मंजिला मकान है और पीछे की तरफ दो मंजिला मकान है) आगे पीछे के चौक, छप्परे और बाड़ा सहित। यह भवन कोटडी के नाम से प्रसिद्ध है। यह मकान सस्था के संस्थापकोंने, सवर, सामायिक, प्रतिक्रमण, पौषध, दया करने और साधु साध्वियों के ठहरने के लिये (यदि वे ठहरना चाहें तो) तथा मुनि महाराज एवं महासतियों के व्याख्यान के लिये एवं इसी प्रकार के अन्य धार्मिक कार्यों के लिये दिया है। इसकी रजिस्ट्री स. १९८० में ता ३० नवम्बर १९२३ को हुई। तभी से इस कोटडी की सारसभाल सस्था कर रही है। सस्था ने इसकी मरम्मत कराई है, इसमें छप्पर वगैरह बनवाने में लागत लगाई है और सस्थापकों ने इस मकान का नया खत बीकानेर राज्य में श्री अगरचन्द भैरोंदान सेठिया जैन पारमार्थिक सस्था के नाम करा दिया है। यह खत ता २६-४-४१ का है। नम्बर मिसल १७ तारीख मरजुआ १३-१२-३८ई० नाम तहसील मालमडी नम्बर ३०३ है। इस खत के अनुसार इस मकान की कुल दरगज ३००५॥।=॥ है।

नोट—इस भवन में पहली मंजिल में दरवाजे के दोनों तरफ के दोनों दीवानखाने और उनके नीचे के दोनों तनवर सस्था में नहीं दिये हुए है। ये दोनों अगरचन्दजी भैरोंदानजी सेठिया के निजी है और इनका खत उनके नाम का अलग बना हुआ है। दीवानखानों की कुल दरगज २२८)॥ है। दीवानखानों के ऊपर की मंजिल सस्था की है।

२—मोहल्ला मरोटियों का दूसरा दो मंजिला विशाल भवन (चौक और बाड़ा सहित)। यह भवन सेठिया लायब्रेरी के नाम से प्रसिद्ध है। सस्थापक महोदयों ने यह भवन सेठिया जैन पारमार्थिक सस्था के लिये दिया है। अभी इस भवन में सेठिया ग्रन्थालय, कन्या-पाठशाला, बालपाठशाला, नाइट कॉलेज आदि सस्था के विभाग हैं। इसकी रजिस्ट्री बीकानेर में स १९८० में ता २८ नवम्बर १९२३ को हुई। सस्थापकों ने इस मकान का नया खत बीकानेर राज्य से श्री अगरचन्द भैरोंदान सेठिया जैन पारमार्थिक सस्था के नाम करा दिया है। यह खत ता २६-४-४१ का है। नम्बर मिसल १७ तारीख मरजुआ १३-१२-३८ ई नाम तहसील मालमडी नम्बर ३०४ है। इस खत के अनुसार इस मकान की दरगज १३६३।=॥ है। ता २८ नवम्बर १९२३ की रजिस्ट्री के बाद सस्था को प्राप्त जमीन तथा एक बाड़ा भी नये खत में शामिल है।

नोट—इस भवन में कन्यापाठशाला के वर्तमान मकान के नीचे का तहखाना (जिसकी दरगज १३६= है) तथा तीन बाडों में से दो बाड़े १६१॥।= दरगज के सस्था में नहीं दिये हुए है। यह तहखाना तथा दोनों बाड़े अगरचन्दजी भैरोंदानजी सेठिया के निजी है। तहखाने और दोनों बाडों के दो खत उनके नाम अलग बने हुए हैं।

३—मकान एक उगूण दरवाजे का चौकी समेत, जिसकी दरगज ३३६।॥≤ है और जो ठठारों की गली में वाके है, मोती, भोलु व गोलु ठठारा से स १९७६ माह वदी ६ ता १५ जनवरी सन् १९२० ई को खरीदा और उस पर लागत लगाकर दो मजिले आसरे इमारत बनवाये इसके बाद वि स २००१ मिति प्रथम चैतवदी ६ ता ५ मार्च १९४५ को संस्थापक महोदय ने संस्था के हक में दानपत्र लिख दिया और तहसील मालमडी में रजिस्ट्री करादी। संस्था के नाम इस मकान का पट्टा बनाने के लिये भी राज्य में दरखास्त कर दी गई है। इस मकान के आसे पासे इस प्रकार है— मकान में प्रवेश करते ही दाहिनी ओर धन्ना ठठाग (फिलहाल जीवणजी महाराज) का घर है, बांई ओर हजारी ठठारे का घर है, पीछे के तरफ आशुनाई का मकान है और सामने गली है।

नोट-उक्त कलकत्ता एव बीकानेर दोनों जगह की स्थावर सपत्ति एक ही सस्था (सेठियाजैन पारमार्थिक सस्था) की है। अत. उनकी सुव्यवस्था क लिये यह आवश्यक है कि कलकते और बीकानेर की उक्त सपत्ति की देखभाल एक ही ट्रस्ट कमेटी के अधीन हो और एक से नियमों के अधीन उनका नियन्त्रण हो। अतएव सस्थापक महोदयों का विचार है कि कोटड़ी और सेठिया लायब्रेरी के मकान की, बीकानेर राज्य में कराई हुई ता २८ व ३० नवम्बर १९२३ की रजिस्ट्रियों को अपने सुरक्षित अधिकार के अनुसार रद्दकर संस्था की बीकानेर की सपत्ति के नये ट्रस्टडीड बनाये जायें और उनकी बीकानेर राज्य में रजिस्ट्री करा दी जाय।

सेठिया जैन ग्रन्थमाला का प्रकाशन

सेठिया जैन ग्रन्थमाला से श्री जैन सिद्धान्त बोल सग्रह के आठ भाग, सोलह सती, आर्हत प्रवचन, जैन सिद्धान्त कौमुदी, अर्द्धमागधी धातु रूपावली, कर्तव्यकौमुदी, सूक्ति-सग्रह, उपदेशशतक, सुखविपाक सार्थ, मागलिक स्तवन सग्रह प्रथम द्वितीय भाग, गुणविलास, गणधरवाद के तीन भाग, सक्षिप्त कानून सग्रह, प्रकरण थोकड़ा सग्रह, प्रस्तार रत्नावली, पचीस बोल का थोकड़ा, लघुदडक का थोकड़ा, सामायिक तथा प्रतिक्रमण सूत्र मूल और सार्थ इत्यादि कुल १०८ पुस्तकें प्रकाशित हुई है। विशेष विवरण के लिये सस्था का सूचीपत्र मगाकर देखिये। आर्डर आने पर पुस्तकें वी पी द्वारा भेजी जायँगी।

पता:— अगरचन्द भैरोंदान सेठिया
जैन पारमार्थिक संस्था
बीकानेर (राजपूताना)

Agarchand Bhairodan Sethia
Jain Charitable Institution, Bikaner

प्रमाण ग्रन्थों की संकेत सूची

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
अत.	अतगडदसा-अतकृद्दशा सूत्र सटीक मूल प्राकृत, टीका सस्कृत	टीकाकार-अभयदेवसूरि वि स १०७२-११३५	आगमोदय समिति वीर स २४४६
अणु.	अणुत्तरोववाई-अनुत्तरोपपातिक सूत्र सटीक, मूल प्राकृत, टीका सस्कृत	टीकाकार-अभयदेव सूरि वि स १०७२-११३५	आगमोदय समिति वीर स २४४६
अनु	अनुयोगद्वार सूत्र सटीक मूल प्राकृत, टीका सस्कृत	टीकाकार-मलधार गच्छीय श्री हेमचन्द्र सूरि	आगमोदय समिति वीर स २४५०
अभि. चि	अभिधान चिन्तामणि सस्कृत-कोष	श्री हेमचन्द्राचार्य वि. स ११४५-१२२६	लालचन्द्र नदलाल वकील, श्री मुक्तिकमल जैन मोहनमाला कोठीपोल, वड़ोदा, वीर स २४५१
अभि रा	अभिधान राजेन्द्र कोष (सात भाग) प्राकृत से सस्कृत	श्री विजय राजेन्द्र सूरि वि. स १८८३-१९६३	श्री जैन प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस रतलाम, वीर स २४४०-२४५१
अर्द्ध मा	अर्द्धमागधी कोष (पाँच भाग) प्राकृत से हिन्दी, गुजराती और अंग्रेजी	शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज, वि स १९३६-९८ वैशाख	श्री श्वे स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स बम्बई, वीर स २४४९-२४६४

ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थ कर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान व समय
अष्टक प्रकरण, सस्कृत वृत्ति (वि. सं. १०८०)	हरिभद्रसूरि (छठी शताब्दी) वृत्तिकार-जिनेश्वरसूरि	श्री मनसुखभाई पोरवाड़, अहमदाबाद
आगमसार, मूल गुजराती, हिन्दी अनुवाद, वि स १७७६	श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराज वि १८ वीं १९ वीं शताब्दी	श्री अभयदेवसूरि ग्रन्थमाला, बड़ा उपाश्रय बीकानेर, वीर स २४४८
आचाराग सूत्र सटीक, मूल प्राकृत टीका सस्कृत वि सं ९३३	टीकाकार-शीलांकाचार्य	आगमोदय समिति, वीरस २४४२
आतुर प्रत्याख्यान प्रकीर्णक, प्राकृत, दस पइण्णा में दूसरी पइण्णा		आगमोदय समिति, वीर स २४५३
आलापपद्धति, सस्कृत	श्री देवसेनसूरि, वि १० वीं शताब्दी	माणिकचद्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला बम्बई, वीर स २४४६
आवश्यक सूत्र पूर्वभाग सटीक मूल और निर्युक्ति-प्राकृत, टीका सस्कृत	निर्युक्तिकार-भद्रबाहुस्वामी (वीर की पहली दूसरी शताब्दी) टीकाकार-मलयगिरि	आगमोदय समिति वीर स २४५४
आवश्यक सूत्र पूर्व और उत्तर भाग सटीक मूल और नियुक्ति-प्राकृत, टीका संस्कृत	निर्युक्तिकार-श्रीभद्रबाहुस्वामी (वीर की पहली दूसरी शताब्दी) टीकाकार-हरिभद्रसूरि (छठी शताब्दी)	आगमोदय समिति वीर स २४४३-२४४४

आ. ह. टि.	आवश्यक हरिभद्रीय टिप्पण, संस्कृत	मलधार गच्छीय श्री हेमचन्द्रसूरि	देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई, वीर सं २४४६
आ. वि.	आध्यात्मिक विकासक्रम, गुजराती	पं सुखलालजी सघवी (विद्यमान)	एस जे शाह, मांदलपुर अहमदाबाद, वि. स. १९८५
उत्त.	उत्तराध्ययन सूत्र (दो विभाग) सटीक मूल और निर्युक्ति-प्राकृत, टीका संस्कृत	निर्युक्तिकार-श्रीभद्रबाहुस्वामी टीकाकार श्री शान्त्याचार्य (११वीं शताब्दी)	देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, वीर स २४४२
उत्त. (क)	उत्तराध्ययन सूत्र सटीक, मूल प्राकृत, टीका संस्कृत वि स.१५४४ सर्वार्थ सिद्धि टीका	टीकाकार-श्रीकमल संयमोपाध्याय (सोलहवीं शताब्दी)	विजय धर्म लक्ष्मी ज्ञान मंदिर बेलनगंज, आगरा वीर स २४४९-२४५१
उत्त (ह)	उत्तराध्ययन सूत्र हस्तलिखित		श्री सेठिया जैन ग्रन्थालय बीकानेर
उपा.	उपासकदशांग सूत्र सटीक मूल प्राकृत, टीका संस्कृत	टीकाकार-अभयदेवसूरि (वि स. १०७२,११३५)	आगमोदय समिति वीर स. २४४६
उपा. (अं.)	उपासकदशांग सूत्र (अंग्रेजी अनुवाद)	अनुवादक-ए एफ. रुडोल्फ हार्नले	बिब्लोथिका इन्डिका कलकत्ता, सन् १८९० ई.
उपा ह	उपासकदशांग सूत्र हस्तलिखित		अनूप संस्कृत लायब्रेरी, (बीकानेर का प्राचीन पुस्तक भंडार) बीकानेर
उव.	उववाई (औपपातिक) सूत्र मूल प्राकृत, टीका, संस्कृत,	टीकाकार-अभयदेवसूरि (वि. स १०७२-११३५)	आगमोदय समिति, वीर सं २४४२
ऋषि	ऋषि मंडल वृत्ति मूल-प्राकृत, टीका-संस्कृत, अनुवाद-गुजराती	धर्मघोषसूरि, टीकाकार-शुभवर्द्धनगणी अनुवादक-शास्त्री हरिशंकर कालीदास	श्री जैन विद्याशाला डोशीवाडानी पोल अहमदाबाद, वि सं. १९५८

ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
ओघनिर्युक्ति, मूल-प्राकृत, टीका संस्कृत	निर्युक्तिकार श्री भद्रबाहुस्वामी (वीर. की पहली दूसरी शताब्दी) टीकाकार श्री द्रोणाचार्य(ग्यारहवीं शताब्दी)	आगमोदय समिति वीर स २४४५
कर्त्तव्यकौमुदी दूसरा भाग संस्कृत, भाषानुवाद सहित (वि स १९८०)	शतावधानी श्री रत्नचंद्रजी स्वामी (वि स १९३६-१९९८ वैशाख)	श्री भैरोंदानजी जेठमलजी सेठिया बीकानेर वीर स २४५१
(१) कम्मपयडि (कर्म प्रकृति) सटीक,	मूल-शिवशर्माचार्य टीकाकार उपाध्याय श्रीयशोविजयजी	श्री जैन-धर्म प्रसारक सभा भावनगर वीर स २४४३
(२) कम्मपयडि; मलयगिरिकी टीका का गुजराती अनुवाद	अनुवादक पं. चदुलाल नानचद	श्री अध्यात्म ज्ञान प्रसारक मडल पादरा (गुजरात), वीर स १९७६
(१) कर्म ग्रन्थ भाग १-४ प्राकृत टीका-संस्कृत, हिन्दी अनुवाद सहित	मूल और टीकाकार श्रीदेवेन्द्रसूरि (तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दी)	श्री आत्मानन्द जैन पुस्तक प्रचारक मडल रोशन मोहल्ला आगरा, वीर स २४४४-२४४८
(२) कर्म ग्रन्थ भाग ५-६ मूल प्राकृत-टीका संस्कृत	पाँचवें भाग का मूल और टीकाकार-श्रीदेवेन्द्रसूरि छठा भाग मूल-श्रीचन्द्रर्षिमहत्तर, टीकाकार-मलयगिरि	आत्मानन्द सभा, भावनगर वीर स २४६६
कल्प सूत्र सटीक, मूल प्राकृत, सुबोधिका टीका संस्कृत	मूल भद्रबाहुस्वामी(वीर की पहली दूसरी शताब्दी) टीका विनय विजयजी उपाध्याय (१७ वीं १८ वीं शताब्दी)	देवचद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फड, बम्बई वीर स २४४६

कारण.	कारण सवाद, हिन्दी वीर स २४६५	शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी स्वामी (वि. स १६३६-१६६८ वैशाख)	हीरालाल सुगनचद जैन नया बाजार अजमेर वीर स २४६५
क्षेत्र.	क्षेत्रलोक प्रकाश, सस्कृत गुजराती अनुवाद सहित	उपाध्याय श्रीविनयविजयजी [१७वीं १८वीं शताब्दी] अनुवादक-श्रावक हीरालाल हसराज	श्रावक हीरालाल हंसराज जामनगर वीर स २४४२
गच्छा.	गच्छाचार पयन्ना प्राकृत		आगमोदय समिति, वीर स २४५३
गीता	श्रीमद्भगवद्गीता [संस्कृत] साधारण भाषा टीका सहित		गीता प्रेस, गोरखपुर वि सं २००१
गुण	गुणस्थान क्रमारोह [सस्कृत का हिन्दी अनुवाद] वि सं १४४७	मूल-रत्नशेखरसूरि अनुवादक-श्री तिलकविजयजी पजाबी	आत्म तिलक ग्रन्थ सोसायटी रतनपोल, अहमदाबाद, वीर स २४४५
गुण. थो	चौदह गुणस्थान का थोकड़ा, हिन्दी		भैरोंदानजी जेठमलजी सेठिया बीकानेर वीर स २४५५
गौ कु	गौतम कुलक-प्राकृत	गौतम मुनि	श्री जैन धर्म प्रसारक सभा, भावनगर, वीर सं २४५४
च.	चतुर्भावना पाठमाला मूल संस्कृत, व्याख्या-हिन्दी	मूल-शतावधानी श्रीरत्नचद्रजी स्वामी (वि स १६३६-१६६८ वैशाख) व्याख्या धर्मोपदेष्टा श्री फूलचंदजी महाराज	रत्नलाल अर्हद्दास जैन सोनीपत वीर सं २४५५
चन्दन	चन्दनबाला (सती वसुमती) हिन्दी	पूज्य श्रीजवाहरलालजी महाराज के व्याख्यान (वि स १६३२-२००० आषाढ शुक्ला ८)	श्री हितेच्छु श्रावक मडल रतलाम वीर स २४६२

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
चन्द्र.	चन्द्रप्रज्ञति मूल-प्राकृत हिन्दी अनुवाद सहित	अनुवादक मुनि श्री अमोलखऋषिजी महाराज (वि स १६३४-)	राजा बहादुर लाला सुखदेवसहाय ज्वालाप्रसाद जौहरी महेन्द्रगढ, वीर स २४४५
छ	छन्दोमञ्जरी, सस्कृत टीका तथा अनुवाद सहित	वैद्य महामहोपाध्याय श्रीमद् गगादास टीकाकार और अनुवादक } श्रीगुरुनाथ विद्यानिधि भट्टाचार्य	श्री जानकीनाथ काव्यतीर्थ, सस्कृत विद्यालय निवेदितालेन कलकत्ता, १३३२ वङ्गाब्द
ज	जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति (दो भाग) मूल-प्राकृत, टीका सस्कृत (विक्रम स १६५०)	टीकाकार-उपाध्याय श्रीशान्तिचद्रगणी	देवचद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फड बम्बई, वीर सं २४४६
जी	जीवाजीवाभिगम सूत्र मूल-प्राकृत, टीका-सस्कृत	टीकाकार- श्रीमलयगिरि	देवचद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फड बम्बई, वीर स २४४५
जै	जैन तत्त्वादर्श, हिन्दी पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध	श्री विजयानन्दसूरीश्वर (श्री आत्मारामजी महाराज)	श्री आत्मानन्द जैन महासभा अम्बाला, वीर सं २४६२
जै ग्र	जैन ग्रन्थावली, हिन्दी		श्री श्वेताम्बर जैन कॉन्फरन्स बम्बई, वीर स २४५३
जै. प्र	जैन सिद्धान्त प्रवेशिका-हिन्दी	पं. गोपालदासजी बरैया	जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, वि. स १६८१
ज्ञा.	ज्ञाताधर्म कथा (णायाधम्मकहा) मूल-प्राकृत टीका सस्कृत (वि स ११२०)	टीकाकार-श्री अभयदेवसूरि (वि स १०७२-११३५)	श्री आगमोदय समिति वीर स २४४५
ज्ञान.	ज्ञानार्णव, सस्कृत हिन्दी अनुवाद सहित	मूलकर्त्ता-श्रीशुभचन्द्राचार्य [नवीं शताब्दी] अनुवादक प पन्नालालजी बाकलीवाल	परमश्रुत प्रभावक मडल, बम्बई वीर सं.२४३३

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थ कर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान व समय
ठा.	ठाणाग सूत्र [स्थानाग सूत्र] दो भाग मूल-प्राकृत, टीका सस्कृत वि स. ११२०	टीकाकार श्री अभयदेवसूरि [वि स. १०७२-११३५]	आगमोदय समिति वीर सं २४४५-४६
तत्त्वार्थ	सभाष्य तत्त्वार्थाधिगम सूत्र, संस्कृत	वाचकमुख्य श्रीउमास्वाति	मोतीलाल लाधाजी पूना, वीर स २४५२
तत्त्वार्थ [सु]	तत्त्वार्थ सूत्र, गुजराती [दो भाग]	विवेचक-पं सुखलालजी [विद्यमान]	गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद, वि सं १९८५
तन्दुल.	तन्दुलवेयालिय पइण्णा, प्राकृत (दस पइण्णा में से पाचवाँ पइण्णा)		देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फड बम्बई, वीर स. २४५३
त्रिलोक.	त्रिलोकसार, प्राकृत, टीका सहित	श्रीनेमिचद्र सिद्धान्त चक्रवर्ती टीकाकार-श्री माधवचन्द्र	माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला समिति हीराबाग गिरगाव बम्बई, वीर स. २४४४
त्रि प	त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्र गुजराती अनुवाद भाग ४	हेमचद्राचार्य [वि स ११४५-१२२९]	जैनधर्म प्रसारक सभा भावनगर
द.प	दस पइण्णा [प्रकीर्णक] प्राकृत		देवचद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फड बम्बई
दश.	दशवैकालिक सूत्र, मूल और निर्युक्ति-प्राकृत, टीका संस्कृत	मूलकर्त्ता-शय्यभवस्वामी [वीर की प्रथम शताब्दी] निर्युक्तिकार-भद्रबाहुस्वामी [वीर की पहली दूसरी शताब्दी] टीकाकार-हरिभद्रसूरि [छठी शताब्दी]	देवचद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फड बम्बई, वीर सं २४४४
दशा	दशाश्रुतस्कध दशा भाषान्तर सहित मूल प्राकृत	अनुवादक-उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज [विद्यमान]	जैन शास्त्रमाला कार्यालय, सैदमिट्ठा बाजार लाहौर, वीर स. २४६२

द्रव्य त.	द्रव्यानुयोग तर्कणा-सस्कृत, हिन्दी अनुवाद सहित	मुनि भोजसागरजी [सोलहवीं शताब्दी] अनुवादक-प ठाकुरदत्त शर्मा व्याकरणाचार्य	परमश्रुत प्रभावक मडल बम्बई, वीर स २४३२
द्रव्यलो	द्रव्यलोक प्रकाश, सस्कृत गुजराती अनुवाद सहित	विनयविजयजीमहाराज (१७वीं १८वीं शताब्दी) अनुवादक-प हीरालाल हसराज	पं हीरालाल हसराज, जामनगर वीर स २४४५
द्रव्य स	द्रव्यसग्रह, प्राकृत, हिन्दी टीका सहित	श्री नेमिचंद्र सिद्धान्त चक्रवर्ती हिन्दी टीकाकार-बाबू सूरजभानु वकील	श्री जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय हीराबाग गिरगाव बम्बई, वीर स २४५३
ध.	धर्मसग्रह, सस्कृत [वि स १७३१]	उपाध्याय श्री मानविजयजी	देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फड, बम्बई वीर स २४५१
ध वि	धर्मविन्दुप्रकरण, सस्कृत	हरिभद्रसूरि (छठी शताब्दी) वृत्तिकार-मुनि चद्राचार्य (वि. १२वीं शताब्दी)	आगमोदय समिति वीर स २४५०
ध र	धर्मरत्नप्रकरण [वि स १२७१]	श्री शान्तिसूरि	आत्मानन्द जैन सभा भावनगर, वीर स २४५२
नं	नदीसूत्र सटीक मूल-प्राकृत, टीका सस्कृत	देववाचक-क्षमाश्रमण [वीर की १० वीं शताब्दी] टीकाकार-आचार्य श्रीमलयगिरि	आगमोदय समिति, वि. स. १६८०
नय.	नयचक्र, प्राकृत	श्री देवसेनसूरि (वि दसवीं शताब्दी)	माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला समिति बम्बई, वीर स. २४४६
नय प्र.	नयप्रदीप, सस्कृत	श्री यशोविजय गणी [१७वीं १८वीं शताब्दी]	आत्मवीर सभा भावनगर, वीर सं २४४५
नयो.	नयोपदेश सस्कृत	श्री यशोविजय गणी [१७वीं १८वीं शताब्दी]	आत्मवीर सभा भावनगर, वीर स. २४४५

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
नव	नवतत्व, मूल-प्राकृत हिन्दी भाषानुवाद सहित		श्री आत्मानद जैन पुस्तक प्रचारक मडल देहल वीर स. २४४२
नवपद.	नवपद प्रकरण वृहद्वृत्ति मूल-प्राकृत [वि स १०७३] टीका सस्कृत वि स ११६५]	मूलकर्त्ता-देवगुप्तसूरि टीकाकार-यशोदेव उपाध्याय	देवचंद्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फड बम्बई वीर सं. २४५३
निर	निरयावलिकासूत्र, मूल-प्राकृत टीका संस्कृत	टीकाकार—श्रीचन्द्रसूरि	आगमोदय समिति वीर सं २४४८
निशी	निशीथसूत्र, मूल प्राकृत हिन्दी अनुवाद सहित	अनुवादक-श्रीअमोलखऋषिजी महाराज [वि सं १९३४–]	राजा बहादुर लाला सुखदेव सहायजी ज्वालाप्रसादजी महेन्द्रगढ़, वीर स २४४५
न्याय	न्यायसूत्र वात्स्यायनभाष्य तथा वृत्ति सहित सस्कृत	सूत्रकार-महर्षि गौतम, भाष्यकर-वात्स्यायनमुनि वृत्तिकार-विश्वनाथ न्याय पचानन भट्टाचार्य	जयकृष्णदास गुप्ता विद्या विलास प्रेस बनारस, सन् १९२० ई
न्याय को	न्यायकोष, सस्कृत	महामहोपाध्याय भीमाचार्य	गवर्नमेन्ट सेन्ट्रल बुकडिपो बम्बई, सन् १८९३ ई.
न्याय द	न्यायदर्शनम् (न्यायसूत्रम्) संस्कृतभाष्य तथा वृत्तिसहित	सूत्रकार-महर्षि गौतम, भाष्यकर-वात्स्यायनमुनि वृत्तिकार-विश्वनाथ न्याय पंचानन भट्टाचार्य.	जयकृष्णदास गुप्ता विद्या विलास प्रेस बनारस, सन् १९२० ई.
न्याय दी.	न्यायदीपिका, सस्कृत हिन्दी अनुवाद सहित	श्रीधर्मभूषण यति (सन् १६००ई) अनुवादक—पं खूबचद्रजी	श्रीजैन ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय बम्बई, वीर सं. २४३६

न्यायप्रदीप, हिन्दी	साहित्यरत्न दरबारीलाल न्यायतीर्थ(विद्यमान)	साहित्यरत्न कार्यालय जुबिलीबाग तारदेव बम्बई, वि स १९८६
पन्नवणा (प्रज्ञापना) मूल-प्राकृत-टीका सस्कृत	टीकाकार-आचार्य श्रीमलयगिरि	आगमोदय समिति वीर सं २४४४
पंचसग्रह (चार भाग) मूल-प्राकृत, टीका सस्कृत	मूलकर्त्ता-श्रीचन्द्रर्पि महत्तर टीकाकार-आचार्य श्री मलयगिरि	श्रावक हीरालाल हसराज जामनगर, वि स १९६६
पच प्रतिक्रमण		श्री जैन श्वेताम्बर मित्र मडल लायब्रेरी, घी वालों का रास्ता जयपुर, वीर स २४५४
पच वस्तुक स्वोपज्ञवृत्ति सस्कृत, मूल-प्राकृत	श्रीहरिभद्रसूरि [वि छठी शताब्दी]	देवचद्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फड बम्बई, वीर स २४५३
पचाशक, मूल प्राकृत, टीका-सस्कृत	श्री हरिभद्रसूरि [वि छठी शताब्दी] टीका-श्रीअभयदेवसूरि[वि १०७२-११३५]	श्री जैन धर्म प्रसारक सभा भावनगर, वीर स २४३९
पच्चीस वोल का थोकड़ा		श्रीभैरोंदान जेठमल सेठिया बीकानेर, वीरस. २४६१
परमात्म प्रकाश, मूल-प्राकृत, टीका संस्कृत भाषा अनुवाद सहित	मूलकार-योगीन्द्रदेव, टीकाकार-ब्रह्मदेव[सोलहवीं शताब्दी] भाषा टीकाकार-पडित दौलतरामजी	श्री परमश्रुतप्रभावक मडल झवेरी बाजार बम्बई, वीर स. २४४२
पिंगलसूत्र(पिंगलच्छन्द सूत्रम्)सस्कृत(पचमावृत्ति)	श्री पिंगलाचार्य	श्री जानकीनाथ शर्मा सस्कृत विद्यालय निवेदिता लेन कलकत्ता

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
पिं नि.	पिण्डनिर्युक्ति, मूल प्राकृत, टीका-सस्कृत	श्री भद्रबाहुस्वामी टीकाकार-आचार्य श्रीमलयगिरि	श्री देवचद्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फड बम्बई, वीर स २४४४
पिं वि.	पिण्डविशुद्धि, मूल-प्राकृत, टीका-संस्कृत [वि स ११७८]	मूल श्रीजिनवल्लभसूरि टीकाकार-श्रीचन्द्रसूरि	आचार्य श्रीमद् विजयदानसूरीश्वरजी जैन ग्रन्थमाला सूरत, वीर स २४६५
पी प	पीस एण्ड परसनेलिटी	प्रोफेसर जगदीश मित्र	लाहोर
पुरुपा.	पुरुपार्थ दिग्दर्शन (हिन्दी)	श्रीविजय धर्मसूरि	अनोपचद नरसिहदास, यशोविजय जैन ग्रन्थमाला हेरिसरोड भावनगर, सन् १६२२ ई
प्र.	प्रमाणनयतत्त्वालोकालंकार, सस्कृत रत्नाकरावतारिका टीका सहित	श्रीवादिदेवसूरि (वि स ११४३-१२२६) टीकाकार-रत्नप्रभसूरि (वि १३ वीं शताब्दी)	हर्षचन्द्र भूराभाई धर्माभ्युदय प्रेस बनारस, वीर सं २४३७
प्रतिमा.	प्रतिमाशतक लघुवृत्ति सहित मूल प्राकृत	न्यायविशारद न्यायाचार्य श्रीयशोविजयजी (वि १७वीं १८वीं शताब्दी), वृत्तिकार-श्रीभावसूरि	श्री जैन आत्मानन्द सभा भावनगर, वीर स २४४१
प्र मी.	प्रमाणमीमांसा, सस्कृत स्वोपज्ञ वृत्ति सहित	श्री हेमचन्द्राचार्य [वि स ११४५-१२२६]	मोतीलाल लाधाजी १६६ भवानीपेठ पूना, वीर सं २४५२
प्र र	प्रकरण रत्नाकर (चार भाग) सस्कृत, प्राकृत तथा भाषा के अनेक ग्रन्थो का संग्रह		भीमशी माणेक बम्बई [वि स १६३२ १६६८]

प्रव	प्रवचन सारोद्धार, मूल-प्राकृत, टीका-संस्कृत(वि स.१२४८)	मूलकर्त्ता-श्रीनेमिचद्रसूरी(वि बारहवीं शताब्दी) टीकाकार-सिद्धसेनसूरीश्वर(वि तेरहवीं शताब्दी)	श्रीदेवचद्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई, वीर स २४४८
प्रशस्त	प्रशस्तपाद भाष्य		
प्रश्न	प्रश्नव्याकरण सूत्र,मूल प्राकृत, टीका-सस्कृत	टीकाकार-श्री अभयदेवसूरि (वि स १०७२–११३५)	आगमोदय समिति, वीर स २४४५
प्रश्नो	प्रश्नोत्तर सार्धशतक (वि स १८५१)	उपाध्याय श्री क्षमाकल्याण गणी	सेठ फकीरचन्द घेलाभाई सूरत, (वि स १९७३)
प्र स.	प्रकरण सग्रह दूसरा भाग हिन्दी (२७ थोकडों का सग्रह)	सग्रहकार-मुनिश्रीउत्तमचद्रजी स्वामी (वि स १९१०-१९७६)	सेठ भैरोंदानजी जेठमलजी सेठिया बीकानेर, वीर स २४५०
प्रा	प्राकृत व्याकरण,सस्कृत	श्री हेमचन्द्राचार्य (वि सं. ११४५-१२२९)	श्री मोतीलाल लाधाजी १९६ भवानी पेठ पूना, सन् १९२८ई.
वृ	बृहत्कल्पसूत्रनिर्युक्तिभाष्य वृत्ति सहित,मूल, निर्युक्ति और भाष्य प्राकृत, वृत्ति-संस्कृत [पाच भाग प्रकाशित]	मूल एव निर्युक्तिकर्त्ता-भद्रबाहुस्वामी (वीर की पहली दूसरी शताब्दी), भाष्यकार-सघदास गणी क्षमाश्रमण,वृत्तिकार-मलयगिरि तथा क्षेमकीर्ति आचार्य,सम्पादक मुनि चतुरविजयजी पुण्यविजयजी	श्री जैन आत्मानन्द सभा भावनगर, वीर स २४५९-२४६५
बृ (जी)	श्रीबृहत्कल्प सूत्र,मूल-प्राकृत गुजराती शब्दार्थ भावार्थ सहित	भाषाकर्त्ता- डा जीवराज घेलाभाई दोशी	डा जीवराज घेलाभाई दोशी अहमदावाद, वि स १९७१
बृ हो.	बृहत्होड़ा चक्र		गर्ग एन्ड कम्पनी खारी बावली देहली

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थ कर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान व समय
ब्रह्म.	ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्य, भामती, वेदान्त कल्पतरु और कल्पतरु परिमल सहित, संस्कृत	भाष्यकार-श्रीशंकराचार्य, भामतीटीका-वाचस्पतिमिश्र वेदान्त कल्पतरु-श्री अमलानन्द सरस्वती कल्पतरु परिमल श्री अप्पय दीक्षित	तुकाराम जावजी सेठ बम्बई, सन् १९१७ ई
भ	भगवती (व्याख्याप्रज्ञप्ति) सूत्र सटीक, मूल प्राकृत-टीका संस्कृत (वि स ११२८) भाग ३	टीकाकार-श्रीअभयदेवसूरि (वि स १०७२-११३५)	श्री आगमोदय समिति, वीर सं २४४४-२४४७
भरत	भरतेश्वरबाहुबलि वृत्ति (दो भाग) मूल-प्राकृत, वृत्ति-संस्कृत	वृत्तिकार शुभशील गणी (१५वीं १६ वीं शताब्दी)	देवचद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई, वीर सं. २४५८-२४६२
भावना	भावनाशतक, मूल भावार्थ और विवेचन सहित, मूल-संस्कृत भावार्थ और विवेचन-गुजराती	शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज [वि.स १९३६-१९९८]	वृन्दावनदास दयाल कोट बाजार गेट बम्बई, वीर सं २४४७
यो	योगशास्त्र स्वोपज्ञ विवरण सहित, संस्कृत	श्री हेमचन्द्राचार्य (वि स ११४५-१२२९)	श्री जैन धर्म प्रसारक सभा भावनगर, वीर सं २४५२
योग	योगदर्शन, संस्कृत, भाष्य तथा व्याख्या सहित	सूत्रकार-महामुनि पातञ्जलि, भाष्यकार-महर्षि कृष्ण द्वैपायन, व्याख्याकार-श्रीमद् वाचस्पति मिश्र	एच डी गुप्ता एन्ड सन्स, चौखम्बा संस्कृत बुकडिपो बनारस, सन् १९११ ई
रत्ना	रत्नाकरावतारिका (प्रमाण नय तत्त्वालोकालंकारकी टीका) संस्कृत	श्री रत्नप्रभसूरि (वि तेरहवीं शताब्दी)	हर्षचन्द्र भूराभाई धर्माभ्युदय प्रेस बनारस, वीर सं. २४३७

रा	राजप्रश्नीय सूत्र सटीक मूल-प्राकृत,टीका-सस्कृत	टीकाकार-श्रीमलयगिरि	आगमोदय समिति वीर स २४५१
राज.	सती राजमती,हिन्दी	पूज्यश्री जवाहरलालजी महाराज साहब के व्याख्यानों में से	श्री हितेच्छु श्रावक मडल रतलाम, वीर स २४६३
रा यो	राजयोग, गुजराती (दो भाग)	स्वामी विवेकानन्द (सन् १८६३–१६०२ ई)	डाह्याभाई रामचन्द्र महेता अहमदावाद, सन् १६२१ ई
लोक	लोक प्रकाश,सस्कृत गुजराती अनुवाद	उपाध्याय विनयविजयजी[१७वीं १८वीं शताब्दी] अनुवादक श्रावक हीरालाल हसराज	प श्रावक हीरालाल हसराज जामनगर, वि स १६६७
वि	विपाकसूत्र सटीक मूल-प्राकृत,टीका-सस्कृत	टीकाकार-श्रीअभयदेवसूरि [वि स १०७२–११३५]	आगमोदय समिति वीर स २४४६
विशे	विशेषावश्यक भाष्य,प्राकृत टीका-सस्कृत,(वि स ११७५)	भाष्यकर्त्ता श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमण टीकाकार-मलधारि श्रीहेमचन्द्रसूरि	हर्षचद्र भूराभाई बनारस, वीर स. २४४१
विहर	विहरमान एकविंशति		
वेदान्त	वेदान्त परिभाषा		
व्यव	व्यवहार सूत्र,मूल-प्राकृत हिन्दी अनुवाद सहित	हिन्दी अनुवादक-श्रीअमोलखऋषिजी (वि स १६३४–)	राजा बहादुर लाला सुखदेवसहाय ज्वालाप्रसाद जौहरी महेन्द्रगढ़, वीर स. २४४५

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
व्यव. चू.	व्यवहार चूलिका (हस्तलिखित) टब्बार्थ (वि स.१६४४ पौष सुदी १५ शनिवार की लिखी हुई)		श्री सेठिया जैन शास्त्र भडार बीकानेर
व्यव. भा.	व्यवहार भाष्य निर्युक्ति विवरण सहित, मूल, निर्युक्ति और भाष्य-प्राकृत, टीका-संस्कृत (दस भाग)	निर्युक्तिकार श्रीभद्रबाहुस्वामी टीकाकार-श्रीमलयगिरि	वकील केशवलाल प्रेमचंद अहमदाबाद, वि स १९८२-८४
शा.	शान्तसुधारस, प्रथम द्वितीय भाग मूल-सस्कृत, विवेचन गुजराती [वि स १७२३]	मूलकर्त्ता-उपाध्याय श्रीविनयविजयजी विवेचक-मोतीचद गिरधरलाल कापडिया	श्री जैन धर्म प्रसारक सभा भावनगर, वि स.१९६४-६५
शास्त्र	शास्त्र दीपिका, व्याख्या सहित सस्कृत	सर्वतन्त्र स्वतन्त्र श्रीमत्पार्थ सारथि मिश्र व्याख्याकार-श्री रामकृष्ण, श्रीसोमनाथ	तुकाराम जावजी मिश्र निर्णयसागर प्रेस २३ कोल भाट लेन बम्बई, सन् १९१५ ई.
शिक्षा.	श्रावक के चार शिक्षाव्रत	पूज्यश्री जवाहरलालजी महाराज साहब के व्याख्यानों के आधार पर	श्री हितेच्छु श्रावक मंडल रतलाम, वीर स २४४३
श्राद्ध.	श्राद्धविधि प्रकरण स्वोपज्ञवृत्ति युक्त [वि स.१५०६]	श्री रत्नशेखरसूरि (वि स. १४५७–१५१७)	श्रावक हीरालाल हंसराज जामनगर वीर स २४४३
श्राद्ध प्रति.	श्राद्ध प्रतिक्रमण (वन्दित्तु सूत्र) मूल-प्राकृत, टीका-संस्कृत	टीकाकार-श्री रत्नशेखरसूरि (वि. स १४५७–१५१७)	देवचद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फड झवेरी बाजार बम्बई, वीर स २४४५

श्रा. प्र.	श्रावक प्रज्ञप्ति, मूल-प्राकृत टीका-संस्कृत	मूलकर्त्ता—वाचकमुख्य श्रीउमास्वाति टीकाकार-श्रीहरिभद्रसूरि [छठी शताब्दी]	ज्ञान प्रसारक मंडल बम्बई, वि.स.१९६१
श्रा प्रति	श्रावक प्रतिक्रमण [हिन्दी और प्राकृत]	"	श्री भैरोंदानजी जेठमलजी सेठिया बीकानेर, वीर स २४६५
षड्भाषा. संगीत.	षड्भाषाचन्द्रिका, संस्कृत संगीतशास्त्र	प लक्ष्मीधर	राजकीय ग्रन्थमाला बम्बई, सन् १९१६ ई.
सप्त.	सप्तभगीतरंगिणी, संस्कृत हिन्दी अनुवाद सहित	मूलकर्त्ता-श्री विमलदास अनुवादक—ठाकुरप्रसाद शर्मा	श्री परमश्रुत प्रभावक मडल बम्बई, वीर सं २४४२
सम	समवायाग सूत्र सटीक, मूल-प्राकृत टीका-संस्कृत [वि.स. ११२०]	टीकाकार श्रीअभयदेवसूरि (वि स. १०७२-११३५)	आगमोदय समिति, वीर स. २४४४
समय.	समयसार, आत्मख्याति टीका तथा गुजराती अनुवाद सहित	श्री कुन्दकुन्दाचार्य [वि पहली शताब्दी] टीकाकार-अमृतचन्द्राचार्य (वि.१०वीं शताब्दी) अनुवादक—हिम्मतलाल जेठालाल शाह	श्री जैन अतिथि सेवा समिति सोनगढ काठियावाड़, [वि. सं १९९७]
सम्मति.	सम्मति तर्क प्रकरण, मूल-प्राकृत टीका-संस्कृत [पांच भाग]	मूलकर्त्ता-आचार्य श्रीसिद्धसेन दिवाकर [पहली शताब्दी] टीकाकार-श्री अभयदेवसूरि सम्पादक-प. सुखलाल बेचरदास (विद्यमान)	गुजरात पुरातत्त्व मंदिर अहमदाबाद, वि. स. १९८०
सरल पिं	सरल पिंगल, हिन्दी वि. स १९७४	श्री पुत्तनलाल विद्यार्थी, विशारद, श्री लक्ष्मीधर शुक्ल, विशारद	हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, वि सं. १९८४

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थ कर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान व समय
सर्व द	सर्व दर्शन सग्रह, सस्कृत	श्री माधवाचार्य	जीवानन्द विद्यासागर भट्टाचार्य कलकत्ता, सन् १८८६ ई
स. श.	सप्ततिशत स्थान प्रकरण [सत्तरिसय ठाणावृत्ति] मूल-प्राकृत (वि स १३८७) टीका-सस्कृत (वि स १६७०)	मूलकर्त्ता श्री सोमतिलकसूरि टीकाकार-श्री देवविजय	श्री जैन आत्मानन्द सभा भावनगर वीर स. २४४५
सांख्य.	सांख्यतत्त्व कौमुदी, सस्कृत हिन्दी अनुवाद सहित	श्री ईश्वरकृष्ण	नवलकिशोर प्रेस लखनऊ, सन् १८८८ ई
साधु प्र.	साधु प्रतिक्रमण सूत्र		श्री भैरोदानजी जेठमलजी सेठिया वीकानेर, वीर सं. २४४६
सि	सिद्धान्त कौमुदी	भट्टोजी दीक्षित	तुकाराम जावजी बम्बई
सि. मु.	सिद्धान्त मुक्तावलि	श्री विश्वनाथ पंचानन भट्टाचार्य	पाण्डुरग जावजी निर्णयसागर प्रेस कोलभाट लेन वम्बई, सन् १२६४ ई.
सूय.	सूयगडाग(सूत्रकृताग)सूत्र, मूल-प्राकृत, टीका सस्कृत वि सं. ६३३	टीकाकार-श्री शीलाकाचार्य (वि दसवीं शताब्दी)	श्री आगमोदय समिति, वीर स २४४३
सूर्य.	सूर्यप्रज्ञप्ति सटीक, मूल-प्राकृत टीका-सस्कृत	टीकाकार-आचार्य श्री मलयगिरि	श्री आगमोदय समिति, वीर स. २४४५

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
सेन.	सेनप्रश्न (प्रश्नरत्नाकराभिध. श्री सेन प्रश्न) सस्कृत (वि. १७ वीं शताब्दी)	सग्रहकर्त्ता-श्रीशुभविजय गणी (विजयसेन सूरि को पूछे हुए प्रश्नों के उत्तरों का सग्रह)	श्रीदेवचद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई, वीर स २४४५
स्या	स्याद्वादमजरी, सस्कृत (वि स १३४६)	श्री मल्लिसेनसूरि	श्री मोतीलाल लाधाजी १६१ भवानी पेठ पूना, वीर स २४५२
हठ	हठयोगदीपिका, गुजराती	मूल-स्वात्माराम योगीन्द्र, भाषाटीका-वेदान्त कवि हीरालाल जादवराय बुच	महादेव रामचद्र जागुष्टे बुकसेलर ग्रथा दरवाजा ग्रहमदाबा वि स १६७१
हि. फि.	(हिस्ट्री ग्रॉफ) इडियन फिलॉसोफी, दो भाग, ग्रग्रेजी	डा एस राधाकृष्णन	मेक्मिलिन कम्पनी, सन् १६३१ई
हीर	हीर प्रश्न (प्रश्नोत्तर समुच्चय) सस्कृत	सग्रहकर्त्ता-कीर्तिविजय गणी (वि १७वीं शताब्दी) (श्री हीरविजयसूरि को पूछे गये प्रश्नों के उत्तरो का सग्रह)	जेसंगलाल छोटालाल सुतरीया ग्रहमदावाद, (श्रीहसविजय जैन लायब्रेरी) वीर स २४४६

अध्ययनादि के संकेत

संकेत	पूरा नाम	किस किस ग्रन्थ में है:—
अ०	अध्ययन	आवश्यक, आचारांग, उत्तराध्ययन, उपासकदशा, ज्ञाताधर्मकथा, दशवैकालिक, विपाकसूत्र, सूयगडांग, अन्तगडदशासूत्र, अणुत्तरोववाई आदि
अधि	अधिकार	धर्मसंग्रह
अध्या	अध्याय	तत्त्वार्थसूत्र, द्रव्यानुयोग तर्कणा
आ.	आह्निक	प्रमाणमीमांसा, न्यायसूत्र
उ.	उद्देशा	सूयगडांग, भगवती, निशीथसूत्र, बृहत्कल्पसूत्र, व्यवहारसूत्र, ठाणांगसूत्र, आचारांग सूत्र
उल्ला	उल्लास	सेनप्रश्न
का.	कारिका	स्याद्वादमञ्जरी
काण्ड.	काण्ड	सम्मति तर्क
गा.	गाथा	आगमों में तथा व्यवहारभाष्य, विशेषावश्यकभाष्य हरिभद्रीयावश्यक, मलयगिरि आवश्यक, परमात्मप्रकाश
चू	चूलिका	आचारांगसूत्र, दशवैकालिकसूत्र
टी.	टीका	
द.	दशा	दशाश्रुतस्कन्धदशा
द्वा.	द्वार	प्रवचनसारोद्धार पंचसंग्रह, पंचवस्तुक, प्रश्नव्याकरणसूत्र (आश्रवद्वार और संवरद्वार), नवपद प्रकरण

नि.	निर्युक्ति	आचारांग, सूयगडाग, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, आवश्यक, व्यवहारसूत्र, ओघनिर्युक्ति, पिण्डनिर्युक्ति
प	पद	पन्नवणासूत्र
पर्व.	पर्व	त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र
परि.	परिच्छेद	रत्नाकरावतारिका
प्रक.	प्रकरण	ज्ञानार्णव
प्रका.	प्रकाश	योगशास्त्र, हीरप्रश्न, श्राद्धविधिप्रकरण
प्रति.	प्रतिपत्ति	जीवाजीवाभिगम
प्रा.	प्राभृत	चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति
प्रा. प्रा.	प्राभृतप्राभृत	चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति
भा.	भाग	कर्मग्रन्थ, कर्तव्यकौमुदी
व.	वर्ग	निरयावलिका, अणुत्तरोववाई, अन्तगडदशा
वक्ष.	वक्षस्कार	जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति
विव.	विवरण	पंचाशक
श.	शतक	भगवती
श्लो.	श्लोक	
श्रु.	श्रुतस्कन्ध	आचारांगसूत्र, सूयगडांगसूत्र
स.	सर्ग	
सू.	सूत्र	ठाणांगसूत्र, समवायांगसूत्र, तत्त्वार्थसूत्र, रत्नाकरावतारिका

श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह

आठवाँ भाग

जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के सात भागों का विषय कोष

मंगलाचरण

आसाढे धवलाइ छट्ठि चवणं चित्तस्स तेरस्सिए ।
सुद्धाए जणणं सुकिण्ह दसमी, दिक्खा य मग्गसिरे ॥
जस्सासी वइसाह सुद्ध दसमी, णाणं जणाणंदणं ।
मुक्खो कत्ति अमावसाइ तमहं, वंदामि वीरं जिणं ॥

भावार्थ–आषाढ़ सुदी छठ को देवलोक से चव कर चैत सुदी त्रयोदशी को जिसने जन्म धारण किया, मगसिर वदी दशमी को जिसने लोक-कल्याण के लिये दीक्षा अङ्गीकार की, वैशाख सुदी दशमी को जिसे लोक को आनन्द देने वाला पूर्ण ज्ञान का प्रकाश प्राप्त हुआ एवं अन्त में कार्तिक मास की अमावस्या के दिन जिस का निर्वाण हुआ ऐसे श्री वीर भगवान् को मैं वन्दना करता हूँ ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अंक की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२७४	न० सू० २७ गा० ६४ टी०
अंग पन्द्रह मोक्ष के	८५०	५	१२१	पंच व० गा० १५६, १६३
१ अंग प्रविष्ट श्रुत	८२२	५	१०	न.सू ४५, विशे गा ५५०-५२
अंग प्रविष्ट श्रुतज्ञान	१६	१	१३	न सू ४५, ठा. २ उ १ सू ७१
अंग बाह्य श्रुत	८२२	५	१०	न सू ४४ विशे गा ५५० ५२
अंग बाह्य श्रुतज्ञान	१६	१	१३	न सू ४४, ठा. २ उ १ सू ७१
अंग सूत्र ग्यारह	७७६	४	६६	
२ अंगार दोष	३३०	१	३३६	ध अधि. ३ श्लो. २३ टी पृ. ५५, पिं नि गा ६५५-६०, उत्त अ २४ गा १२ टी.
अंगुल के तीन भेद	११८	१	८३	अनु सू. १३३
अंगुष्ठ संकेत पच्चक्खाण	५८६	३	४३	आव. ह अ ६ नि गा १५७८, प्रव द्वा ४ गा २००
अंजूकुमारी की कथा	६१०	६	५०	वि अ. १०
३ अकण्डूयक	३५६	१	३७३	ठा ५ उ १ सू. ३९६
अकम्पितस्वामी गणधर की नरक विषयक शंका और समाधान	७७५	४	५२	विशे. गा. १८८५ से १९०४
अकर्मभूमि के तीस भेद	६५७	६	३०७	पन्न. प १ सू. ३७
अकर्मभूमिज	७१	१	५१	ठा. ३ उ. १ सू. १३०, पन्न प. १ सू ३७, जी. प्रति ३ सू १०७
अकर्मभूमि छः जम्बूद्वीप की	४३५	२	४१	ठा. ६ उ ३ सू. ५२२

१ श्रुतज्ञान का भेद। २ आहार का दोष। ३ शरीर को न खुजलाने वाला साधु।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
[1] अकर्मांशस्नातक	३७१	१	३८६	ठा ५ उ ३ सू ४४५, भ श २५ उ ६ सू ७५१
[2] अकस्माद्भय	५३३	२	२६८	ठा ७ उ ३ सू ५४९, सम ७
अकाममरण	५३	१	३१	उत्त अ ५ गा २
अकाममरणीय अध्ययन की बत्तीस गाथाएं	९७२	७	४६	उत्त अ.५
अकारण दोष (आहार का दोष)	३३०	१	३४०	उत्त अ २४ गा १२ टी, उत्त अ २६ गा ३२, ध अधि. ३ श्लो २३ टी., पि नि गा. ६६१ से ६६८
अकाल (काल का भेद)	४३१	२	३८	विशे. गा २७०८ से २७१०
अकिंचनत्व (परिग्रह त्याग	६६१	३	२३४	नव. गा.२३, सम. १०, शा. भा.१ प्रक ८ (संवरभावना)
[3] अकृत्स्ना आरोपणा	३२६	१	३३५	ठा.५ उ. २ सू ४३३, सम २८
अक्रियावादी आठ	५९१	३	९०	ठा. ८ उ.३ सू ६०७
अक्रियावादी की व्याख्या और उसके चौरासी भेद	१९१	१	१४५	भ.श ३० उ.१ सू. ८२४ टी, आचा अ. १ उ.१ सू० ३ टी, सूय० अ०१२
अक्षर का क्या अर्थ है?	९१८	६	१३८	वृ गा. ७२ से ७५, न.सू० १, ४३ टी. पृ. ६३, २०१
अक्षर श्रुत	८२२	५	३	न सू० ३९, विशे० गा० ४५५-५००, कर्म भा.१ गा ६
अक्षर श्रुत	९०१	६	३	कर्म भा. १ गा० ७

१ निर्ग्रन्थ का भेद। २ यकायक होने वाला भय। ३ प्रायश्चित्त विशेष।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अक्षरश्रुत के तीन भेद	८२२	५	६	न सू. ३९, विशे.गा ४६४-४६६, कर्म भा १ गा !
अक्षरसमास श्रुत	९०१	६	३	कर्म० भा० १ गा० ७
अक्षीण महानसी लब्धि	९५४	६	२९७	प्रव० द्वा० २७० गा १४९५
१ अगमिक श्रुत	८२२	५	१०	न. सू. ४४, विशे.गा ५४९
अगार चारित्र धर्म	२०	१	१५	ठा० २ उ० १ सू० ७२
अगुरुलघुत्वगुण	४२५	२	१६,२४	आगम. द्रव्य. त.मध्या ११ श्लो. ४
२ अगुरुलघु परिणाम	७५०	३	४३४	ठा १० उ ३ सू ७१३,पन्न प १३ सू १८४
अग्निकुमार देवों के दस अधिपति	७३५	३	४१८	भ श ३ उ८ सू १६९
अग्निभूति गणधर की कर्म विषयक शंका समाधान	७७५	४	३१	विशे गा १६०९ १६४४
३ अग्रबीज	४६६	२	६६	दश० अ० ४ सू.१
अघाती कर्म	२७	१	१९	कम्म. गा. १ टी. पृ १०
अघाती प्रकृतियाँ	८०९	४	३५०	कर्म० भा० ५ गा० १४
अचक्षुदर्शन	१९९	१	१५७	ठा० ४ उ० ४ सू० ३६५, कर्म० भा० ४ गा० १२
अचक्षुदर्शन अनाकारोपयोग	७८६	४	२६९	पन्न० प० २९ सू० ३१२
४ अचरम समय निर्ग्रन्थ	३७०	१	३८५	ठा० ५ उ० ३ सू० ४४५

१ श्रुतज्ञान का भेद । २ अजीवपरिणाम का भेद । ३ बादर वनस्पतिकाय का भेद । ४ निर्ग्रन्थ का भेद ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अचलभ्राता गणधर की पुण्य पाप विषयक शङ्का और उसका समाधान	७७५	४	५४	विशे०गा०१६०५ से १६४८
अचित्त योनि	६७	१	४८	तत्त्वार्थ अध्या २ सू ३३, ठा० ३ उ०१ सू० १४०
अचित्त वायु के पाँच प्रकार	४१३	१	४३८	ठा० ५ उ०३ सू० ४४४
[1] अचियत्तोपघात	६६८	३	२५७	ठा०१० उ० ३ सू० ७३८
[2] अचेल कल्प	६६२	३	२३४	पचा० १७ गा०११,१२,१३
अचौर्य पर पाँच गाथाएं	६६४	७	१७६	
अचौर्य महाव्रत की पाँच भावनाएं	३१६	१	३२६	आव ह अ ४ पृ ६५८, प्रव द्वा ७२ गा.६३८, सम २५ आचा श्रु २.चू. ३ अ० २४ सु १७६, ध अधि ३ श्लो. ४५ टी. पृ० १२५
अचौर्याणुव्रत	३००	१	२८६	आव ह. अ. ६ पृ ८२१ ठा ५. उ. १ सू ३८६, उपा अ १ सू ६, ध. अधि. २ श्लो० २७ पृ ६०
अचौर्याणुव्रत (स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत) के पाँच अतिचार	३०३	१	२६६	उपा. अ० १ सू ७, आव ह अ. ६, पृ.८२१ ध. अधि २ श्लो० ४५ पृ १०२
[3] अच्छविस्नातक	३७१	१	३८६	ठा ५. उ ३ सू. ४४५, भ. श २५ उ. ६ सू ७५१

१ संयम की घात करने वाला एक दोष। २ साधु के कल्प का एक भेद।

३ स्नातक निर्ग्रन्थ का एक भेद।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अच्छेद्य तीन	७३	१	५३	ठा० ३ उ० २ सू० १५६
अच्छेरे (आश्चर्य) दस	६८१	३	२७६	ठा १० उ. ३ सू.७७७, प्रव. द्वा० १३८ गा. ८८५-८८९
अजीर्ण कितने प्रकार का है	९१८	६	१५७	प्रश्नो०
अजीव अरूपी के दस भेद	७५१	३	४३४	पन्न० प० १ सू० ३, जी० प्रति० १ सू० ४
अजीव के चौदह भेद	८२७	५	१९	पन्न० प० १ सू० ३,४
अजीव के छः संस्थान	४६९	२	६९	भ श २५ उ ३ सू ७२४, पन्न प १ सू ४, जी प्रति १
अजीव तत्त्व के पाँच सौ साठ भेद	६३२	३	१८१	पन्न० प० १ सू० ३,४, उत्त० अ० ३६ गा० ४-४६
अजीव परिणाम दस	७५०	३	४२९	पन्न. प १३ सू १८०, ठा १० उ ३ सू ७१३
अजीव मिश्रिता सत्यामृषा भाषा	६९९	३	३७१	ठा १० उ ३ सू ७४१, पन्न प ११ सू १६५, ध अधि ३ श्लो० ४१ टी० पृ ११२
अजीवाधिकरण	५०	१	३०	तत्त्वार्थ० अध्या० ६ सू० ८
१ अज्ञात चरक	३५३	१	३६८	ठा ५ उ १ सू ३९६
अज्ञानवादी की व्याख्या और उसके ६७ भेद	१९१	१	१४६	भ श ३० उ १ सू ८२४ टी, आचा. अ १ उ १ सू. ३ टी, सूय अ १२
अठाईस गुण अनुयोग देने वाले के	९५२	६	२८६	बृ नि गा. २४१ से २४४
अठाईस नक्षत्र	९५३	६	२८८	ज वक्ष.७ सू १५५, सम २७

१ अज्ञात घरों में गोचरी करने वाला साधु।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अठाईस प्रकृतियाँ मोह-नीय कर्म की	९५१	६	२८४	कर्म. भा १ गा. १३-२२, सम० २८
अठाईस भेद मतिज्ञान के	९५०	६	२८३	सम २८, कर्म भा १ गा ४-५
अठाईस लब्धियाँ	९५४	६	२८९	प्रव. द्वा २७० गा. १४९२-१५०८
अठारह कल्प साधु के	८९०	५	४०२	दश अ ६ गा. ७ से ६८, सम० १८
अठारह गाथा क्षुल्लक निर्ग्रन्थीय अध्ययन की	८९७	५	४१६	उत्त अ ६
अठारह गाथा दशवैकालिक प्रथम चूलिका की	८९८	५	४२०	दश चू १
अठारह दोष दो प्रकार से जो अरिहन्त में नहीं होते	८८७	५	३९७	प्रव द्वा ४१ गा ४५१ ५२, स. श द्वा ६६ गा १९१-१९२
अठारह दोष पौषध के	८९४	५	४१०	शिक्षा०
अठारह द्वार गतागत के	८८८	५	३९८	पन्न प ६ के आधार से
अठारह पापस्थानक	८९५	५	४१२	ठा १ सू ४८, प्रव द्वा. २३७ गा. १३५१-१३५३, भ श. १ उ ९, भ. श १२ उ ५, सू ४५०, दशा. द. ६
अठारह पुरुष दीक्षा के अयोग्य	८९१	५	४०६	प्रव द्वा १०७ गा. ७९०-९१ ध अधि ३ श्लो ७८ टी पृ. ३
अठारह प्रकार का ब्रह्मचर्य	८९२	५	४१०	सम १८, प्रव द्वा १६८ गा. १०६१
अठारह प्रकार की चोर की प्रसूति	८९६	५	४१५	प्रश्न. अधर्मद्वार ३ सू १२ टी.

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अठारह भेद अब्रह्मचर्य के	८६३	५	४१०	आव ह अ ४ पृ ६५२
अठारह लिपियाँ	८८६	५	४०१	पन्न प १ सू ३७, सम १८
१ अड़तालीस ग्लान प्रतिचारी	७६७	४	२६७	प्रव द्वा ७१ गा ६२६, नवपद सलेखना अधिकार गा० १२६
अड़तालीस भेद तिर्यञ्च के	१००१	७	२६५	पन्न प १ सू १०-३६
अड़तालीस भेद ध्यान के	१००२	७	२६६	उव सू २०
अड़तीस गाथाएँ सूयगडांग सूत्र के ग्यारहवें अध्य० की	६८५	७	१३६	सूय अ ११
अढ़ाई द्वीप में चन्द्र सूर्यादि ज्योतिषी देवों की संख्या	७६६	४	३०२	सूर्य प्रा १६ सू १००
अणुत्तरोववाई सूत्र का संक्षिप्त विषय वर्णन	७७६	४	२०२	
अणुव्रत पाँच	३००	१	२८८	आव ह अ ६ पृ ८१७ से ८२६, ठा ५ सू ३८६, उपा. अ.१, ध अधि २ श्लो २३-२६
अणुव्रत पाँच	४६७	२	२००	
२ अतथाज्ञानानुयोग	७१८	३	३६५	ठा. १० उ ३ सू ७२७
अतिक्रम	२४४	१	२२१	पि नि गा १८२, ध अधि ३ श्लो ४३ टी. पृ. १३६
अतिचार	२४४	१	२२१	पि नि गा. १८२, ध. अधि ३. श्लो ४३ टी पृ १३६

१ रोगी साधु की सेवा करने वाला साधु।

२ द्रव्यानुयोग का भेद-वस्तु के अयथार्थ स्वरूप का व्याख्यान।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अतिचार चौदह ज्ञान के	८२४	५	१४	आव. ह. अ ४ पृ ७३०
अतिचार निन्नाणवे	४९७	२	२०१	
अतिचार पाँच समकित के	२८५	१	२६५	उपा अ १ सू ७, आव ह अ ६ पृ. ८१०
अतिचार श्रावक के बारह व्रतों के	३०१-३१२	१	२९०-३१४	उपा अ.१ सू ७, आव ह. अ ६ पृ ८१७-८३६, ध. अधि २श्लो ४३-५८पृ.१००
१ अतिथिवनीपक	३७३	१	३८८	ठा ५ उ २ सू. ४५४
अतिथि संविभाग व्रत	१८६	१	१४१	पच्चा १ गा. ३१ ३२, आव. ह अ. ६ पृ ८३६
अतिथि संविभाग व्रत के पाँच अतिचार	३१२	१	३१३	उपा अ. १ सू ७, आव. ह अ ६ पृ ८३६
अतिथि संविभाग व्रत निश्चय और व्यवहार से	७९४	४	२८४	आगम.
अतिमुक्त (एवंता) कुमार की कथा	७७६	४	१९८	अंत व ६ अ. १५
अतिव्याप्ति	१२०	१	८५	न्यायदी प्रका १
अतिव्याप्ति दोष	७२२	३	४०८	ठा १० उ ३ सू ७४३टी.
अतिशय चौतीस अरिहंत देव के	९७७	७	९८	सम ३४, स श द्वा. ६७
अतिशय पाँच आचार्य उपाध्याय के	३४२	१	३५३	ठा ५ उ. २ सू ४३८

१. अतिथिदान की प्रशंसा करके भिक्षा चाहने वाला

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अतिशय पैंतीस अरिहन्त देव की वाणी के	९७९	७	७१	सम.३५ टी, रा सू.४टी., उव सू १० टी.
अतीर्थङ्कर सिद्ध	८४९	५	११७	पन्न प १ सू ७
अतीर्थ सिद्ध	८४९	५	११७	पन्न प. १ सू ७
अदत्तादान(चोरी)विरति पर पाँच गाथाएं	९९४	७	१७६	
अदत्तादान विरमण रूप तीसरे महाव्रत की पाँच भावनाएं	३१९	१	३२६	आव ह अ ४ पृ ६५८,प्रव. द्वा. ७२ गा. ६३८,सम २५, आचा.श्रु. २ चू.३अ. २४,ध. अधि ३ श्लो ४५टी. पृ १२५
अदत्तादान विरमण व्रत निश्चय और व्यवहार से	७९४	४	२८१	आगम.
अद्धाद्धामिश्रिता सत्यामृषा	६९९	३	३७१	ठा. १० उ ३ सू. ७४१,पन्न. प ११ सू.१६५, ध. अधि.३ श्लो. ४१ टी. पृ १२२
अद्धा पच्चक्खाण के दस भेद	७०५	३	३७६	प्रव द्वा.४ गा. २०१-२०२, पचा ५ गा ८-११,आव.ह नि. गा.१५९७
अद्धा पल्योपम (सूक्ष्म, व्यवहारिक)	१०८	१	७६	अनुसू. १३८, प्रव द्वा १५८ गा. १०२४-१०२५
अद्धामिश्रिता सत्यामृषा	६९९	३	३७१	ठा. १० उ. ३ सू. ७४१,पन्न. प.११सू १६५, ध. अधि ३ श्लो. ४१ टी पृ १२२
अद्धा सागरोपम	१०९	१	७८	अनु सू. १३८,प्रव द्वा. १५९ गा. १०२९-१०३०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अद्भुत रस	६३९	३	२०८	अनु सू. १२६ गा. ६८-६६
अधर प्राणायाम	५५६	२	३०३	यो प्रका ५ श्लो ६,
अधर्मदान	७६८	३	४५२	ठा १० उ ३ सू ७४५
अधर्म द्रव्य	४२४	२	३	आगम उत्त. अ ३६ गा. ५
अधर्मास्तिकाय के ५ भेद	२७७	१	२५५	ठा ५ उ ३ सू. ४४१
अधिक तिथि वाले पर्व	४३४	२	४१	ठा ६ उ ३ सू ५२४, चन्द्र. प्रा १२
अधिक दोष	७२३	३	४१२	ठा १० उ ३ सू ७४३
अधिकरण के भेद	५०	१	२६	तत्त्वार्थ अध्या ६ सू ८
अधोलोक	६५	१	४६	लोक भा. २ स १२, भ श ११ उ १० सू ४२०
अध्ययन तेईस सूयगडांगके	६२४	६	१७३	सूय, सम २३
१ अध्यवपूरक दोष	८६५	५	१६४	प्रव.द्वा. ६७ गा ५६६, ध अधि. ३ श्लो २२ टी पृ ३८, पिं.नि गा ६३, पिं वि गा. ४ पंचा १३ गा. ६
अध्रुवबन्धिनी प्रकृतियाँ	८०६	४	३३७	कर्म भा. ५ गा ३ से ४
अध्रुवसत्ताक प्रकृतियाँ	८०६	४	३४३	कर्म भा ५ गा. ८-१२
अध्रुवोदया प्रकृतियाँ	८०६	४	३४१	कर्म भा ५ गा ७
२ अनक्षर श्रुत	८२२	५	४	न सू ३६, विशे गा ५०१-५०३
अनगार चारित्र धर्म	२०	१	१५	ठा २ उ. १ सू. ७२
३ अनध्यवसाय	१२१	१	८६	रत्ना. परि १ सू. १३-१४, न्याय प्र अध्या. ३
अननुगामी अवधिज्ञान	४२८	२	२७	ठा ६ उ ३ सू. ५२६, न सू ६ से १६

१ आहार का दोष २. श्रुतज्ञान का एक भेद ३ वह ज्ञान, जिसमें वस्तु के स्वरूप का निश्चय नहीं होता।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अनानुबन्धी प्रतिलेखना	४४८	२	५३	ठा. ६ उ ३ सू ५०३, उत्त. अ. २६ गा २५
अनुयोग के दृष्टान्त बारह	७८०	४	२३८	आव. ह अ १ गा १३३,१३४, बृ नि गा. १७१,१७२
अनन्त आठ	६२०	३	१४७	अनु सू. १४६
अनन्तक दस	७७०	३	४०३	ठा. १० उ ३ सू ७३१
अनन्तक पाँच	४१७	१	४४१	ठा. ५ उ. ३ सू. ४६२
अनन्तक पाँच	४१८	१	४४२	ठा. ५ उ ३ सू. ४६२
अनन्त छह	४८८	२	१००	अनु सू. १४६ टी, प्रव. द्वा. २५६ गा १४०४
अनन्त जीविक वनस्पति	७०	१	५१	ठा ३ उ १ सू. १४१
अनन्तमिश्रितासत्यामृषा	६९९	३	३७१	ठा १० उ ३ सू ७४१, पन्न प. ११ सू. १६५, ध. अधि. ३ श्लो. ४१ टी पृ १२२
अनन्तरागत सिद्धों के अल्पबहुत्व के तेतीस बोल	९७६	७	६६	न सू. २० टी पृ १२५
१ अनन्तरागम	८३	१	६१	अनु सू. १४४
अनन्त संसारी	८	१	६	आतुर. गा. ४२, ठा २ उ २ सू ७६
अनन्तानुबन्धी कषाय	१५८	१	११८	पन्न प. १४ सू १८८, ठा. ४ सू २४९, कर्म. गा. १ गा १७,१८
अनभीप्सित साध्य धर्म विशेषण पक्षाभास	५४९	२	२९२	रत्ना परि ६ सू ४६
अनर्तित प्रतिलेखना	४४८	२	५३	ठा. ६ उ. ३ सू ५०३, उत्त. अ २६ गा २५

१. आगम का एक भेद

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अनर्थ दण्ड	३६	१	२३	ठा २ उ. १ सू ६६
अनर्थदण्ड विरमण व्रत	१२८(क)	१	६१	श्राव ह अ ६ पृ. ८२६
अनर्थ दण्ड विरमणव्रत के पाँच अतिचार	३०८	१	३०७	उपा अ १सू ७, श्राव ह अ ६ पृ ८२६,प्रव द्वा ६ गा २८२
अनर्थदण्ड विरमण व्रत निश्चय और व्यवहार से	७६४	४	२८३	आगम
अनवकांक्षाप्रत्ययाक्रिया	२६५	१	२८१	ठा २ उ.१ सू ६०, ठा ५ उ.२ सू ४१६, आव.ह अ ४ पृ ६१४
अनवस्था दोष	५६४	३	१०३	प्र मी अध्या १ आ.१ सू ३३
अनशन	४७६	२	८५	उत्त अ ३० गा ८,ठा ६ उ ३सू ५११, उव सू १६,प्रव द्वा ६ गा.२७०,
अनशन इत्वरिक के छः भेद	४७७	२	८७	उत्त अ ३० गा.१०-११, भ श २५ उ ७ सू ८०२
अनशन के दो भेद और उनके प्रभेद	६३३	३	१८५	उव सू १६, भ श. २५ उ ७ सू ८०२
अनाचार	२४४	१	२२१	पि नि. गा. १८२, ध अधि ३ श्लो ५३ टी पृ १२६
अनाचीर्ण बावन साधु के	१००७	७	२७२	दश अ ३
अनात्मभूत लक्षण	६२	१	४३	न्याय दी प्रका १
अनात्मवान् के लिये अहितकर स्थान छः	४५८	२	६१	ठा ६ उ. ३ सू ४६६
अनाथता की पन्द्रह गाथाएं	८५४	५	१३०	उत्त अ. २० गा ३८-५२
अनाथीमुनि-अशरण भा.	८१२	४	३७६	उत्त अ २०
अनाथी मुनि की कथा	८५४	५	१३०	उत्त. अ. २०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अनादि श्रुत	८२२	५	८	नं सू ४३, विशे गा. ५३७-५४८
अनादि सिद्धान्त नाम	७१६	३	३६८	अनु सू १३०
अनानुपूर्वी	११६	१	८४	अनु सू ६६, ६७, ६८
अनाबाध सुख	७६६	३	४५५	ठा १० उ ३ सू ७३७
अनाभिग्राहिक मिथ्यात्व	२८८	१	२६७	ध अधि २ श्लो २२ टी पृ ३६, कर्म भा.४ गा ५१
अनाभोग आगार	४८३	२	६७	आव ह अ ६ पृ ५८२, प्रव द्वा ४ गा २०३ टी.
अनाभोग निवर्तित क्रोध	१६४	१	१२४	ठा ४ उ.१ सू २४६
अनाभोग प्रत्यया क्रिया	२६५	१	२८१	ठा २ उ १ सू ६०, ठा ५ उ २ सू ४१६, आव ह. अ ४ पृ ६१३
अनाभोग बकुश	३६८	१	३८३	ठा ५ उ ३ सू ४४५
अनाभोगिक मिथ्यात्व	२८८	१	२६७	ध. अधि २ श्लो २२ टी. पृ ३६, कर्म. भा ४ गा ५१
अनासक्ति पर नौ गाथाएं	६६४	७	२०५	
अनाहारक	८	१	७	ठा २ उ २ सू. ७६
अनित्थंस्थ संस्थान	४६६	२	६६	भ श २५ उ ३ सू ७२४,
अनित्य भावना	८१२	४	३५६	शा भा १ प्रक १, भावना, ज्ञान प्रक २, प्रव द्वा. ६७ गा ५७२, तत्त्वार्थ अध्या. ६ सू ७
अनिदानता	७६३	३	४४४	ठा १० उ ३ सू ७५८
अनियट्टि (अनिवृत्ति) बादर सम्पराय गुणस्थान	८४७	५	८०	कर्म भा २ गा २ व्याख्या
अनिवृत्तिकरण	७८	१	५७	आव म गा. १०६-७ टी, आगम., विशे. गा १२०२-१८, प्रव. द्वा २२४ गा १३०२ टी, कर्म भा २ गा. २

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ अनिसृष्ट दोष	८६५	५	१६४	प्रव द्वा६७ गा ५६६, ध अधि. ३ श्लो २२टी पृ ३८, पिं नि गा. ६३, पि वि गा. ४, पंचा, १३गा, ६
२ अनिह्नवाचार	५६८	३	६	ध अधि १ श्लो. १६ टी पृ १८
३ अनीक	७२६	३	४१६	तत्त्वार्थ, अध्या ४ सू ४
अनुकम्पा	२८३	१	२६४	ध अधि २श्लो २२ टी पृ ४३
अनुकम्पादान	७६८	३	४५०	ठा १० उ ३ सू. ७४५
अनुकम्पा प्रत्यनीक	४४५	२	५०	भ. श ८ उ ८ सू. ३३६
अनुगामी अवधिज्ञान	४२८	२	२७	ठा ६ उ ३सू ५२६, नं सू ६-१०
अनुतट भेद	७५०	३	४३३	ठा १० उ ३ सू. ७१३ टी., पन्न. प ११ सू १८५
अनुत्तर दस केवली के	६५५	३	२२३	ठा १० उ ३ सू ७६३
अनुत्तर पाँच केवली के	३७६	१	३६१	ठा ५ उ १ सू ४१०
अनुत्तर विमान पाँच	३९६	१	४२०	पन्न प १ सू. ३८, भ. श १४ उ ७ सू ५२६
अनुत्तर विमान में उत्पन्न जीव क्या नरक तिर्यञ्च के भव करता है?	९८३	७	११२	पन्न. प १५ उ २ टी. पृ ३१६
अनुत्तर विमानवासी देव शंका होने पर किसे पूछते हैं और कहाँ से?	९८३	७	१०३	भ श ५ उ ४ सू १९६
अनुत्पन्न उपकरणोत्पादनता विनय	२३५	१	२१६	दशा द ४

१ आहार का एक दोष। २ ज्ञानाचार का भेद। ३ सैनिक देव अथवा सेनानायक देव।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अनुपशान्त क्रोध	१६४	१	१२४	ठा ४ उ १ सू २४९
अनुपालनाशुद्ध प्रत्याख्यान	३२८	१	३३७	आव ह अ. ६ पृ. ८४६, ठा ५ उ ३ सू ४६६
१ अनुप्रेक्षा	३८१	१	३९८	ठा ५ उ ३ सू ४६५
अनुप्रेक्षा (भावना) बारह	८१२	४	३५५	शा भा. १-२, भावना ज्ञान पत्र २, प्रव द्वा ६७ गा. ५७२-५७३, तत्त्वार्थ अध्या ९ सू ७
अनुभागनाम निधत्तायु	४७३	२	८०	भ श ६ उ ८ सू २५० टी ठा ६ उ ३ सू ५३६ टी
अनुभाग बन्ध	२४७	१	२३२	ठा ४ उ २ सू २९६, कर्म भा १ गा २
अनुभाव (फल) आठ कर्मों के	५९०	३	४३	पन्न प २३ सू २९२
अनुभाषण शुद्ध प्रत्याख्यान	३२८	१	३३७	ठा ५ उ ३ सू ४६६, आव ह अ ६ पृ ८४७
अनुमान	३७९	१	३९५	रत्ना. परि ३ सू १०
अनुमाननिराकृतवस्तुदोष	७२३	३	४११	ठा १० उ. ३ सू. ७४३ टी
अनुमान निराकृत साध्य धर्म विशेषण पक्षाभास	५४९	२	२९१	रत्ना. परि ६ सू. ४२
अनुमान प्रमाण	२०२	१	१६०	भ श. ५ उ ४ सू १९३, अनु सू १४४
अनुयोग के चार द्वार	२०८	१	१८५	अनु. सू. ५९
अनुयोग के चार भेद	२११	१	१९०	दश. नि. गा ३ पृ. २
अनुयोग के चार भेद	४२७	२	२६	अनु सू. ५९
अनुयोग के सात निक्षेप	५२६	२	२९२	विशे. गा. १३८५ से १३९२
अनुयोग देने वाले के अठाईस गुण	९५२	६	२८६	वृ नि.गा २४१-२४४

१ सीखे हुए सूत्रार्थ का बार बार मनन करना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अनुयोग द्वार सूत्र का संक्षिप्त विषय वर्णन	२०४	१	१७६	
अनुयोग श्रुत	६०१	६	४	कर्म भा १ गा ७
अनुयोग समास श्रुत	६०१	६	४	कर्म भा १ गा. ७
अनुस्रोतचारी भिक्षु	४११	१	४३७	ठा ५ उ ३ सू ४५३
अनुस्रोतचारी मच्छ	४१०	१	४३६	ठा ५ उ.३ सू. ४५३
अनृद्धिप्राप्त आर्य के भेद	६५३	३	२१६	पन्न. प १ सू ३७
अनेकरूपधुना प्रमाद-प्रतिलेखना	५२१	२	२५१	उत्त अ २६ गा २७
अनेकवादी	५६१	३	६१	ठा ८ उ ३ सू. ६०७
अनेक सिद्ध	८४६	५	१२०	पन्न प १ सू ७
अनेकान्तवाद पर आठ दोष और उनका वारण	५६४	३	१०२	प्रमी अध्या.१ आ १ सू.३३टी
अनैकान्तिक हेत्वाभास	७२२	३	४१०	ठा. १० उ ३ सू ७४३ टी
अन्तःशल्य मरण	८७६	५	३८३	सम १७,प्रव.द्वा.१५७गा.१००६
अन्तक्रियाएं चार	२५४	१	२३७	ठा ४ उ.१ सू. २३५
अन्तगडदसांग सूत्र का संक्षिप्त विषय वर्णन	७७६	४	१६१	
अन्तचरक	३५२	१	३६७	ठा. ५ उ १ सू. ३६६
अन्तचारी भिक्षु	४११	१	४३७	ठा ५ उ.३ सू ४५३
अन्तचारी मच्छ	४१०	१	४३६	ठा ५ उ.३ सू ४५३
अन्तरद्वीप छप्पन	१०११	७	२६७	पन्न प १सू.३७ टी, प्रव द्वा.२६२ गा.१४२०-१४२१,जी.प्रति ३ सू. १०८-११२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अन्तर द्वीपिक	७१	१	५२	ठा ३ उ १ सू १३०, पन्न.प १ सू ३७ जी प्रति ३ सू १०७
अन्तर नरकों का	५६०	२	३४१	भ श १४ उ ८ सू ५२७
अन्तरात्मा	१२५	१	८६	परमा गा १४
अन्तराय कर्म और उसके भेद	५६०	३	८१	कर्म भा १ गा.५२, पन्न प २३ सू २९३-२९४, तत्त्वार्थ.अ ८ टी. ८
अन्तराय कर्मका अनुभाव	५६०	३	८२	पन्न प २३ सू. २९२
अन्तराय कर्म के पाँच भेद व्याख्या सहित	३८८	१	४१०	कर्म भा. १ गा ५२, पन्न. प २३ सू २९३
अन्तराय कर्म के बन्ध के कारण	५६०	३	८३	भ. श ८ उ ९ सू. ३५१
अन्ताहार	३५६	१	३७१	ठा० ५ उ० १ सू ३९६
अन्तोसल्ल मरण	७६८	४	२६६	भ. श २ उ १ सू. ९१
अन्त्यकाश्यप(महावीर)	७७०	४	६	जन विद्या वोल्यूम १ न. १
[1] अन्न इलायचरक	३५३	१	३६८	ठा ५. उ १ सू ३९६
अन्नपुण्य	६२७	३	१७२	ठा. ९ उ ३ सू ६७६
अन्यत्व भावना	८१२	४	३६४, ३८२	शा भा १प्रक ५, भावना . ज्ञान प्रक. २, प्रवद्रा. ६७ गा. ५७२, तत्त्वार्थ अध्या. ८ सू. ७.
अन्यलिंग सिद्ध	८४६	५	११६	पन्न. प.१ सू. ७
अपनी ओर से किसी को भय न देना ही क्या अभयदान का अर्थ है?	९८३	७	१३१	गच्छा.अधि २.टी., सूय. श्र ६ गा २३ टी.

[1] अभिग्रह विशेष धारण करने वाला मुनि।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अपर सामान्य	५९	१	४१	रत्ना परि ७ सू १९
अपरावर्तमान प्रकृतियाँ	८०९	४	३५१	कर्म भा ५ गा १८
अपरिग्रह पर ग्यारह गाथाएं	९९४	७	१८१	
अपरिग्रह महाव्रत की पाँच भावनाएं	३२१	१	३२९	आव ह अ ४ पृ ६५८, प्रव. द्वा ७२ गा ६४०, सम २५, आचा श्रु २ चू ३ अ २४, ध अधि ३ श्लो. ४५ टी
अपरिणत दोष (आहार का दोष)	६६३	३	२४७	प्रव द्वा ६७ गा ५६८, पिं. नि गा ५२०, ध अधि ३ श्लो २२ टी पृ ४१, पचा १३ गा २६
अपरिश्रावी स्नातक निर्ग्रन्थ	३७१	१	३८७	ठा ५ सू ४४५, भ. श. २५ उ ६ सू ७५१
अपर्यवसित श्रुत	८२२	५	८	न सू ४३, विशे. गा ५३७ से ५४८
अपर्याप्तक जीव	८	१	६	ठा २ उ २ सू ७९
अपवर्तना करण	५९२	३	९५	कम्म गा. २
अपवर्तनीय आयु विषयक शंका समाधान	५९०	३	६७	तत्त्वार्थ अध्या. २ सू ५२, ठा २ उ. ३ सू. ८५ टी.
अपवाद (विशेष नियम)	४०	१	२५	बृ. नि गा ३१९, स्या. का ११ टी
अपवाद सूत्र	७७८	४	२३६	बृ उ १ नि. गा १२२१
अपश्चिम मारणान्तिकी संलेखना के ५ अतिचार	३१३	१	३१४	उपा अ १ सू. ७, ध अधि २ श्लो ६६ टी पृ. २३१
अपाय विचय धर्मध्यान	२२०	१	२०२	ठा. ४ उ. १ सू २४७,
अपायापगमातिशय	१२९(ख)	१	९६	स्या. का १ टी
१ अपार्श्वस्थता	७६३	३	४४५	ठा १० उ ३ सू ७५८
२ अपूर्वकरण	७८	१	५६	आव म गा १०६-१०७ टी., विशे गा १२०२ से १२१८, प्रव द्वा. २२४ गा १३०२ टी., कर्म. भा. २ गा २ व्याख्या, आगम.

१ ज्ञान दर्शन चारित्र की विराधना न करना। २ जीव का परिणाम विशेष।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अपूर्वकरणगुणस्थान	८४७	५	८०	कर्म. भा २ गा २ व्याख्या
अपूर्वस्थिति बन्ध	८४७	५	७६	कर्म. भा २ गा २ व्याख्या
अपौद्गलिक सम्यक्त्व	१०	१	१०	प्रव द्वा १४६ गा ६४२ टी
अप्काय	४६२	२	६४	ठा ६ उ ३ सू ४८०, दश अ ४, कर्म भा ४ गा १०
अप्पारंभा आदि-श्रावकों के विशेषण	८६०	५	१४४	उव सू ४१, सूय श्रु २ अ २ सू ३९
अप्रतिपत्ति दोष	५६४	३	१०४	प्र मी अध्या १ आ १ सू ३३ टी
अप्रतिपाती अवधिज्ञान	४२८	२	२८	ठा ६ उ ३ सू ५२६, न सू १५
अप्रतिवद्धयथालन्दिक	५२२	२	२६०	विशे गा ७
अप्रत्याख्यानावरण कषाय	१५८	१	११६	पन्न. प. १४ सू ११८, ठा ४ उ १ सू २४६, कर्म. भा १ गा १७-१८
अप्रत्याख्यानिकी क्रिया	२९३	१	२७८	ठा २ उ १ सू ६०, ठा. ५ उ २ सू. ४१९, पन्न प २२ सू २८४
अप्रथम समय निर्ग्रन्थ	३७०	१	३८५	ठा ५ उ ३ सू ४४५
अप्रमत्तसंयत गुणस्थान	८४७	५	७६	कर्म भा २ गा २
अप्रमाण दोष	३३०	१	३३६	ध अधि ३ श्लो २२ टी. पृ. ५५. पि नि गा. ६४१-६५४
अप्रमाद प्रतिलेखना छः	४४८	२	५२	ठा ६ उ. ३ सू ५०३, उत्त अ २६ गा. २५
अप्रशस्तकाय विनय के सात भेद	५०४	२	२३३	भ श २५ उ ७ सू. ८०२, ठा. ७ उ. ३ सू ५८५, उव सू. २०
अप्रशस्त मनविनय के बारह भेद	७९१	४	२७५	उव. सू २०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अप्रशस्त मन विनय के सात भेद	५००	२	२३१	भ श २५उ. ७सू. ८०२, ठा ७उ. ३ सू ५८५, उव सू २०
अप्रशस्त वचन छः	४५६	२	६२	ठा ६उ ३सू ५२७, प्रव. द्वा. २३५ गा १३११, वृ (जी) उ ६
अप्रशस्त वचन विनय के सात भेद	५०२	२	२३२	भ श २५उ ७सु ८०२, ठा ७उ ३ सू ५८५
१ अप्रावृतक	३५६	१	३७३	ठा ५उ १ सू३६६
अबद्धिक निह्नव का मत	५६१	२	३८४	विशे गा २५०६ से २५४६
अब्रह्मचर्य का स्वरूप	४६७	२	१६७	
अब्रह्मचर्य के अठारह भेद	८६३	५	४१०	आव ह अ ४ पृ ६५२
अभग्गसेन चोर की कथा	६१०	६	३७	वि अ ३
अभयकुमार की कथा पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	७४	न सू २७गा ७२, आव ह गा. ६४६
अभवसिद्धिक (अभव्यजीव)	८	१	७	ठा २उ. २सू ७६, आ प्र गा ६७
अभव्य और मोक्ष	४२४	२	६	आगम
अभव्य जीव ऊपर कहाँ तक उत्पन्न होते हैं?	६८३	७	११३	प्रव द्वा १६०गा १०१६टी, भ श १ उ २
अभव्या परिषद (अच्छेरा)	६८१	३	२७६	ठा १०उ ३सू ७७७, प्रव द्वा १३८ गा. ८८५
अभिगम पाँच	६२४	३	१६७	भ श २ उ. ३ सु १०६
अभिगम पाँच श्रावक के	३१४	१	३१५	भ. श. २ उ ५ सू १०६
अभिगम रुचि	६६३	३	३६३	उत्त अ २८ गा २३
अभिग्रह पच्चक्खाण	७०५	३	३८१	प्रव द्वा ४गा. २०२, पचा ५गा १०, आव ह अ ६ नि गा १५६७

१ ठण्ड और गर्मी के परिषह को सहन करने वाला अभिग्रह धारी साधु ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अभिमान के बारह नाम	७९०	४	२७५	भ श १२ उ ५ सू ४४६
अभिवर्धित संवत्सर	४००	१	४२६	ठा ५ उ ३ सु ४६०, प्रव द्वा १४२ गा ९०१
अभिवर्धित संवत्सर	४००	१	४२८	ठा. ५ उ ३ सू ४६०, प्रव द्वा १४२ गा ९०१
अभिषेक सभा	३९७	१	४२१	ठा ५ उ ३ सू. ४७२
अभिहृत दोष (आहार का दोष)	८६५	५	१६३	प्रव द्वा ६७ गा ५६६, ध अधि ३ श्लो २२ टी पृ ३८, पिं नि गा ९३, पिं वि गा ४, पंचा. १३ गा. ६
अमात्य (मंत्री) की पारिणामिकी बुद्धि की कथा	९१५	६	८५	त्रि प पर्व ६, न सू २७ गा ७२, आव. ह गा ९४६
अमात्य पुत्र की पारिणामिकी बुद्धि की कथा	९१५	६	९०	न सू २७ गा ७३, उत्त अ १ टी. आव ह गा ९५०
अमायाविता (सरलता)	७६३	३	४४५	ठा १० उ ३ सू ७५८
अमावस्या बारह	८०१	४	३०३	सूर्य. प्रा १० प्रा. प्रा ६ सू ३८
अमूढदृष्टि दर्शनाचार	५६९	३	८	पन्न, प. १ सू ३७ टी. गा १२८, उत्त अ २८ गा ३१
अमोसली प्रतिलेखना	४४८	२	५३	ठा ६ उ. ३ सू. ५०३, उत्त अ. २६ गा २५
अयोगी केवली गुणस्थान	८४७	५	८६	कर्म भा. २ गा २ व्याख्या
अयोग्य अठारह पुरुष दीक्षा के	८९१	५	४०६	प्रव. द्वा १०७ गा ७९०-७९१, ध. अधि ३ श्लो. ७८ टी.
अयोग्य स्त्रियां बीस दीक्षा के	८९१	५	४०९	प्रव द्वा. १०८ गा. ७९२, ध अधि ३ श्लो ७८ टी पृ ३
अरसाहार	३५६	१	३७१	ठा ५ उ. १ सू ३९६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अरिहन्त	२७४	१	२५२	भ. मंगलाचरण
अरिहन्त	४३८	२	४५	ठा.६उ.३सू.४६१,पन्नप १सू ३७
अरिहन्त देव की वाणी के पैंतीस अतिशय	९७६	७	७१	सम ३५ टी, रा सु ४टी, उव सू.१०टी
अरिहन्त देव के चौंतीस अतिशय	९७७	७	६८	सम ३४,स श द्वा ६७
अरिहन्त भगवान के अष्ट महाप्रातिहार्य	७८२	४	२६०	सम ३४,स. श. द्वा. ६६
अरिहन्त भगवान् के चार मूलातिशय	१२९(ख)	१	९६	स्या का. १ टी.
अरिहन्त भगवान् के बारह गुण	७८२	४	२६०	सम ३४, स श. द्वा ६६ स्या का १ टी.
अरिहन्त भगवान् में नहीं पाये जाने वाले अठारह दोष दो प्रकार से	८८७	५	३९७	प्रव द्वा ४१ गा.४५१-४५२, स. श द्वा ६६ गा १९१-१९२
अरिहन्त मंगलकारी, लोकोत्तम और शरण रूप है	१२९(क)	१	९४	आव.ह.अ४ पृ. ५६६
अरूपी	६०	१	४२	तत्त्वार्थ. अध्या. ५ सू.३
अरूपी अजीव के तीस भेद	६३३	३	१८१	आगम., पचीस बोल का थोकड़ा, पन्न.प.१सू.३,उत्त.अ.३६गा.४-९
अरूपी अजीव के दस भेद	७५१	३	४३४	पन्न.प १३,सू,जी.प्रति १ सू ४
अर्जुनमाली (निर्जराभावना)	८१२	४	३८६	अंत. व ६ अ. ३
अर्जुनमाली की कथा	७७६	४	१९६	अंत व ६ अ ३
अर्थ कथा	९७	१	६९	ठा ३उ.३सू. १८९

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अर्थक्रिया छः द्रव्यों की	४२५	२	१८	आगम
अर्थ दण्ड	३६	१	२३	ठा २ उ १ सू ६६
अर्थधर पुरुष	८४	१	६२	ठा ३उ ३ सू १६६
अर्थ योनि तीन	१२६	१	६०	ठा ३ उ ३ सू १८५ टी
अर्थशास्त्र की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२८०	नं सू २७ गा ६५ टी
अर्थश्रुत धर्म	१६	१	१५	ठा २ उ १ सू. ७२
अर्थागम	८३	१	६०	अनु सू १४४
अर्थाचार	५६८	३	६	ध अधि १ श्लो १६टी पृ १८
अर्थाधिकार	४२७	२	२६	अनु सू ७०
अर्थावग्रह	५८	१	४०	न सू. २८, कर्म.भा १ गा ५
अर्थावग्रह के छः भेद	४२६	२	२८	न सू ३०, ठा ६ उ ३ सू ५२५, तत्वार्थ अध्या. १
अर्द्धपर्यङ्का	३५८	१	३७२	ठा ५उ १सू ३६६टी, ठा ५उ १ सू ४००
अर्द्धपेटा गोचरी	४४६	२	५१	ठा ६सू ५१४, उत्त अ. ३० गा १६, प्रव द्वा ६७गा ७४५, ध अधि ३ श्लो. २२टी पृ. ३७
अर्धचक्रवाल श्रेणी	५४४	२	२८४	ठा ७उ ३सू. ५८१, भ.श २५उ ३ सू ७३०
अर्धनाराच संहनन	४७०	२	७०	पन्नप २३ सु २६३, ठा ६ उ ३ सु ४६४, कर्म भा.१ गा.३८
अर्पितानर्पितानुयोग	७१८	३	३६३	ठा.१० उ ३ सू ७२७
अलङ्कारिका सभा	३६७	१	४२२	ठा ५उ ३ सू ४७२
अलीक वचन	४६६	२	६२	ठा.६उ.३सू ५२७, प्रव द्वा.२३५ गा १३२१, बृ. (जी.) उ ६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अलोकाकाश	३४	१	२३	ठा २ उ १ सू ७४
अल्पआयु के तीन कारण	१०५	१	७४	ठा ३ उ.१ सू.१२५, भ श ५ उ.६ सू २०४
अल्पबहुत्व स्थावर जीवों की अवगाहना की	६६५	७	२५२	भ. श. १६ उ.३ सू. ६५१
अल्पबहुत्व के तेतीस बोल अनन्तरागम सिद्धों के	६७६	७	६६	नं. सू २०-टी. पृ. १२५
अल्पबहुत्व चार संज्ञाओं का चार गतियों में	१४७	१	१०७	पन्न प. ८ सू० १४८
अल्पबहुत्व छः काय का	४६४	२	६५	जी. प्रति २ सू ६२, पन्न प ३ द्वा ४
अल्पबहुत्व जीव के चौदह भेदों का	८२५	५	१८	जी प्रति ४ सू २२५, प्र. सं भा. २ पन्न प ३ द्वा. ३, १८, १६
अल्पबहुत्व वेदों का	५९९	३	१०९	जी प्रति. २ सू. ६२
अवगाहनानाम निधत्तायु	४७३	२	८०	भ. श. ६ उ ८ सू. २५०; ठा. ६ उ ३ सू ५३६
अवगाहना नारकी जीवों की	५६०	२	३१६	जी. प्रति. ३ सू. ८६, प्रव द्वा. १७६ गा १०७७-१०८०
अवग्रह	२००	१	१५८	ठा. ४ उ ४ सू ३६४
अवग्रह के दो भेद	५८	१	४०	न. सू. २८, कर्म. भा. १ गा ४-५
अवग्रह के दो भेद	४२९	२	२८	नं सू २८, तत्त्वार्थ. अध्या. १
अवग्रह ज्ञान के बारह भेद	७८७	४	२६९	ठा० ६ उ० ३ सू ५१० टी; विशे. गा ३०७, तत्त्वार्थ अध्या. १ सू. १६
अवग्रह पाँच	३३४	१	३४४	भ. श १६ उ. २ सू ५६७, प्रव. द्वा ८५ गा. ६८१, आचा. श्रु २. चू. १ अ ७ उ. २ सू. १६२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अवग्रह प्रतिमाएं सात	५१८	२	२४८	आचा श्रु २ चू १ अ ७ उ २ सू १६
अवधिज्ञान	३७५	१	३९१	ठा ५ उ ३ सू ४६३, कर्म भा १ गा ४, न. सू १
अवधिज्ञान और मनः पर्यय ज्ञान में क्या अन्तर है	९१८	६	१३७	भ श १३ उ २ टी, तत्त्वार्थ अध्या. १ सू. २६
अवधिज्ञान के भेद	१३	१	११	ठा. २ उ. १ सू ७१
अवधिज्ञान के छः भेद	४२८	२	२७	ठा ६ उ ३ सू ५२६, नं सू ९ से १५
अवधिज्ञान दर्शन मद	७०३	३	३७४	ठा १० उ. ३ सू ७१०, ठा ८ उ ३ सू. ६०६
अवधिज्ञान नारकी जीवों का	५६०	२	३२३	जी प्रति ३ सू ८८ प्रव० द्वा १७६ गा १०८८
अवधिज्ञान के चलित होने के पाँच बोल	३७७	१	३९२	ठा० ५ उ० १ सू० ३६४
अवधिज्ञानसाकारोपयोग	७८६	४	२६८	पन्न० प० २६ सू० ३१२
अवधिज्ञान से मनःपर्यय ज्ञान अलग क्यों कहा गया?	९१८	६	१३७	भ श १ ३ उ ३ टी, तत्त्वार्थ. अध्या. १ सू २६
अवधि ज्ञानावरणीय	३७८	१	३९४	ठा ५ उ. ३ सू ४६४, कर्म. भा १ गा ९
अवधिज्ञानी जिन	७४	१	५३	ठा० ३ उ० ४ सू० २२०
अवधिदर्शन	१९९	१	१५८	ठा ४ उ ४ सू ३६५, कर्म. भा.४ गा. १२
अवधिदर्शन अनाकारोपयोग	७८६	४	२६९	पन्न० प० २६ सू० ३१२
अवधिमरण	८७९	५	३८२	सम. १७, प्रव. द्वा. १५७ गा १००९
अवधिलब्धि	८५४	६	२९१	प्रव. द्वा. २७० गा. १४९२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अवन्दनीय साधु पाँच	३४७	१	३५७	आव ह अ ३ नि गा ११०७-८ पृ ५१६ प्रव द्वा २गा.१०३-२३
अवयव से नाम	७१६	३	३६८	अनु सू १३०
अवलित प्रतिलेखना	४४८	२	५३	ठा ६ उ. ३ सू ५०३, उत्त अ. २६ गा २५
अवसन्न साधु	३४७	१	३५८	आव ह अ.३ नि गा ११०७-८ पृ ५१६ प्रव द्वा.२गा १०६-८
अवसर आदि नौ बातों का जानकार होना साधु के लिये आवश्यक है	६४१	३	२१२	आचा श्रु १ अ २ उ ५ सू ८८
अवसर्पिणी	३३	१	२२	ठा० २उ० १सू० ७४
अवसर्पिणी काल के छः आरे	४३०	२	२६	ज वक्ष २,ठा ६उ ३सू४६२,भ श ७ उ.६सू २८७-२८८
अवस्था दस	६७८	३	२६७	ठा १० उ ३ सू ७७२
अवान्तर सामान्य	५६	१	४१	रत्ना परि. ७ सू १६
अवाय	२००	१	१५६	ठा ४ उ ४ सू ३६४
अविनीत के चौदह लक्षण	८३५	५	३०	उत्त.अ. ११ गा. ६-६
अविरत सम्यग्दृष्टि गुण०	८४७	५	७४	कर्म भा २ गा, २
अविरति आश्रव	२८६	१	२६८	ठा ५उ.२ सू. ४१८, सम. ५
अविरुद्धानुपलब्धि हेतु के सात भेद	५५६	२	२६८	रत्ना. परि ३ सू ६५-१०२
अविरुद्धोपलब्धि रूप हेतु के छः भेद	४६५	२	१०४	रत्ना. परि. ३ सू.६८-८२
अवैदिक दर्शनों की सत्रह बातों से परस्पर तुलना	४६७	२	२२३	

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अव्यक्त दृष्टि नामक तीसरे निह्नव का मत	५६१	२	३५६	विशे, गा २३५६-२३८८
अव्यक्त स्वप्न दर्शन	४२१	१	४४५	भग १६ उ ६ सू ५७७
अव्यवस्था दोष	५६४	३	१०४	प्र मी अध्या.१ आ.१ सु ३३
अव्यवहार राशि	६	१	८	आगम०
अव्यवहार राशि	४२५	२	२१	आगम०
अव्याप्ति	१२०	१	८४	न्याय दी प्रका १
अव्याप्ति दोष	७२२	३	४०८	ठा. १०उ.३ सू ७४३ टी
अशक्य बोल छः	४६०	२	१०१	ठा ६ उ ३ सू. ४७६
अशबल स्नातक	३७१	१	३८६	ठा ५ उ ३ सू ४४५, भ श २५ उ.६ सू, ७५१
'अशरण' पर दस गाथाएं	६६४	७	२२२	
अशरण भावना	८१२	४	३५८, ३७६	शा भा १प्रक २, भावना.,ज्ञान. प्रक २,प्रव.द्वा.६७ गा.५७२, तत्त्वार्थ अध्या ६ सू.७
अशुचि भावना	८१२	४	३६५, ३८४	शा.भा १प्रक.६,भावना.,ज्ञान: प्रक.२,प्रव०द्वा ६७गा ५७२, तत्त्वार्थ अध्या ६ सू.७
अशुभ दीर्घायु के ३ कारण	१०६	१	७४	ठा० ३ उ० १ सू० १२५
अशुभ नाम कर्म चौदह प्रकार से भोगा जाता है	८३६	५	३३	पन्न प. २३ सु २९२
अशुभ भावना पाँच	४०१	१	४२८	प्रव. द्वा ७३ गा. ६४१, उत्त. अ ३६ गा. २६१-२६४
[1] अश्लोक भय	५३३	२	२६८	ठा ७ उ ३ सू ५४६, सम.

[1] अपकीर्ति का भय।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अश्वमित्र नामक चौथा निह्नव और उसका मत	५६१	२	३२८	विशे गा २३८९-२४२३
अश्वों का दृष्टान्त–ज्ञाता धर्मकथा का १७वां अध्ययन	६००	५	४६६	
अष्ट महाप्रातिहार्य अरिहन्त भगवान् के	७८२	४	२६०	सम.३४, स श द्वा ६७
१ अष्टशत सिद्ध आश्चर्य	६८१	३	२९०	ठा १० उ ३ सू ७७७, प्रव. द्वा १३८ गा ८८६
अष्ट स्पर्शी	६१	१	४२	भ.श.१२ उ.५ सू. ४५०
असईजणपोसणया कर्मादान	८६०	५	१४६	उपा अ १ सू ७ भ.श ८ उ ५ सू ३३०, आव ह अ.६ पृ.८२८
असंक्लेश दस	७१५	३	३८९	ठा १० उ.३ सू ७३९
असंख्यातजीविक वनस्पति	७०	१	५१	ठा.३ उ.१ सू १४१
असंख्येय के नौ भेद	६१९	३	१४६	अनु सू. १४६ टी
असञ्ज्ञिश्रुत	८२२	५	६	न सू.४०, विशे गा ५०४ से ५२६
असञ्ज्ञी	८	१	६	ठा २ उ २ सू ७९
असंभव	१२०	१	८५	न्याय. दी प्रका. १
असंभव दोष	७२२	३	४०८	न्याय.दी.प्रका १, रत्ना. परि.१ सू २ टी
असंयत	६९	१	५०	भ. श ६ उ. ३ सू २३७
असंयतपूजाआश्चर्य (अच्छेरा)	६८१	३	२९०	ठा १० उ ३. सू ७७७, प्रव. द्वा १३८ गा. ८८६
असंयती अविरति को प्रासुक या अप्रासुक आहार देने से	९८३	७	१३०	भ श ८ उ ६ सू ३३२

१ एक समय में उत्कृष्ट अवगाहना वाले १०८ जीवों का सिद्ध होना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
एकान्त पाप होना भगवती में किस अपेक्षा से कहा है?				
असंयम पाँच	२९७	१	२८३	ठा.५ उ.२ सू.४२९ ४३०
असंवर (आश्रव) दस	७११	३	३८६	ठा. १० उ.३ सू ७०९
१ असंवृत बकुश	३६८	१	३८३	ठा. ५ उ. ३ सू ४४५
असंस्कृत अ०की १३ गाथाएं	८१६	४	४०६	उत्त अ. ४
असज्झाय चौतीस	९६८	७	३५	ठा ४ उ २ सू २८५ ठा.१० उ.३ सू. ७१४, प्रव द्वा २६८ गा १४५०-१४७१, व्यव.भाष्य उ.७ गा.२६६-३१९, आव ह अ ४ गा.१३२१ म १३६०
असज्झाय बत्तीस	९६८	७	२८	
असत्य का स्वरूप	४९७	२	१९६	
असत्य भाषा	२६९	१	२४९	पन्न प. ११. सू. १६१
असत्यवचन के चार प्रकार	२७०	१	२४९	दश अ.४ सू ४ टी.
असत्य वचन दस	७००	३	३७१	ठा १० उ.३ सू.७४१, पन्न.प ११ सू १६५, ध. अधि.३ श्लो ४१ टी. पृ १२२
असत्यामृषा भाषा	२६९	१	२४९	पन्न. प ११ सू. १६१
असत्यामृषा(व्यवहार) भाषा के बारह भेद	७८८	४	२७२	पन्न प ११ सू. १६५
असमाधि के बीस स्थान	९०६	६	२१	सम.२०, दशा. द १
असातावेदनीय	५१	१	३०	पन्न प २३ सू.२९३, कर्म भा १ गा १२ व्याख्या
असिकर्म	७२	१	५२	जी प्रति.३ उ १ सू १११ तन्दु सू १४-१५ पृ.४०

१ शरीर और उपकरण की विभूषा करने वाला साधु।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
असिद्ध हेत्वाभास	७२२	३	४०६	ठा १०उ.३सू. ७४३ टी.
असुरकुमारोंकेदसअधिपति	७३१	३	४१७	भ. श.३ उ. ८सू. १६६
अस्तिकाय के पाँच भेद	२७७	१	२५४	ठा ५ उ ३ सू. ४४१
अस्तिकाय धर्म	७६	१	५४	ठा ३ उ ३ सू १८८
अस्तिकाय धर्म	६६२	३	३६२	ठा १० उ ३ सू. ७६०
अस्तिकाय पाँच	२७६	१	२५३	उत्त अ.२८ गा.७-१२,ठा.५ उ ३ सू ४४१
अस्तित्व गुण	४२५	२	१६	आगम,द्रव्य त अध्या.११ श्लो २
अस्ति सुख	७६६	३	४५४	ठा १० उ.३ सू ७३७
अस्वाध्यायआन्तरिक्षदस	६६०	३	३५६	ठा १०उ ३सू ७१४,प्रव द्वा २६८ गा १४५०-७१,व्यव.भाष्य उ ७
अस्वाध्यायऔदारिकदस	६६१	३	३५८	ठा १० उ ३ सू ७१४
अस्वाध्याय का सवैया	*	५	४७५	
अस्वाध्याय चौतीस	९६८	७	३५	ठा.४उ २ सू.२८५, ठा.१०उ ३ सू ७१४, प्रव द्वा. २६८ गा.१४५०-१४७१व्यव भाष्य उ ७ गा २६६-३१८, आव ह अ ४ गा १३२१ से १३६०
अस्वाध्याय बत्तीस	९६८	७	२८	(ऊपर के समान)
अहंकार के दस कारण	७०३	३	३७४	ठा १० उ ३ सू. ७१०, ठा ८ उ ३ सू.६०६
अहिंसा अणुव्रत	३००	१	२८८	आव ह अ.६पृ ८१७, ठा ५उ १ सू ३८९,उपा अ.१सू ६,ध. अधि.२ श्लो.२५ पृ.५७
अहिंसा अणुव्रत (स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत) के पाँच अतिचार	३०१	१	२९०	आव ह अ ६पृ ८१८,उपा अ १ सू.७, ध अधि.२ श्लो ४३ पृ १००
अहिंसा और कायरता	४९७	२	१९३	

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अहिंसा की व्यावहारिकता	४९७	२	१९५	
अहिंसा(दया)पर १७गाथा	९९४	७	१६७	
अहिंसा भगवती की ८ उपमा	६२२	३	१५०	प्रश्न. संवरद्वार १ सू २२
अहिंसा भगवती के साठ नाम	६२२	३	१५१	प्रश्न संवरद्वार १ सू २१
अहिंसा महाव्रत की पाँच भावनाएं	३१७	१	३२४	आव ४ अ ४ पृ ६५८, प्रव द्वा. ७२ गा ६३६, सम २५, आचा श्रु. २ चू ३ अ २४ सू. १७९, ध अधि ३ श्लो ४५ टी पृ १२५
अहिंसावाद	४९७	२	२१०	
अहोरात्रिकी ग्यारहवीं भिक्खुपडिमा	७९५	४	२९०	सम १२, भ श २ उ १ सू ९३ टी., दशा द ७
अर्हल्लब्धि	९५४	६	२९४	प्रव द्वा. २७० गा १४९६

आ

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आँवले का दृष्टान्त पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	११३	न सू २७ गा ७४, आव ह गा ९५१
आउंटण पसारण आगार	५८७	३	४१	आव ह अ ६ पृ ८५२, प्रव द्वा ४ गा. २०३
आउर पच्चक्खाणपइण्णा	६८९	३	३५३	द प.
आकाश	३४	१	२२	ठा २ उ. १ सू ७४
आकाश के सत्ताईस नाम	९४८	६	२४१	भ श. २० उ. २ सू. ६६४
आकाश द्रव्य	४२४	२	३	आगम, उत्त अ. ३६ गा. ६
आकाश सम्बन्धी दस अस्वाध्याय	६९०	३	३५६	ठा. १० उ ३ सू ७१४, प्रव द्वा. २६८ गा १४५० से ७१ व्यव भाष्य उ. ७
आकाशास्तिकाय के भेद	२७७	१	२५५	ठा ५ उ ३ सू ४४१
आक्रान्त वायु	४१३	१	४३८	ठा. ५ उ ३ सू ४४४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आक्षेपणी कथा की व्याख्या और भेद	१५४	१	११२	ठा ४ उ.२ सू.२८२, दश.अ ३ नि गा १८४-१८८
आख्यायिका निःसृत असत्य	७००	३	३७२	ठा १० उ ३ सू. ७४१, पन्न प ११ सू. १६५, ध अधि. ३ श्लो ४१ टी. पृ १२२
आगति नारकी जीवों की	५६०	२	३२७	प्रव. द्वा १८२ गा १०८१-८३
आगम	३७९	१	३८८	रत्ना. परि ४ सू १,२
आगम की व्याख्या, भेद	८३	१	६०	रत्ना. परि ४ सू १,२ अनु सू १४४
आगम निराकृत साध्य धर्म विशेषण पक्षाभास	५४९	२	२९१	रत्ना परि ६ सू ४३
आगम पैंतालीस	९९७	७	२६०	जै ग्र., अभि रा भा १ प्रस्तावना
आगम प्रमाण	२०२	१	१६१	भग ५ उ ४ सू १९३, अनु सू १४४
आगम बत्तीस	९९६	७	२१	
आगम व्यवहार	३६३	१	३७५	ठा ५ उ २ सू ४२१, भ श ८ उ ८ सू ३४०
आगम व्यवहार के छः प्रकार	३६३	१	३७५	ठा ५ उ २ सू ४२१, भ श ८ उ ८ सू ३४०
आगामी उत्सर्पिणी के बारह चक्रवर्ती	७८४	४	२६५	सम १५९
आगामी उत्सर्पिणी के सात कुलकर	५११	२	२३९	ठा. ७ उ ३ सू ५५६, सम १५९
आगामी चौबीस तीर्थंकर ऐरवत क्षेत्र के	९३१	६	१९७	सम १५८, प्रव द्वा ७ गा ३०० से ३०२
आगामी चौबीस तीर्थंकर भरत क्षेत्र के	९३०	६	१९६	सम १५८, प्रव द्वा ७ गा २९३-२९५

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आगार आठ आयंबिल के	५८८	३	४१	आव ह.अ ६ पृ ८५६, प्रव द्वा ४ गा. २०४
आगार आठ एकाशन के	५८७	३	४०	आव ह अ ६ पृ ८५०, प्रव द्वा ४ गा. २०३
आगार छः पोरिसि के	४८३	२	६७	आव.ह अ ६ पृ ८५०, प्रव द्वा ४ गा २०३
आगार छः समकित के	४५१	२	५८	उपा अ. १ सू ८, आव. ह. अ ६ पृ ८१०, ध अधि २ श्लो २२ टी.पृ. ४१
आगार नौ निव्विगई पच्चक्खाण के	६२६	३	१७४	आव ह.अ ६ पृ ८५४ प्रव द्वा ४ गा २०५
आगार बारह तथा चार कायोत्सर्ग के	८०७	४	३१६	आव ह. अ ५ पृ ७७८
आगार सात एगट्ठाण (एक स्थान) के	५१७	२	२४७	आव.ह अ.६ पृ.८५,३टी, प्रव द्वा ४ गा० २०४
आगार सात दो पोरिसि के	५१६	२	२४७	आव ह अ ६ पृ ८५३, प्रव द्वा ४ गा. २०३
आचाम्लिक (आयंबिलिए)	३५५	१	३७०	ठा ५ उ १ सू. ३९६
आचार पाँच	३२४	१	३३२	ठा ५ उ. २ सू ४३२, ध अधि ३ श्लो ४४ पृ १४०
आचार प्रकल्प के पाँच भेद	३२५	१	३३३	ठा ५ उ २ सू. ४४३
आचार विनय के चार भेद	२३०	१	२१४	दशा दं ४
आचार समाधि के चार भेद	५५३	२	२९४	दश अ ९ उ. ४
आचार सम्पदा	५७४	३	१२	दशा दं ४, ठा० ८ उ० ३ सू. ६०१
आचारांग सूत्र का विषय	७७६	४	६७	
आचारांग सूत्र के नवें अ० के चौथे उ० की १७ गाथाएं	८७८	५	३८०	आचा. श्रु. १ अ. ९ उ. ४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आचारांगसूत्र के नवें अ० के चौथे उ० की १७ मूल गाथाएं	८७८	५	४८४	आचा. श्रु.१ अ.९ उ.४
आचारांग सूत्र के नवें अ० दूसरे उ० की सोलह गाथाएं	८७४	५	४८२	आचा श्रु. १ अ.९ उ.२
आचारांग सूत्र नवें अ० के दूसरे उ० की १६ मूल गाथाएं	८७४	५	४८१	
आचारांग सूत्र के नवें अ० के पहले उ० की तेईस गा०	९२२	६	१९६	आचा. श्रु.१ अ.९ उ.१
आचारांग सूत्र प्रथम श्रुतस्कन्ध के इकावन उद्देशे	१००५	७	२७१	सम. ५१
आचार्य	२७४	१	२५२	भ. मंगलाचरण
आचार्य उपाध्याय के गच्छ में पाँच कलह स्थान	३४४	१	३५५	ठा. ५ उ. १ सू. ३९९
आचार्य उपाध्याय के गण से निकलने के पाँच कारण	३४३	१	३५४	ठा.५ उ.२ सू. ४३६
आचार्य उपाध्याय के विशिष्ट पाँच अतिशय	३४२	१	३५३	ठा. ५ उ.२ सू. ४३८
आचार्य उपाध्याय के सात संग्रह स्थान	५१४	२	२४२	ठा.५ उ १ सू.३९९, ठा.७ उ.१ सू. ५४४
आचार्य की ऋद्धि के ३ भेद	१०२	१	७१	ठा. ३ उ. ४ सू. २१४
आचार्य के छः कर्त्तव्य	४५१	२	५५	ठा. ७ उ. ३ सू. ५७० टी
आचार्य के छत्तीस गुण	९८२	७	९४	प्रव. द्वा. ६४ गा. ५४१-५४९
आचार्य के तीन भेद	१०३	१	७२	रा. सू. ७७
आचार्य के पाँच प्रकार	३४१	१	३५२	ध. अधि. ३ श्लो. ४६ टी. पृ. ११८
आचार्य पदवी	५१३	२	२३९	ठा. ३ उ. ३ सू. १७७ टी.

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आच्छेद्य दोष	८६५	५	१६३	प्रव द्वा ६७ गा ५६६, ध. अधि. ३ श्लो. २२ टी पृ ३८ पि नि गा. ९३, पि वि गा ४, पंचा. १३ गा ६
आजीव दोष	८६६	५	१६४	प्रव द्वा ६७ गा ५६७, ध अधि ३ श्लो. २२ टी पृ ४०, पि नि गा ४०८ पि वि गा ५८, पंचा १३ गा १८
आजीवक के १२ श्रमणोपा०	७९३	४	२७९	भ. श ८ उ. ५ सू ३३०
आजीविक श्रमण	३७२	१	३८७	प्रव द्वा ९४ गा. ७३१
आज्ञापनिकी या आनायनी (आणवणिया) क्रिया	२९५	१	२८०	ठा २ उ १ सू ६०, ठा ५ उ २ सू ४१९, आव ह अ ४ पृ ६१३
आज्ञा रुचि	६९३	३	३६३	उत्त. अ २८ गा २०
आज्ञाविचय धर्मध्यान	२२०	१	२०१	ठा ४ उ १ सू. २४७
आज्ञा व्यवहार	३६३	१	३७६	ठा ५ उ. २ सू ४२१, भ श ८ उ ८ सू ३४०
आठ अक्रियावादी	५९१	३	९०	ठा. ८ उ ३ सू ६०७
आठ अनन्त	६२०	३	१४७	अनु सू. १४६
आठ आगार आयम्बिल के	५८८	३	४१	आव ह अ. ६ पृ ८५६, प्रव द्वा. ४ गा. २०४
आठ आगार एकाशन के	५८७	३	४०	आव. ह अ. ६ पृ ८५३ प्रव द्वा ४ गा २०३
आठ आत्मा	५९३	३	९५	भ श. १२ उ. १० सू ४६७
आठ आयुर्वेद	६००	३	११३	ठा. ८ उ ३ सू. ६११
आठ उपदेश योग्य बातें	५८५	३	३९	आचा श्रु. ६ उ. ५ सू. १९६
आठ उपमा अहिंसा की	६२२	३	१५०	प्रश्न. संवर द्वा १ सू. २२
आठ उपमा संघ की	६२३	३	१५६	नं पीठिका गा. ४-१७
आठ करण	५९२	३	९४	कम्म. गा. २

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आठ कर्म	५९०	३	४३	विशे गा १६०६-१६४८, तत्त्वार्थ अध्या ८, कर्म भा. १, भ श ८ उ ६ सू ३५१, भ श १ उ ४, उत्त अ ३३, पन्न प २३, द्रव्य लो. स १०
आठ कर्मों का क्षय करने वाले महात्मा यहाँ की स्थिति पूरी करके कहाँ उत्पन्न होते हैं?	९८३	७	११७	उव सू ४१
आठ कर्मों की स्थिति	५९०	३	४३-९०	पन्न प २३ सू २९४, तत्त्वार्थ अध्या ८ सू १५ से २१, उत्त अ. ३३
आठ कर्मों के अनुभाव	५९०	३	४३-९०	पन्न प २३ सू २९२
आठ कर्मों के बन्ध के कारण	५९०	३	४३-९०	भ० श० ८ उ० ९ सू० ३५१
आठ कर्मों के भेद प्रभेद	५९०	३	४३-९०	पन्न० प २३ सू ३९३, उत्त अ. ३३ कर्म भा १, तत्त्वार्थ अध्या ८ सू ५-१४
आठ कारण झूठ बोलने के	५८२	३	३७	साधु प्र महाव्रत २
आठ कृष्ण राजि	६१६	३	१३३	ठा ८ उ ३ सू ६२३, भ. श. ६ उ ५ सू २४२, प्रव द्वा २६७ गा १४४१ से १४४४
आठ गण	५९६	३	१०८	पिंगल, छ.
*आठ गणधर पार्श्वनाथ के	५६५	३	३	ठा ८ उ ३ सू ६१७, सम. ८

* ठाणांग सूत्र एवं समवायांग सूत्र के मूल पाठ में भगवान् पार्श्वनाथ के आठ गणधर बतलाये हैं किन्तु हरिभद्रीयावश्यक गाथा २६६ से २६९ में, प्रवचन सारोद्धार द्वार १५ में तथा सप्ततिशतस्थान वृत्ति द्वार १११ में भगवान् पार्श्वनाथ के दस गणधर होना बतलाया है। ठाणांग और समवायांग के टीकाकार श्री अभयदेवसूरि ने भी टीका में दस गणधर का होना माना है। मूल पाठ में दी हुई आठ की संख्या का सामञ्जस्य करने के लिये उन्होंने टीका में यह खुलासा किया है कि अल्प आयु होने के कारण सूत्रकार ने दो गणधरों की विवक्षा न कर आठ ही गणधर बतलाये हैं।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आठ गणि सम्पदा	५७४	३	११	दशा. द ४, ठा ८ उ ३ सू. ६०१
आठ गुण आलोयणा करने वाले के	५७६	३	१६	ठा. ८ उ. ३ सू ६०४, भ. श. २५ उ. ७ सू ७९९
आठ गुण आलोयणा देने वाले साधु के	५७५	३	१५	ठा ८ उ ३ सू ६०४, भ. श. २५ उ ७ सू ७९९
आठ गुण शिक्षा शील के	५८४	३	३८	उत्त. अ. ११ गा. ४-५
आठ गुण सिद्ध भगवान् के	५६७	३	४	अनु. सू १२६ टी. गा १, सम ३१, प्रव. द्वा. २७६ गा. १५९३-९४
आठ गुण साधु और सोने के	५७१	३	८	पचा. १४ गा ३२-३४
आठ ज्ञानाचार	५६८	३	५	ध. अधि. १ श्लो. १९ टी पृ १८
आठ तरह के संकेत पच्चक्खाण में	५८९	३	४२	आव. ह. अ. ६ नि. गा. १५७८, प्रव. द्वा ४ गा. २००
आठ तृण वनस्पतिकाय	६१२	३	१२९	ठा ८ उ ३ सू ६१३
आठ त्रस	६१०	३	१२७	दश. अ ४, ठा. ८ उ. ३ सू. ५९५
आठ दर्शन	५९८	३	१०९	ठा. ८ उ. ३ सू. ६१८
आठ दर्शनाचार	५६९	३	६	पन्न. प १ सू. ३७ गा. १२८, उत्त. अ. २८ गा. ३१
आठ दोष अनेकान्तवाद पर	५९४	३	१०२	प्रमी मध्या १ आ. १ सू. ३२
आठ दोष चित्त के	६०३	२	१२०	कभा २ श्लो. १९०-१९१
आठ दोष साधु को वर्जनीय	५८३	३	३८	उत्त. अ. २४ गा. ९
आठ नाम ईषत्प्राग्भारा के	६०९	३	१२६	पन्न प. २ सू ५४, ठा. ८ उ ३ सू. ६४[illegible]
आठ पुद्गल परावर्तन	६१८	३	१३६	कर्म. भा ५ गा. ८६-८८
आठ पृथ्वियाँ	६०८	३	१२६	ठा. ८ उ. ३ सू. ६४८
आठ प्रकार से वेद का अल्प बहुत्व	५९९	३	१०९	जी प्रति. २ सू. ६२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
¹आठ प्रभावक	५७२	३	१०	प्रव. द्वा १४८ गा. ९३४
आठ प्रमाद	५८०	३	३६	प्रव. द्वा २०७ गा १२०७-८
आठ प्रवचन माता	५७०	३	८	उत्त अ. २४. गा १, सम. ८
आठ प्रायश्चित्त	५८१	३	३७	ठा. ८ उ.३ सू. ३०५
आठ बातें छद्मस्थ नहीं देख सकता	६०२	३	१२०	ठा ८ उ. ३ सू. ६१०
आठ भेद गन्धर्व के	६१३	३	१२९	उव सू २४, पन्न.प.२ सू ४७
आठ भेद प्रतिक्रमण के	५७९	३	२१	आव ह अ ४ नि गा. १२३३-४२
आठ मद	७०३	३	३७४	ठा. ८ उ. ३ सू. ६०६, ठा. १० उ ३ सू ७१०
आठ महाग्रह	६०४	३	१२१	ठा. ८ उ. ३ सू. ६१२
आठ महानिमित्त	६०५	३	१२१	ठा ८ उ. ३ सू ६०८, प्रव द्वा २५७ गा १४०५ से १४०९
आठ मांगलिक पदार्थ	५६४	३	३	उव. सू. ४ टी, रा सू. १४
आठ योगांग	६०१	३	११४	यो., रा यो
आठ योनि संग्रह	६१०	३	१२७	दश अ. ४, ठा. ८ उ ३ सू. ५९५
आठ राजा भगवान् महावीर के पास दीक्षित हुए	५६६	३	३	ठा ८ उ ३ सू. ६२१
आठ रुचक प्रदेश	६०७	३	१२५	आचा श्रु १ अ. १ उ १ टी नि गा ४२, आगम., भ श. ८ उ ९ सू. ३४० टी., ठा. ८ उ. ३ सू ६२४
आठ लोकस्थिति	६२१	३	१४८	भ श. १ उ. ६, ठा ८ उ. ३ सू. ६००
आठ लोकान्तिक देव और उनके विमान	६१५	३	१३२	भ. श ६ उ ५ सू २४३, ठा. ८ उ. ३ सू. ६२३
आठ वचन विभक्तियां	५९५	३	१०५	ठा. ८ उ. ३ सू ६०६, अनु सू. १२८ सि. कारक प्रकरण

¹ धर्म प्रचार में सहायक होने वाला।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आठ वर्गणा	६१७	३	१३४	विशे. गा. ६३१ से ६३७
आठ व्यन्तर देव	६१४	३	१३०	ठा ८ उ ३ सू ६५४, जी. प्रति ३ सू १२१, पंन्न प २ सू ४७-४६, पन्न.प १ ४ सू. १००
आठ संख्या प्रमाण	६१६	३	१४१	अनु. सू. १४६
आठ संयम	५७३	३	११	तत्त्वार्थ अध्या ६ सू ६
आठ संपदा	५७४	३	११	दशा.द४,ठा ८ उ ३ सू. ६०१
आठ सूक्ष्म	६११	३	१२८	ठा.८उ.३सू६१५,दश.अ ८गा.१५
आठ स्थान एकलविहार प्रतिमा के	५८६	३	३६	ठा ८ उ ३ सू. ५६४
आठ स्थान माया की आलोयणा करने के	५७७	३	१६	ठा ८ उ ३ सू ५६७
आठ स्थान माया की आलोयणा न करने के	५७८	३	१८	ठा.८ उ.३ सू ५६७
आठ स्थानों की प्राप्ति और रक्षा के लिये प्रयत्न करना चाहिये	६०६	३	१२४	ठा.८ उ.३ सू. ६४६
आठ स्पर्श	५६७	३	१०८	ठा.८उ.३सू ५६६,पन्न.प.२३सू २६
आढ्यत्व सुख	७६६	३	४५४	ठा.१० उ.३ सू ७३७
आणत और प्राणत देवलोक का वर्णन	८०८	४	३२३	पन्न प. २ सू. ५३
आतापक	३५६	१	३७२	ठा. ५ उ. १ सू. ३६६
आत्मकृत दोष	७२३	३	४१२	ठा.१० उ.३ सू ७४३
आत्मचिन्तन पर चार गाथाएं	६६४	७	२५८	

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आत्मदमन के विषय में सोलह गाथाएं	९९४	७	२०७	
आत्मभूत लक्षण	६२	१	४३	न्याय. दी प्रका. १
आत्म रक्षक देव	७२६	३	४१६	तत्त्वार्थ अध्या. ४ सू ४
आत्मवादी	१६२	१	१४६	आचा श्रु १ अ. १ उ १ सू ५
आत्मसंवेदनीय उपसर्ग के चार प्रकार	२४३	१	२२०	ठा ४ उ ४ सू ३६१, सूय. श्रु १ अ ३ उ १ नि गा ४८
आत्मा	१	१	२	ठा. १ उ १ सू २
आत्मांगुल की व्याख्या	११८	१	८३	अनु सू. १३३
आत्मा के विषय में गणधर इन्द्रभूति की शङ्का और उसका समाधान	७७५	४	२४	विशे गा १५४९ से १६०५
आत्मा के आठ भेद	५९३	३	९५	भ श १२ उ १० सू. ४६७
आत्मा के आठ भेदों का पारस्परिक सम्बन्ध	५९३	३	९५	भ श १२ उ १० सू ४६७
[1] आत्मागम	८३	१	६१	अनु सू. १४४
आत्मा तीन	१२५	१	८९	परमा गा. १३-१५
आत्मा पर छः गाथाएं	९९४	७	१५६	
आत्यन्तिक मरण	८७९	५	३८३	सम १७, प्रव द्वा १५७ गा १००६
आदानपद नाम	७१९	३	३९६	अनु सू. १३०
आदान भंडमात्र निक्षेपणा समिति	३२३	१	३३१	सम. ५, ठा ५ उ ३ सू. ४५७, ध अधि ३ श्लो ४७ टी. पृ १३०, उत्त अ २४ गा २

[1] आगम का एक भेद।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
[1] आदान भय	५३३	२	२६८	ठा.७उ ३.सू.५४९, सम ७
आदित्यप्रमाण संवत्सर	४००	१	४२६	ठा ५उ ३सू ४६०प्रव द्वा १४२ गा ६००
आदित्य संवत्सर	४००	१	४२७	ठा ५उ ३सू ४६०,प्रवद्वा १४२ गा. ६०१
आधा कर्म	७६०	३	४४३	आचा श्र २उ १नि. गा.१८३
आधा कर्म दोष	८६५	५	१६१	प्रव द्वा.६७गा ५६५,ध अधि ३ श्लो २२टी.पृ.३८,पि नि गा ६२, पि वि गा.३, पंचा १३ गा ५
आधार	४८	१	२८	विशे गा. १४०९
आधिकरणिकी क्रिया	२९२	१	२७७	ठा २ उ १ सू ६०, ठा ५ उ २ सू ४१९, पन्न.प २२ सू २७९
आधिगमिक सम्यक्त्व	१०	१	१०	ठा २उ १सू.७०,पन्न प १ सू ३७, तत्त्वार्थ अध्या. १ सू ३
आधेय	४८	१	२८	विशे गा १४०९
आध्यात्मिक विकासक्रम तथा दूसरे दर्शन	८४७	५	६३	आ वि.
आनन्द श्रावक	६८५	३	२९५	उपा अ. १
आनन्द श्रावक की बाईस बोलोंकीमर्यादासातवेंव्रतमें	६८५	३	२९७	उपा अ १ सू ७
आनन्दश्रावकके अधिकार में आये हुए 'चेइय' शब्द पर टिप्पण	६८५	३	४५७	उपा (अ), उपा (ह.)
आनन्दश्रावकके अधिकार में सम्यक्त्व के छः आगार	४५५	२	५८	उपा अ. १ सू ८

[1] धन की रक्षा के लिए चोर आदि से डरना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आनन्द श्रावक के अधिकार में सम्यक्त्व के छः आगार	६८५	३	३०३	उपा अ. १ सू ८
आनन्द श्रावक के बारह व्रत और अतिचार	६८५	३	२६५	उपा अ १ सू ६-७
आनुगमिक व्यवसाय	८५	१	६२	ठा ३ उ ३ सू. १८५
आनुपूर्वी	४२७	२	२६	अनु. सू ७०
आनुपूर्वी	*	६	क	
आनुपूर्वी कंठस्थ गुणने की सरल विधि	*	६	ग	
आनुपूर्वी दस	७१७	३	३६०	अनु. सू. ७१-११६
आपृच्छना समाचारी	६६४	३	२५०	भ.श.२५उ.७सू८०१,ठा १०उ ३ सू ७४६, उत्त.अ.२६ गा २, प्रव द्वा १०१ गा. ७६०
आप्त की व्याख्या	३७६	१	३६६	रत्ना परि. ४ सू ४
आभिग्रहिक मिथ्यात्व	२८८	१	२६७	ध अधि.२श्लो.२२टी पृ.३६, कर्म भा ४ गा ५१
आभिनिबोधिक ज्ञान	१५	१	१२	पन्न. प. २६ सू. ३१२, ठा. २ उ.१ सू ७१
आभिनिबोधिक ज्ञान	३७५	१	३६०	ठा.५ उ.३ सू ४६३,न सू १, कर्म. भा. १ गा. ४
आभिनिबोधिक ज्ञान के अठाईस भेद	६५०	६	२८३	सम.२८, कर्म भा.१ गा.४,५
आभिनिबोधिकसाकारोप०	७८६	४	२६७	पन्न. प.२६ सू ३१२
आभिनिवेशिक मिथ्यात्व	२८८	१	२६७	कर्म.भा.४ गा.५१, ध अधि २ श्लो.२२ टी पृ ३६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
[1] आभियोगिक देव	७२६	३	४१६	तत्त्वार्थ अध्या ४ सू. ४
आभियोगिकी भावना	१४१	१	१०४	उत्त अ ३६ गा २६२
आभियोगिकी भावना के पाँच प्रकार	४०४	१	४३१	उत्त अ. ३६ गा २६२, प्रव. द्वा. ७३ गा. ६४४
आभोग निर्वर्तित क्रोध	१६४	१	१२३	ठा ४ उ १ सू २४६
[2] आभोग बकुश	३६८	१	३८३	ठा ५ उ ३ सू ४४५
आभ्यन्तर तप के छः भेद	४७८	२	८६	उव सू २०, उत्त अ ३० गा ३०, प्रव द्वा. ६ गा.२७१, ठा ६ उ ३ सू. ५११
आभ्यन्तरपरिग्रह के १४ भेद	८४०	५	३३	वृ उ. १ गा. ८३१
आमर्शौषधि लब्धि	६५४	६	२६०	प्रव द्वा २७० गा. १४६२
[3] आम्नायार्थवाचकाचार्य	३४१	१	३५२	ध. अधि ३ श्लो ४६टी पृ.१२८
आयंबिल के आठ आगार	५८८	३	४१	आव. ह. अ ६ पृ.८५६, प्रव द्वा ४ गा २०४
आयंबिल पच्चक्खाण	७०५	३	३७६	प्रव द्वा.४ गा २०४, आव ह अ.६ पृ ८५६, पंचा ५ गा. ६
आयंबिल वर्द्धमान तप	६८६	३	३४६	अंत. व ८ अ १०
[4] आयत संस्थान	४६६	२	६६	भ श २५ उ ३ सू. ७२४, पन्न. प. १ सू ४
आयुकर्म और उसके भेद	५६०	३	६५	कर्म.भा १ गा. २३. पन्न प २३ सू. २६३, तत्त्वार्थ अध्या ८ सू ११
आयुकर्म का ४ अनुभाव	५६०	३	६५	पन्न. प २३ सू २६२
आयुकर्म के बंध के कारण	५६०	३	६५	भ. श. ८ उ. ६ सू. ३५१

[1] दास के समान सेवा करने वाले देव। [2] शरीर और उपकरण की विभूषा करने वाला साधु। [3] उत्सर्ग और अपवाद रूप आम्नाय का अर्थ कहने वाला आचार्य।
[4] दंडे सरीखा लम्बा आकार

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आयुकी व्याख्या और भेद	३०	१	२१	तत्त्वार्थ अध्या.२ सू. ५२, भ. श २० उ. १० सू. ६८५
आयु के दो प्रकार	५६०	३	६६	तत्त्वार्थ (सु)अध्या २ सू ५२,
आयु परिणाम नौ	६३६	३	२०४	ठा ६ उ ३ सू. ६८६
आयु बन्ध छः प्रकार का	४७३	२	७६	भ श ६ उ ८ सू. २५०, ठा. ६ उ. ३ सू ५३६
आयुबन्ध नैरयिकों का	५६०	२	३४१	भ श ३० उ. १ सू. ८२५
आयु भेद सात	५३१	२	२६६	ठा. ७ उ ३ सू ५६१
आयुर्वेद आठ	६००	३	११३	ठा ८ उ ३ सू. ६११
आरंभ	४६	१	२६	ठा० २ उ० १ सू० ६४
आरंभ	६४	१	६७	ठा० ३ उ० १ सू० १२४
आरंभ परिग्रह को छोड़ने पर ११ बोलों की प्राप्ति	४६	१	२६	ठा.२ उ १ सू. ६५
आरंभ परिग्रह छोड़े विना ११ बातों की प्राप्ति नहीं होती	७७३	४	१७	ठा २ उ.१ सू ६४
आरण और अच्युत देवलोक का वर्णन	८०८	४	३२३	पन्न० प० २ सू० ५३
आरभटा प्रतिलेखना	४४६	२	५३	ठा. ६ उ.३ सू. ५०३, उत्त. अ. २६ गा.२६
आरम्भिकी क्रिया	२६३	१	२७८	ठा.२ उ.१ सू.६०, ठा.५ उ २ सू. ४१६, पन्न प २२ सू २८४
आराधना तीन	८६	१	६२	ठा ३ उ ४ सू. १६५
आरे छः अवसर्पिणी काल के	४३०	२	२६	जं.वक्ष.२सू १६-३६,ठा ६उ ३ सू. ४६२, भ. श. ७ उ. ६ सू २८७-२८८

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आरे छः उत्सर्पिणी काल के	४३१	२	३५	जं वच २ सू. ३७-४०, ठा ६ उ ३ सू. ४९२, विशे गा २७०८-१०
आरोग्य सुख	७६६	३	४५३	ठा. १० उ. ३ सू० ७३७
आरोपणा प्रायश्चित्त	३२५	१	३३४	ठा ५ उ २ सू. ४३३
आरोपणा के पाँच भेद	३२६	१	३३४	ठा ५ उ. २ सू. ४३३, सम २८
आरोपणा प्रायश्चित्त	२४५(ख)	१	२२३	ठा ४ उ १ सू. २६३
आर्जव	३५०	१	३६५	ठा ५ उ १ सू. ३९६, प्रव द्वा ६६ गा ५५४, ध. अधि ३ श्लो. ४६ टी पृ १२७
आर्जव	६६१	३	२३३	प्रव गा २२, सम. १०, शा. भा. १ प्रक. ८
आर्त्तध्यान	२१५	१	१९४	ठा ४ उ. १ सू २४७, सम ४, दश अ १ नि. गा ४८ टी
आर्त्तध्यान के चार प्रकार	२१६	१	१९६	ठा ४ उ १ सू २४७, आव ह. अ ४ ध्यानशतक गा ६-९ पृ ५८४
आर्त्तध्यान के चार लिंग	२१७	१	१९८	ठा ४ उ. १ सू. २४७, भ श २५ उ ७ सू ८०३, आव. ह. अ. ४ ध्यानशतक गा. १५ पृ. ५८७
आर्य (ऋद्धिप्राप्त) के छः भेद	४३८	२	४२	ठा ६ उ ३ सू ४९१, पन्न. प. १ सू ३७
आर्य (अनृद्धिप्राप्त) के ९ भेद	६५३	३	२१९	पन्न प १ सू ३७
आर्य के बारह भेद	५८५	४	२६६	बृ उ. १ नि गा ३२६३
आर्य क्षेत्र साढ़े पचीस	९४२	६	२२३	प्रव द्वा २७५ गा. १५८७-१५९ पन्न प १ सू. ३७, बृ. उ १ नि. गा. ३२६३
आर्यगङ्ग निह्नव का मत	५६१	२	३६६	विशे. गा. २४२६-२४५०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आर्याषाढ़ आचार्य की कथा सम्यक्त्व के स्थिरीकरण नामक आचार के लिये	८२१	४	४६६	नवपद गा १८ टी. (सम्यक्त्वद्वार)
आलोचना करने योग्य साधु के दस गुण	६७०	३	२५८	भ श २५ उ ७ सू. ७९९, ठा १० उ ३ सू. ७३३
आलोचना के दस दोष	६७२	३	२५९	भ. श २५ उ. ७ सू ७९९, ठा १० उ ३ सू. ७३३
आलोचना देने योग्य साधु के दस गुण	६७१	३	२५९	भ. श. २५ उ. ७ सू. ७९९, ठा १० उ. ३ सू. ७३३
आलोचना पर ८ गाथाएं	९९४	७	२४६	
आलोयणा करने योग्य साधु के दस गुण	६७०	३	२५८	भ श २५ उ ७ सू ७९९, ठा १० उ ३ सू ७३३
आलोयणा करने वाले के आठ गुण	५७६	३	१६	ठा ८ उ ३ सू ६०४, भ.श २५ उ. ७ सू. ७९९
आलोयणा देने वाले साधु के आठ गुण	५७५	३	१५	ठा ८ उ.३ सू ६०४, भ.श. २५ उ ७ सू ७९९
आलोयणा माया की करने के आठ स्थान	५७७	३	१६	ठा ८ उ ३ सू ५९७
आलोयणा माया की न करने के आठ स्थान	५७८	३	१८	ठा ८ उ ३ सू ५९७
आवलिका	५५१	२	२९२	जं. वक्ष २ सू १८
आवश्यक के छः भेद	४७९	२	९०	आव. ह.
आवश्यक के छः भेदों का पारस्परिक सम्बन्ध	४७९	२	९३	आव ह.

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आवश्यक के दस नाम	६८७	३	३५०	विशे.गा.८७२-८७६.अनु सू २८
आवश्यिकी(आवस्सिया) समाचारी	६६४	३	२५०	भ श २५ उ ७ सू ८०१,ठा १० उ ३ सू ७४६,उत्त अ २६ गा २,प्रव द्वा १०१ गा ७६०
आविर्भाव	४४	१	२७	न्याय को.
आवीचि मरण	८७६	५	३८२	सम.१७,प्रव.द्वा १५७ गा १००६
आशंसा प्रयोग दस	६६७	३	२५३	ठा १० उ ३ सू ७५९
आशातनाएं तेतीस	९७५	७	६१	सम ३३,दशा द ३,आव ह अ ४ पृ ७२८
आशीविष लब्धि	९५४	६	२९३	प्रव द्वा २७० गा १४९३
आश्चर्य (अच्छेरा) दस	६८१	३	२७६	ठा १० उ ३. सू ७७७, प्रव द्वा १३८ गा ८८५-८८९
आश्रव और संवर	४९७	२	२०५	
आश्रव के बयालीस भेद	९९२	७	१४९	नव गा १६
आश्रव के बीस भेद	९०७	६	२५	सम ५,प्रश्न. नि गा २ पृ ३, ठा ५ उ २ सू ४१८,४२७, ठा १० उ ३ सू. ७०९
आश्रव, क्रिया, वेदना और निर्जरा के १६ भांगे	८६८	५	१६८	भ श १९ उ.४ सू. ६५८
आश्रव तत्त्व के बीस और बयालीस भेद	६३३	३	१८३	नव.गा.१६,सम.५,प्रश्न नि गा २ पृ ३टी.,ठा ५ उ २ सू ४१८,४२७ ठा.१० उ.३ सू ७०९
आश्रवद्वार प्रतिक्रमण	३२९	१	३३८	ठा.५ उ ३ सू. ४६७, आव ह अ ४ गा १२५०-१२५१
आश्रव पाँच	२८९	१	२६८	ठा.५ उ.२ सू ४१८, सम. ५

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आश्रव भावना	८१२	४	३६७	शा भा.१प्रक ७,भावना,ज्ञान-प्रक.२, प्रव०द्वा.६७गा.५७२, तत्त्वार्थ. अध्या. ९ सू. ७
आसन और उसके प्रकार	६०१	३	११५	यो, रा. यो.
आसन प्राणायाम के	५५९	२	३०४	हठ, पी. प.,
आसुरी भावना	१४१	१	१०४	उत्त.अ. ३६ गा. २६४
आसुरी भावना के ५ भेद	४०५	१	४३१	उत्त. अ ३६ गा २६४, प्रव द्वा. ७३गा ६४५
आस्तिक्य	२८३	१	२६४	ध. अधि.२ श्लो.२२टी पृ ४३
आहारक	८	१	७	ठा.२ उ.२ सू. ७९
आहारक अनाहारक के तेरह द्वार	८१७	४	३९८	पन्न. प. २८ उ. २
आहारक काययोग	५४७	२	२८७	भ श.२५उ.१सू.७१९, द्रव्य. लो. स. ३ पृ ३५८, कर्म. भा.४गा. २४
आहारक मार्गणा के भेद	८४६	५	६३	कर्म. भा ४ गा, १४
आहारकमिश्र काययोग	५४७	२	२८७	भ.श २५उ.१सू.७१९,द्रव्य.लो. स.३पृ ३५८,कर्म.भा ४ गा.२४
आहारक लब्धि	९५४	६	२९६	प्रव.द्वा २७० गा./१४९४
आहारक शरीर	३८९	१	४१४	पन्न प. २१ सू. २६७, ठा ५ उ.१सू.३९५,कर्म,भा.१गा.३३
आहारक शरीर बन्धन नाम कर्म	३९०	१	४१६	कर्म.भा.१गा.३५,प्रव द्वा.२१६ गा. १२७२
आहारक समुद्घात	५४८	२	२८९	पन्न प ३६ सू० ३३१, ठा ७ उ ३ सू.५८६, प्रव. द्वा. २३१ गा.१३११,द्रव्य लो.स.३पृ.१२४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आहार की गवेषणा के सोलह उत्पादना दोष	८६६	५	१६४	प्रव द्वा ६७गा.५६७-५६८,ध. अधि. ३ श्लो २२टी. पृ.४०, पि नि.गा.४०८-४०९,पि. वि. गा.५८-५९,पचा १३गा १८-१९
आहार की गवेषणा के सोलह उद्गम दोष	८६५	५	१६१	प्रवद्वा.६७गा.५६५-५६६,ध अधि ३श्लो २२टी पृ.३८,पिं नि. गा.९२-९३, पि वि गा.३-४, पंचा. १३ गा. ५-६
आहार के छः कारण	३३०	१	३४०	उत्त अ.२६गा.३२, ध अधि.३ श्लो.२३टी.पृ.५६,पिं.नि.गा ६६२
आहार करने के(साधु के) छः कारण	४८४	२	९८	पिं. नि. गा. ६६२, उत्त, अ.२६ गा. ३२
आहार के ४७ दोष	१०००	७	२६५	पिं. नि. गा. ६६९
आहार तिर्यंच का	२६१	१	२४५	ठा. ४ उ. ३ सू ३४०
आहार त्यागने के(साधु के) छः कारण	४८५	२	९९	पि. नि गा ६६६, उत्त. अ २६ गा ३४
आहार देवता का	२६३	१	२४६	ठा० ४ उ० ३ सू. ३४०
आहार नरक का	२६०	१	२४४	ठा ४ उ ३ सू ३४०
आहार नारकी जीवों का	५६०	२	३४०	भ श १४ उ ६ सू ५१९
आहार पर्याप्ति	४७२	२	७७	पन्न.प १सू १२टी,भ.श.३उ १ सू १३०, प्रव. द्वा. २३२ गा १३१७,कर्म भा. १ गा ४९
आहार मनुष्य का	२६२	१	२४५	ठा. ४ उ. ३ सू. ३४०
आहार संज्ञा	१४२	१	१०५	ठा. ४ उ. ४ सू. ३५६, प्रव. द्वा १४५ गा. ९२३

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आहार संज्ञा	७१२	३	३८६	ठा १० उ ३ सू. ७५२, भ श ७ उ ८ सू २६६
आहार संज्ञा चार कारणों से उत्पन्न होती है	१४३	१	१०५	ठा ४ उ. ४ सू ३५६, प्रव. द्वा १४५ गा ६२३ टी
आहार के ४२ दोष	६६०	७	१४६	पिं. नि गा. ६६६
इ				
इंगाल कर्म कर्मादान	८६०	५	१४४	उपा.अ १ सू ७, भ श ८ उ ५ सू ३३०, आव.ह अ ६ पृ ८२८
इंगिनी मरण	८७६	५	३८४	सम १७, प्रव द्वा १५७ गा १००७
इकतालीस प्रकृतियाँ उदीरणा बिना उदय में आती हैं	६८६	७	१४६	कर्म भा ६ गा ५४-५५
इकतीस उपमा साधु की	६६२	७	४	प्रश्न धर्मद्वार ५ सू २६, उव. सू १७
इकतीस गाथाएं सूयगडांग अ० ४ उ० १ की	६६३	७	८	सूय अ ४ उ १
इकतीस गुण सिद्ध भगवान् के दो प्रकार से	६६१	७	२	उत्त अ ३१ गा २० टी, प्रव द्वा २७६ गा १५६३-१५६४, सम ३१, आव ह अ ४ पृ ६६२, आचा श्रु १ अ ५ उ ६ सू १७०
इकावन उद्देशे आचारांग प्रथम श्रुत स्कन्ध के	१००५	७	२७१	सम ५१
इक्कीस कारणों से विद्यमान पदार्थ नहीं जाना जाता	६१४	६	७१	विशे. गा. १६८३ टी.
इक्कीस गाथा उत्तराध्ययन के इकतीसवें अध्ययन की	६१७	६	१३०	उत्त अ. ३१

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
इक्कीस गाथा दशवैकालिक के सभिक्खु अध्ययन की	९१६	६	१२६	दश अ. १०
इक्कीस गुण श्रावक के	९११	६	६१	प्रव द्वा २३९ गा १३५६-५८, ध अधि १ श्लो. २० पृ २८
इक्कीस दृष्टान्त पारिणामिकी बुद्धि के	९१५	६	७३	नं सू. २७ गा. ७१-७४टी, आव ह गा ९४८ से ९५१
इक्कीस प्रकार का धोवण पानी	९१२	६	६३	आचा श्रु २ अ १ उ. ७ ८ सू. ४१, ४३, पिं नि गा १८-२१, दश अ. ५ उ. १ गा. ७५-७६
इक्कीस प्रश्नोत्तर	९१८	६	१३३	
इक्कीस शबल दोष	९१३	६	६८	दशा द २, सम २१
इक्कीस श्रावक के गुण	९११	६	६१	प्रव द्वा. २३९ गा १३५६-५८, ध अधि १ श्लो. २० पृ २८
इच्छाकार समाचारी	६६४	३	२४९	भ श २५ उ ७ सू ८०१, ठा १० उ ३ सू ७४९, उत्त अ २६ गा ३ प्रव. द्वा १०१ गा ७६०
इच्छापरिमाण व्रत	३००	१	२९०	आव ह अ ६ पृ ८२५, ठा ५ उ १ सू ३८९, उपा अ. १ सू ५, ध अधि २ श्लो २६ पृ ६७
इच्छामहं की कथा औत्पत्ति की बुद्धि पर	८४६	६	२८१	नं सू २७ गा ६५ टी.
[1] इच्छालोभिक	४४४	२	४८	ठा ६ उ. ३ सू ५२९, बृ (नी.) उ ६
इत्वरिक अनशन के छः भेद	४७७	२	८७	उत्त अ ३० गा ९ से ११
इन्द्र	७२९	३	४१५	तत्त्वार्थ. अध्या. ४ सू ६

[1] लोभ से अधिक उपधि को ग्रहण करने वाला साधु।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
इन्द्रभूति गणधर की जीव विषयक शंका-समाधान	७७५	४	२४	विशे. गा १५४९से १६०५
इन्द्रस्थान की पाँच सभाएं	३९७	१	४२१	ठा ५ उ ३ सू. ४७२
१ इन्द्र स्थावरकाय	४१२	१	४३८	ठा. ५ उ १ सू. ३९३
इन्द्रिय का स्वरूप और उसके पॉच भेद	३९२	१	४१८	पन्न प १५ सू १९१, ठा ५ उ ३ सू ४४३ टी, जै प्र.
इन्द्रिय की व्याख्या और भेद	२३	१	१७	पन्न प १५ उ १ सू १९१ टी, तत्त्वार्थ अध्या २ सू १६
इन्द्रिय परिणाम	७४९	३	४२६	ठा सू ७१३, पन्न प १३सू. १८२
इन्द्रिय पर्याप्ति	४७२	२	७७	पन्न प १सू १२टी, भ श ३उ १ सू १३०, कर्म भा १ गा ४९, प्रव द्वा २३२ गा १३१७
इन्द्रिय मार्गणा और भेद	८४६	५	५७	कर्म भा ४ गा १०
इन्द्रियां प्राप्यकारी चार	२१४	१	१९३	ठा. ४ उ ३सू ३३६, रत्ना परि २ सू ५ टी.
इन्द्रियों का विषयपरिमाण	३९४	१	४१९	पन्न प १५ उ १ सू १९५
इन्द्रियों के तेईस विषय और २४० विकार	९२६	६	१७५	ठा सू ४७, ३९०, ४४३, ५९६, पन्न प २३उ २सू २९३, प बोल १२, तत्त्वार्थ अध्या. २सू. २१
इन्द्रियों के दो सौ चालीस विकार	९२६	६	१७५	ठा सू ४७, ३९०, ४४३, ५९६, पन्न.प. २३उ २सू २९३, प बोल १२, तत्त्वार्थ अध्या २सु २१
इन्द्रियों के संस्थान	३९३	१	४१९	पन्न प. १५ उ १ सु १९१, ठा. ५ उ. ३ सु ४४३ टी
इहलोक भय	५३३	२	२६८	ठा ७ उ ३ सू ५४९, सम. ७

१ पृथ्वीकाय ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
ई				
ईर्यापथिक कर्म	७६०	३	४४२	आचा श्र.२३ १नि गा १८३
ईर्यापथिकी क्रिया	२९६	१	३८२	ठा २ उ.१सू ६०, ठा.५ उ २ सू ४१९,आव.ह अ.४पृ ६१८
ईर्यासमिति	३२३	१	३३१	सम ५,ठा.५ उ.३ सू ४५७, उत्त. अ २४गा २, ध अधि ३ श्लो ४७ टी पृ १३०
ईर्यासमिति की चार यतना	१८१	१	१३६	उत्त. अ २४ गा ६–८
ईर्यासमिति के चार कारण	१८१	१	१३५	उत्त. अ २४ गा.४–८
ईशान देवलोक का वर्णन	८०८	४	३२०	पन्न. प. २ सू. ५३
ईषत्प्राग्भारा(सिद्धि) का स्वरूप	६०८	३	१२६	ठा ८ उ ३ सू ६४८,पन्न प २ सू ५४,उत्त.अ.३६गा ५६से६२
ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी के आठ नाम	६०९	३	१२६	पन्न प २ सू ५४, ठा ८ उ ३ सू. ६४८
ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी के बारह नाम	८१०	४	३५२	सम. १२
ईहा (मतिज्ञान का भेद)	२००	१	१५८	ठा.४ उ४ सू. ३६४
उ				
उक्खित्तविवेगेणं–आगार आयंबिल का	५८८	३	४२	आव ह अ ६ पृ८५६, प्रव. द्वा.४ गा २०५
उच्चार (मलपरीक्षा) की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	८४९	६	२६५	न. सू २७ गा. ६३ टी

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
उच्चारपरिस्रवणखेलसिंघाणजल्लपरिस्थापनिका समिति	३२३	१	३३१	सम ५, उत्त अ २४ गा. २, ठा.५उ ३ सू.४५७,ध.अधि ३ श्लो. ४७टी. पृ १३०
उच्छ्वाससंकेत पच्चक्खाण	५८६	३	४३	आव ह अ.६ नि गा.१५७८, प्रव. द्वा. ४ गा. २००
उज्झितकुमार की कथा	६१०	६	३४	वि. अ २
उत्कटुका	३५८	१	३७३	ठा.५उ.१सू.३९६ (टी.),४००
उत्कटुकासनिक	३५७	१	३७१	ठ ५ उ. १ सू ३९६
उत्करिका भेद	७५०	३	४३३	ठा १० उ. ३ सू. ७१३ टी., पन्न प ११ सू १८५
उत्कालिक श्रुत	८२२	५	११	नं सू. ४४
उत्कीर्तनानुपूर्वी	७१७	३	३६१	अनु. सू ७१
उत्क्षिप्तचरक	३५२	१	३६७	ठा. ५ उ.१ सू. ३९६
उत्तम पुरुष चौपन	१००६	७	२७७	सम ५४
उत्तर गुण	५५	१	३२	सूय. अ. १४ नि गा.१२६, पचा. ५ गा २ टी.
उत्तर प्राणायाम	५५६	२	३०३	योग प्रका ५ श्लो ६
उत्तरमीमांसा दर्शन	४६७	२	१५४	
उत्तराध्ययनसूत्र के इक्कीसवें अ० की अन्तिम १२ गाथाएं	७८१	४	२५५	उत्त अ. २१ गा. १३-२४
उत्तराध्ययनसूत्र के ग्यारहवें अ० की सोलह गाथाएं	८६३	५	१५५	उत्त अ ११ गा १५ से ३०
उत्तराध्ययन सूत्र के ग्यारहवें अ० की बत्तीस गाथाएं	९७३	७	५१	उत्त अ ११

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
उत्तराध्ययनसूत्र के चरण-विहि अ० की २१ गाथाएं	६१७	६	१३०	उत्त. अ. ३१
उत्तराध्ययन सूत्र के चौथे अध्ययन की तेरह गाथाएं	८१६	४	४०६	उत्त अ. ४
उत्तराध्ययन सूत्र के छठे अध्ययन की १८ गाथाएं	८६७	५	४१६	उत्त अ. ६
उत्तराध्ययन सूत्र के छठे अध्ययनकी १८मूलगाथाएं	८६७	५	४८५	
उत्तराध्ययन सूत्र के छत्तीस अ०का संक्षिप्त विषयवर्णन	२०४	१	१६३	
उत्तराध्ययन सूत्र के तीसरे अध्ययन की वीस गाथाएं	६०६	६	२६	उत्त. अ. ३
उत्तराध्ययन सूत्र के दसवें अध्ययन की ३७गाथाएं	६८४	७	१३३	उत्त० अ० १०
उत्तराध्ययनसूत्रकेपचीसवें अ० की पैंतालीस गाथाएं	६६६	७	२५४	उत्त० अ० २५
उत्तराध्ययनसूत्रकेपन्द्रहवें अ० की सोलह गाथाएं	८६२	५	१५२	उत्त० अ० १५
उत्तराध्ययनसूत्रकेपन्द्रहवें अ० की सोलह मूल गाथाएं	८६२	५	४८०	
उत्तराध्ययन सूत्र के पाँचवें अ० की बत्तीस गाथाएं	६७२	७	४६	उत्त० अ० ५
उत्तराध्ययन सूत्र के वीसवें अ० की पन्द्रह गाथाएं	८५४	५	१३०	उत्त. अ. २० गा ३८-५२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
उत्तराध्ययन सूत्र के बीसवें अ० में से पन्द्रह मूल गाथाएं	८५४	५	४७७	
उत्पत्तिया बुद्धि	२०१	१	१५६	न.सू.२६,ठा.४ उ ४ सू.३६४
उत्पत्तियाबुद्धि की२७कथा	६४६	६	२४२	न. सू. २७ गा. ६२-६५ टी.
उत्पन्न मिश्रिता सत्यामृषा भाषा	६६६	३	३७०	ठा. १० उ ३ सू. ७४१, पन्न प.११ सू. १६५, ध. अधि ३ श्लो ४१टी पृ. १२२
उत्पन्न विगत मिश्रिता सत्यामृषा भाषा	६६६	३	३७०	ठा १० उ ३ सू ७४१, पन्न. प. ११ सू.१६५, ध. अधि ३ श्लो.४१ टी पृ १२२
उत्पाद	६४	१	४५	तत्त्वार्थ. अध्या. ५ सू २६.
उत्पादना दोष सोलह आहार के	८६६	५	१६४	प्रव. द्वा ६७गा ५६७-५६८, ध. अधि ३ श्लो.२२टी.पृ ४०, पि नि गा.४०८ ४०६,पचा.१३ गा १८-१६,पि.वि गा ५८-५६
उत्पादनोपघात	६६८	३	२५४	ठा १० उ.३ सू. ७३८
उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य रूप सत्त्व छहों द्रव्यों में	४२५	२	२२	आगम.
उत्सर्ग	४०	१	२५	बृ गा ३१६,स्या.का ११टी.
उत्सर्ग सूत्र	७७८	४	२३६	बृ उ १ गा १२२१
उत्सर्पिणी काल	३३	१	२२	ठा २ उ १ सू ७४
उत्सर्पिणी के छः आरे	४३१	२	३५	ज. वक्ष २सू ३७-४०, ठा ६ उ ३ सू. ४६२, विशे गा. २७०८-२७१०
उत्सेधांगुल	११८	१	८३	अनु. सू. १३३

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
उदधिकुमारोंकेदसअधिपति	७३७	३	४१६	भ श ३ उ ८ सू १६९
उदय	२५३	१	२३७	कर्म. भा. २ गा. १ व्याख्या
उदयाधिकार कर्मप्रकृतियों का गुणस्थानों में	८४७	५	६४	कर्म. भा २ गा १३ से २२
उदायी राजा	६२४	३	१६३	ठा ६ उ. ३ सू ६६१
उदाहरण	३८०	१	३६७	न्याय दी. प्रका ३
उदितोदय राजा की पारिणामिकी बुद्धि की कथा	६१५	६	८१	न सू २७ गा. ७२, आव ह गा ६४६
उदीरणा	२५३	१	२३७	कर्म भा.२ गा १ व्याख्या
उदीरणाकरण	५६२	३	६५	कम्म. गा २
उदीरणाधिकार कर्म प्रकृतियों का गुणस्थानों में	८४७	५	६८	कर्म भा २ गा. २३-२४
उदीरणा बिना उदय में आने वाली ४१ प्रकृतियाँ	६८६	७	१४६	कर्म भा ६ गा ५४-५५
उद्गम दोष सोलह आहार के	८६५	५	१६१	प्रवद्वा ६७ गा ५६५-५६६, ध अधि ३ श्लो २२टी पृ ३८, पि नि.गा ९२-९३, पिं. वि गा. ३-४, पचा १३ गा. ५-६
उद्गमोपघात	६६८	३	२५४	ठा. १० उ ३ सू ७३८
[1]उद्देशाचार्य	३४१	१	३५२	ध अधि ३ श्लो ४६टी पृ १०८
उद्देशे इकावन आचारांग प्रथम श्रुतस्कन्ध के	१००५	७	२७१	सम ५१
उद्धार पल्योपम (सूक्ष्म, व्यावहारिक)	१०८	१	७५	अनु. सू. १३८ प्रव द्वा. १५८ गा. १०१८ १०२६

[1] श्रुत का कथन करने वाले तथा मूल पाठ सिखाने वाले आचार्य

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
उद्धार सागरोपम	१०९	१	७८	अनु सू १३८, प्रव द्वा १५९ गा १०२७-१०२८
उद्भिन्न दोष	८६५	५	१६३	प्रव द्वा ६७ गा ५६६, ध अधि ३ श्लो. २२ टी. पृ ३८, पिं नि गा ९३, पि वि गा ४, पचा १३ गा ६,
उद्वर्तना करण	५९२	३	९५	कम्म गा २
उद्वर्तना नारकी जीवों की	५६०	२	३२६	प्रव द्वा १८१ गा १०८७-९०, पन्न० प २० सू २६३
उनचालीस कुल पर्वत	९८६	७	१४४	सम ३९
उनतीस गाथाएं महावीर-स्तुति नामक सूयगडांग सूत्र के छठे अध्ययन की	९५५	६	२९९	सूय. अ. ६
उनतीस पापश्रुत	९५६	६	३०५	सम २९, उत्त. अ ३१ गा १९ टी, आव ह अ ४ पृ ६६०
उनपचास भंग श्रावक के प्रत्याख्यान के	१००३	७	२६७	भ श ८ उ ५ सू ३२९
उनपचास भेद ७ स्वरों के	५४०	२	२७५	अनु सू. १२७ गा ५६, ठा ७ उ ३ सू. ५५३
उन्नीस कथा ज्ञाताधर्मकथा की	९००	५	४२७	ज्ञा०
उन्नीस दोष कायोत्सर्ग के	८९९	५	४२५	आव ह अ ५ गा १५४६-४७, प्रव द्वा ५ गा २४७-२६२, यो प्रका ३ पृ २५०
उन्माद के छः बोल	४५७	२	६०	ठा ६ उ ३ सू ५०१
उन्मार्ग देशना	४०६	१	४३३	उत्त. अ ३६ गा. २६५ टी, प्रव द्वा ७३ गा. ६४६
उपकरण १४ साधुओं के	८३३	५	२८	पंच, व गा ७७१-७७९

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
उपकरण द्रव्येन्द्रिय	२४	१	१७	तत्वार्थ. अध्या. २ सू. १७
उपकरण बकुश साधु	३६६	१	३८०	ठा ५ उ. ३ सू ४४५ टी, भ श.२५ उ.६ सू ७५१ टी.
उपकरणोत्पादनता विनय	२३५	१	२१६	दशा द ४
उपक्रमकी व्याख्या और भेद	४२७	२	२५	अनु सू. ७०
उपक्रमकी व्याख्या और भेद	२४६	१	२३४	ठा ४ उ. २ सू २६६
उपघात दस	६६८	३	२५४	ठा १० उ ३ सू. ७३८
उपघात निःसृत असत्य	७००	३	३७२	ठा.१० उ ३ सू ७४१, पन्न.प.११ सू.१६५, ध अधि ३ श्लो ४१ टी.पृ १२२
उपदेश के योग्य आठ बातें	५८५	३	३६	आचा अ.६ उ. ५ सू. १६४
उपदेश राजमती का रहनेमि को	७७१	४	१५	दश. अ. २
उपदेश रुचि	६६३	३	३६२	उत्त अ २८ गा १६
उपदेश से सम्यक्त्व प्राप्ति (चिलातीपुत्र)	८२१	४	४३४	नवपद गा.१४टी सम्यक्त्वाधिकार, ज्ञा अ १८
१ उपधानाचार	५६८	३	६	ध.अधि १श्लो.१६टी.पृ १८
उपनय	३८०	१	३६७	रत्ना परि. ३ सू ४६
उपनीत दोष	७२३	३	४१२	ठा १० उ. ३ सू ७४३
उपपात जन्म	६६	१	४७	तत्त्वार्थ. अध्या. २ सू ३२
उपपात सभा	३६७	१	४२१	ठा.५ उ ३ सू. ४७२
२ उपबृंहण दर्शनाचार	५६६	३	८	पन्न. प १ सू ३७ गा १२८, उत्त. अ २८ गा. ३१

१ ज्ञानाचार का एक भेद। २ गुणी पुरुषों की प्रशंसा करना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
उपभोग परिभोग परिमाण व्रत में २६ बोलों की मर्यादा	९४३	६	२२५	उपा अ १ सू ६, ध अधि २ श्लो ३४ टी पृ ८०, श्रा प्रति.
उपभोगपरिभोगपरिमाण	१२८(क)	१	९१	आव ह. अ ६ पृ ८२७
उपभोग परिभोग परिमाण व्रत के पाँच अतिचार	३०७	१	३०५	उपा अ १ सू.७, प्रव द्वा. ६ गा २८१
उपभोग परिभोग परिमाण व्रत निश्चय और व्यवहार से	७९४	४	२८३	आगम.
उपभोगान्तराय	३८८	१	४११	कर्म भा. १ गा ५२, पन्न प. २३ सू. २९३
उपमा आठ अहिंसा की	६२२	३	१५५	प्रश्न संवरद्वार १ सू २२
उपमाएं आठ संघ की	६२३	३	१५६	न. पीठिका गा. ४-१७
उपमाएं इकतीस साधु की	९६२	७	४	प्रश्न धर्मद्वार ५ सू २९, उव सू १७
उपमाएं बारह साधु की	८०५	४	३०९	अनु. सू १५० गा. १३१
उपमा चार क्रोध की	१५९	१	१२०	ठा. ४ उ. १ सू. २४९, ठा ४ उ २ सू २९३ टी, पन्न प १४ सू. १८८, कर्म. भा १ गा २०
उपमा चार मान की	१६०	१	१२१	
उपमा चार माया की	१६१	१	१२१	
उपमा चार लोभ की	१६२	१	१२२	
उपमा दस संसार की लवण समुद्र से	६७९	३	२६९	प्रश्न अधर्मद्वार ३ सू ११, उव सू २१
उपमान प्रमाण	२०२	१	१६१	अनु सू १४४, भ श ५ उ. ४ सू. १९३
उपमान संख्या के ४ प्रकार	६१९	३	१४२	अनु सू. १४६
उपमा बत्तीस शील की	९६४	७	१५	प्रश्न. धर्मद्वार ४ सू २७
उपमा संख्या की व्याख्या और भेद	२०३	१	१६१	अनु सू १४६ पृ २३१

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
उम्बरदत्त कुमार की कथा	६१०	६	४५	वि. अ. ७
उन्नीसे दोष	६६३	३	२४७	प्रव.द्वा.६७गा.५६८पृ १४८, पिं.नि. गा.५२०,ध. अधि.३ श्लो.२२टी पृ ४१,पंचा १३गा २६
उरपरिसर्प	४०६	१	४३६	पन्न. प १ सू ३५, उत्त अ ३६ गा १८०
उववाई(औपपातिक)सूत्र का संक्षिप्त विषय वर्णन	७७७	४	२१५	
उष्ण योनि	६७	१	४८	तत्त्वार्थ अध्या.२ सू ३२, ठा ३ उ १ सू १४०
ऊ				
ऊनोदरी	४७६	२	८६	उत्त अ ३० गा ८, ठा. ६ उ.३ सू.५११, उव.सू. १६, प्रव द्वा ६ गा २७०
ऊनोदरी के भेद	२१	१	१६	भ. श २५ उ.७ सू. ८०२
ऊनोदरी तप के १४ भेद	६३३	३	१८६	उव सू. १६, भ श. २५ उ ७ सू ८०२
ऊर्ध्वता सामान्य	५६	१	४१	रत्ना. परि. ५ सू ५
ऊर्ध्व लोक	६५	१	४६	लोक भा.२स.१२,भ.श.११ उ १० सू ४२०
ऋ				
ऋजुमति मनःपर्यय ज्ञान	१४	१	१२	ठा. २ उ १ सू ७१
ऋजुमति लब्धि	६५४	६	२६१	प्रव.द्वा २७० गा. १४६२
ऋजुसूत्र नय और उसके दो भेद	५६२	२	४१६	रत्ना परि.७ सू २८, अनु सू.१५२ गा.१३८,द्रव्या.त अध्या. ६ श्लो. १४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
ऋज्वायता श्रेणी	५४४	२	२८३	ठा. ७ उ. ३ सू ५८१, भ. श. २५ उ ३ सू ७३०
ऋतुएं छः	४३२	२	४०	ठा.६उ ३सू ५२३टी, वृ हो.
ऋतुप्रमाण संवत्सर	४००	१	४२६	ठा ५ उ ३ सू ४६०, प्रव. द्वा.१४२ गा. ९०१
ऋतु संवत्सर	४००	१	४२७	ठा ५ उ ३ सू ४६०, प्रव. द्वा.१४२ गा. ९०१
ऋद्धि के तीन भेद	९९	१	७०	ठा ३ उ ४ सू २१४
ऋद्धि गौरव (गारव)	९८	१	७०	ठा.३ उ ४ सू. २१५
ऋद्धि प्राप्त आर्य के छः भेद	४३८	२	४२	ठा ६ उ १ सू ४९१, पन्न प १ सू ३७
ऋषभदेव का संक्षिप्त जीवन	८२०	४	४१६	त्रि ष पर्व १
ऋषभदेव के अट्ठाणवे पुत्र (बोधिदुर्लभ भावना)	८१२	४	३८८	सूय श्रु १ अ.२ उ १, त्रि ष पर्व १
ऋषभदेव भगवान् के १३ भव	८२०	४	४०९	त्रि ष पर्व १
ऋषभनाराच संहनन	४७०	२	७०	पन्न• प २३ सू २९३, ठा.६ उ ३सू.४९४, कर्म.भा.१गा ३८

ए

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
एक आत्मा	१	१	२	ठा• १ सू० २
एक गण से दूसरे गण में जाने के सात कारण	५१५	२	२४४	ठा ७ उ ३ सू ५४१
एक जम्बूद्वीप	४	१	२	ठा १सू ५२, तत्त्वार्थ अध्या ३
एकतः अनन्तक	४१८	१	४४२	ठा ५ उ ३ सू. ४६२
एकतःखा श्रेणी	५४४	२	२८३	ठा ७उ.३सू ५८१, भ श.२५ उ ३ सू ७३०
एकता और अनेकता का विचार छः द्रव्यों में	४२४	२	७	आगम

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
एकतो वक्रा श्रेणी	५४४	२	२८३	ठा ७ उ ३ सू. ५८१, भग २५ उ ३ सू ७३०
एकत्व भावना	८१२	४	३६२, ३८१	शा भा. १ प्रक ४, भावना, ज्ञान प्रक. २, प्रव द्वा. ६७ गा ५७२, तत्त्वार्थ अध्या. ६ सू ७
एकत्व वितर्क अविचारी शुक्लध्यान	२२५	१	२१०	आव ह अ ४ ध्यानशतक गा ७९-८०, ठा ४ उ १ सू २४७, ज्ञान प्रक ४२, क भा २ श्लो. २१८
एक दण्ड	३	१	२	ठा. १ सू ३
एक परमाणु	६	१	३	ठा. १ सू ४५
एक प्रदेश	५	१	३	ठा. १ सू. ४५
एकमासिकी भिक्खुपडिमा	७९५	४	२८५	सम. १२, भ. श २ उ. १ सू ६३ टी, दशा ८ ७
एकरात्रिकी बारहवीं भिक्खु पडिमा	७९५	४	२९१	सम. १२, भ. श. २ उ. १ सू. ६३ टी, दशा ८ ७
एकल विहार प्रतिमा के आठ स्थान (गुण)	५८६	३	३९	ठा ८ उ ३ सू ५९४
एकवादी	५९१	३	९०	ठा ८ उ. ३ सू ६०७
एक समकित	२	१	२	प्रव. द्वा १४९ गा ९४२, पंचा. १ गा ३, तत्त्वार्थ. अध्या १
एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं ?	८४९	५	१२०	पन्न प १ सू ७ टी.
एक सिद्ध	८४९	५	१२०	पन्न. प. १ सू. ७
एकामर्षा प्रमादप्रतिलेखना	५२१	२	२५१	उत्त अ २६ गा २७
एकार्थिक दोष	७२३	३	४११	ठा १० उ ३ सू ७४३

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
एकार्थिकानुयोग	७१८	३	३९३	ठा १० उ.३ सू ७२७
एकासन के आठ आगार	५८७	३	४०	आव ह अ ६ पृ ८५२, प्रव द्वा. ४ गा २०३
एकासन बियासण का पच्चक्खाण	७०५	३	३७८	प्रव द्वा ४ गा २०२-२०३ टी, पचा ५ गा ८, आव.ह. अ ६ पृ ८५२
एकेन्द्रियजीवों का समारंभ न करने से होने वाला पाँच प्रकार का संयम	२९८	१	२८५	ठा ५ उ २ सू ४२९,४३०
एकेन्द्रिय जीवोंके समारंभ से होने वाला पाँच असंयम	२९७	१	२८४	ठा ५ उ २ सू ४२९ ४३०
एगट्ठाण का पच्चक्खाण	७०५	३	३७८	प्रव द्वा ४ गा २०२,२०४ टी, आव ह.अ ६ पृ ८५३, पचा. ५ गा ९
एगट्ठाण के सात आगार	५१७	२	२४७	आव ह अ ६ पृ ८५३, प्रव द्वा ४ गा २०४
एवंभूत नय	५६२	२	४१८	अनु सू. १५२ गा १३९, रत्ना. परि. ७ सू ४०
एषणा समिति	३२३	१	३३१	सम. ५, ठा ५ उ.३ सू ४५७, उत्त अ. २४ गा. २, ध. अधि. ३ श्लो. ४७ टी पृ. १३०
एषणा समिति के भेद	९३	१	६६	उत्त. अ २४ गा. ११-१२
एषणोपघात	६६८	३	२५४	ठा १० उ ३ सू. ७३८

ऐ

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
ऐरवत क्षेत्र के आगामी चौवीस तीर्थंकर	९३१	६	१९७	सम १५८, प्रव द्वा. ७ गा. ३००-३०३

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा अंजूकुमारी की	९१०	६	५०	वि० अ० १०
कथा अतिमुक्त कुमार की	७७६	४	१९८	अंत० व० ६ अ० १५
कथा अनाथी मुनि की	८५४	५	१३०	उत्त० अ० २०
कथा अभग्गसेन चोर की	९१०	६	३७	वि० अ० ३
कथा अभयकुमार की पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	७४	नं० सू० २७ गा० ७२, आव० ह० नि० गा० ९४९
कथा अमात्य (मंत्री) की पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	८५	त्रि०प०पर्व० ६, नं० सू० २७ गा ७२, आव ह नि. गा० ९४९
कथा अमात्य पुत्र की पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	९०	उत्त. अ. १३ टी., आव० ह० नि० गा० ९५०, नं० सू० २७ गा० ७३
कथा अर्जुनमाली की	७७६	४	१९९	अंत० व० ६ अ० ३
कथा अर्थशास्त्र की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२८०	नं० सू० २७ गा० ६५ टी०
कथा अश्वों की	९००	५	४६९	ज्ञा० अ० १७
कथा आँवले की पारिणामिकी बुद्धि विषयक	९१५	६	११३	नं० सू० २७ गा० ७४, आव० ह० नि० गा० ९५१
कथा आर्याषाढ़ आचार्य की स्थिरीकरण पर	८२१	४	४६९	नवपद० सम्यक्त्वाधिकार गा० १८ टी०
कथा इक्कीस पारिणामिकी बुद्धि की	९१५	६	७३	नं० सू० २७ गा० ७१-७४, आव ह० नि. गा० ९४८-९५१
कथा इच्छामहं की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२८१	नं० सू० २७ गा० ६५ टी०
कथा उच्चार (मल परीक्षा) की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२६४	नं० सू० २७ गा० ६३ टी०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा उज्झित कुमार की	९१०	६	३४	वि० अ० २
कथा उदितोदय राजा की पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	८१	न० सू० २७ गा० ७२, आव० ह० नि० गा० ९४९
कथा उन्नीस ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र की	९००	५	४२७	
कथा उम्बरदत्त कुमार की	९१०	६	४५	वि० अ० ७
कथा एवंता कुमार की	७७६	४	१९८	अंत व ६ अ १५
कथा कछुए और शृगाल की	९००	५	४३७	ज्ञा० अ० ४
कथा कमलामेला की भाव अननुयोग पर	७८०	४	२५०	आव० ह० नि० गा० १३४, वृ० नि० गा० १७२ पीठिका
कथा काक की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२६३	न० सू० २७ गा० ६३ टी०
कथा काल सेठ की पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	७८	न० सू० २७ गा० ७२, आव० ह० नि० गा० ९४९
कथा कुब्जा की क्षेत्र अननुयोग पर	७८०	४	२३९	आव० ह० नि० गा० १३३, वृ० नि० गा० १७१ पीठिका
कथा कुमार सेठ की पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	७९	न० सू० २७ गा० ७२, आव० ह० नि० गा० ९४९
कथा कुशध्वज राजा की कांक्षा दोष पर	४२१	४	४५५	नवपद गा० १८ टी० सम्यक्त्वाधिकार
कथा कृष्ण की अपरकङ्का गमन सम्बन्धी	९००	५	४६६	ज्ञा० अ० १६
कथा कोंकणदारक की भाव अननुयोग पर	७८०	४	२४८	आव० ह० नि० गा० १३४, वृ० नि० गा० १७२ पीठिका

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा क्षपक की पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	८८	न० सू० २७ गा० ७३, श्राव० ह० नि० गा० ९५०
कथा क्षुल्लक की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२६७	न० सू० २७ गा० ६३ टी०
कथा खड्ग(गेंडा)की पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	११६	न०सू० २७ गा०७४, आव० ह० नि० गा० ९५१
कथा खुड्डग (अंगूठी) की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२५८	न० सू० २७ गा० ६३ टी०
कथा गजसुकुमार की	७७६	४	१९३	अंत० व० ३ अ० ८
कथा गर्हा पर	५७९	३	३४	आव ह अ.४ नि गा.१२४२
कथा गाय और बछड़े की द्रव्य अननुयोग पर	७८०	४	२३९	आव.ह नि.गा १३३, वृ.गा. १७१ पीठिका०
कथा गेंडे की पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	११६	न सू. २७ गा.७४, आव ह. नि० गा० ९५१
कथा गोलक-लाखकी गोली की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२६६	न० सू० २७ गा० ६३ टी०
कथा ग्रामीण की वचन अननुयोग पर	७८०	४	२४२	आव. ह नि. गा. १३३, वृ. नि० गा० १७१ पीठिका
कथा घयण (भांड) की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२६५	न सू. २७ गा. ६३ टी.
कथा चण्डकौशिक सर्प की पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	११४	त्रि. प. पर्व १०, न. सू २७ गा.७४, आव.ह.नि.गा ९५१
कथा चन्द्रमा की	९००	५	४५६	ज्ञा. अ १०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा चरणाहत की पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	११२	नं सू.२७गा.७४,आव.ह नि. गा ९५१
कथा चाणक्य की पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	६४	न सू.२७ गा ७३,आव ह नि. गा. ९५०
कथा चार पुत्रवधुओं की	९००	५	४४२	ज्ञा अ ७
कथा चिलातीपुत्र की उपदेश से सम्यक्त्व प्राप्ति पर	८२१	४	४३४	नवपद गा १८ टी सम्यक्त्वाधिकार, ज्ञा अ. ८
कथा चेटक निधान की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२७६	न सू. २७ गा. ६५ टी.
कथा चौदह रोहक की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२४३	न सू २७ गा ६४ टी.
कथा जिनदत्त और सागरदत्त की	९००	५	४३६	ज्ञा अ. ३
कथा जिनदास कुमार की	९१०	६	५९	वि अ १५
कथा जिनपाल जिनरक्षकी	९००	५	४५३	ज्ञा. अ ९
कथा तीन	९७	१	६९	ठा ३ उ ३ सू १८९
कथा तुम्बे की	९००	५	४४१	ज्ञा अ ६
कथा तेतलीपुत्र की	९००	५	४६२	ज्ञा अ. १४
कथा तेरह सम्यक्त्व की	८२१	४	४२२	नवपद गा १८-१८
कथा दस दुःखविपाक की	९१०	६	२९से५३	वि अ १ से १०
कथा दस सुख विपाक की	९१०	६	५३से६०	वि. अ ११ से २०
कथा दावद्रव वृक्ष की	९००	५	४५९	ज्ञा. अ. ११
कथा दुर्गन्धा की जुगुप्सा दोष पर	८२१	४	४५८	नवपद.गा.१८टी.सम्यक्त्वाधिकार

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा देवदत्ता रानी की	६१०	६	४७	वि. अ. ९
कथा देवी पुष्पवती की पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	८०	न. सू. २७ गा ७२, आव.ह नि गा. ९४९
कथा धनदत्त की पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	८३	ने सू.२७ गा. ७२, ज्ञा. अ. १८, आव ह. नि. गा ९४९
कथा धनपति कुमार की	६१०	६	५६	वि. अ १६
कथा धन सार्थवाह की सम्यक्त्व प्राप्ति के लिये	८२१	४	४४६	नवपद. गा, १६ टी सम्यक्त्वाधिकार
कथा धन्नाकुमार की	७७६	४	२०४	अणु व. ३ अ १
कथा धन्ना सार्थवाह और विजय चोर की	९००	५	४३४	ज्ञा० अ० २
कथा नकुल की भाव अननुयोग पर	७८०	४	२४९	आव० ह० नि० गा० १३४, वृ० नि० गा० १७२ पीठिका
कथा नन्द मणियार की	८२१	४	४४४	नवपद.गा. १५, ज्ञा अ १३
कथा नन्द मणियार की	९००	५	४६०	ज्ञा. अ. १३
कथा नन्दी फल की	९००	५	४६४	ज्ञा. अ १५
कथा नन्दीवर्धनकुमार की	६१०	६	४३	वि. अ. ६
कथा नन्दीषेण साधु की पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	८२	न सू. २७ गा. ७२, आव ह नि. गा. ९४९
कथा नाणक की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२७५	न. सू. २७ गा. ६५ टी.
कथा निन्दा पर	५७९	३	२८	आव. ह. अ ४ नि. गा. १२४२
कथा निवृत्ति पर	५७९	३	२६	आव. ह. अ. ४ नि. गा १२४२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा पट की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२६२	न सू २७ गा ६३ टी
कथा पणित की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२५६	न सू २७ गा ६३ टी
कथा पति की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२६९	न सू २७ गा ६३ टी
कथा परदेशी राजा की	७७७	४	२१७	रा
कथा परिहरणा पर	५७९	३	२४	आव.ह अ ४ नि गा.१२४२
कथा पुंडरीक और कुंडरीक की	९००	५	४७२	ज्ञा अ १९
कथा पुत्र की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२७१	न सू. २७ गा. ६३ टी.
कथा प्रतिक्रमण पर	५७९	३	२२	आव.ह.अ.४नि. गा.१२४२
कथा प्रतिचरणा पर	५७९	३	२३	आव.ह अ.४नि. गा. १२४२
कथा बधिरोल्लाप की वचन अननुयोग पर	७८०	४	२४१	आव.ह.नि गा. १३३,बृ नि. गा १७१ पीठिका
कथा बारह अननुयोग की	७८०	४	२३८	आव.ह नि. गा १३३,१३४, बृ नि गा १७१-१७२ पीठिका
कथा बीस विपाक सूत्र की	९१०	६	२९	वि
कथा बृहस्पतिदत्तकुमार की	९१०	६	४१	वि अ ५
कथा भद्रनन्दीकुमार की	९१०	६	५८	वि.अ १२
कथा भद्रनन्दीकुमार की	९१०	६	६०	वि. अ. १८
कथा भरतशिला की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२४३	न सू २७ गा. ६४ टी.

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा भिक्षुक की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२७६	न. सू २७ गा ६५ टी
कथा मणि की पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	११३	नं सू २७गा ७८, आवश्यक नि गा. ९५१
कथा मधुसिक्थ की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२७२	नसू २७ गा. ६५ टी
कथा मयूराण्ड और सार्थवाह की शंका दोष के लिये	८२१	४	४५३	नवपद गा १८टी.सम्यक्त्वाधिकार, ज्ञा अ ३
कथामल्लिनाथभगवान्की	९००	५	४४४	ज्ञा अ ८
कथा महाचन्द्रकुमार की	९१०	६	६०	वि अ १६
कथा महाबलकुमार की	९१०	६	५९	वि. अ १७
कथा महेश्वरदत्त वणिक् की विचिकित्सादोप केलिये	८२१	४	४५६	नवपद गा १८ टी सम्यक्त्वाधिकार
कथा मार्गकी औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२६७	न सू २७ गा ६३ टी.
कथा मुद्रिका की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२७२	न सू २७ गा ६५ टी
कथा मुनि की स्वाध्याय विषयक काल अननुयोग पर	७८०	४	२४०	आव. ह गा १३३, वृ नि गा १७१ पीठिका
कथा मृगापुत्र की	९१०	६	२९	वि अ १
कथा मेघकुमार की	९००	५	४२९	ज्ञा अ १
कथा राजमती रहनेमि की	७७१	४	१३	दश अ २ टी
कथा रोहक की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२४३	न सू २७गा ६०टी

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा वज्रस्वामी की पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	१०६	आव ह गा ९५०, न सू २७ गा ७३
कथा वज्रस्वामी की वात्सल्य पर	८२१	४	४८१	नवपद गा १८ टी सम्यक्त्वाधिकार
कथा वरदत्तकुमार की	९१०	६	६०	वि श्र २०
कथा वारणा पर	५७९	३	२५	आव ह श्र ४ नि गा १२४२
कथा विष्णुकुमार की प्रभावना पर	८२१	४	४८५	नवपद गा १८ टी सम्यक्त्वाधिकार
कथा वृक्ष की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२५७	न सू २७ गा ६३ टी
कथा शकटकुमार की	९१०	६	३९	वि श्र ४
कथा शतसहस्र की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२८२	न सू. २७ गा ६५ टी.
कथा शम्ब के साहस की भाव अनुयोग पर	७८०	४	२५२	आव ह. गा १३४, वृ नि गा १७२ पीठिका
कथा शरट (गिरगिट) की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२६२	न सू २७ गा ६३ टी
कथा शिक्षा की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२७९	न सू २७ गा ६४ टी
कथा शुद्धि पर	५७९	३	३६	आव ह श्र ४ नि गा १२४२
कथा शैलक राजर्षि की	९००	५	४३८	ज्ञा. श्र ५
कथा श्रावक भार्या की पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	८४	नं सू २७ गा ७२, आव ह नि गा. ९४६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा श्रावक भार्या की भाव अननुयोग पर	७८०	४	२४५	आव. ह नि गा. १३४, वृ. नि गा १७२ पीठिका
कथा श्रेणिक की उपबृंहणा पर	८२१	४	४६५	नवपद गा. १८ टी सम्यक्त्वाधिकार
कथा श्रेणिक के कोप की भाव अननुयोग पर	७८०	४	२५३	आव ह. नि. गा १३४, वृ नि. गा. १७२ पीठिका
कथा श्रेयांस कुमार की सम्यक्त्व प्राप्ति के लिये	८२१	४	४२३	नवपद. गा १२८
कथा सती कुन्ती की	८७५	५	३४६	ज्ञा अ. १६
कथा सती कौशल्या की	८७५	५	२९८	त्रि प. पर्व ७
कथा सती चन्दनबाला (वसुमती) की	८७५	५	१९७	आव ह नि गा ५२०-५२१ त्रि प. पर्व १०, चन्दन
कथा सती दमयन्ती की	८७५	५	३५२	पंच प्र, भरत. गा ८, त्रि प. पर्व ८ सू. ३
कथा सती द्रौपदी की	८७५	५	२७५	ज्ञा. अ १६, त्रि. प पर्व ८
कथा सती पद्मावती की	८७५	५	३६६	आव ह. नि. गा १२११ भाष्य गा. २०४-२०५
कथा सती पुष्पचूला की	८७५	५	३६४	आव.ह.नि.गा. १२८४
कथा सती प्रभावती की	८७५	५	३६५	आव ह नि गा. १२८४
कथा सती ब्राह्मी की	८७५	५	१८५	आव ह नि.गा. १९६, त्रि प पर्व १, २
कथा सती मृगावती की	८७५	५	३०३	आव.ह नि गा. १०४८, दश. अ. १ नि गा ७६
कथा सती राजमती की	८७५	५	२४६	दश. अ. २, त्रि प पर्व ८, उत्त. अ. २२, राज

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा सती शिवा की	८७५	५	३४६	आव ह नि गा १२८४, भरत. गा. १०
कथा सती सीता की	८७५	५	३२१	त्रि ष पर्व ७
कथा सती सुन्दरी की	८७५	५	१९०	आव ह नि गा १९६, ३४८, त्रि ष पर्व १, २
कथा सती सुभद्रा की	८७५	५	३४०	दश अ १ नि गा ७३-७४, भरत गा. ८
कथा सती सुलसा की	८७५	५	३१३	आव ह नि गा. १२८४, भरत गा ८, ठा ९ सू. ६९१ टी
कथा २७ औत्पत्तिकी बुद्धि की	९४९	६	२४२	न सू. २७ गा ६२-६५ टी.
कथा सयडाल की पर-पापंड दोप पर	८२१	४	४६१	नवपद. गा १८ टी. सम्यक्त्वाधिकार
कथा साम्पदिक व्रत की भाव अननुयोग पर	७८०	४	२४६	आव ह नि गा १३४, वृ नि गा. १७२ पीठिका
कथा सुंसुमा, चिलातीपुत्र की	९००	५	४७०	ज्ञा अ. १८
कथा सुजातकुमार की	९१०	६	५८	वि अ १३
कथा सुन्दरीनन्द की पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	१०५	आव ह. नि गा ९५०, न. सू. २७ गा ७३
कथा सुबाहुकुमार की	९१०	६	५३	वि. अ ११
कथा सुबुद्धि मंत्री और जितशत्रु राजा की	९००	५	४५८	ज्ञा. अ १२
कथा सुवासव कुमार की	९१०	६	५०	वि अ १४
कथा सेठ (काल) की पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	७८	न सू. २७ गा ७२, आव ह नि गा ९४९

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा श्रावक भार्या की भाव अनुयोग पर	७८०	४	२४५	आव. ह नि गा १३४, वृ नि गा. १७२ पीठिका
कथा श्रेणिक की उपबृंहणा पर	८२१	४	४६५	नवपद गा १८ टी सम्यक्त्वाधिकार
कथा श्रेणिक के कोप की भाव अनुयोग पर	७८०	४	२५३	आव. ह. नि. गा.१३४, वृ नि गा. १७२ पीठिका
कथा श्रेयांस कुमार की सम्यक्त्व प्राप्ति के लिये	८२१	४	४२३	नवपद गा १२८
कथा सती कुन्ती की	८७५	५	३४६	ज्ञा अ. १६
कथा सती कौशल्या की	८७५	५	२६८	त्रि. प. पर्व ७
कथा सती चन्दनबाला (वसुमती) की	८७५	५	१६७	आव ह नि गा ५२०-५२१ त्रि प. पर्व १०, चन्दन
कथा सती दमयन्ती की	८७५	५	३५२	पच प्र, भरत गा. ८, त्रि प पर्व ८ सू. ३
कथा सती द्रौपदी की	८७५	५	२७५	ज्ञा अ. १६, त्रि प पर्व ८
कथा सती पद्मावती की	८७५	५	३६६	आव ह नि गा १३११ भाष्य गा २०४-२०५
कथा सती पुष्पचूला की	८७५	५	३६४	आव.ह.नि गा. १२८४
कथा सती प्रभावती की	८७५	५	३६५	आव ह नि गा १२८४
कथा सती ब्राह्मी की	८७५	५	१८५	आव ह नि.गा. १९६,त्रि प पर्व १, २
कथा सती मृगावती की	८७५	५	३०३	आव.ह नि गा १०४८, दश अ.१ नि गा.७६
कथा सती राजमती की	८७५	५	२४६	दश. अ.२,त्रि प पर्व ८,उत्त अ २२, राज

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा सती शिवा की	८७५	५	३४६	आव ह नि गा १२८४, भरत. गा. १०
कथा सती सीता की	८७५	५	३२१	त्रि प पर्व ७
कथा सती सुन्दरी की	८७५	५	१६०	आव ह नि गा १६६, ३४८, त्रि प पर्व १,२
कथा सती सुभद्रा की	८७५	५	३४०	दश अ १ नि गा ७३-७४, भरत गा ८
कथा सती सुलसा की	८७५	५	३१३	आव ह नि गा १२८४, भरत गा ८, ठा ६ सू ६६१ टी.
कथा २७ औत्पत्तिकी बुद्धि की	६४६	६	२४२	न सू २७ गा ६२ ६५ टी.
कथा सयडाल की पर-पाषंड दोष पर	८२१	४	४६१	नवपद गा १८ टी सम्यक्त्वाधिकार
कथा साप्तपदिक व्रत की भाव अननुयोग पर	७८०	४	२४६	आव ह नि गा १३४, बृ नि गा. १७२ पीठिका
कथा सुंसुमा, चिलातीपुत्र की	६००	५	४७०	ज्ञा अ. १८
कथा सुजातकुमार की	६१०	६	५८	वि अ. १३
कथा सुन्दरीनन्द की पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	१०५	आव ह नि गा ६५०, नं. सू. २७ गा. ७३
कथा सुबाहुकुमार की	६१०	६	५३	वि अ ११
कथा सुबुद्धि मंत्री और जितशत्रु राजा की	६००	५	४५८	ज्ञा अ. १२
कथा सुवासव कुमार की	६१०	६	५०	वि अ १४
कथा सेठ (काल) की पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	७८	न सू २७ गा ७२, आव ह नि गा ६४६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा सौर्यदत्त की	६१०	६	४६	वि अ. ८
कथा स्तम्भ की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२६६	न. सू २७ गा ६३ टी
कथा स्तूप की पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	११७	उत्त (क) अ १ टी, निर, न सू २७ गा ७४, आव ह नि. गा. ६५१
कथा स्त्री की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२६८	न. सू २७ गा ६३ टी
कथा स्थूलभद्र की पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	६५	आव ह गा ६५०, न सू २७ गा. ७३
कथा हाथी की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२६४	न सू २७ गा ६३ टी.
कनकावलीतप यंत्रसहित	६८६	३	३३८	अत व. ८ अ. २
कन्दर्प	४०२	१	४२६	उत्त. अ ३६ गा २६१, प्रव द्वा. ७३ गा ६४२
कन्दर्प भावना	१४१	१	१०४	उत्त. अ ३६ गा. २६१
कन्दर्प भावना के पाँच प्रकार	४०२	१	४२८	उत्त अ. ३६ गा. २६१, प्रव द्वा. ७३ गा ६४२
कप्पवडंसिया सूत्र का संक्षिप्त विषय-वर्णन	३८४	१	४०१	निर.
कप्पवडंसिया सूत्र के दस अध्ययनों का वर्णन	७७७	४	२३३	
कमलामेला का दृष्टान्त भाव अननुयोग पर	७८०	४	२५०	आव ह नि. गा १३४, बृ नि. गा १७२ पीठिका

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कम्मिया (अभ्यास से उत्पन्न) बुद्धि	२०१	१	१५६	नं सू २६, ठा.४ उ.४ सू ३६४
कम्मिया बुद्धि के बारह दृष्टान्त	७९२	४	२७६	न सू २७ गा.६७-६८, आव ह नि गा. ६४७
करण आठ	५९२	३	६४	कम्म गा २
करण की व्याख्या और उसके भेद	७८	१	५५	आव म.गा १०६-१०७ टी विशे गा.१२०२ से १२१८, प्रव द्वा. २२४ गा १३०२टी., कर्म भा २ गा. २, आगम.
करण के तीन भेद	९४	१	६७	ठा ३ उ १ सू १२४
करणसप्तति के सत्तर बोल	९३७	६	२१६	प्रव द्वा ६६-६७ गा.५५२-५९६, ध अधि.३ श्लो. ४७ पृ.१३०
करणानुयोग	७१८	३	३९३	ठा.१० उ ३ सू ७२७
कारिण्यति दान	७६८	३	४५२	ठा १० उ ३ सू ७४५
करुण रस	६३९	३	२१०	अनु सू १२९ गा ७८-७९
करुणा भावना	२४६	१	२२७	भावना. (परिशिष्ट), क भा.२ श्लो ४६-५०, च.
कर्म अन्तराय के भेद, अनुभाव और बन्ध के कारण	५९०	३	८१	पन प २३ सू. २९३-२९४, तत्त्वार्थ अध्या ८, कर्म भा गा ५२, भ श ८ उ ९ सू.३५
कर्म आठ	५९०	३	४२	[-]शे.गा १६०६-१६४४, तत्त्वा[-] अध्या ८, कर्म भा १, भ श.८ उ ९ सू.३५१, भ श १ उ ४, उत्त अ.३[-] पन्न प २३, द्रव्यलोक स १०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कर्म आठ के क्षय से प्रकट होने वाले आठ गुण	५६७	३	४	अनु. सू. १२६,प्रव द्वा २७६ गा १५६३-१५६४,सम ३१
कर्म आयु के भेद, अनुभाव और बन्ध के कारण	५६०	३	६५	भ श ८ उ ६ सू ३५१,पन्न प २३ सू. २६२-२६४, कर्म भा १ गा.२३,तत्वार्थ अध्या ८
कर्म और जीव का अनादि सम्बन्ध	५६०	३	५१	विशे. गा. १८१३-१८१४, कर्म भा १ प्रस्तावना
कर्म और जीव का सम्बन्ध	५६०	३	४७	विशे. गा. १६३५-१६३६
कर्मकाठिया तेरह	६८३	७	१२७	आव ह गा ८४१-८४२ पृ ३४६
कर्म का लक्षण	५६०	३	४४	कर्म भा १ गा. १ तथा भूमिका
कर्म की चार अवस्थाएं	२५३	१	२३७	कर्म भा. २ गा. १ व्याख्या
कर्म की मूर्तता	५६०	३	४६	विशे. गा १६२५-१६२८
कर्म की व्याख्या और भेद	२७	१	१८	कर्म भा. १ गा १ व्याख्या
कर्म की शुभाशुभता	५६०	३	४६	विशे गा १६४२-१६४५
कर्म की सिद्धि	५६०	३	४४	विशे गा १६११-१६१७.
कर्म के विषय में गणधर अग्निभूति का शंका समाधान	७७५	४	३१	विशे गा १६०६ से १६४८
कर्म के नामादि दस भेद	७६०	३	४४१	आचा श्रु १ अ २ उ.१ टी. गा १८३-१८४
कर्म गोत्र के भेद, अनुभाव और बन्ध के कारण	५६०	३	७६	भ श. ८ उ ६ सू. ३५१,पन्न प २३ सू. २६२-२६४,कर्म भा १ गा. ५२,तत्त्वार्थ अध्या ८
कर्म ज्ञानावरणीय के भेद, अनुभाव, बन्ध के कारण	५६०	३	५५	भ. श ८ उ. ६ सू ३५१, पन्न प २३ सू २६२-२६४,कर्म भा १ गा. ६,५४,तत्त्वार्थ अध्या ८

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कर्म तीन	७२	१	५२	जी प्रति ३ उ १ सू १११, तन्दुल सू १४,१५ पृ ४०
कर्म दर्शनावरणीय के भेद, अनुभाव और बन्ध के कारण	५६०	३	५६	कर्म भा १ गा १०-१२,५४, भ. श ८ उ ६ सू ३५१, पन्न प० २३ सू २९२-२९४,
कर्म नाम के भेद, अनुभाव और बन्ध के कारण	५६०	३	६८	पन्न प. २३ सू. २९२-२९४, भ. श. ८ उ. ६ सू ३५१, ज्ञा अ ८ सू. ६४, आव ह नि गा १७९-१८१, कर्म भा १ गा २३, २७,३१ तत्त्वार्थ अध्या ८
कर्म प्रकृतियों का उदयाधिकार गुणस्थानों में	८४७	५	६४	कर्म. भा २ गा १३-२२
कर्म प्रकृतियों का उदीरणाधिकार गुणस्थानों में	८४७	५	९८	कर्म भा २ गा २३-२४
कर्म प्रकृतियों का बन्धाधिकार गुणस्थानों में	८४७	५	८८	कर्म. भा २ गा ३-१२
कर्म प्रकृतियों का सत्ताधिकार गुणस्थानों में	८४७	५	९९	कर्म भा २ गा २५-३४
कर्म प्रकृतियों के बारह द्वार	८०९	४	३३६	कर्म. भा. ५ गा १-१९
कर्म बन्ध के कारण	५९०	३	५२	कर्म भा १ भूमिका तथा गा. १ व्याख्या, ठा. १ सू. ९६
कर्मभूमिज	७१	१	५१	ठा ३ उ १ सू १३०, पन्न प १ सू ३७, जी प्रति ३ सू १०७
कर्मभूमि पन्द्रह	८५८	५	१४२	पन्न प १ सू ३७, भ श. २० उ. ८ सू ६७५

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कर्म मोहनीय के भेद, अनुभाव और बन्ध के कारण	५९०	३	६२	भ श ८ उ ९ सू ३५१, पन्न. प २३ सू २९२-२९४, कर्म भा. १ गा १३-२२, तत्त्वार्थ अध्या ८
कर्मवाद	४९७	२	२१२	
कर्मवाद का मन्तव्य क्या आत्मा को पुरुषार्थ से विमुख नहीं करता ?	५९०	३	८९	
कर्मवाद का महत्त्व	५९०	३	८५	कर्म भा. १ भूमिका
कर्मवादी	१९२	१	१५०	आचा अ १ उ. १ सू ५
कर्म वेदनीय के भेद, अनुभाव और बन्ध के कारण	५९०	३	६०	पन्न प २३ सू २९२-२९४, भ श. ८ उ. ९ सू. ३५१, भ श ७ उ ६ सू २८६, कर्म भा १ गा. १२, तत्त्वार्थ अध्या ८
कर्म से छुटकारा और उसके उपाय	५९०	३	५३	विशे गा. १८१७-१८२१, भ श ६ उ. ३ सू २३५, स्या का २९
कर्मादान पन्द्रह	८६०	५	१४४	उपा. अ. १ सू ७, भ. श ८ उ. ५ सू ३३०, आव. ह अ. ६ पृ ८२८
कर्मार्य	७८५	४	२६६	वृ. उ. १ नि गा ३२६३
कर्मों की उत्तरप्रकृतियाँ एक सौ अड़तालीस	६३३	३	१९७	कर्म भा १, पन्न. प २३ सू २९३
कर्मों की सफलता के विषय में पाँच गाथाएं	९९४	७	२१४	
कर्मों के क्रम की सार्थकता	५९०	३	८४	पन्न. प २३ सू २८८ टी
कलाचार्य	१०३	१	७२	रा सू ७७
कलासवर्ण संख्यान	७२१	३	४०४	ठा. १० उ ३ सू. ७४७

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कल्प अठारह साधु के	८९०	५	४०२	सम १८, दश अ ६ गा ८-६९
कल्प दस साधु के	६६२	३	२३४	पचा १७ गा. ६-४०
कल्पनीय ग्रामादि १६ स्थान	८६७	५	१६६	वृ उ. १ सू. ६
कल्पपलिमन्थु छः	४४४	२	४७	ठा. ६ उ ३ सू ५२९, वृ (जी) उ ६
कल्प बीस	९०४	६	९	वृ उ १
कल्पवृत्त के दस भेद	७५७	३	४४०	सम १०, ठा. १० उ ३ सू ७६६, प्रव द्वा १७१ गा १०६७-७०
कल्पवृत्त क्या सचित्त वनस्पति रूप और देवाधिष्ठित हैं?	९१८	६	१४०	आचा श्रु २ पीठिका, जी प्रति ३ सू. १११, ज वक्ष २ सू २० टी., प्रव द्वा १७१, यो प्रका. ४ श्लो ९४
कल्प संख्यान	७२१	३	४०६	ठा १० उ ३ सू ७४७
कल्पस्थिति छः	४४३	२	४५	ठा ३ उ ४ सू २०६, ठा ६ उ ३ सू ५३०, वृ (जी) उ ६
कल्पातीत	५७	१	४०	तत्त्वार्थ अध्या ४ सू १८
कल्पोपपन्न देव के इन्द्र दस	७४१	३	४२०	ठा १० उ ३ सू ७६९
कल्पोपपन्न देव बारह	८०८	४	३१८	पन्न प २, ४, ६, जी. प्रति ३ सू २०७-२२३, तत्त्वार्थ अध्या ४
कल्याणक ५ तीर्थङ्करदेव के	२७५	१	२५३	पचा ६ गा. ३०-३१, दशा द ८
कषाय आश्रव	२८९	१	२६९	ठा ५ उ २ सू ४१८, सम ५
कषाय की ऐहिक हानियाँ	१६६	१	१२५	दश अ. ८ गा ३८
कषाय की व्याख्या और भेद	१५८	१	११७	पन्न प १४ सू १८८, ठा ४ उ १ सू. २४९, कर्म भा १ गा. १७-१८
कषाय कुशील	३६६	१	३८१	ठा ५ उ. ३ सू ४४५, भ.श २५ उ ६ सू ७५१
कषाय कुशील के पाँच भेद	३६९	१	३८४	ठा ५ उ. ३ सू. ४४५

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कषाय के भेद और प्रभेद	१५८-	१	११७-	ठा ४ सू २४९, २९३, पन्न. प १४
उपमा सहित	१६२		१२२	सू १८८ कर्म भा १ गा १९, २०
कषाय जीतने के चार उपाय	१६७	१	१२५	दश अ ८ गा ३९
कषाय पर तेईस गाथाएं	९९४	७	२३६	
कषाय परिणाम	७४९	३	४२६	ठा १० उ. ३ सू ७१३, पन्न प १३ सू १८२
कषाय प्रतिक्रमण	३२९	१	३३८	ठा. ५ उ ३ सू ४६७, आव ह अ ४ गा. १२५०-१२५१
कषाय प्रमाद	२९१	१	२७३	ठा. ६ उ ३ सू ५०२, ध अधि २ श्लो. ३९ पृ ८१, पंचा १ गा २३ टी
कषाय मार्गणा और भेद	८४६	५	५८	कर्म भा ४ गा ११
कषाय मोहनीय	२९	१	२०	कर्म भा १ गा १७, पन्न. प १४ सू १८९ टी
कषाय समुद्घात	५४८	२	२८८	पन्न. प. ३६ सू ३३१, ठा ७ उ ३ सू ५८६, द्रव्य लो स. ३ पृ १२५, प्रव द्वा २३१ गा १-११
कषायात्मा	५९३	३	९६	भ. श १२ उ. १० सू ४६७
काँक्षा	२८५	१	२६५	उपा अ १ सू ७, भाग ह. श ३
काक की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२६२	नं सू. २७ गा. ६३ टी
काठिया तेरह	९८३	७	१२७	प्र.व. नि गा ८४१-८४२
काण्ड नरकों के	५६०	२	३२८	जी. प्रति ३ सू. ६९
कापोत लेश्या	४७१	२	७२	उत्त. अ. ३४ गा. २५-२६, कर्म भा. ४ गा. १३
काम कथा	९७	१	६९	ठा. ३ उ ३ सू. १८९
काम गुण पाँच	३९५	१	४२०	ठा. ५ उ. १ सू ३९०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कामदेव श्रावक	६८५	३	२०६	उपा अ २
कामभोग की असारता के विषय में सोलह गाथाएं	६६४	७	२१८	
काम सुख	७६६	३	४५४	ठा १० उ.३ सू. ७३७
कायकौत्कुच्य	४०२	१	४२६	उत्त अ. ३६ गा २६१, प्रव. द्वा. ७३ गा ६४२
कायक्लेश	४७६	२	८६	उत्त अ ३० गा ८, ठा. ६ उ ३ सू. ५११, उव सू १६, प्रव द्वा ६ गा २७०
कायक्लेश के तेरह भेद	६३३	३	१६०	उव सू. १६, भ श. २५ उ ७ सू. ८०२
कायक्लेश के तेरह भेद	८१६	४	३६७	उव. सू १६
कायगुप्ति	१२८(ख)	१	६२	उत्त अ. २४ गा. २४-२५, ठा ३ उ १ सू १२६
काय छः	४६२	२	६३	ठा ६ उ ३ सू. ४८०, दश. अ ४, कर्म भा. ४ गा १०
काय छः का अल्पबहुत्व	४६४	२	६५	जी प्रति २ सू ६२, पन्न प ३ द्वा ४
काय छः की कुलकोटियाँ	४६३	२	६४	प्रव द्वा १५० गा ६६३-६६७
काय पुण्य	६२७	३	१७२	ठा ६ उ ३ सू. ६७६
कायमार्गणा के भेद	८४६	५	५८	कर्म भा ४ गा १०
काययोग	६५	१	६८	ठा ३ उ १ सू १२४, तत्त्वार्थ अध्या. ६ सू. १
काययोग के सात भेद	५४७	२	२८६	भ.श २५ उ १ सू. ७१६, द्रव्य लोक स ३ पृ ३५८, कर्म भा. ४ गा २४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
काय विनय	४९८	२	२३०	उत्त सू २०, भश २५ उ. ७ सू ८०२, ठा. ७ उ ३ सू ५८५, ध. अधि. ३ श्लो ५४ टी. पृ. १४३
काय विनय अप्रशस्त के सात भेद	५०४	२	२३३	भ श २५ उ ७ सू ८०२, ठा ७ उ ३ सू ५८५, उत्त सू ३०
कायविनय प्रशस्त के सात भेद	५०३	२	२३२	भ श २५ उ. ७ सू ८०२, ठा ७ उ. ३ सू ५८५, उत्त सू ३०
कायस्थिति	३१	१	२१	ठा. २ उ ३ सू ८५
काया के दोष सामायिक के	७८९	४	२७३	शिक्षा
कायिकी क्रिया	२९२	१	२७७	ठा २ उ. १ सू ६०, ठा. ५ उ २ सू ४१९, पन्न. प. २२ सू. २७९
कायोत्सर्ग आवश्यक	४७९	२	९२	आव ह. अ ५
कायोत्सर्ग के १२ आगार	८०७	४	३१६	आव ह अ. ५ पृ ७७८
कायोत्सर्ग के उन्नीस दोष	८९९	५	४२५	आव ह अ ५ गा. १५४६-१५४७, प्रव द्वा ५ गा २४७-२६२, यो. प्रका. ३ पृ २५०
कारक समकित	८०	१	५८	विशे गा. २६७५, द्रव्यलो. स ३ श्लो. ६६९, ध. अधि. २ श्लो. २२ टी पृ ३९, श्रा. प्र. गा. ४९
कारण	४३	१	२७	न्याय दी, जै. प्र
कारण के दो भेद	३५	१	२३	विशे. गा. २०९९
कारण दोष	७२२	३	४०९	ठा. १० उ ३ सू ७४३
कारण दोष	७२३	३	४१२	ठा. १० उ. ३ सू ७४३
कारुण्यदान	७९८	३	४५१	ठा. १० उ ३ सू ७४५
कार्माण काययोग	५४७	२	२८७	भ. श. २५ उ १ सू ७१९, द्रव्य लो स ३ पृ. ३५८, कर्म. भा. ४ गा. २४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कार्माण शरीर	३८९	१	४१४	पन्न.प.२१सू.२६७, ठा.५ उ १ सू. ३९५, कर्म.भा. १ गा ३३
कार्माणशरीरबन्धन नामकर्म	३९०	१	४१६	कर्म भा १ गा ३५, प्रव द्वा २१६ गा. १२७३
कार्मिकी बुद्धि	२०१	१	१५९	नसू २६, ठा.४ उ ४ सू ३६४
कार्य	४३	१	२७	न्याय को, जै. प्र.
काल	२१०	१	१८९	न्यायप्र.अध्या ७, रत्ना.परि.४ सू. १५ टी०
काल	२७९	१	२५७	आगम, कारण., सम्मति भा ५ काण्ड ३ गा० ५३
काल के चार भेद	४३१	२	३८	विशे. गा. २७०८-२७१०
काल के नौ भेद	६३४	३	२०२	विशे. गा० २०३०
काल के भेद और व्याख्या	३२	१	२२	ठा २ उ ४ सू. ९९
काल के ७ भेद(मुहूर्त तक)	५५१	२	२९२	ज. वक्ष २ सू. १८
काल चक्र के दो भेद	३३	१	२२	ठा २ उ १ सू ७४
काल द्रव्य	४२४	२	३	आगम, उत्त. अ. ३६
काल निधि	६५४	३	२२१	ठा ९ उ. ३ सू. ६७३
कालपरिमाण के ४६ भेद	९९८	७	२६३	अनु सू ११४, भ श ६ उ ७
काल पुद्गल परावर्तन सूक्ष्म और बादर का स्वरूप	६१८	३	१३९	कर्म भा ५ गा.८६-८८
काल मत्युपेक्षणा	४५६	२	६०	ठा ६ उ ३ सू. ५०२
कालाचार	५६८	३	६	ध अधि.१ श्लो.१९ टी पृ १८
कालानुपूर्वी	७१७	३	३९१	अनु सू. ७१
कालिक श्रुत	८२२	५	११	नं० सू० ४४
काली रानी	९८६	३	३३३	अंत. व ८ अ १

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कालोदधि समुद्र में चन्द्र सूर्यादि की संख्या	७६६	४	३०१	सूर्य प्रा. १६ सू १००
काव्य के चार भेद	२१२	१	१९०	ठा ४ उ. ४ सू ३७६
काव्य के रस नौ	६३६	३	२०७	अनु.सू १२६ गा ६३ से ८१
कितनी दीक्षापर्यायवाले को कौनसा सूत्र पढ़ाना चाहिए	५१४	२	२४३	ठा ५ उ १ सू ३९९, व्यव.उ.१० सू २१-३५
किल्विषिक	७२६	३	४१६	तत्त्वार्थ.अध्या. ४ सू ४
किल्विषिकी भावना	१४१	१	१०४	उत्त अ. ३६ गा २६३
किल्विषिकी भावना के पांच प्रकार	४०३	१	४३०	उत्त० अ० ३६ गा. २६३,प्रव द्वा ७३ गा. ६४३
किस गति में किस कषाय की अधिकता होती है ?	१६३	१	१२३	
कीलिका संहनन	४७०	२	७०	पन्न प.२३ सू.२९३,ठा.६ उ.३ सू ४९४,कर्म भा १ गा.३९
कुण्डकोलिक श्रावक	६८५	३	३१६	उपा अ. ६
कुन्ती	८७५	५	३४९	ज्ञा अ १६
कुब्ज संस्थान	४६८	२	६८	ठा ६ सू ४९५,कर्म भा. १ गा ४०
कुब्जा का दृष्टान्त क्षेत्र अननुयोग पर	७८०	४	२३९	आव ह नि गा १३३,बृ.नि.गा. १७१ पीठिका
कुमार की कथा पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	७९	न सू २७ गा. ७२,आव ह नि. गा० ९४९
कुम्भक प्राणायाम	५५९	२	३०३	यो. प्रका ५ श्लो. ७
कुम्भ की उपमा से ४ पुरुष	१६६	१	१२६	ठा ४ उ. ४ सू ३६०
कुम्भ की चौभंगी	१६८	१	१२५	ठा० ४ उ० ४ सू० ३६०
कुरुक्षेत्र दस (महाविदेह के)	७५४	३	४३८	ठा० १० उ० ३ सू० ७६४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कुलकर दस आगामी उत्सर्पिणी के	७६७	३	४५०	ठा० १० उ० ३ सू० ७६७
कुलकर दस गत ,,	७६६	३	४४६	ठा० १० उ० ३ सू० ७६७
कुलकर ७ आगामी ,,	५११	२	२३६	ठा. ७ उ. ३ सू ५५६, सम १५६
कुलकर सात गत ,,	५१२	२	२३६	ठा ७ उ ३ सू ५५६, सम १५७
कुलकर सात वर्तमान अवसर्पिणी के	५०८	२	२३७	ठा ७ उ० ३ सू० ५५६, सम १५७, प्रै० मा० २ पृ० ३६२
कुलकोड़ी छःकाय की	४६३	२	६४	प्रव द्वा १५० गा ६६३-६६७
कुल धर्म	६६२	३	३६१	ठा० १० उ० ३ सू० ७६०
कुलपर्वत २६ समयक्षेत्र के	६८६	७	१४४	सम० ३६
कुल मद	७०३	३	३७४	ठा. १० उ ३ सू ७१०, ठा. ८ सु ६०६
कुलार्य	७८५	४	२६६	वृ उ १ नि गा ३२६३
कुव्यसन सात	६१८	६	१५५	गौ कु ज्ञा म. १८ सू १३७, वृ उ १ नि गा. ६४०
कुशध्वज राजा की कथा कांक्षा दोष के लिये	८२१	४	४५५	नवपद गा. १८ टी.
कुशील	३४७	१	३६०	आव ह. अ ३ नि. गा ११०७-११०८, प्रव द्वा. २ गा १०६-११५
कुशील	३६६	१	३८१	ठा ५ उ ३ सू. ४४५, भ. श. २५ उ० ६ सू० ७५१
कुशील के अठारह भेद	८६३	५	४१०	आव ह. अ. ४ पृ ६५२
कुशील के तीन भेद	३४७	१	३६०	आव ह अ ३ निगा ११०७ पृ ५१६ प्रव द्वा २ गा. १०६
कुशील के पांच भेद	३६६	१	३८४	ठा ५ उ ३ सू० ४४५
[1] कृतदान	७६८	३	४५२	ठा० १० उ० ३ सू० ७४५

[1] पूर्वकृत उपकार के बदले दिया जाने वाला दान।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
[1] कृतिकर्म	७६०	३	४४३	आचा अ.२ उ १ नि गा १८८
कृतिकर्म कल्प	६६२	३	२३८	पंचा १७ गा २३-२५
[2] कृत्स्ना आरोपणा	३२६	१	३३५	ठा.५ उ २ सू ४३३, सम.२८
[3] कृपण वनीपक	३७३	१	३८८	ठा० ५ उ० ३ सू ४५८
कृपिकर्म	७२	१	५२	जी.प्रति.३ उ १सू.१११,तन्दुल. सू. १४-१५ पृ. ४०
कृष्ण का अपरकंका गमन (आश्चर्य)	६८१	३	२८०	ठा.१० उ. ३ सू ७७७,प्रव द्वा. १३८ गा ८८५
कृष्ण का अपरकंकागमन	६००	५	४६६	ज्ञा. अ १६
[4] कृष्णपाक्षिक	८	१	७	भ श १३ उ.१ सू.४७०,ठा. २ उ २ सू ७६
[5] कृष्णराजियाँ आठ	६१६	३	१३३	ठा ८ उ.३ सू.६२३, भ. श ६ उ.५ सू.२४२, प्रव द्वा. २६७ गा १४४१ से १४४४
कृष्ण लेश्या	४७१	२	७३	उत्त अ.३४ गा.२१-२२,कर्म भा.४ गा. १३
कृष्णा रानी	६८६	३	३४१	अन्त व. ८ अ. ४
केवलज्ञान	३७५	१	३६१	ठा.५ उ ३ सू ४६३,नं सू १, कर्म. भा.१ गा. ४ व्याख्या
केवलज्ञान साकारोपयोग	७८६	४	२६८	पन प २६ सू. ३१२
केवलज्ञानावरणीय	३७८	१	३६४	ठा.५ उ ३ सू ४६४,कर्म भा १ गा ४

१ वन्दना। २ प्रायश्चित्त का एक भेद। ३ [illegible] प्रशंसा कर [illegible] लेने वाला। ४ [illegible] संसार में [illegible] वाला जीव। ५ [illegible] इत्यादि

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
केवलज्ञानी जिन	७४	१	५३	ठा ३ उ ४ सू २२०
केवलदर्शन	१६६	१	१५८	ठा ४सू ३६५,कर्म भा ४गा १२
केवलदर्शनअनाकारोपयोग	७८६	४	२६६	पन्न प. २६ सू० ३१२
केवलि मरण	८७६	५	३८४	सम १७,प्रव द्वा १५७गा.१००७
केवलि लब्धि	९५४	६	२६३	प्रव द्वा २७० गा १४६३
केवलि समुद्घात	५४८	२	२६०	पन्न.प. ३६सू ३३१,ठा.७उ ३सू ५८६,द्रव्य लो स ३ पृ. १२५,प्रव द्वा २३१गा १३११
केवली के दस अनुत्तर	६५५	३	२२३	ठा १० उ ३ सू७६३
केवली के परिषह सहन करने के पांच स्थान	३३२	१	३४२	ठा० ५ उ० १ सू० ४०६
केवली के पांच अनुत्तर	३७६	१	३६१	ठा० ५ उ० १ सू० ४१०
केवली जानने के ७ स्थान	५२४	२	२६१	ठा० ७ उ० ३ सू० ५५०
केवलीप्ररूपितधर्ममांगलिक लोकोत्तम और शरणरूप है	१२६क	१	९५	आव ह अ ४ पृ. ५६६
केसवाणिज्जे कर्मादान	८६०	५	१४५	उपा.अ १सू.७, भ श ८ उ.५ सू ३३०,आव.ह अ ६पृ ८२८
कोङ्कणदारक का दृष्टान्त भाव अननुयोग पर	७८०	४	२४८	आव. ह गा १३४, बृ नि गा०१७२ पीठिका
कोणिक की विशाला नगरी जीतने की कथा	९१५	६	११७	उत्त (क) अ १ गा ३ टी.,निर अ.१,न.सू.२७गा.७४,आव ह नि गा. ९५१
कोष्ठक बुद्धि लब्धि	९५४	६	२६६	प्रव द्वा २७० गा १४९४
१ कौकुचिक	४४४	२	४७	ठा ६उ ३सू ५२६,बृ (जी)उ ६

१ कुत्सित चेष्टा कर संयम की घात करने वाला साधु ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कौतुक	४०४	१	४३१	उत्त अ ३६ गा २६२, प्रव द्वा ७३ गा० ६४४
कौतुक भूतिकर्म आदि का स्वरूप	३४७	१	३६०	भाव ६ अ ३ नि गा ११०१ पृ ५१६, प्रव.द्वा २ गा. ११३-११५
१ कौत्कुच्य	४०२	१	४२६	उत्त अ.३६ गा २६१, प्रव द्वा ७३ गा० ६४०
कौशल्या	८७५	५	२६८	त्रि० प० पर्व ७
क्या एकलविहार शास्त्र सम्मत है ?	९१८	६	१४२	वृ पीठिका गा ६८८-७०२ ई., ठा ८ उ ३ सू० ५९४
क्या पृथ्वी के जीव अठारह पाप का सेवन करते हैं?	९८३	७	१२२	भ श. १९ उ. ३ सू ६५०
क्या सभी मनुष्य एकसी क्रिया वाले होते हैं ?	९८३	७	१२१	भ० श० १ उ० २ सू० २१
क्रिया की व्याख्या और उसके पाँच भेद	२९२	१	२७६	ठा.२ उ.१ सू. ६०, ठा ५ उ २ सू ४१९, पन्न प. २२ सू २७९
क्रिया के पाँच भेद	२९३	१	२७७	ठा.२ उ.१ सू ६०, ठा.५ उ.२ सू ४१९, पन्न.प.२२ सू.२८४
क्रिया के पाँच भेद	२९४	१	२७९	ठा २ उ १ सू.६०, ठा.५ उ २ सू. ४१९, आव.ह अ.४ पृ ६१२
क्रिया के पाँच भेद	२९५	१	२८०	ठा २ उ.१ सू ६०, ठा.५ उ.२ सू ४१९, आव.ह अ ४ पृ ६१२
क्रिया के पाँच भेद	२९६	१	२८२	ठा २ उ १ सू ६०, ठा.५ उ.२ सू. ४१९, आवश्यक अ.४ पृ. ६१८, नि गा १८०३

१ दूसरों को हँसाने के लिए [illegible] चेष्टा

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
क्रिया पचीस	९४०	६	२१८	ठा.२ उ.१ सू ६०, ठा ५ उ २ सू. ४१९, आव ह अ ४ पृ ६११
क्रियारहित ज्ञान पर ४ गाथा	९९४	७	१६२	
क्रिया रुचि	६९३	३	३६३	उत्त अ २८ गा २५
क्रियावादी	१९२	१	१५०	आचा० अ० १ उ० १ सू० ५
क्रियावादी की व्याख्या और उसके १८० भेद	१९१	१	१४४	भ श ३० उ १ सू. ८२४ टी., आचा. अ १ उ १ सू ३, सूय अ १२
क्रियास्थान तेरह	८१४	४	३९२	सूय श्रु २ अ. २ सू १६ से २९
१ क्रीत दोष	८६५	५	१६३	प्रव द्वा. ६७ गा ५६५, ध अधि. ३ श्लो २२ पृ ३८, पि नि.गा ९२, पि वि गा ३, पचा १३ गा ५
क्रीड़ा अवस्था	६७८	३	२६७	ठा.१० उ ३ सू ७७२
क्रोध आदि की शांति के तेरह उपाय	८१८	४	४०२	श्राद्ध प्रका० २ पृ० ४३५
क्रोध कषाय के दस नाम	७०२	३	३७४	सम० ५२
क्रोध के चार भेद और उनकी उपमाएं	१५९	१	१२०	पन्न प. १४ सू. १८८, ठा ४ सू २४९, २९३ टी, कर्म भा.१ गा.१९
क्रोध दोष	८६६	५	१६५	प्रव गा ५६७, ध अधि ३ श्लो २२ टी पृ ४०, पिं नि गा. ४०८, पि वि गा ५८, पचा १३ गा १८
क्रोध निःसृत असत्य	७००	३	३७१	ठा १० सू ७४१, पन्न प ११ सू १६५, ध अधि. ३ श्लो. ४१ पृ १२२
क्रोधसंज्ञा	७१२	३	३८७	ठा १० उ ३ सू ७५२, भ. श ७ उ० ८ सू० २९६

१ साधु के निमित्त खरीदे हुए आहार को ग्रहण करना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
क्रोधादि उत्पत्ति के ४ स्थान	१६५	१	१२४	ठा० ४ उ० १ सू० २४६
क्रोधादि के चार प्रकार	१६४	१	१२३	ठा० ४ उ० १ सू० २४६
क्लेश दस	७१४	३	३८८	ठा० १० उ० ३ सू० ७३६
क्षपक की पारिणामिकी बुद्धि की कथा	६१५	६	८८	न.सू २७ गा.७३, आव. ह. नि गा० ६४०
क्षपकश्रेणी	८४७	५	८४	प्रव द्वा ८६ गा. ६६४-६६६, कर्म. भा० २ गा० २
क्षपकश्रेणी का वर्णन	५६	१	३६	विशे गा. १३१३, द्रव्यलो.स ३ श्लो. १२१८-१२३४, कर्म भा २ गा. २, आव.म.गा. १२१-१२३
क्षमा	६६१	३	२३३	नव.गा. २३, सम. १०, शा.भा १ प्रक ८ (संवर भावना)
क्षमापना पर आठ गाथाएं	६६४	७	२५०	
क्षयोपशमप्रत्यय अवधिज्ञान	१३	१	११	ठा० २ उ० १ सू. ७१
क्षान्ति	३५०	१	३६५	ठा ५ सू. ३९६, ध.अधि. ३ श्लो ४६ पृ १२७, प्रव द्वा. ६६ गा. ५५४
क्षान्ति क्षमणता	७६३	३	४४५	ठा. १० उ० ३ सू. ७४८
क्षायिक और औपशमिक सम्यक्त्व में क्या अन्तर है?	६८३	७	११७	भ० श० १ उ० ३ सू. ३७ टी.
क्षायिकभाव की व्याख्या और उसके नौ भेद	३८७	१	४०८	कर्म.भा. ४ गा ६४, अनु. सू. १२६, प्रव द्वा. २२१ गा० १२६१
क्षायिक समकित	८०	१	५६	प्रव.द्वा १४६ गा ६४४, कर्म. भा० १ गा० १५
क्षायिक समकित	२८२	१	२६३	कर्म० भा० १ गा १५
क्षायोपशमिकभाव की व्याख्या और उसके १८ भेद	३८७	१	४०८	कर्म.भा. ४ गा ६४, अनु.सू १२६, प्रव द्वा. २२१ गा. १२६२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
क्षायोपशमिक समकित	८०	१	५६	प्रव द्वा. १४६ गा ९४४, कर्म भा० १ गा० १५
क्षायोपशमिक समकित	२८२	१	२६२	कर्म० भा० १ गा० १५
क्षीणकषायवीतराग छद्मस्थ गुणस्थान	८४७	५	८४	कर्म० भा० २ गा० २
क्षीरमधुसर्पिराश्रवलब्धि	९५४	६	२९५	प्रव द्वा २७० गा १४९४
क्षुद्र प्राणी छः	४६७	२	६७	ठा. ६ उ. ३ सू ५१३
क्षुल्लक की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२६७	न०सू० २७ गा० ६३ टी.
क्षुल्लक निर्ग्रन्थीय अध्ययन की अठारह गाथाएं	८९७	५	४१६	उत्त० अ० ६
क्षेत्र	२१०	१	१८९	न्याय प्र अध्या ७, रत्ना. परि० ४ सू० १५ टी०
क्षेत्रपरिमाण के तेईस भेद	९२५	६	१७३	अनु.सू. १३३ पृ १६०-१६२, प्रव द्वा २५४ गा १३९१टी.
क्षेत्र पल्योपम (सूक्ष्म, व्यवहारिक)	१०८	१	७७	अनु. सू १४०, प्रव द्वा. १५८ गा० १०२६
क्षेत्र पुद्गल परावर्तन सूक्ष्म और बादर का स्वरूप	६१८	३	१३८	कर्म. भा ५ गा ८६-८८
क्षेत्र प्रत्युपेक्षणा	४५६	२	६०	ठा० ६ उ० ३ सू० ५०२
क्षेत्र वास्तु आदि ६ परिग्रह	६४०	३	२११	आव. ह अ ६ पृ. ८२५
क्षेत्र सागरोपम	१०९	१	७८	अनु.सू १४०, प्रव.द्वा. १५८ गा १०३१-१०३२
क्षेत्रानुपूर्वी	७१७	३	३९१	अनु सू० ७१
क्षेत्रार्य	७८५	४	२६६	बृ उ १ नि गा. ३२६३

ख

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
खड्ग (गेंडे) की कथा पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	११६	न सू. २७ गा. ७४, मल. नि गा ६४१
खण्ड भेद	७५०	३	४३२	ठा. १०३, ३ सू ७१३ टी, पन्न. प. ११ सू. १७४
खर पृथ्वी	४६५	२	६६	जी. प्रति. ३ सू. १०१
खरबादरपृथ्वी के ४० भेद	६८७	७	१४५	पन्न. प. १ सू १४
खिंसित वचन	४५६	२	६२	ठा ६ उ. ३ सू. ५२७, प्रव द्वार २३५ गा १३२१, बृ (नी.) उ ६
खुड्ग (अंगूठी) की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२५८	न० सू० २७ गा० ६३ टी.
खुले मुँह कही गई भाषा सावद्य होती है या निरवद्य?	६१८	६	१५०	भग १६ उ २ सू ५६८
खेचर	४०६	१	४३६	पन्न प. १ सू. ३१, उत्त अ. ३६
खेलोषधि लब्धि	६५४	६	२६०	प्रव द्वा २७० गा १४९२
ख्याति	४६७	२	३३०	

ग

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गंठी मुट्ठी (ग्रन्थि मुष्टि) आदि पच्चक्खाण के आठ संकेत	५८६	३	४२	आव ह अ ६ नि गा. १५ ७८, प्रव द्वा. ४ गा २००
गच्छ प्रतिबद्ध यथालन्दिक	५२२	२	२६०	विशे० गा० ७ टी.
गच्छ में आचार्य उपाध्याय के पाँच कलहस्थान	३४४	१	३५५	ठा० ५ उ० १ सू० ३६६
गच्छाचार पइण्णा	६८६	३	३५४	ग० प०
गज की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२६४	नं सू. २७ गा ६३ टी.

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गजसुकुमाल की कथा	७७६	४	१९३	अंत० व० ३ अ० ८
गण आठ	५९६	३	१०८	छ०, पिंगल०
गण को धारण करने वाले के छः गुण	४५०	२	५४	ठा० ६ उ० ३ सू० ४७५
गण ४ शुभ और ४ अशुभ	२१३	१	१९१	सरल पिं०
गणधर अकम्पित स्वामी का नरक विषयक शंका समाधान	७७५	४	५२	विशे गा १८८५-१९०४
गणधर अग्निभूति का कर्म विषयक शंका समाधान	७७५	४	३१	विशे गा १६०६-१६४४
गणधर अचलभ्राता का पुण्य पाप विषयक शंका समाधान	७७५	४	५४	विशे गा १९०५ से १९४८
*गणधर ८ पार्श्वनाथ के	५६५	३	३	ठा ८उ ३सू ६१७,सम. ८टी
गणधर इन्द्रभूति का आत्मा विषयक शंका समाधान	७७५	४	२४	विशे० गा० १५४९-१६०५
गणधर ग्यारह	७७५	४	२३	विशे गा १५४९ से २०२४, सम ११,आव ह नि गा ५९३-६५९,आव ह टिप्पण पृ २८-३५
* गणधर दस भगवान् पार्श्वनाथ के	५६५	३	३	ठा ८सू ६१७टी, सम ८टी प्रव द्वा १५गा ३३०,आव ह नि गा २६८-२६९, सश द्वा १११
गणधर पदवी	५१३	२	२४०	ठा ३ उ ३ सू १७७ टी.
गणधर प्रभासस्वामी का मोक्ष विषयक शंका समाधान	७७५	४	६०	विशे०गा० १९७३ से २०२४

* पृष्ठ. ३७ पर टिप्पणी देखो।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गणधर मंडितस्वामी का बन्ध मोक्षविषयक शंकासमाधान	७७५	४	४४	विशे. गा. १८०२-१८६३
गणधर मेतार्यस्वामी का परलोकविषयक शंकासमाधान	७७५	४	५६	विशे. गा. १९४९-१९७१
गणधर मौर्यपुत्र का देवों के विषय में शंका समाधान	७७५	४	५०	विशे. गा. १८६४-१८८४
गणधर लब्धि	९५४	६	२९३	प्रव. द्वा. २७० गा. १४९३
गणधर वाद संक्षेप में	७७५	४	२३	विशे. गा. १५४९-२०२४
गणधर वायुभूति का जीव और शरीर के भेदाभेद विषयक शंकासमाधान	७७५	४	३४	विशे. गा. १६४९-१६८६
गणधर व्यक्तस्वामी का पृथ्वी आदि भूतों के अस्तित्व विषय में शंका समाधान	७७५	४	३६	विशे. गा. १६८७-१७६८
गणधर संख्या तीर्थङ्करों की	७७५	४	२३	आव. ह. नि. गा. २६६-२६९
गणधर सुधर्मास्वामी के, 'यहाँ जो जैसा है परभव में वह वैसा ही रहता है,' मत का समाधान	७७५	४	४०	विशे. गा. १७७०-१८०१
गण धर्म	६९२	३	३६१	ठा० १० उ० ३ सू० ७६०
गणना अनन्तक	४१७	१	४४१	ठा० ५ उ० ३ सू० ४६२
गणनानुपूर्वी	७१७	३	३९१	अनु सू० ७१
गणनासंख्या के तीन भेद	६१९	३	१४३	अनु० सू० १४६
गण ९ भगवान् महावीर के	६२५	३	१७१	ठा० ९ उ० ३ सू० ६८०
गणापक्रमण स्थान	५१५	२	२४४	ठा० ७ उ० ३ सू० ५४१

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गणाभियोग आगार	४५५	२	५६	उपा अ १ सू ८,आव ह अ.६ पृ ८१०,ध अधि २श्लो २२पृ ४१
गणावच्छेदक पदवी	५१३	२	२४०	ठा० ३ उ० ३ सू० १७७ टी
गणित निमित्त आदि सूक्ष्म वस्तुओं के ज्ञाता ६ नैपुणिक	६४२	३	२१३	ठा० ६ उ० ३ सू० ६७६
गणित योग्य काल परिमाण के छियालीस भेद	६६८	७	२६३	अनु सू ११४,भ. श ६ उ ७ सू २४७
गणितानुयोग	२११	१	१६०	दश० नि० गा० ३ पृ० ३
गणिविज्जा पइण्णा	६८६	३	३५५	द० प०
गणि सम्पदा आठ	५७४	३	११	दशा द ४, ठा ८ उ ३ सू ६०१
गणि पदवी	५१३	२	२४०	ठा० ३ उ० ३ सू० १७७ टी०
गत उत्सर्पिणी के २४ तीर्थंकर	६२७	६	१७६	प्रव द्वा ७ गा २८८-२९०
गत उत्सर्पिणी के ७ कुलकर	५१२	२	२३६	ठा ७ उ. ३ सू ५५६,सम १५७
गतप्रत्यागता गोचरी	४४६	२	५२	ठा.६ उ.३ सू ५१४,उत्त अ ३० गा १९,प्रव द्वा ६७ गा ७४५, ध अधि ३ श्लो. २२ टी.पृ ३७
गतागत के अठारह द्वार	८८८	५	३९८	पन्न प ६ के आधार से
गति की व्याख्या और भेद	१३१	१	६६	पन्न प २३ उ. २ सू २९३, कर्म भा ४ गा. १०
गति दस	७२५	३	४१३	ठा १० उ ३ सु ७४५
गति नाम निधत्तायु	४७३	२	७६	भ श ६ उ ८,ठा.६ उ ३ सू ५३६
गति परिणाम	७४६	३	४२६	ठा १० सू ७१३, पन्न प १३
गति परिणाम	७५०	३	४३२	ठा १० उ. ३ सू ७१३,पन्न.प.१३
गति पाँच	२७८	१	२५७	ठा.५ उ. ३ सू. ४४२
गतिप्रतिघात	४१६	१	४४०	ठा. ५ उ. १ सू. ४०६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गति प्रत्यनीक	४४५	२	४६	भग. श. ८ उ ८ सू ३३६
गति मार्गणा और भेद	८४६	५	५७	कर्म. भा ४ गा. १०
गन्ध नारकियों का	५६०	२	३३६	जी. प्रति ३ सू ८७
गन्ध परिणाम	७५०	३	४२३	ठा १० उ.३ सू.७१३, पन्न प १३
गन्धर्व वाणव्यन्तर आठ	६१३	३	१२६	उत्त अ २४, पन्न प २ सू ४७
गमिक श्रुत	८२२	५	१०	न सू.४४, विशे.गा ५४६
गर्भ जन्म	६६	१	४७	तत्त्वार्थ अध्या २ सू ३२
गर्भहरण आश्चर्य	६८१	३	२७७	ठा १० उ.३ सू ७७७, प्रव द्वा. १३८ गा ८८५
गर्व के बारह नाम	७६०	४	२७५	भ श.१२ उ ५ सू.४४६
गर्हा पर कथा	५७६	३	३४	आव ह अ ४ नि. गा, १२४२
गवेषणैषणा	६३	१	६७	उत्त अ २४ गा ११-१२
गवेषणैषणा के सोलह उत्पादना दोष	८६६	५	१६४	प्रव.द्वा.६७ गा ५६७-५६८, प्र. अधि ३ श्लो. २२ टी पृ ४०, पि. नि गा ४०८-४०९, पिं.वि गा ५८-५९, पंचा १३ गा. १८-१९
गवेषणैषणा के सोलह उद्गम दोष	८६५	५	१६१	प्रव द्वा ६७ गा. ५६५-५६६, प्र. अधि. ३ श्लो २२ टी पृ ३८ पि नि गा ९२-९३, पिं वि गा ३-४, पंचा १३ गा ५-६
गाथा अठारह उत्तराध्ययन सूत्र के छठे अध्ययन की	८९७	५	४१६	उत्त० अ० ६
गाथा (मूल) १८ उत्तराध्ययन सूत्र के छठे अध्ययन की	८९७	५	४८५	उत्त० अ० ६
गाथा १८ दशवैकालिक सूत्र की प्रथम चूलिका की	८९८	५	४२०	दश० चू० १

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गाथा (मूल) १८ दशवैकालिकसूत्र प्रथमचूलिका की	८६८	५	४८७	दश० चू० १
गाथा अड़तीस सूयगडांग सूत्र के ११वें मार्गाध्ययन की	६८५	७	१३६	सूय० अ ११
गाथा आठ आलोचना पर	६६४	७	२४६	
गाथा आठ क्षमापना पर	६६४	७	२५०	
गाथा आठ धर्म पर	६६४	७	१५१	
गाथा आठ विजय पर	६६४	७	१६८	
गाथा इकतीस स्त्री परिज्ञा अध्ययन प्रथम उद्देशे की	६६३	७	८	सूय अ ४ उ. १
गाथा इक्कीस चरणविहि नामक अध्ययन की	६१७	६	१३०	उत्त अ ३१
गाथा २१ सभिक्खु अ० की	६१६	६	१२६	दश अ १०
गाथा २६ वीरस्तुति अ० की	६५५	६	२६६	सूय अ, ६
गाथा ग्यारह अपरिग्रह पर	६६४	७	१८१	
गाथा ग्यारह तप पर	६६४	७	२०२	
गाथा ग्यारह दशवैकालिक सूत्र के दूसरे अध्ययन की	७७१	४	११	दश अ २
गाथा ग्यारह विनय पर	६६४	७	१६५	
गाथा ४ आत्मचिन्तन पर	६६४	७	२४८	
गाथा ४ क्रियारहितज्ञान पर	६६४	७	१६२	
गाथा चार भ्रमरवृत्ति पर	६६४	७	१८५	
गाथा चौदह सत्य पर	६६४	७	१७२	
गाथा चौवीस विनय समाधि अध्ययन की	६३२	६	२०१	दश अ ६ उ २

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गाथा २४ समाधि अध्ययन की	६३२	६	१६७	सुय श्रु १ अ १०
गाथा ३६ धर्माध्ययन की	६८१	७	८७	सूय. श्रु. १ अ ९
गाथा ६ आत्मा पर	६६४	७	१५६	
गाथा छः रति अरति पर	६६४	७	१६०	
गाथा छः 'वमन किये हुए को ग्रहण न करना' विषय पर	६६४	७	१८६	
गाथा तीन निर्ग्रन्थ प्रवचन महिमा पर	६६४	७	१५५	
गाथा तीन यतना पर	६६४	७	१६५	
गाथा २३ आचारांग नवें अध्ययन प्रथम उद्देशे की	६२२	६	१६६	आचा. श्रु. १ अ. ९ उ १
गाथा तेईस कषाय पर	६६४	७	२३६	
गाथा तेरह असंस्कृत अध्ययन की	८१६	४	४०६	उत्त अ. ४
गाथा १० अशरण भाव पर	६६४	७	२२२	
गाथा दस जीवन की अस्थिरता पर	६६४	७	२२५	
गाथा दस 'पूजा प्रशंसा त्याग' पर	६६४	७	१६०	
गाथा दस प्रमाद पर	६६४	७	२३१	
गाथा दस राग द्वेष पर	६६४	७	२३३	
गाथा दस सम्यग्दर्शन पर	६६४	७	१५८	
गाथा दो व्यवहार निश्चय पर	६६४	७	१६२	
गाथा दो सच्चे त्यागी पर	६६४	७	१८८	

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गाथा नौ अनासक्ति पर	९९४	७	२०५	
गाथा नौ कठोर वचन पर	९९४	७	२१४	
गाथा ९ नमस्कार महिमा पर	९९४	७	१५३	
गाथा नौ मृगचर्या पर	९९४	७	१८६	
गाथा नौ शल्य पर	९९४	७	२४४	
गाथा पचीस नरकविभक्ति अध्ययन के दूसरे उद्देशे की	९४१	६	२१९	सूय श्रु १ अ ५ उ २
गाथा पन्द्रह अनाथता की	८५४	५	१३०	उत्त अ २० गा ३८-५२
गाथा १५ पूज्यता पर	८५३	५	१२७	दश अ. ९ उ ३
गाथा १५ महानिर्ग्रंथीय अध्ययन की	८५४	५	१३०	उत्त अ २० गा ३८-५२
गाथा पन्द्रह मोक्ष मार्ग पर	९९४	७	१६४	
गाथा पन्द्रह विनयसमाधि अध्ययन के तीसरे उद्देशे की	८५३	५	१२७	दश अ ९ उ ३
गाथा पाँच अचौर्य पर	९९४	७	१७६	
गाथा ५ कर्मों की सफलता पर	९९४	७	२१६	
गाथा ५ रात्रिभोजनत्याग की	९९४	७	१८४	
गाथा ४५ यज्ञीयाध्ययन की	९९६	७	२५४	उत्त अ. २५
गाथा बत्तीस अकाम मरणीय अध्ययन की	९७२	७	४६	उत्त अ ५
गाथा ३२ बहुश्रुतपूजा अ० की	९७३	७	५१	उत्त अ ११
गाथा बत्तीस वैतालीय अध्ययन के दूसरे उ० की	९७४	७	५६	सूय. अ २ उ २
गाथा बारह जैन साधु के लिए मार्गप्रदर्शक	७८१	४	२५५	उत्त अ २१ गा १३-२४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गाथा बारह दशवैकालिक सूत्र के चौथे अध्ययन की	८११	४	३५२	दश अ ४ गा. १४-२५
गाथा बारह वैराग्य पर	६६४	७	२२८	
गाथा १२ समुद्रपालीय अ० की	७८१	४	२५५	उत्त अ २१ गा १३-२४
गाथा २० चतुरंगीय अ. की	६०६	६	२६	उत्त अ. ३
गाथा २७ ग्रन्थाध्ययन की	६४६	६	२३०	सूय श्रु १ अ. १४
गाथा २७ नरयविभत्ति अध्ययन के पहले उद्देशे की	६४७	६	२३६	सूय श्रु १ अ ५ उ १
गाथा १७ अहिंसा-दया पर	६६४	७	१६७	
गाथा सत्रह उपधानश्रुत अध्ययन के चौथे उ० की	८७८	५	३८०	आचा श्रु १ अ. ९ उ ४
गाथा सत्रह भगवान् महावीर की तपश्चर्या विषयक	८७८	५	३८०	आचा श्रु.१ अ ९ उ ४
गाथा सत्रह विनय समाधि अध्ययन के प्रथम उ० की	८७७	५	३७७	दश अ ९ उ. १
गाथा ७ जीभ के संयम पर	६६४	७	२१२	
गाथा सात तृष्णा पर	६६४	७	२४२	
गाथा सात दान पर	६६४	७	२००	
गाथा सात विनय समाधि अध्ययन के चौथे उ० की	५५३	२	२६३	दश अ ९ उ ४
गाथा सात सम्यग्ज्ञान पर	६६४	७	१६०	
गाथा ३७ द्रुमपत्रक अ० की	६८४	७	१३३	उत्त अ १०
गाथा सोलह उपधान श्रुत अध्ययन के उ० २ की	८७४	५	१८२	आचा श्रु. १ अ. ९ उ. २

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गाथा १६ आत्मदमन पर	९९४	७	२०७	
गाथा सोलह उत्तराध्ययन सूत्र के सभिक्खु अ० की	८६२	५	१५२	उत्त अ १५
गाथा सोलह कामभोगों की असारता पर	९९४	७	२१८	
गाथा १६ दशवैकालिक सूत्र की दूसरी चूलिका की	८६१	५	१४७	दश चू २
गाथा १६ बहुश्रुत उपमा की	८६३	५	१५५	उत्त अ.११गा १५-३०
गाथा सोलह महावीर की वसति विषयक	८७४	५	१८२	आचा श्रु १ अ. ९ उ २
गाथा सोलह शील पर	९९४	७	१७७	
❀गान्धार ग्राम की सात मूर्छनाएं	५४०	२	२७३	अनु सू १२७गा ४१-४२पृ. १३०, ठा ७उ ३ सू ५५३

❀ जैन सिद्धान्त बोल संग्रह भाग २ पृष्ठ २७३ पर गान्धार ग्राम की जो सात मूर्छनाएँ छपी हैं वे संगीतशास्त्र नामक ग्रंथ में ली हुई हैं। अनुयोगद्वार तथा स्थानांग सूत्र में गान्धार ग्राम की मूर्छनाओं के नाम दूसरी तरह दिये हैं। इनकी गाथा इस प्रकार है :—

नंदी अ खुद्दिआ पूरिमा य चउत्थी अ सुद्धगंधारा ।
उत्तरगंधारा वि य सा पंचमिआ हवइ मुच्छा ॥ १ ॥
सुट्ठुत्तरमायामा सा छट्ठी सव्वओ य णायव्वा ।
अह उत्तरायया कोडिमा य सा सत्तमी मुच्छा ॥ २ ॥

अर्थ—(१) नंदी (२) क्षुद्रिका (३) पूरिमा (४) शुद्धगान्धारा (५) उत्तरगान्धारा (६) सुट्ठुतरमायामा (७) उत्तरायतकोटिमा ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गान्धार स्वर	५४०	२	२७१	अनु सू १२७गा.२५पृ १२७, ठा ७ उ.३ सू ५५३
गाय और बछड़े का दृष्टान्त द्रव्य अनुयोग पर	७८०	४	२३६	आव ह. गा १३३ पृ.८८, बृ पीठिका नि गा १७१
गारव तीन व्याख्या और भेद	९८	१	७०	ठा ३ उ ४ सू २१५
गिद्धपट्ठमरण	७९८	४	२९९	भ.श २ उ १ सू. ९१
गिद्धपिट्ठमरण	८७९	५	३८४	सम १७,प्रव द्वा.१५७गा १००७
गिरिपडण मरण	७९८	४	२९९	भ श.२ उ. १ सू ९१
गिहत्थ संसट्ठेणं आगार आयम्बिल का	५८८	३	४२	आव.ह अ ६ पृ ८५६,प्रव द्वा. ४ गा. २०४
गुण	४६	१	२८	उत्त अ २८ गा ६,तत्वार्थ अध्या ५ सू ४०
गुण २८ अनुयोग देने वाले के	९५२	६	२८६	बृ पीठिका नि गा.२४१-२४४
गुण आठ आलोयणा करने वाले के	५७६	३	१६	ठा ८ उ ३ सू ६०४,भ श.२५ उ ७ सू ७९९
गुण आठ आलोयणा देने वाले के	५७५	३	१५	ठा.८ उ ३ सू ६०४,भ श २५ उ.७ सू. ७९९
गुण ८ एकलविहार प्रतिमा के	५८६	३	३९	ठा.८ उ ३ सू ५९४
गुण आठ शिक्षा शील के	५८४	३	३८	उत्त अ ११ गा.४-५
गुण ८ सिद्ध भगवान् के	५६७	३	४	अनु सू १२६ पृ.११५,सम ३१, प्रव.द्वा.२७६ गा.१५९३ से ९४ पन्ना १४ गा. २०-२४
गुण आठ से साधु और सोने की समानता	५७१	३	९	
गुण इकतीस सिद्ध भगवान् के दो प्रकार से	९६१	७	२	उत्त अ.३१ गा २० टी.,प्रव द्वा २७६ गा. १५९३-१५९४, सम ३१,आव ह अ ४ पृ.६१२, आचा.श्रु १ अ.५ उ.६ सू १७०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गुण इक्कीस श्रावक के	९११	६	६१	प्रव. द्वा २३९ गा. १३५६-१३५८, ध अधि १श्लो. २० पृ २८
गुण के दो प्रकार से दो भेद	५५	१	३२	सूय श्र १४ नि गा. १२६, पचा ५गा २टी., द्रव्य त अ६या. १२
गुण छः गण को धारण करने वाले के	४५०	२	५४	ठा. ६ उ ३सू. ४७५
गुण छः श्रावक के	४५२	२	५६	ध र प्रक गा ३३ पृ८२
गुण३६आचार्यमहाराजके	९८२	७	९४	प्रव द्वा ६४ गा ५४१-५४९
गुण दस आलोचना करने योग्य साधु के	६७०	३	२५८	भ. श २५ उ.७ सू ७९९, ठा.१० उ.३ सू ७३३
गुण दस आलोचना देने योग्य साधु के	६७१	३	२५९	भ श २५उ ७ सू ७९९, ठा १० उ ३ सू ७३३
गुण पचीस उपाध्याय के	९३७	६	२१५	प्रवद्वा ६६-६७गा ५५२-५९६, ध.अधि ३श्लो ४६-४७पृ १२०
गुण१५दीक्षादेनेवालेगुरुके	८५१	५	१२४	ध अधि ३श्लो. ८०-८४पृ ७
गुण पैंतीस गृहस्थ धर्म के	९८०	७	७४	यो प्रका. १श्लो ४७-५६पृ ५०
गुण प्रकाश के चार स्थान	२५९	१	२४४	ठा ४उ४ सू ३७०
गुण१२ अरिहन्त देव के	७८२	४	२६०	सम.३४, भ श द्वा.९९, स्या का १
गुण रत्न संवत्सर तप	७७६	४	२००	अत व ६ अ १५
गुण लोप के चार स्थान	२५८	१	२४३	ठा. ४ उ ४ सू. ३७०
गुणव्रत की व्याख्या, भेद	१२८क	१	९१	आव ह.अ ६ पृ ८२६-८२९
गुणव्रत तीन	४९७	२	२००	
गुणश्रेणी	८४७	५	७९	कर्म भा २ गा. २
गुण संक्रमण	८४७	५	७९	कर्म भा. २ गा. २

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गुण सत्ताईस साधु के	६४५	६	२२८	सम २७, उत्त अ ३१ गा १८, आव ह अ ४ पृ ६४६
गुण सत्रह श्रावक के	८८३	५	३६२	ध अधि. २ श्लो २२ टी पृ. ४८
गुण १६ दीक्षा लेने वाले के	८६४	५	१५८	ध अधि. ३ श्लो ७३-७८ पृ १
गुणस्थान	४६७	२	२०६	
गुणस्थान का सामान्य स्वरूप	८४७	५	६८	कर्म भा २,४, प्रव द्वा २२४ गा १३०२
गुणस्थान चौदह	८४७	५	६३	कर्म. भा २,४, प्रव द्वा २२४ गा १३०२, गुण थो.
गुणस्थानों में अट्ठाईस द्वार	८४७	५	१०५	गुण थो
गुणस्थानों में अन्तर द्वार	८४७	५	११२	गुण थो
गुणस्थानों में अल्पबहुत्व द्वार	८४७	५	११३	गुण. थो, कर्म भा ४ गा ६२
गुणस्थानों में आत्म द्वार	८४७	५	१०८	गुण थो.
गुणस्थानों में उपयोग द्वार	८४७	५	१०६	गुण थो
गुणस्थानों में कर्मप्रकृतियों का उदयाधिकार	८४७	५	६४	कर्म भा. २ गा. १३-२२
गुणस्थानों में कर्मप्रकृतियों का उदीरणाधिकार	८४७	५	६८	कर्म. भा २ गा २३-२४
गुणस्थानों में कर्मप्रकृतियों का बन्धाधिकार	८४७	५	८८	कर्म भा २ गा ३-१२
गुणस्थानों में कर्मप्रकृतियों का सत्ताधिकार	८४७	५	६६	कर्म भा २ गा २५-३४
गुणस्थानों में कारण द्वार	८४७	५	१०७	गुण थो.
गुणस्थानों में क्रिया द्वार	८४७	५	१०६	गुण थो

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गुणस्थानों में गुण द्वार	८४७	५	१०८	गुण थो.
गुणस्थानों में चारित्र द्वार	८४७	५	११२	गुण थो.
गुणस्थानों में जीव द्वार	८४७	५	१०८	गुण थो
गुण०में जीव योनि द्वार	८४७	५	१११	गुण थो.
गुणस्थानों में दण्डक द्वार	८४७	५	१११	गुण थो.
गुणस्थानों में ध्यान द्वार	८४७	५	१११	गुण. थो
गुणस्थानों में निमित्त द्वार	८४७	५	११२	गुण थो.
गुणस्थानों में निर्जरा द्वार	८४७	५	१०६	गुण थो.
गुणस्थानों में परिषह द्वार	८४७	५	१०७	गुण. थो
गुणस्थानों में भाव द्वार	८४७	५	१०७	गुण थो
गुणस्थानों में मार्गणा द्वार	८४७	५	११०	गुण थो
गुणस्थानों में योग द्वार	८४७	५	१०६	गुण थो.
गुणस्थानों में लेश्या द्वार	८४७	५	१०६	गुण. थो
गुणस्थानों में समकित द्वार	८४७	५	११२	गुण थो
गुणस्थानों में स्थिति द्वार	८४७	५	१०५	गुण थो
गुणस्थानों में हेतु द्वार	८४७	५	११०	गुण थो.
गुप्ति	२२	१	१६	उत्त अ २४ गा २
गुप्ति की व्याख्या और भेद	१२८ख	१	६२	उत्त अ २४गा २०-२५,ठा ३ उ १ सू १२६
गुरु	६३	१	४४	यो.प्रका २ श्लो. ८
गुरु निग्रह आगार	४५५	२	५६	उपा अ १सू ८, आव ह अ.६पृ ८१०,ध अधि २श्लो २२पृ ४१
गुरु प्रत्यनीक	४४५	२	४६	भ श ८उ ८ सू ३३६
गुर्वभ्युत्थान आगार	५१७	२	२४७	आव ह.अ. ६पृ ८५३, प्रव. द्वा ४ गा १२०८

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गृहपति अवग्रह	३३४	१	३४५	भग १६ उ.२ सू ५६७, आचा श्रु.२ चू १ अ ७ उ.२ सू १६२, प्रव द्वा ८५ गा. ६८१
गृह संकेत पच्चक्खाण	५८९	३	४३	आव ह. अ.६ नि.गा १५७८, प्रव द्वा.४ गा २००
गृहस्थ धर्म के पैंतीस गुण	९८०	७	७४	यो.प्रका १ श्लो.४७-५६ पृ ५०
गृहस्थलिंग सिद्ध	८४९	५	११९	पन्न प १ सू ७
गृहस्थ वचन	४५९	२	६२	ठा ६ उ.३ सू ५२७, प्रव.द्वा २३५ गा १३२१, सू.(शी) ८६
गेंडे की कथा पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	११६	नं सू २७ गा ७८, आव ह. गा. ९५१
गैरुक श्रमण	३७२	१	३८७	प्रव द्वा ९४ गा ७३१
गोचरी के छः प्रकार	४४६	२	५१	ठा ६ उ. ३ सू ५१४, उत्त.अ.३० गा. १९, प्रव. द्वा.९७ गा.७४५, ध.अधि ३ श्लो.२२ टी.पृ ३७
गोत्र कर्म और उसके भेद	५९०	३	७९	पन्न.प.२३ सू २९३, कर्म भा १
गोत्रकर्म का अनुभाव	५९०	३	८०	पन्न प. २३ सू. २९२
गोत्र कर्म के बन्ध के कारण	५९०	३	८०	भग ८ उ ९ सू. ३५१
गोत्र नरकों के	५६०	२	३१५	जी.प्रति ३ सू. ६७, प्रव. द्वा. १७२ गा. १०७२
गोनिषद्यिका	३५८	१	३७२	ठा.५ उ.१ सू ३९६ टी., ४००
गोमूत्रिका गोचरी	४४६	२	५१	ठा.६ उ.३ सू.५१४, उत्त.अ.३० गा.१९, प्रव.द्वा ९७ गा.७४५, ध.अधि.३ श्लो.२२ टी.पृ ३७
गोल्लक (लाख की गोली) की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२६३	नं. सू २७ गा ६३ टी.

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गोशालक के श्रमणोपासक	७६३	४	२७६	भ श ८ उ ५ सू ३३०
गोष्ठामाहिल सातवां निह्नव	५६१	२	३८४	विशे.गा २५०६ से २५४८
गौण	३८	१	२४	तत्त्वार्थ अध्या ५ सू ३१
गौण आदि दस नाम	७१६	३	३६५	अनु सू १३०
गौण नाम	७१६	३	३६५	अनु सू १३०
गौरव की व्याख्या व भेद	६८	१	७०	ठा ३ उ.४ सू २१५
गौरव दान	७६८	३	४५२	ठा.१० उ ३ सू ७४५
ग्यारह अंग सूत्र	७७६	४	६६	
ग्यारह उपासक पडिमाएं	७७४	४	१८	दशा द ६, सम ११
ग्यारह गणधर	७७५	४	२३	विशे गा १५४६-२०२४, सम ११, आव ह टिप्पण पृ २८-३५, आव ह नि गा ५६३-६४१
ग्यारह गाथा दशवैकालिक सूत्र के दूसरे अध्ययन की	७७१	४	११	दश अ २
ग्यारह दुर्लभ	७७२	४	१७	आव ह नि गा ८३१ पृ ३४१
ग्यारह नाम महावीर के	७७०	४	३	जैनविद्या वोल्यूम १ न. १
ग्यारह बोल आरंभ परिग्रह छोड़ने पर प्राप्त होते हैं	४६	१	२६	ठा.२ उ १ सू ६५
ग्यारह बोल आरंभ परिग्रह छोड़े बिना प्राप्त नहीं होते	७७३	४	१७	ठा २ उ.१ सू ६४
ग्रन्थाध्ययन की २७ गाथाएं	६४६	६	२३०	सूय अ १४
ग्रन्थि संकेत पच्चक्खाण	५८६	३	४३	आव ह अ ६ नि गा १५७८, प्रव द्वा.४ गा २००
ग्रहणैषणा	६३	१	६७	उत्त अ २४ गा ११-१२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
[1] ग्रहणैषणा के दस दोष	६६३	३	२४२	प्रव.द्वा.६७ गा.५६८, पिं.नि.गा. ५२०, ध. अधि. ३ श्लो. २२ टी.पृ. ४१, पंचा.१३ गा.२६
ग्राम धर्म	६६२	३	३६१	ठा.१० उ.३ सू.७६०
ग्राम नगर आदि दस धर्म	६६२	३	३६१	ठा.१० उ.३ सू.७६०
ग्रामादि सोलह स्थान साधु के लिए कल्पनीय	८६७	५	१६६	बृ. उ.१ सू.६
ग्रामेयक(ग्रामीण)का दृष्टान्त वचन अननुयोग पर	७८०	४	२४५	आव.ह.नि.गा.१३३ पृ.८८, बृ. पीठिका नि.गा. १७१
ग्रासैषणा (परिभोगैषणा)	६३	१	६७	उत्त.अ.२४ गा.११-१२
ग्रासैषणा के पाँच दोष	३३०	१	३३९	ध.अधि.३ श्लो.२३ टी.पृ.५५, पिं.नि.गा.६३५-६६८, उत्त.अ.२४ गा.१२ टी., उत्त.अ.२६ गा.३२ टी.
ग्लान प्रतिचारी बारह और अड़तालीस	७९७	४	२९७	प्रव.द्वा.७१ गा.६२९-६३५, नवपद गा.१२९ पृ.३१६
ग्लान की सेवा करना साधु के लिये आवश्यक है या उसकी इच्छा पर निर्भर है?	९८३	७	१०८	बृ.नि.गा.१८७१, १८७२, १८७४, १८७८, भग.श.२५ उ.७ सू.८०२, उत्त.अ.२६, २९, ओ. गा.४८, ४९, ६२, ५३१, ५३२
ग्लान साधु की सेवा करने वाले बारह	७९७	४	२९७	प्रव.द्वा.७१ गा.६२९-६३५, नवपद गा.१२९ पृ.३१६

घ

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
घन तप	४७१	२	८८	उत्त.अ.३० गा.१०
घन संस्थान	७२१	३	४०६	ठा.१० उ.३ सू.७४०

[1] ग्रहणैषणा के दस दोषों में पहला 'शंकित' दोष है, इसके चालीस भेद हैं।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
घयण (भांड) की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२६५	न सू २७ गा ६३ टी
घाती कर्म	२७	१	१६	अष्ट ३० श्लो १
घ्राणेन्द्रिय	३६२	१	४१८	पन्न प १५ सू १६१, ठा ५उ ३ सू ४४३, जै प्र

च

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चउसरण पइण्णा	६८६	३	३५३	द प
चँवालीस बोल स्थावर की अवगाहना के अल्पबहुत्व के	६६५	७	२५२	भ श १६ उ ३ सू ६५१
चक्रवर्तियों का वर्ण	७८३	४	२६३	आव. ह नि गा ३६१
चक्रवर्तियों की अवगाहना	७८३	४	२६३	आव. ह नि गा ३६२-३६३
चक्रवर्तियों की गति	७८३	४	२६१	ठा २ उ ४ सू. ११२
चक्रवर्तियों की प्रव्रज्या	७८३	४	२६५	ठा १० उ ३ सू ७१८
चक्रवर्तियों की स्थिति	७८३	४	२६३	आव ह नि गा ३६५-३६६
चक्रवर्तियो के ग्राम	७८३	४	२६२	सम ६६
चक्रवर्तियों के जन्म स्थान	७८३	४	२६२	सम १५८, आव ह अ १ नि गा ३६७-४००
चक्रवर्तियों के पिता के नाम	७८३	४	२६२	सम १५८, आव ह अ १ नि गा ३६७-४००
चक्रवर्तियों के स्त्री रत्न	७८३	४	२६४	सम १५८
चक्रवर्ती	४३८	२	४२	ठा ६ उ ३ सू ४६१, पन्न प १ सू ३७
चक्रवर्ती का काकिणीरत्न	७८३	४	२६१	ठा. ८ उ ३ सू ६३३
चक्रवर्ती का बल	७८३	४	२६२	आव म गा ७३-७४ पृ ७६
चक्रवर्ती का भोजन	७८३	४	२६१	ज वक्ष २ सू २० टी
चक्रवर्ती का हार	७८३	४	२६३	सम ६४
चक्रवर्ती की महानिधियां नौ	६५४	३	२२०	ठा ६ उ ३ सू ६७३

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चक्रवर्ती की सन्तान	७८३	४	२६४	टी. प्रश्न २ सू १३
चक्रवर्ती के एकेन्द्रिय रत्न	७८३	४	२६३	ठा ७ उ ३ सू. ५५८
चक्रवर्ती के एकेन्द्रिय रत्न सात	५२८	२	२६५	ठा. ७ उ ३ सू ५५८
चक्रवर्ती के चौदह रत्न	८२८	५	२०	सम १४, ठा ७उ ३ सू ५५८
चक्रवर्ती के पंचेन्द्रिय रत्न	७८३	४	२६३	ठा ७ उ ३ सू. ५५८
चक्रवर्ती के पंचेन्द्रिय रत्न	५२८	२	२६५	ठा. ७ उ. ३ सू. ५५८
चक्रवर्ती बारह	७८३	४	२६०	ठा. सू ११२, ५५८, ६६३, सम ६४, ६६, १५८, जम्बू. वक्ष. ३ सू. २२ टी, आव ह. म. भा. ३८६-४०१, त्रि. ष. टीका प्रका २, ३ सू १३, २२
चक्रवर्ती बारह आगामी उत्सर्पिणी के	७८४	४	२६५	सम. १५६
चक्रवर्ती लब्धि	६५४	६	२६४	प्रव. द्वा २७० गा १४६३
१ चक्रवाल श्रेणी	५४४	२	२८४	ठा ७ उ ३ सू. ५८१, भ श २५ उ ३ सू. ७३०
चक्षुदर्शन	१६६	१	१५७	ठा ४ सू ३६५, कर्म भा ४ गा १२
चक्षुदर्शन अनाकारोपयोग	७८६	४	२६८	पन्न प. २६ सू. ३१२
चक्षुदर्शन की तरह श्रोत्रादि दर्शन क्यों नहीं कहे गये?	६८२	७	१०६	भ श १ उ. ३ सू ३७ टी.
चक्षुरिन्द्रिय	३६२	१	४१८	पन्न प. १५ सू १९१, ठा. ५ उ. ३ सू ४४३, जै प्र.
चक्षुर्लोलुप	४४४	२	४८	ठा. ६ उ. ३ सू ५३०, वृ. टी. १३
चण्डकौशिक सर्प की पारिणामिकी बुद्धि पर कथा	६१५	६	११४	विप. पी. १० टीका नं. ३ गा ७४, आव ह. नि गा. ९४१

१ आकाश प्रदेशों की वह श्रेणी जिसके द्वारा परमाणु आदि चार गति करते हैं।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
[1] चतुःस्पर्शी	६१	१	४२	भ श १२ उ. ५ सू ४५०
चतुरंगीय अ० की २० गाथा	६०६	६	२६	उत्त अ. ३
चतुरस्र संस्थान	४६६	२	६६	भ श. २५ उ ३ सू. ७२४, पन्न प. १
चतुर्थ भक्त प्रत्याख्यान का क्या मतलब है?	६१८	६	१४६	भ श २ उ १ सू ६३, ठा ३ उ. ३ सू. १८२ टी, अंत. व. ८ अ १
चतुर्मासिकी भिक्खुपडिमा	७६५	४	२८६	सम. १२, भ. श २ उ. १ सू ६३ टी, दशा द. ७
चतुर्विंशतिस्तव आवश्यक	४७६	२	६१	आव. ह. अ २
चतुष्पद तिर्यंच पंचेन्द्रिय के चार भेद	२७१	१	२५०	ठा ४ उ ४ सू. ३५०
चन्दनबाला (वसुमती)	८७५	५	१९७	आव ह नि गा ५२०-५२१, त्रि ष पर्व १०, चन्दन
चन्द्र और सूर्यों की संख्या	७६६	४	३००	सूर्य प्रा. १६
चन्द्रगुप्त राजा के सोलह स्वप्न फल सहित	८७३	५	१७८	व्यव. चू (हस्तलिखित)
चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र का वर्णन	७७७	४	२२८	
चन्द्र प्रमाण संवत्सर	४००	१	४२५	ठा ५ उ ३ सू ४६०, प्रव द्वा १४२ गा ६०१
चन्द्रमा का दृष्टान्त	६०५	५	४५६	ज्ञा अ. १०
चन्द्र संवत्सर	४००	१	४२७	ठा. ५ उ ३ सू ४६०, प्रव द्वा. १४२ गा. ६०१
चन्द्र सूर्यावतरण आश्चर्य	६८१	३	२८४	ठा. १० उ. ३ सू. ७७७, प्रव. द्वा. १३८ गा. ८८५, ८८६
चमरोत्पात आश्चर्य	६८१	३	२८७	ठा. १० उ. ३ सू. ७७७, प्रव. द्वा. १३८ गा. ८८५, ८८६

[1] शीत, उष्ण, रूक्ष और स्निग्ध ये चार स्पर्श वाले पुद्गल।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चरण करणानुयोग	२११	१	१९०	दश. नि गा. ३ पृ ३
चरणविहिअ० की २१ गाथाएं	९१७	६	१३०	उत्त अ ३१
चरण सप्तति (चरण सत्तरि) के सत्तर बोल	९३७	६	२१६	प्रव. द्वा ६६ गा. ५५२-५६६, ध अधि ३ श्लो ४७ पृ १३०
चरणाहत का दृष्टान्त पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	११२	न सू २७ गा. ७४, आव.ह.नि गा ९५१
चरमशरीरी को प्राप्त १७ बातें	८६६	५	३९५	ध. वि अध्या. ८ सू. ४८४-४८[illegible]
चरम समय निर्ग्रन्थ	३७०	१	३८५	ठा० ५ उ० ३ सू० ४४५
चरमाचरम के चौदह बोल	८४३	५	४२	भ.श. १८ उ० १ सू० [illegible]
चरिम पच्चक्खाण	७०५	३	३८०	प्रव द्वा. ४ गा. २०१, पंचा. ५ गा [illegible], आव.ह. अ. ६ नि गा १५९[illegible]
चाणक्य की पारिणामिकी बुद्धि की कथा	९१५	६	९४	आव ह नि गा ९५०, न. सू २७ गा ७३
चार अनुप्रेक्षा धर्मध्यान की	२२३	१	२०७	ठा ४ उ १ सू २४७, भ श. २५ उ ७ सू ८०२, आव ह. अ. ४ ध्यानशतक गा ६५, ८७
चार अनुप्रेक्षा शुक्लध्यान की	२२८	१	२१२	
चार अन्त क्रियाएं	२५४	१	२३७	ठा ४ उ. १ सू २३५
चार अवस्था कर्म की	२५३	१	२३७	कर्म. भा. २ गा [illegible]
चार आगार कायोत्सर्ग के	८०७	४	३१६	आव ह अ ५ नि. गा १५१[illegible]
चार आलम्बन धर्मध्यान के	२२२	१	२०६	ठा ४ उ० १ सू० २४७, भ. श. २५ उ ७ सू ८०२, आव ह अ ४ ध्यानशतक गा. [illegible]
चार आलंबन शुक्लध्यान के	२२७	१	२११	
चार इन्द्रियां प्राप्यकारी	२१४	१	१९३	[illegible]

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चार उपसर्ग	२३९	१	२१८	ठा ४ उ ४ सू ३६१, सूय श्रु १ अ ३ उ १ नि गा ४८
चार उपसर्ग तिर्यञ्च संबन्धी	२४२	१	२१९	
चार उपसर्ग देव संबन्धी	२४०	१	२१९	
चार उपसर्ग मनुष्य संबन्धी	२४१	१	२१९	
चार उपाय कषाय जीतने के	१६७	१	१२५	दश अ ८ गा ३९
चार कषाय	१५८	१	११७	पन्न प. १४, ठा. ४ उ १ सू २४९, कर्म भा १ गा. १७-१८
चार कषाय की हानियां	१६६	१	१२५	दश अ ८ गा ३८
चार कषायों की अधिकता गति की अपेक्षा	१६३	१	१२३	
चार कारण ईर्यासमिति के	१८१	१	१३५	उत्त अ २४ गा ४-८
चार कारण जीव, पुद्गलों के लोक बाहर न जा सकने के	२६८	१	२४७	ठा० ४ उ० ३ सू० ३३७
चार कारण तिर्यञ्चायु के	१३३	१	९९	ठा० ४ उ० ४ सू० ३७३
चार कारण देव के, मनुष्य-लोक में न आ सकने के	१३८	१	१०१	ठा० ४ उ० ३ सू ३२३
चार कारण देवायु के	१३५	१	१००	ठा. ४ उ ४ सू ३७३
चार कारण नरकायु के	१३२	१	९९	ठा. ४ उ. ४ सू ३७३
चार कारण मनुष्यायु के	१३४	१	१००	ठा ४ उ ४ सू सू ३७३
चार कारणों से आहार-संज्ञा उत्पन्न होती है	१४३	१	१०५	ठा ४ उ ४ सू ३५६, प्रव द्वा. १४५ गा ९२३ टी
चार कारणों से जीव, पुद्गल लोक से बाहर नहीं जा सकते	२६८	१	२४७	ठा ४ उ ३ सू ३३७
चार कारणों से परिग्रह-संज्ञा उत्पन्न होती है	१४६	१	१०६	ठा. ४ उ. ४ सू ३५६, प्रव द्वा १४५ गा. ९२३ टी.

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चार कारणों से भयसंज्ञा उत्पन्न होती है	१४४	१	१०६	ठा.४उ.४सू.३५६, प्रव. द्वा. १४५ गा. ६२३ टी.
चार कारणों से मैथुनसंज्ञा उत्पन्न होती है	१४५	१	१०६	ठा.४ उ.४ सू ३५६, प्रव द्वा १४५ गा ६२३ टी
चार कारणों से साध्वी के साथ आलापसंलाप करता हुआ साधु निर्ग्रन्थाचार का अतिक्रमण नहीं करता	१८३	१	१३७	ठा ४ उ २ सू० २९०
चार गति में चार संज्ञाओं का अल्पबहुत्व	१४७	१	१०७	पन्न. ८ सू १४८
चार छेद सूत्र	२०५	१	१८०	
१ चारण	४३८	२	४२	ठा.६ सू.४९१, पन्न.प १ सू ३७
चारण लब्धि	९५४	६	२९२	प्रव द्वा २७० गा १४९३
चार दानी मेघ की उपमा से	१७५	१	१२९	ठा.४ उ ४ सू. ३४६
चार देशकथा	१५१	१	१०९	ठा.४उ.२ सू. २८२ टी.
चार दोष	२४४	१	२२१	पिं.नि.गा.१८२, ध.अधि ३ श्लो ५२ टी पृ १३९
चार द्वार अनुयोग के	२०८	१	१८५	अनु सू ५९
चार निक्षेप	२०९	१	१८६	अनु सू.१५०, न्यायप्र. अध्या [illegible]
चार पर्त्ता	२७२	१	२५१	ठा० ४ उ० ४ सू० ३५०
चार पुत्रवधुओं की कथा	९००	५	४४२	ज्ञा अ ७
चार पुद्गल परिणाम	२६६	१	२४७	ठा० ४ उ० १ सू० २६५
चार पुष्पकुम्भ की उपमा से	१६९	१	१२६	ठा.४ उ. ३ सू.३६०

१ [illegible] की विद्या जानने वाले महात्मा।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चार पुरुष फूल की उपमा से	१७१	१	१२७	ठा० ४ उ० ४ सू० ३२०
चार पुरुष मेघ की उपमा से	१७३	१	१२७	ठा ४ उ० ४ सू. ३४६
चार पुरुषार्थ	१६४	१	१५१	पुरुषा.
चार प्रकार आत्म संवेदनीय उपसर्ग के	२४३	१	२२०	ठा ४ उ.४ सू. ३६१, सूय श्रु १ अ ३,उ १ नि गा ४८
चार प्रकार आर्त्तध्यान के	२१६	१	१६६	ठा ४ उ १ सू २४७, आव ह अ. ४ ध्यानशतक गा. ६-९
चार प्रकार का अनुयोग	२११	१	१९०	दश नि गा ३ पृ ३
चार प्रकार का असत्य वचन	२७०	१	२४९	दश. अ. ४ सू ४ टी.
चार प्रकार का आचार विनय	२३०	१	२१४	दशा द ४
चार प्रकार का उपकरणोत्पादनता विनय	२३५	१	२१६	दशा. द० ४
चार प्रकार का उपक्रम	२४९	१	२३४	ठा० ४ उ० २ सू० २९६
चार प्रकार का काव्य	२१२	१	१९०	ठा० ४ उ० ४ सू० ३७९
चार प्रकार का तिर्यञ्च का आहार	२६१	१	२४५	ठा० ४ उ० ३ सू. ३४०
चार प्रकार का दान	१९७	१	१५६	ध० र० गा० ७० टी०
चार प्रकार का देव का आहार	२६३	१	२४६	ठा ४ उ ३ सू ३४०
चार प्रकार का दोष निर्घातन विनय	२३३	१	२१६	दशा० द० ४
चार प्रकार का धर्म	१९६	१	१५४	स० श० द्वा० १४१
चार प्रकार का नरक का आहार	२६०	१	२४४	ठा० ४ उ० ३ सू० ३४०
चार प्रकार का प्रायश्चित्त	२४५क	१	२२२	ठा० ४ उ० १ सू० २६३
चार प्रकार का बन्ध	२४७	१	२३१	ठा ४ सू २९६, कर्म भा १ गा. २

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चार प्रकार का भारप्रत्य-वरोहणता विनय	२३८	१	२१८	दशा.द ४
चार प्रकार का मनुष्य का आहार	२६२	१	२४५	ठा० ४ उ० ३ सू० ३६०
चार प्रकार का मेघ	१७४क	१	१२८	ठा० ४ उ० ४ सू० ३४७
चार प्रकार का वर्ण संज्व-लनता विनय	२३७	१	२१७	दशा द ४
चार प्रकार का विक्षेपणा विनय	२३२	१	२१५	दशा. द ४
चार प्रकार का श्रुत विनय	२३१	१	२१५	दशा द ४
चार प्रकार का संक्रम	२५०	१	२३५	ठा.४ सू २९६, पयं.गा.२ गा १
चार प्रकार का संयम	१७९	१	१३४	ठा. ४ उ. २ सू. ३१०
चार प्रकार का सहायता-विनय	२३६	१	२१७	दशा. द. ४
चार प्रकार की दुःखशय्या	२५५	१	२४०	ठा. ४ उ. ३ सू ३२५
चार प्रकार की भाषा	२६६	१	२४८	पन्न.प.११ सू. १६१
चार प्रकार की विनय-प्रतिपत्ति	२३४	१	२१६	दशा. द. ४
चार प्रकार के प्रव्रजित पुरुष	१७६	१	१३०	ठा. ४ उ. ३ सू. ३२०
चार प्रकार के शूर पुरुष	१९३	१	१५०	ठा ४ उ.३ सू ३१७
चार प्रकार के श्रावक	१८४	१	१३८	ठा. ४ उ. ३ सू. ३२५
चार प्रकार क्रोध के	१६४	१	१२३	ठा. ४ उ. १ सू २४९
चार प्रकार तीर्थ के	१७७	१	१३०	ठा. ४ उ. ४ सू ३६३ टी
चार प्रकार फूल के	१७०	१	१२६	ठा.४ उ. ३ सू ३२०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चार प्रकार रौद्रध्यान के	२१८	१	१९८	ठा ४ उ १ सू २४७
चार प्रकार वस्तु के स्वपर-चतुष्टय के	२१०	१	१८८	न्यायप्र अध्या.७, रत्ना परि ४ सू १५ टी
चार प्रकार श्रावक के	१८५	१	१३९	ठा. ४ उ. ३ सू. ३२१
चार प्रकार संसारी जीव के	१३०	१	९७	ठा ५सू४३०, भ श २उ १सू ९२
चार प्रकार से लोक की व्यवस्था	२६७	१	२४७	ठा० ४ उ० २ सू० २८६
चार प्रकार से श्रमण की व्याख्या	१७८	१	१३१	दश अ २ नि गा १५४-१५७, अनु सू.१५० गा १२९-१३२
चार प्रमाण	२०२	१	१६०	भ श.५उ ४, अनु सू १४४
चार बन्ध का स्वरूप समझाने के लिए मोदक का दृष्टान्त	२४८	१	२३२	ठा ४ उ २ सू २९६, कर्म भा १ गा २
चार बोल देवता के मनुष्य-लोक में आ सकने के	१३९	१	१०२	ठा ४ उ ३ सू ३२३
चार बोल देवता के मनुष्य-लोक में न आ सकने के	१३८	१	१०१	ठा. ४ उ० ३ सू० ३२३
चार बोल देवों की पहचान के	१३७	१	१०१	व्यव भाष्य उ.२ गा ३०४
चार बोल नैरयिक के मनुष्य-लोक में न आ सकने के	१४०	१	१०३	ठा० ४ उ.१ सू २४५
चार भंग कुम्भ के	१६८	१	१२५	ठा ४ उ ४ सू ३६०
चार भक्त कथा	१५०	१	१०८	ठा ४ उ. २ सू २८२ टी.
चार भांगे स्थण्डिल के	१८२	१	१३७	उत्त अ २४ गा १६
चार भाण्ड (पण्य वस्तु)	२६४	१	२४६	ज्ञा अ ८ सू० ६६
चार भावना	१४१	१	१०३	उत्त अ ३६ गा २६१-२६४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चार भावना	२४६	१	२२४	भावना (परिशिष्ट.) क.भा.२ श्लो.३५-५८, च.
चार भावना धर्मध्यान की	२२३	१	२०७	ठा.४ उ.१ सू.२४७ भग.श.२५ उ.७ सू.८०३, आव.ह.अ.४ ध्यान
चार भावना शुक्लध्यान की	२२८	१	२१२	शतक गा.६५,८८, उव.सू.२०
चार भाव प्राण	१९८	१	१५७	पन्न.प.१ सू.१ टी.
चार भेद आक्षेपणी कथा के	१५४	१	११२	ठा.४ उ.२ सू.२८२, दश.अ.३ नि.गा.१९४-१९५
चार भेद उपमा संख्या के	२०३	१	१६१	अनु.सू.१४६ पृ.२३१
चार भेद क्रोध के उपमा सहित	१५६	१	१२०	पन्न.प.१४ सू.१८८, ठा.४ सू.२४९,२९३, कर्म.भा.१ गा.१९
चार भेद गति के	१३१	१	९९	पन्न.प.२३ उ.२ सू.२९३, कर्म.भा.४ गा.१०
चार भेद चतुष्पद तिर्यंच-पंचेन्द्रिय के	२७१	१	२५०	ठा.४ उ.४ सू.३५०
चार भेद दर्शन के	१९९	१	१५७	ठा.४ उ.४ सू.३६५, कर्म.भा.४ गा.१२
चार भेद देवों के	१३९	१	१०१	उत्त.अ.३६ गा.२०३
चार भेद धर्म कथा के	१५३	१	११२	ठा.४ उ.२ सू.२८२
चार भेद धर्मध्यान के	२२०	१	२०१	ठा.४ उ.१ सू.२४७
चार भेद धर्मध्यान के	२२४	१	२०८	ज्ञानार्णव [illegible]
चार भेद ध्यान के	२१५	१	१९३	ठा.४ उ.१ सू.२४७ [illegible]

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चार भेद निकाचित के	२५२	१	२३६	ठा० ४ उ० २ सू० २९६
चार भेद निधत्त के	२५१	१	२३६	ठा ४ उ० २ सू० २९६
चार भेद निर्वेदनी कथा के	१५७	१	११५	ठा ४ उ २ सू २८२
चार भेद प्रायश्चित्त के	२४५ख	१	२२३	ठा० ४ उ० १ सू २६३
चार भेद बुद्धि के	२०१	१	१५९	न सू २६, ठा० ४ उ० ४ सू ३६४
चार भेद मतिज्ञान के	२००	१	१५८	ठा० ४ उ० ४ सू० ३६४
चार भेद मान के उपमा सहित	१६०	१	१३१	पन्न० प १४ सू १८८, ठा ४ उ २ सू २९३, कर्म भा १ गा १९
चार भेद माया के उपमा सहित	१६१	१	१२१	पन्न प. १४ सू १८८, ठा ४ उ २ सू २९३, कर्म० भा १ गा २०
चार भेद मोक्ष मार्ग के	१९५	१	१५३	उत्त अ २८ गा २
चार भेद लोभ के उपमा सहित	१६२	१	१२२	पन्न प १४ सू १८८, ठा ४ उ २ सू २९३, कर्म भा १ गा २०
चार भेद वादी के	१९१	१	१४४	भ श ३० उ १ सू ८२४ टी, आचा. श्रु १ अ १ उ १ सू ३ टी, सूय श्रु १ अ. १२
चार भेद विक्षेपणी कथा के	१५५	१	११३	ठा ४ उ २ सू २८२, दश अ ३ नि गा १६७-१६८
चार भेद शुक्ल ध्यान के	२२५	१	२०९	ठा ४ सू २४७ ज्ञान प्रक ४२, क भा २ श्लो २११-२१९, आव ह अ ४ ध्यानशतक गा ७७-८२
चार भेद संवेगनी कथा के	१५६	१	११४	ठा ४ उ २ सू २८२
चार भेद सामायिक के	१९०	१	१४३	ध अधि २ श्लो ३७ टी, विशे गा. २६७३-२६७७
चार भेद स्त्री कथा के	१४९	१	१०७	ठा ४ उ २ सू. २८२ टी.

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चार मंगलरूप, लोकोत्तम, तथा शरण रूप हैं	१२६क	१	६४	आवह अ ४ पृ. ५६६
चार महाव्रत	१८०	१	१३५	ठा० ४ उ० १ सू० २६६
※ चार मूल सूत्र	२०४	१	१६३	
चार मूलातिशय अरिहन्त भगवान् के	१२६ख	१	६६	स्या का. १ टी.
चार मेघ	१७२	१	१२७	ठा० ४ उ० ४ सू ३४६
चार मेघ	१७४ख	१	१२६	ठा.४उ.४सू ३४६
चार राजकथा	१५२	१	११०	ठा.४उ.२सू. २८२ टी
चार लक्षण रौद्रध्यान के	२१६	१	२००	ठा ४ उ १ सू २४७ भग २५ उ ७ सू ८०३, आव ह अ ४ ध्यानशतक गा २६, ३५, ६७, ६८, ६०
चार लिंग आर्त्तध्यान के	२१७	१	१६८	
चार लिंग धर्मध्यान के	२२१	१	२०५	
चार लिंग शुक्ल ध्यान के	२२६	१	२११	
चार वन जंबूद्वीप के मेरु पर्वत पर	२७३	१	२५१	ठा ४ उ. २ सू. ३०२
चार वाचना के अपात्र	२०७	१	१८५	ठा.४ उ ३ सू. ३२६
चार वाचना के पात्र	२०६	१	१८५	ठा.४ उ.३ सू. ३२६
चार वादी	१६२	१	१४६	आचा. श्रु.१ अ.१ उ.१ सू ३
चार विकथा	१४८	१	१०७	ठा०४ उ०२ सू० २८२

चार मूलसूत्र में उत्तराध्ययन सूत्र का व्याख्यान करते हुए बतलाया है कि [illegible] सूत्र के बाद यह सूत्र पढ़ाया जाता है इसलिए यह उत्तराध्ययन कहलाता है। [illegible] आचारांग सूत्र के बाद उत्तराध्ययन सूत्र पढ़ने का [illegible] है। [illegible] उत्तराध्ययन [illegible] पढ़ाया जाता है [illegible] टीका में [illegible] है और यही परिपाटी आज भी [illegible] है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चार विनयप्रतिपत्ति	२२६	१	२१३	दशा द ४
चार विश्राम	१८७	१	१४१	ठा ४ उ ३ सू ३१४
चार विश्राम श्रावक के	१८८	१	१४२	ठा ४ उ.३ सू.३१४
चार व्याधि	२६५	१	२४७	ठा ४ उ.४ सू ३४३
चार शिक्षाव्रत	१८६	१	१४०	पचा १ गा २५-३२, आव.हृ. अ ६ पृ ८३१
चार शुभ, चार अशुभ गण	२१३	१	१६१	सरलपिंगल
चार संज्ञा	१४२	१	१०४	ठा० ४ उ० ४ सू ३५६, प्रव द्वा. १४५ गा. ६२३
चार संज्ञाओं का अल्प-बहुत्व चार गति में	१४७	१	१०७	पन्न प ८ सू १४८
चार सद्दहणा	१८६	१	१४२	उत्त अ २८ गा २८, ध अधि २ श्लो २२ टी पृ ४३
चार सुख शय्या	२५६	१	२४१	ठा० ४ उ० ३ सू ३२५
चार स्थान क्रोधोत्पत्ति के	१६५	१	१२४	ठा ४ उ.१ सू २४९
चार स्थान गुण प्रकाश के	२५६	१	२४४	ठा ४ उ ४ सू ३७०
चार स्थान गुण लोप के	२५८	१	२४३	ठा.४ उ ४ सू ३७०
चार स्थान से हास्योत्पत्ति	२५७	१	२४३	ठा ४ उ १ सू २६६
चारित्र की व्याख्या और भेद	३१५	१	३१५	ठा ५ उ २ सू ४२८, विशे गा १२६०-१२८०
चारित्र कुशील	३६६	१	३८४	ठा ५ उ ३ सू ४४५
चारित्र के भेद	४६७	२	१६६	
चारित्र धर्म	१८	१	१५	ठा.२ उ १ सू ७२
चारित्र धर्म	६६२	३	३६२	ठा १० उ ३ सू ७६०
चारित्र धर्म के दो भेद	२०	१	१५	ठा २ उ १ सू. ७२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चारित्र परिणाम	७४९	३	४२८	ठा.१० उ ३ सू ७१३, पन्न. प. १३ सू. १८२
चारित्र पुलाक	३६७	१	३८९	ठा ५ सू ४४५, भग २५ उ ६
चारित्रभेदिनी विकथा	५३२	२	२६७	ठा. ७ उ ३ सू. ५६९
चारित्र मोहनीय	२८	१	२०	ठा २ उ. ४ सू १०५, कर्म भा १
चारित्र मोहनीय के दो भेद	२९	१	२०	कर्म भा १ गा १७
चारित्र विनय	४९८	२	२३०	उत्त अ ३०, भग २५ उ ७ सू ८०२, ठा. ७ उ ३ सू ५८५, ध अधि ३ श्लो ५४ टी पृ. १४१
चारित्र विराधना	८७	१	६३	सम. ३
चारित्राचार	३२४	१	३३२	ठा ५ उ. २ सू. ४३२, ध अधि ३ श्लो ५४ पृ १२०
चारित्रात्मा	५९३	३	९६	भ. श १२ उ १० सू. ४६७
चारित्राराधना	८६	१	६३	ठा ३ उ. ४ सू १९५
चारित्रार्य	७८५	४	२६७	बृ. उ १ नि गा ३२६३
चारित्रेन्द्र	९२	१	६६	ठा. ३ उ. १ सू ११६
चारित्रोपधान	६६८	३	२५७	ठा १० उ ३ सू. ७३८
चार्वाक दर्शन	४९७	२	१३०	
चालीस दाना दायक दोष से दूषित	९८८	७	१४६	पिं नि. गा ५२०
चालीस भेद खर पृथ्वी के	९८७	७	१४५	पन्न. प १ सू १५
चिकित्सा दोष	८६६	५	१६५	प्रव द्वा ६७, गा ५६६ टी पृ १४०, पिं. नि गा ४०८, पिं नि गा ५८, दश.अ.५ उ १ गा.१८
चित्त के आठ दोष	६०३	३	१२०	ध. अ. ३ श्लो. १२० १२१

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चित्तसमाधि के दस स्थान	६७४	३	२६२	सम १०, दशा द. ५
चिन्तन के सात फल	५०७	२	२३५	श्रा प्र. गा. ३६३
चिन्ता स्वप्न दर्शन	४२१	१	४४४	भश १६ उ ६ सू ५७७
चिलाती पुत्र की सम्यक्त्व-प्राप्ति की कथा	८२१	४	४३४	नवपद गा १४टी सम्यक्त्वाधिकार, ज्ञा अ १८
चिह्न छः नकारे के	४९१	२	१०२	उत्त अ १८गा ४१नमुचिकुमार की कथा (हस्तलिखित)
चुलनीपिता के व्रतभंग का कारण रक्षा-परिणाम नहीं पर हिंसा व क्रोध हैं	६८५	३	३१३	उपा अ० ३ टी
चुलनी पिता श्रावक	६८५	३	३११	उपा अ ३
चुल्लशतक श्रावक	६८५	३	३१५	उपा० अ० ५
चूर्ण दोष	८६६	५	१६५	प्रव गा ५६८, ध अधि ३श्लो २२टी पृ. ४०, पि नि गा ४०९, पि वि गा ५९, पचा १३ गा १९
चूर्ण भेद	७५०	३	४३३	ठा १० सू ७१३टी, पन्न प १३
'चेइय' शब्द पर टिप्पण	परिशिष्ट	३	४५७	उपा (अ) व हस्तलिखित प्रतियां
चेटक निधान की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२७६	न सू २७ गा ६५ टी.
चोरी का स्वरूप	४९७	२	१९७	
[1] चोर की प्रसूति अठारह	८९६	५	४१५	प्रश्न आश्रवद्वार ३ सू. १२ टी
चौतीस अतिशय अरिहंत के	९७७	७	६८	सम ३४, स श द्वा ९७
चौतीस अस्वाध्याय	९६८	७	३५	ठा ४सू २८५, ठा १०सू ७१४, प्रव द्वा २६८गा १४५०-७१, व्यव. भाष्य उ. ७ गा २६६-३१९, आव ह अ ४गा १३२१-६०

[1] चोर को चोरी के लिए प्रोत्साहन देना तथा अन्य किसी प्रकार से सहायता देना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चौतीस क्षेत्र जंबूद्वीप में तीर्थङ्करोत्पत्ति के	९७८	७	७१	सम. ३४
चौदह अतिचार ज्ञान के	८२४	५	१४	आव. ह. अ. ४ पृ ७३०
चौदह गुणस्थान	८४७	५	६३	कर्म ग्रं २, ४, प्रव.द्वा. ८६, ९०, २२४, गुण थो.
चौदह जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं	८४८	५	११५	[illegible]
चौदह द्वार चरमाचरम के	८४३	५	४२	[illegible]
चौदह द्वार पढमापढम के	८४२	५	३८	[illegible]
चौदह द्वार सप्रदेशी अप्रदेशी के	८४१	५	३४	[illegible]
चौदह नाम माया के	८३६	५	३१	सम. ५२
चौदह नाम लोभ के	८३७	५	३२	सम. ५२
चौदह नियम श्रावक के	८३१	५	२३	[illegible]
चौदह पूर्व	८२३	५	१२	[illegible]
चौदह प्रकार का उपकरण	८३२	५	२८	[illegible]
चौदह प्रकार का दान	८३२	५	२६	[illegible]
चौदह प्रकार से अशुभ नाम कर्म भोगा जाता है	८३९	५	३३	[illegible]
चौदह प्रकार से शुभ नाम कर्म भोगा जाता है	८३८	५	३३	[illegible]
चौदह बातें साधु के लिए अकल्पनीय	८३४	५	२९	[illegible]
चौदह भेद अजीव के	८२७	५	१९	[illegible]

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चौदह भेद आभ्यंतर परिग्रह	८४०	५	३३	बृ० उ० १ गा ८३१
चौदह भेद जीवों के	८२५	५	१७	सम १४, आव ह अ ४ पृ ६४६
चौदह भेद श्रुतज्ञान के	८२२	५	३	न सू ३८-४४, विशे गा ४५४
चौदह महानदियाँ	८४४	५	४५	सम० १४
चौदह महास्वप्न तीर्थङ्कर व चक्रवर्ती के जन्म सूचक	८३०	५	२२	भ श १६ उ ६ सू ५७८, ज्ञा अ. ८ सू ६५, कल्प सू ४
चौदह मार्गणास्थान	८४६	५	५५	कर्म भा ४ गा ६-१४
चौदह रत्न चक्रवर्ती के	८२८	५	२०	सम० १४
चौदह राजू परिमाण लोक	८४५	५	४५	प्रव द्वा. १४३, तत्त्वार्थ अध्या ३ सू ६ टी, भ श ५ उ ६ सू २२६, भ श १३ उ ४ सू ४७६-४८०
चौदह लक्षण अविनीत के	८३५	५	३०	उत्त. अ ११ गा ६-६
चौदह स्वप्न मोक्षगामी आत्मा के	८२६	५	२०	भ० श० १६ उ० ६ सू० ५८०
चौपन उत्तम पुरुष	१००६	७	२७७	सम० ५४
[1] चौमासी अनुद्घातिक	३२५	१	३३४	ठा ५ उ० २ सू० ४३३
[2] चौमासी उद्घातिक	३२५	१	३३४	ठा० ५ उ० २ सू० ४३३
चौमासे के पिछले सित्तर दिनों में विहार के ५ कारण	३३७	१	३४७	ठा० ५ उ० २ सू० ४१३
चौमासे के प्रारंभिक पचास दिनों में विहार के ५ कारण	३३६	१	३४७	ठा० ५ उ० २ सू० ४१३
चौवीस गाथा विनयसमाधि अध्ययन के दूसरे उद्देशे की	६३३	६	२०१	दश० अ० ६ उ० २
चौवीस गाथा समाधि अ० की	६३२	६	१६७	सूय० श्रु० १ अ० १०

१ चार मास का गुरु प्रायश्चित्त । २ चार मास का लघु प्रायश्चित्त ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
* चौबीस जात्युत्तर	९३६	६	२०६	पन्नो म. गा. १ ना. = गू. २५, न्यायप्र., न्याय क. अन्ता १ श्ला. ५
चौबीस तीर्थङ्कर ऐरवत क्षेत्र के आगामी उत्सर्पिणी के	९३१	६	१९७	सम. १८, प्रव. द्वा. ७ गा. ३००—३०३
चौबीस तीर्थङ्कर ऐरवत क्षेत्र के वर्तमान अवसर्पिणी के	९२८	६	१७६	सम. १५६, प्रव. द्वा. ७ गा. २९६-२९८
चौबीस तीर्थङ्कर भरत क्षेत्र के आगामी उत्सर्पिणी के	९३०	६	१९६	सम० १५८, प्रव० द्वा० ७ गा० २९३ २९५
चौबीस तीर्थङ्कर भरत क्षेत्र के गत उत्सर्पिणी के	९२७	६	१७३	प्रव० द्वा० ७ गा० २८८-२९०
चौबीस तीर्थङ्कर भरत क्षेत्र के वर्तमान अवसर्पिणी के	९२९	६	१७७	सम १५७, आव. नि. गा. ३७० से ३९०, आव. म. गा. ३३१ से ३८४, स. म., प्रव. द्वा. ७-४५
चौबीस तीर्थङ्करों के सत्ता-ईस बोलों का यंत्र तथा उन सम्बन्धी अन्य तेईस बोल	९२९	६	१७८	सम. १५७, आव. नि. गा. २०९ से २९०, आव. म. गा. २३१-३८४, स. म. प्रव. द्वा. ७-४५
चौबीस दण्डक	९३४	६	२०४	ठा. १ सू. ५१ टी., भग. श. १२ उ. ९ टी.
चौबीस धान्य	९३५	६	२०५	दश. अ. ६ नि. गा. २५२-२५३

छ

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
छः आगार प्रत्याख्यान पालने के	४८२	२	८६	आव. ह. नि. गा. १५९३ पृ. ८५१, ध. अधि. २ श्लो. ६३ पृ. १६९
छः अकर्मभूमि जंबूद्वीप की	४२५	२	४१	ठा. ६ उ. ३ सू. ५२२
छः अनन्त	४८८	२	१००	अनु. सू. १४८ टी., प्र. द्वा. २४८

* वादी के द्वारा स्थापित पक्ष में [illegible] दोष न होने पर भी प्रतिवादी द्वारा [illegible] हेतु से दिया गया उत्तर जात्युत्तर है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
छः अप्रमाद प्रतिलेखना	४४८	२	५२	ठा ६सू ५०३,उत्त अ २६गा २५
छः अप्रशस्त वचन	४५६	२	६२	ठा ६ उ.३सू ५२७, प्रव द्वा २३५गा १३२१,वृ.(जी)उ ६
छः आगार पोरिसी के	४८३	२	६७	आव ह.अ ६पृ ८५२,प्रव द्वा ४
छः आगार समकित के	४५५	२	५८	उपा अ १सू ८,आव ह अ.६ पृ ८१०,ध अधि २श्लो.२२पृ.४१
छः आभ्यन्तर तप	४७८	२	८६	उव सू २०,उत्त अ.३० गा ३०, प्रव द्वा ६गा २७१,ठा ६सू ५११
छः आरे अवसर्पिणी के	४३०	२	२६	ज वक्ष २सू १६-३६,ठा ६ उ ३ सू ४६२,भ श ७उ.६सू २८७
छः आरे उत्सर्पिणी के	४३१	२	३५	ज वक्ष २सू ३७-४०,ठा ६ उ ३ सू ४६२,विशे गा २७०८-१०
छः आवश्यक	४७६	२	६०	आव ह.
छः इत्वरिक अनशन	४७७	२	८७	उत्त अ ३० गा ६-११
छः उपक्रम	४२७	२	२५	अनु सू ७०
छः ऋतुएं	४३२	२	४०	ठा ६उ ३ सू ५२३ वृ द्वी
छः ऋद्धि प्राप्त आर्य	४३८	२	४२	ठा ६सू ४६१,पन्न.प १ सू ३७
छः कर्त्तव्य आचार्य के	४५१	२	५५	ठा ७ उ ३ सू ५७० टी
१ छः कल्प पलिमन्थु	४४४	२	४७	ठा ६उ ३सू ५२६,वृ (जी) उ ६
छः कल्पस्थिति	४४३	२	४५	ठा ३उ ४सू २०६,ठा.६उ ३ सू ५३०, वृ (जी)उ ६
छःकाय	४६२	२	६३	ठा ६उ ३सू ४८०,दश अ ४, कर्म भा ४ गा. १०
छः काय का अल्पबहुत्व	४६४	२	६५	जी प्रति २सू ६२,पन्न प ३ द्वा ४
छः काय की कुलकोटियाँ	४६३	२	६४	प्रव द्वा १५० गा ६६३-६६७

१ कल्प यानी साधु के आचार का मन्थन अर्थात् घात करने वाले ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
छः कारण ज्ञानावरणीय कर्म बांधने के	४४०	२	४४	भ. श. ८ उ. ९ सू. ३५१
छः कारण दर्शनावरणीय कर्म बांधने के	४४१	२	४४	भ. श. ८ उ. ९ सू. ३५१
छः कारण मोहनीय कर्म बांधने के	४४२	२	४४	भ. श. ८ उ. ९ सू. ३५१
छः कारण साधु के आहार करने के	४८४	२	९८	पि. नि. गा. ६६२, उत्त. अ. [illegible] गा. ३२
छः कारण साधु के आहार त्याग के	४८५	२	९८	पि. नि. गा. ६६६, उत्त. अ. २६ गा. ३४
छः कारण हिंसा के	४६१	२	६२	आचा. श्रु. १ अ. १ उ. २ सू. ११
छः कुलकोटी जीवनिकाय की	४६३	२	६४	[illegible]
छः क्षुद्र प्राणी	४६७	२	६७	[illegible]
छः गुण गणधारक के	४५०	२	५४	[illegible]
छः गुण श्रावक के	४५२	२	५६	[illegible]
छः चिह्न नकार के	४९१	२	१०२	[illegible]
छः जीवनिकाय	४६२	२	६३	[illegible]
छः जीवनिकाय की कुलकोड़ी	४६३	२	६४	[illegible]
छः दर्शन	४९७	२	११५	[illegible]
छः दुर्लभ बोल	४३९	२	४३	[illegible]
छः द्रव्य	४२४	२	३	[illegible]

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
छः पर्याप्ति	४७२	२	७७	पन्न प १ सू १२टी., भ श ३ उ १सू १३०, प्रव द्वा २३२गा १३१७-१८, कर्म भा १गा ४६
छः पर्व अधिक तिथि वाले	४३४	२	४१	ठा ६ सू ५२४, चन्द्र प्रा १२
छः पर्व न्यूनतिथि वाले	४३३	२	४०	ठा ६ उ ३सू ५२४, चन्द्र प्रा १२, उत्त अ. २६ गा १५
छः प्रकार का अवधिज्ञान	४२८	२	२७	ठा ६सू ५२६, न.सू ६-१५
छः प्रकार का आयुबन्ध	४७३	२	७६	भ श ६उ ८, ठा ६ उ ३सू ५३६
छः प्रकार का प्रश्न	४६४	२	१०३	ठा ६ उ ३ सू० ५३४
छः प्रकार का भोजन परिणाम	४८६	२	६८	ठा ६ उ ३सू ५३३
छः प्रकार का विवाद	४६३	२	१०३	ठा ६ उ ३ सू ५१२
छः प्रकार की गोचरी	४४६	२	५१	ठा ६सू ५१४, उत्त अ ३०गा १६, प्रव द्वा ६७गा ७४५, ध. अधि ३ श्लो २२टी पृ ३७
छः प्रकार के मनुष्य	४३७	२	४१	ठा ६ उ ३ सू ४९०
छः प्रकार से झूठा कलंक लगाने वाले को प्रायश्चित्त	४६०	२	६२	बृ (जी) उ ६ सू २
छः प्रतिक्रमण	४८०	२	६४	ठा. ६ उ ३ सू ५३८
१ छः प्रत्यनीक	४४५	२	४६	भ श.८ उ ८ सू ३३६
छः प्रत्याख्यान विशुद्धि	४८१	२	६५	आव ह नि.गा १५८६पृ ८४६, ठा ५ उ ३ सू ४६६ टी
छः प्रमाद	४५६	२	५६	ठा ६ उ ३सू ५०२
छः प्रमाद प्रतिलेखना	४४६	२	५३	ठा ६सू ५०३, उत्त अ २६गा २६
छः प्रश्न परदेशी राजा के	४६६	२	१०७	रा सू ६३-७७
छः बातें छद्मस्थ के अगोचर	४८६	२	१०१	ठा० ६ उ० ३ सू ४७८

१ शत्रु की तरह प्रतिकूल आचरण करने वाला।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
छः बादर वनस्पतिकाय	४६६	२	६६	दस.अ.४ सू०१
छः बाह्य तप	४७६	२	८५	उत्त.अ.३०गा ८,ठा ६सू ५११ उवसू.१९,प्रव.द्वा.६गा.२७०
छः बोल उन्माद के	४५७	२	६०	ठा०६ उ०३ सू० ५०१
छः बोल दुर्लभ	४३६	२	४३	ठा०६ उ.३ सू० ४८५
छः बोल में कोई समर्थ नहीं	४६०	२	१०१	ठा.६ उ०३ सू०४७९
छः भाव	४७४	२	८१	अनु सू १२६, ठा.६ उ ३सू ५३७,कर्म भा. ४गा ६४-७०
छः भावना समकित की	४५४	२	५८	ध अधि.२श्लो.२२टी पृ ४२, प्रव. द्वा १४८ गा ९४०
छः भेद अर्थावग्रह के	४२६	२	२८	नसू ३०,ठा ६उ ३सू ५२५, तत्वार्थ अध्या १ सू.१७
छः भेद अविरुद्धोपलब्धि रूप हेतु के	४९५	२	१०४	रत्ना.परि ३ सू.८८-९२
छः भेद पुद्गल के	४२६	२	२५	[illegible]
छः भेद पृथ्वी के	४६५	२	६५	जी प्रति ३ सू. १०१
छः भेद प्रतिलेखनाविधि के	४४७	२	५२	उत्त अ. २६ [illegible]
छः भेद प्राकृत भाषा के	४९२	२	१०२	प्रा०. व्याकरण
छः मनुष्य क्षेत्र	४३६	२	४१	ठा६ उ०३ सू० ४९०
छः लाभ वंदना से होनेवाले	४७५	२	८४	प्रव. द्वा.२गा.१००
छः लेश्या	४७१	२	७०	[illegible]
छः विष परिणाम	४८७	२	१००	ठा६ उ. ३ सू ५३३
छः संस्थान अजीव के	४६९	२	६९	भग श२५ उ ३सू ७२४,पन्न. १ सू ४, जी प्रति.१

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
छः संस्थान जीव के	४६८	२	६७	ठा ६सू.४६५, कर्म.भा.१गा ४०
छः संहनन	४७०	२	६६	पन्न प २३सू २६३, ठा ६उ ३ सू ४६४, कर्म भा १ गा. ३८, ३६
छः सामान्य गुण	४२५	२	१६	द्रव्य त.अध्या ११, आगम
छः स्थान अनात्मवान् (सकषाय) के लिए अहितकर	४५८	२	६१	ठा ६ उ ३ सू ४६६
छः स्थान समकित के	४५३	२	५७	ध अधि २श्लो २२टी.पृ ४६, प्रव द्वा १४८गा.६४१
छर्दियदोष(आहारकादोष)	६६३	३	२४६	प्रव द्वा ६७ गा ५६८, पि नि गा ५२०, ध अधि ३ श्लो २२टी पृ ४१, पचा १३गा २६
छत्तीसगाथाधर्माध्ययनकी	६८१	७	८७	सूय अ.६
छत्तीस गुण आचार्य के	६८२	७	६४	प्रव द्वा ६४ गा ५४१-५४६
छत्तीस प्रश्नोत्तर	६८३	७	६८	
छद्मस्थ आठ बातें नहीं देखता	६०२	३	१२०	ठा ८ उ ३ सू ६१०
छद्मस्थ के परिषह उपसर्ग सहने के पाँच स्थान	३३१	१	३४०	ठा.५ उ १ सू. ४०६
छद्मस्थ छः बातें नहीं देखता	४८६	२	१०१	ठा ६ उ ३ सू ४७८
छद्मस्थ जानने के ७स्थान	५२३	२	२६०	ठा ७ उ ३सू.५५०
छद्मस्थ दस बातों को नहीं देख सकता	७१६	३	३८६	ठा १० उ ३सू.७५४, भ.श ८ उ २ सू ३१७
छद्मस्थ पाँच बोल साक्षात् नहीं जानता	३८६	१	४०६	ठा ५ उ ३स ४५०
छद्मस्थ सात बातें जानता और देखता नहीं है	५२५	२	२६१	ठा. ७ उ ३ सू ५६७

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
छद्मस्थ मरण	८७९	५	२८३	पन्न १७,प्रा.द्वा १६७ गा १००७
छन्द के तीन भेद	५४०	२	२७५	अनु. सू. १२७ गा ६२, ठा. ७ उ ३ सू ५५३ गा २७
छन्दणा समाचारी	६६४	३	२५०	भ श २५ उ ७ सू ८०१, ठा १० उ ३ सू ७४९, उत्त अ २६ गा ३, प्रव. द्वा. १०१ गा ७६०
छप्पन अन्तर द्वीप	१०११	७	२७७	पन्न प १ सू ३७ टी., प्रव. द्वा २६२ गा १४२० से १४२८, जी. प्रति. ३ सू १०८-११२
छब्बीस बोलों की मर्यादा	९४३	६	२२५	उपा. अ १ सू. ६, ध. अधि २ श्लो ३४ टी. पृ ८०, श्रा प्रति
छब्बीस वैमानिक देव	९४४	६	२२७	पन्न. प १ सू ३८, उत्त. अ ३६ गा २०७-२१४, भ श ८ उ. १
छियालीस भेद गणित योग्य काल परिमाण के	९९८	७	२६३	भ श ६ उ ७ सू २४७, अनु सू ११४
छियालीस मातृकाक्षर ब्राह्मी लिपि के	९९९	७	२६४	सम. ४६
छेद सूत्र चार	२०५	१	१८०	
छेदोपस्थापनिक चारित्र	३१५	१	३१७	ठा. ५ उ. २ सू ४२८, अनु सू. १४४, विशे गा १२६०-१२८०
छेदोपस्थापनीय कल्पस्थिति	४४३	२	४५	ठा. ३ उ ४ सू २०६, ठा. ६ उ. ३ सू ५३०, बृ (नि.) उ. ६
छोटी गतागत के १८ द्वार	८८८	५	३६८	पन्न. ६ के आधार से

ज

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
जनपालगुणकस्मेरणा-दान	८६०	५	१४५	ठा. १० सू ७४५, भ. श. ८ उ. ६ सू ३३०, आव ह. अ. ६ पृ. ८३८

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
जड़कर्म कैसे फल देता है?	५९०	३	४८	कर्म भा १ भूमिका
जनपद सत्य	६९८	३	३६८	ठा.१० सू ७४१, पन्न प ११ सू. १६५, ध अधि ३ श्लो ४१ पृ १२१
जन्म की व्याख्या और भेद	६६	१	४६	तत्त्वार्थ अध्या २ सू ३२
जमाली की कथा और उसका मत शंका समाधान सहित	५६१	२	३४२	विशे गा २३०६-२३३२, भ श ९ उ ३३, आव.ह.अ.१ पृ ३१२, भ श.१ उ १ सू० ७
जम्बूद्वीप	४	१	२	ठा १ सू ५२, तत्त्वार्थ अध्या ३ सू ९
जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति का वर्णन	७७७	४	२२५	
जम्बूद्वीप में चन्द्र सूर्यादि	७९९	४	३००	सूर्य प्रा १९
जम्बूद्वीप में छः अकर्मभूमि	४३५	२	४१	ठा ६ उ ३ सू ५२२
जम्बूद्वीप में तीर्थङ्करोत्पत्ति के चौतीस क्षेत्र	९७८	७	७१	सम. ३४
जम्बूद्वीप में महानदियाँ सात पश्चिम की ओर जाने वाली	५३९	२	२७०	ठा ७ उ. ३ सू० ५५५
जम्बूद्वीप में महानदियाँ सात पूर्व की ओर जाने वाली	५३८	२	२७०	ठा ७ उ ३ सू. ५५५
जम्बूद्वीप में मेरु पर्वत पर चार वन हैं	२७३	१	२५१	ठा० ४ उ० २ सू० ३०२
जम्बूद्वीप में वर्षधर ७ पर्वत	५३७	२	२७०	सम ७, ठा ७ उ ३ सू. ५५५
जम्बूद्वीप में सात क्षेत्र	५३६	२	२६९	ठा ७ उ. ३ सू ५५५, सम ७, तत्त्वार्थ अध्या. ३ सू १०
जलचर	४०९	१	४३५	पन्न प १ सू ३३, उत्त अ. ३६
जल प्रवेश मरण	७९८	४	२९९	भ.श २ उ १ सू ९१
जल्लौषधि लब्धि	९५४	६	२९०	प्रव द्वा २७० गा. १४९२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ जांगमिक वस्त्र	३७४	१	३८९	ठा० ५ उ० ३ सू० ४४६
जागरिका तीन	६२४	३	१६८	भ श.१२ उ.१ सू ४३६
जाति की व्याख्या और भेद	२८१	१	२५९	पन्न.प.२३उ.२ सू.२९३, प्रा. द्वा १८७ गा.१०६६-११०४
जाति नाम निधत्तायु	४७३	२	७९	भ.श ६ उ ८ सू २५०, ठा ६ उ.३ सू ५३६
जातिमद	७०३	३	३७४	ठा.१० सू ७१०, ठा.८ सू.६०६
जातिस्मरण से समकितप्राप्ति	८२१	४	४२३	नवपद गा. १०८
जात्यार्य	७८५	४	२६६	सू ३ १ नि गा ३०१३
२ जान्युत्तर चौबीस	९३६	६	२०६	प्र.मी.श १ गा.२ सू २६, स्याद प्र.अध्या. ४, स्याद्वाद मञ्जरी ५ गा ?
जितेन्द्रियता	७६३	३	४४५	ठा १०३ ३ सू.७५८
जिनकल्प	५२२	२	२५३	विशे गा.७
जिनकल्प स्थिति	४४३	२	४७	ठा सू २०६, ३३०, सु(पी).१३
जिनकल्पी की प्रभावनाएं	५२२	२	२५५	विशे.गा ७
जिनकल्पी यथालन्दिक	५२२	२	२६०	विशे. गा ७
जिन तीन	७४	१	५३	ठा.३ उ ४ सू २२०
जिनदत्त, सागरदत्त की कथा	९००	५	४२६	ज्ञा. अ ३
जिनदास कुमार की कथा	९१०	६	५९	वि अ. १६
जिनपाल, जिनरक्ष की कथा	९००	५	४५३	ज्ञा. अ ९
३ जीत व्यवहार	३६३	१	३७७	ठा ५ सू ४२१, भ.श.८ उ ८ सू ३४०, व्यव. पीठिका गा. १,

१ एक स्थान से दूसरे स्थान में चलता हुआ वस्त्र। २ पृष्ठ १३२ पर टिप्पणी देखो।

३ अनेक गीतार्थ मुनियों द्वारा की हुई मर्यादा का प्रतिपादन करने वाला ग्रन्थ जीत कहलाता है। उसके अनुसार व्यवहार जीतव्यवहार है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
जीभ के संयम पर ७ गाथा	९६४	७	२१२	
जीव	७ख	१	४	ठा २सू १०१,तत्त्वार्थ अध्या २
जीव	१३०	१	९८	ठा.५सू ४३०,भ श २उ १सू ९१
जीव और कर्म का संबन्ध	५९०	३	४७	विशे गा १६३५-१६३६
जीव और पुद्गल के लोक से बाहर न जाने के ४ कारण	२६८	१	२४७	ठा० ४उ० ३ सू ३३७
जीव और शरीर के भेदा-भेद के विषय में गणधर वायु-भूति का शंका समाधान	७७५	४	३४	विशे गा १६४५-१६८६
जीव कर्म का अनादि संबंध	५९०	३	५१	विशे गा १८१३-१८१४
जीव के चौदह भेद	८२५	५	१८	सम.१४,आव ह अ.४पृ ६४६
जीव के चौदह भेदों का अल्पबहुत्व	८२५	५	१८	पन्न प ३द्वा.३,१८,१९,जी प्रति ४ सू.२२५ प्र सं भा २
जीव के छः नाम	१३०	१	९८	भ श २ उ १ सू ९१
जीव के तीन भेद	६९	१	५०	भ श.६ उ ३ सू २३७
जीव के पाँच भाव	३८७	१	४०७	कर्म भा ४गा ६४-६८,अनु सू १२६, प्रव द्वा २२१ गा० १२९० से १२९८
जीव के संस्थान छः	४६८	२	६७	ठा ६सू ४९५,कर्म भा १गा ४०
जीव तत्त्व के ५६३ भेद	६३३	३	१७८	पन्न प.१, उत्त अ ३६, जी
जीव दस प्रकार के	७२६	३	४१४	ठा १० उ ३सू ७७१
जीव दस प्रकार के	७२७	३	४१५	ठा.१० उ ३ सू ७७१
जीव द्रव्य	४२४	२	३	आगम, उत्त अ ३६
जीवन की अस्थिरता पर दस गाथाएं	९६४	७	२२५	

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
जीवनिकाय छः	४६२	२	६३	ठा ६ उ.३ सू.४८०, दश अ. ४, कर्म. भा ४ गा १०
जीवनिकाय ६ की कुलकोड़ी	४६३	२	६४	प्रव द्वा. १५० गा. ९६३-९६७
जीव परिणाम दस	७४६	३	४२६	पन्न. प. १३, ठा. १० सू. ७१३
जीव प्रादेशिक दृष्टि निह्नव	५६१	२	३५३	विशे गा २३३३-२३५५
जीवमिश्रिता सत्यामृषा	६९९	३	३७०	ठा १० सू ७४१, पन्न प ११ सू. १६५, ध. अधि. ३ श्लो. ४१ पृ १२२
जीव सभी सात प्रकार के	५५०	२	२९२	ठा. ७ उ ३ सू ५६२
जीव हल्का भारी कैसे होता है	९८३	७	१२०	भग १ उ ९ सू ७२
जीवाजीवमिश्रिता सत्यामृषा	६९९	३	३७१	ठा. १० सू. ७४१, पन्न प ११ सू. १६५, ध. अधि ३ श्लो ४१ पृ १२२
जीवाजीवाभिगम सूत्र का संक्षिप्त विषय वर्णन	७७७	४	२१९	
जीवादि नौ तत्त्वों के ज्ञान से १२ बोलों की परम्परा प्राप्ति	८११	४	३५२	दश अ. ४ गा. १४-२५
जीवाधिकरण	५०	१	३०	तत्त्वार्थ. अध्या. ६ सू. ७
जीवास्तिकाय के ५ प्रकार	२७७	१	२५६	ठा. ५ उ. ३ सू ४४१
जीवों की समानता	४२४	२	८	आगम.
जीवों के चौदह भेद	८२५	५	१७	सम १४, भा १, प्र ...
जीवों के चौबीस दण्डक	९३४	६	२०४	ठा १ सू ५१ टी., भग. १३...
जृम्भक देवों के दस भेद	७४२	३	४२०	भग १४ उ ८ सू ५३३
जैन दर्शन	४९७	२	१५९	
जैनधर्म की चार विशेषताएं	४९७	२	२१०	
जैन साधु	४९७	२	२०८	

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
जैन साधु के लिए मार्ग-प्रदर्शक बारह गाथाएं	७८१	४	२५५	उत्त अ २१ गा. १३-२४
ज्ञात, ज्ञातपुत्र	७७०	४	४	जैनविद्या वोल्यूम १ न १
ज्ञाता के नौ भेद	६४१	३	२१२	आचा. श्रु १ अ २ उ ५ सू ८८
ज्ञाताधर्मकथांग की १६ कथा	६००	५	४२७	
ज्ञाताधर्मकथांग के दोनों श्रुतस्कन्धों का विषयवर्णन	७७६	४	१८५	
ज्ञान	११	१	१०	पन्न प २६ सू ३१२
ज्ञान कुशील	३६६	१	३८४	ठा ५ उ ३ सू ४४५
*ज्ञान के चौदह अतिचार	८२४	५	१४	आव.ह अ ४ पृ ७३०
ज्ञान के दो भेद	१२	१	१०	ठा २ उ १ सू ७१, न सू २
ज्ञान के पाँच भेद	३७५	१	३६०	ठा ५ उ ३ सू ४६३, कर्म भा १ गा ४, न० सू १
ज्ञान गर्भित वैराग्य	६०	१	६५	क भा २ श्लो ११८-११६
ज्ञान नारकियों में	५६०	२	३३७	जी प्रति ३ सू ८८
ज्ञानपरिणाम	७४६	३	४२७	ठा १० उ ३ सू ७१३, पन्न प १३
ज्ञान पुलाक	३६७	१	३८२	ठा ५ सू ४४५, भ श २५ उ ६
ज्ञान मार्गणा और भेद	८४६	५	५८	कर्म० भा ४ गा. ११
ज्ञान विनय	४६८	२	२२६	उव सू २०, भ श २५ उ ७ सू ८०२, ठा ७ उ ३ सू ५८५, ध. अधि. ३ श्लो ५४ टी पृ. १४१

---

* ज्ञान के चौदह अतिचारों में सुट्ठुदिन्न दुट्ठुपडिच्छिय दो अतिचार है। इनका अर्थ इस प्रकार है—

सुट्ठुदिन्न—शिष्य में शास्त्र ग्रहण करने की जितनी शक्ति है उससे अधिक पढ़ाना। यहा सुट्ठु शब्द का अर्थ है शक्ति या योग्यता से अधिक।

दुट्ठुपडिच्छिय—आगम को बुरे भाव से ग्रहण करना

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
ज्ञान विराधना	८७	१	६३	सम ३
ज्ञान वृद्धि के दस नक्षत्र	७६२	३	४४४	सम.१०,ठा १०उ ३ सू ७८१
ज्ञान संख्या	६१६	३	१४३	अनु सू १४६
ज्ञानाचार	३२४	१	३३२	ठा.५उ २सू ४३२,ध.अधि ३ श्लो ४४ पृ. १४०
ज्ञानाचार आठ	५६८	३	५	ध.अधि.१श्लो १६ टी पृ.१८
ज्ञानातिशय	१२६ख	१	६७	स्या का.१ टी.
ज्ञानात्मा	५६३	३	६६	भ श १२ उ १०सू ४६७
ज्ञानाराधना	८६	१	६३	ठा ३ उ ४ सू १६५
ज्ञानार्य	७८५	४	२६६	बृ उ १ नि गा ३२६३
ज्ञानावरणीयकर्मका अनुभाव	५६०	३	५६	पन्न प २३ सू २६२
ज्ञानावरणीय कर्म के भेद	३७८	१	३६३	ठा ५सू ४६४,कर्म.भा१.गा.६
ज्ञानावरणीय कर्म के भेद और उसके बन्ध के छः कारण	५६०	३	५६	कर्म.भा १गा. ६, ५४. भ श. ८ उ ६सू ३५१,पन्न प २३सू २६३-६४,तत्त्वार्थ अध्या ८सू ६
ज्ञानावरणीय कर्म बाँधने के छः कारण	४४०	२	४४	भ श८उ ६ सू. ३५१
ज्ञानेन्द्र	६२	१	६६	ठा ३ उ.१ सू. ११६
ज्ञानोपघात	६६८	३	२५७	ठा. १० उ ३ सू ७३८
ज्येष्ठ कल्प	६६२	३	२३६	पचा. १७ गा. २६-३१
ज्योतिषशास्त्र की तरह क्या जैनशास्त्रों में भी पुष्यनक्षत्र की श्रेष्ठता का वर्णन है?	६८३	७	१२६	ज्ञा अ ८ सू ६६
ज्योतिषी देव के पाँच भेद	३६६	१	४२३	ठा.५सू.४०१,जी.प्रति ३सू १२२
ज्वलनप्रवेशमरण	७६८	४	२६६	भ श २उ १ सू. ६१

झ

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
झूठ बोलने के आठ कारण	५८२	३	३७	साधुप्र. महाव्रत २
झूठा कलंक लगाने वाले को प्रायश्चित्त	४६०	२	६२	बृ (जी) उ. ६ सू २

ठ

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
ठाणांग (स्थानांग) सूत्र का संक्षिप्त विषय वर्णन	७७६	४	७६-११४	

ढ

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
ढाई द्वीप में चन्द्र सूर्यादि ज्योतिषी देवों की संख्या	७८६	४	३०२	सूर्य प्रा १६

ण

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
णाय, णायपुत्त	७७०	४	४	जैनविद्या वोल्यूम १ न१

त

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ तज्जात दोष	७२२	३	४०६	ठा १० उ.३ सू ७४३
१ तज्जात दोष	७२३	३	४११	ठा.१० उ ३ सू ७४३
२ तज्जात संसृष्ट कल्पिक	३५३	१	३६८	ठा ५ उ १ सू. ३९६
तत्काल उत्पन्न देव ४ कारणों से मनुष्य लोक में आता है	१३९	१	१०१	ठा ४ उ ३ सू ३२३

१ शास्त्रार्थ के समय प्रतिवादी के जाति, कुल आदि के दोषों को निकाल कर उस पर व्यक्तिगत आक्षेप करना।

२ अभिग्रह विशेष, जिसके अनुसार साधु तभी आहार लेता है जब कि दिये जाने वाले आहार विशेष से दाता के हाथ और भाजन खरडे हुए हों।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
तत्काल उत्पन्न देव ४ कारणों से मनुष्य लोक में नहीं आता है	१३८	१	१०१	ठा.३ उ ३ सू ३२३
तत्काल उत्पन्न नैरयिक चार बोलों से मनुष्य लोक में नहीं आ सकता	१४०	१	१०१	ठा०४उ०१ सू २४५
तत्त्व की व्याख्या और भेद	६३	१	४४	ध.अधि.२श्लो २१-२२पृ ३१, यो प्रका २ श्लो ४-११
तत्त्व नौ	६३३	३	१७७	नव० गा १,ठा.६उ ३सू.६६५
तथाकार समाचारी	६६४	३	२५०	भ श.२५उ.७ सू८०१,ठा १० उ.३सू ७४६,उत्त अ २६गा ३, प्रव द्वा १०१गा ७६०
[1] तथाज्ञानानुयोग	७१८	३	३६५	ठा १० उ ३ सू ७२७
तदुभयधर पुरुष	८४	१	६२	ठा ३ उ. ३ सू १६६
तदुभयागम	८३	१	६१	अनु. सू १४४
तदुभयाचार	५६८	३	६	ध अधि.१श्लो.१६टी.पृ १८
तद्धितज भावप्रमाण नाम	७१६	३	४०२	अनु सू १३०
,, के ८ भेद	७१६	३	४०२	अनुसू १३०
तद्भव मरण	७६८	४	२६६	भ श २ उ १ सू ६१
तद्भव मरण	८७६	५	३८३	सम १७,प्रव द्वा १५७गा १००६
तन्दुलवेयालियपइण्णा	६८६	३	३५४	द प.
तप	३५१	१	३६६	ठा ५ सू ३६६, प्रव.गा.५५४, ध अधि.३श्लो ४६ पृ. १२७
तप	६६१	३	२३४	नव. गा.२२, सम.१०, ना. भा १ प्रक.८

[1] वस्तु के यथार्थ स्वरूप का विचार।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
तप आचार	३२४	१	३३३	ठा.५ उ.२ सू.४३२, ध अधि ३ श्लो ५४ पृ १४०
तप आदि के फल की दस प्रकार की इच्छा	६६७	३	२५३	ठा १० उ ३ सू. ७५६
तपः कर्म	७६०	३	४४३	आचा.श्र २ उ १ नि गा १८३
तप के बारह भेद	४७६, ४७८	२	८५, ८६	उत्त अ ३०, उव सू १६,२०, ठा.६ उ ३ सू ५११, प्रव.द्वा ६ गा २७०-२७१
तप के विषय में ११ गाथा	६६४	७	२०२	
तप धर्म	१६६	१	१५५	भ.श २५ उ ७, उत्त अ ३० गा ८
तप मद	७०३	३	३७४	ठा १० सू ७१०, ठा ८ सू ६०६
तप समाधि के चार भेद	५५३	२	२६४	दश अ ६ उ. ४
१ तयालीस प्रवचन संग्रह	६६४	७	१५१	उत्त, दश, आचा, सूय, प्रश्न., द प., भ, ज्ञा, दशा, पि नि, ध र., विशे, आव ह, उव, ध, आगम, समय, वृ, पंच व, प्रतिमा
तरु पतन मरण	७६८	४	२६६	भ.श २ उ १ सू ६१
तर्क	३७६	१	३६५	रत्ना परि ३ सू ७
तापसश्रमण	३७२	१	३८७	प्रव द्वा ६४ गा ७३१
तिथियों के पन्द्रह नाम	८५७	५	१४२	चन्द्र प्रा १० प्रा प्रा १४
२ तिन्तिणक	४४४	२	४८	ठा ६ सू ५२६, वृ (जी) ३ ६
३ तिरीडपट्ट वस्त्र	३७४	१	३८६	ठा.५ उ ३ सू० ४४६

१ भिन्न भिन्न तयालीस विषयों पर आगम तथा धर्मग्रन्थों की गाथा एवं पाठों का सुन्दर संग्रह। यह संग्रह स्वाध्यायप्रेमियों के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

२ चिड़चिड़े स्वभाव वाला व्यक्ति, कल्पपलिमन्थु का एक भेद।

३ तिरीड वृक्ष की छाल का बना हुआ वस्त्र।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
तिरोभाव	४४	१	२७	न्याय को.
तिर्यक्लोक	६५	१	४६	लोक भा.२ स.१२, भग ११ उ १० सू ४२०
तिर्यक् सामान्य	५६	१	४१	रत्ना. परि ५ सू ४
तिर्यञ्चआयुबंधके४कारण	१३३	१	६६	ठा ४ उ ४ सू ३७३
तिर्यञ्च के अड़तालीस भेद	६३३	३	१७८	उत्त अ.३६, जी प्रति. १
तिर्यञ्च के अड़तालीसभेद	१००१	७	२६५	पन्न.प.१ सू १०-३६
तिर्यञ्चपंचेन्द्रियके पाँचभेद	४०६	१	४३५	पन्नप १सू ३२-३६, उत्त अ ३६ गा १६६-१६२
तिर्यञ्च सम्बन्धी उपसर्ग के चार प्रकार	२४२	१	२१६	ठा. ४ उ ४ सू. ३६१, सूय अ ३ उ.१टी नि. गा ४८
तिष्यगुप्त निह्नव का आत्मा के संबंध में शंका समाधान	५६१	२	३५३	विशे.गा.२३३३-२३५५
तीन अंग पिता के	१२२	१	८७	ठा. ३ उ. ४ सू.२०६
तीन अंग माता के	१२३	१	८७	ठा ३ उ. ४ सू. २०६
तीन अच्छेद्य	७३	१	५३	ठा.३ उ २ सू १६५
तीन अभिलाषाएं देव की	१११	१	८०	ठा०३ उ०३ सू १७८
तीन अर्थयोनि	१२६	१	६०	ठा ३ उ ३ सू.१८५ टी.
तीनअवस्था-उत्पादव्ययध्रौव्य	६४	१	४४	तत्त्वार्थ.भाष्या.५ सू. २६
तीन आत्मा	१२५	१	८६	परमा. गा १३-१५
तीन आधार विमानों के	११४	१	८१	ठा ३ उ ३सू १८०
तीन आराधना	८६	१	६२	ठा.३ उ ४ सू १६५
तीन कथा	६७	१	६६	ठा.३ उ ३ सू १८६
तीन कर्म	७२	१	५२	जीप्रति ३उ.१सू.१११, तन्दुल. सू १४-१५ पृ. ४०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
तीन का प्रत्युपकार दुःशक्य	१२४	१	८७	ठा ३ उ १ सू १३५
तीन कारण अल्पायु के	१०५	१	७४	ठा ३ उ १ सू १२५, भ श ५ उ ६ सू २०४
तीन कारण अशुभदीर्घायु के	१०६	१	७४	
तीन कारण जीव की शुभ दीर्घायु के	१०७	१	७५	भ श ५ उ ६ सू २०४, ठा ३ उ १ सू. १२५
तीन कारण नवीन उत्पन्न देव के मनुष्य लोक में आने के	११०	१	७९	ठा ३ उ ३ सू. १७७
तीन जिन	७४	१	५३	ठा ३ उ ४ सू २२०
[1] तीन दुःसंज्ञाप्य	७५	१	५४	ठा. ३ उ ४ सू २०३
तीन प्रकार के पुरुष	८४	१	६१	ठा ३ उ ३ सू १६९
तीन बोल देव के च्यवन ज्ञान के	११३	१	८१	ठा ३ उ ३ सू. १७९
तीन बोल देव के पश्चात्ताप के	११२	१	८०	ठा ३ उ ३ सू १७८
तीन बोल पृथ्वी के देशतः धूजने के	११६	१	८२	ठा. ३ उ ४ सू १९८
तीन बोल सारी पृथ्वी धूजने के	११७	१	८२	ठा. ३ उ ४ सू १९८
तीन भेद अंगुल के	११८	१	८३	अनु सू १३३
तीन भेद आगम के दो प्रकार से	८३	१	६०	रत्ना परि.४ सू १, २, अनु सू १४४
तीन भेद आचार्य-ऋद्धि के	१०२	१	७१	ठा ३ उ.४ सू. २१४
तीन भेद आचार्य के	१०३	१	७२	रा सू. ७७
तीन भेद ऋद्धि के	९९	१	७०	ठा ३ उ ४ सू २१४
तीन भेद एषणा के	९३	१	६६	उत्त अ २४ गा ११-१२

[1] दु:खपूर्वक कठिनता से समझाये जाने वाले जीव।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
तीन भेद करण के	७८	१	५५	आगम., आव.म गा १०६-१० टी, विशे गा १२०२-१२१८, प्रव द्वा २०४ गा १३०२टी. कर्म भा २ गा २ व्याख्या
तीन भेद करण के	९४	१	६७	ठा ३ उ १ सू १२४
तीन भेद गारव के	९८	१	७०	ठा ३ उ.४ सू २१५
तीन भेद गुणव्रत के	१२८(क)	१	९१	आव.ह अ ६ पृ ८२६-८२९
तीन भेद गुप्ति के	१२८(ख)	१	९२	उत्त अ २४, ठा ३ सू १२६
तीन भेद जन्म के	६६	१	४६	तत्त्वार्थ अध्या २ सू ३२
तीन भेद जीव के	६९	१	५०	भ श ६ उ ३ सू २३७
तीन भेद तत्त्व के	६३	१	४४	यो प्रका २ श्लो ४-११, ध अधि २ श्लो. २१-२२ टी पृ. ३१
तीन भेद दण्ड के	९६	१	६९	सम ३, आचा श्रु.१ अ ४ उ.१ सू.१२६टी, ठा ३ उ १ सू १२६
तीन भेद दर्शन के	७७	१	५५	ठा.३ सू १८४ भग श ८ उ २
तीन भेद देवोंकी ऋद्धि के	१००	१	७०	ठा० ३ उ० ४ सू० २१४
तीन भेद द्रव्यानुपूर्वी के	११९	१	८४	अनु सू ९६-९८ टी.
तीन भेद धर्म के	७६	१	५४	ठा ३ उ ३,४ सू १८८, २१७
तीन भेद पल्योपम के	१०८	१	७५	अनु सू १३८-१४०, प्रव.द्वा १५८ गा १०१८-१०२६
तीन भेद भाव इन्द्र के	९२	१	६६	ठा० ३ उ० १ सू० ११६
तीन भेद मनुष्य के	७१	१	५१	ठा ३ उ.१ सू १३०, पन्न प १ सू ३७, जी प्रति.३ सू.१०७
तीन भेद मोक्षमार्ग के	७९	१	५७	उत्त.अ २८ गा.३०, तत्त्वार्थ अध्या १ सू १
तीन भेद योग के	९५	१	६८	ठा.३ सू १२४, तत्त्वार्थ.अध्या

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
तीन भेद योनि के ३ प्रकार से	६७	१	४७	ठा ३ सू १४०, तत्त्वार्थ अध्या २
तीन भेद राजा की ऋद्धि के	१०१	१	७१	ठा० ३ उ० ४ सू० २१४
तीन भेद लक्षणाभास के	१२०	१	८४	न्यायदी प्रका १
तीन भेद लोक के	६५	१	४५	लोक भा २ स १२, भ श. ११ उ १० सू ४२०
तीन भेद वनस्पति के	७०	१	५०	ठा ३ उ १ सू १४१
तीन भेद वेद के	६८	१	४९	कर्म भा १ गा २२
तीन भेद वैराग्य के	९०	१	६५	क, भा ? श्लो ११८-११९
तीन भेद व्यवसाय के	८५	१	६२	ठा. ३ उ ३ सू १८५
तीन भेद श्रद्धा, प्रतीति, रुचि	१२७	१	९०	भ श १ उ ९ सू ७६
तीन भेद समकित के दो प्रकार से	८०	१	५८	विशे गा २६७५, द्रव्यलो स ३ श्लो ६६८-६७०, ध. अधि २ श्लो २२ टी पृ ३६, श्रा.प्र. गा ४९-५०, प्रव द्वा १४९ गा ९४३-९४५, कर्म भा १ गा १५
तीन भेद समारोप के	१२१	१	८५	रत्ना परि १, न्याय प्र अध्या ३
तीन भेद सागरोपम के	१०९	१	७८	अनु सू १३८-१४०, प्रव द्वा १५९ गा १०२७ से १०३२
तीन मनोरथ श्रावक के	८८	१	६४	ठा ३ उ ४ सू २१०
तीन मनोरथ साधु के	८९	१	६४	ठा ३ उ ४ सू २१०
तीन लिंग समकित के	८१	१	५९	प्रव० द्वा. १४८ गा. ९२९
तीन वलय	११५	१	८१	ठा० ३ उ० ४ सू० २२४
तीन विराधना	८७	१	६३	सम० ३
तीन शल्य	१०४	१	७३	ध अधि ३ श्लो २७ पृ ७९, सम ३, ठा० ३ उ० ३ सू १८२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
तीन शुद्धियां समकित की	८२	१	६०	प्रव० द्वा. १४८ गा ६३२
तीन स्थविर	९१	१	६६	ठा ३ उ.३ सू १५९
तीर्थङ्कर के चौतीस अतिशय	९७७	७	६८	सम० ३४
तीर्थङ्कर के विचरते हुए पुरिमताल नगर में अभग्गसेन का वध कैसे हुआ?	९१८	६	१३६	वि० अ० ३ सू २० टी०
तीर्थङ्कर को उपसर्ग रूप आश्चर्य (अच्छेरा)	६८१	३	२७६	ठा १० उ ३ सू ७७७, प्रव.द्वा. १३८ गा. ८८५-८८९
तीर्थङ्कर गोत्र के बीस बोल	५९०	३	७८	आव.ह.अ ११ ११८, ज्ञा.अ. ८ सू ६४, प्रव. द्वा. १० गा. ३१० से ३१९
,, ,, ,, ,,	९०२	६	५	
तीर्थङ्कर गोत्र बाँधने वाले नौ आत्मा भगवान् महावीर के शासन में	६२४	३	१६३	ठा. ९ उ. ३ सू. ६९१
तीर्थङ्कर, चक्रवर्ती के जन्म सूचक महास्वप्न चौदह	८३०	५	२२	भ श १६ उ.६ सू ५७८, ज्ञा अ ८ सू ६५, कल्प. सू ४
तीर्थङ्कर चौवीस ऐरवतक्षेत्र के आगामी उत्सर्पिणी के	९३१	६	१९७	सम १५८, प्रव द्वा ७ गा. ३००-३०२
तीर्थङ्कर चौवीस ऐरवतक्षेत्र के वर्तमान अवसर्पिणी के	९२८	७	१७६	सम १५९, प्रव. द्वा ७ गा. २९६-२९८
तीर्थङ्कर चौवीस के गणधर	७७५	४	२३	आव.ह.नि गा २६६-२६८
तीर्थङ्कर चौवीस भरतक्षेत्र के आगामी उत्सर्पिणी के	९३०	६	१९६	सम० १५८, प्रव० द्वा० ७ गा० २९३-२९५
तीर्थङ्कर चौवीस भरत क्षेत्र के गत उत्सर्पिणी के	९२७	६	१७३	प्रव० द्वा ७ गा. २८८-२९०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
तीर्थङ्कर चौवीस भरत क्षेत्र के वर्तमान अवसर्पिणी के	९२९	६	१७७	सम १५७, आव ह नि गा. २०९ से २६०, आव म गा २३१ से ३८९, स. श, प्रव द्वा ७-४५
तीर्थङ्कर दीक्षा लेते समय किसे नमस्कार करते हैं?	९८३	७	१०२	आचा श्रु २ चू ३ अ २४ सू. १७९, आव ह अ १ पृ १८६
तीर्थङ्कर नामकर्म के २० बोल	५६०	३	७८	आव ह नि गा १७९-१८१ पृ ११८, ज्ञा अ ८ सू ६४, प्रव. द्वा १० गा ३१०-३१९
तीर्थङ्कर नामकर्म के २० बोल	९०२	६	५	
तीर्थङ्कर सम्बन्धी ५० बोल	९२९	६	१९८	सम १५७, आव ह. गा २०९-२६०, आव म गा २३१-३८९, स श, प्रव द्वा ७-४५
तीर्थङ्कर सम्बन्धी २७ बोलों का लेखा व अन्य २३ बोल	९२९	६	१७८	
तीर्थङ्कर सिद्ध	८४९	५	११७	पन्न. प १ सू ७
तीर्थङ्करों ने पाँच महाव्रत और चार महाव्रत रूप धर्म अलग अलग क्यों कहा?	९८३	७	११९	भ श १ उ ३ सू ३७ टी, उत्त अ २३ गा २३ से २७
तीर्थ की व्याख्या और भेद	१७७	१	१३०	ठा ४ उ. ४ सू ३६३ टी
तीर्थ सिद्ध	८४९	५	११७	पन्न प १ सू ७
तीस अकर्मभूमि	९५७	६	३०७	पन्न प. १ सू ३७
तीस द्वार नरकों के	५६०	२	३३८	जी प्रति ३ उ १, २, ३
तीस नाम परिग्रह के	९५८	६	३१०	प्रश्न आश्रवद्वार ५
तीस प्रकार भिक्षाचर्या के	९५९	६	३१०	उव सू १९, भ श २५ उ ७
तीस महामोहनीय के बोल	९६०	६	३१०	दशा द ९, सम ३०, उत्त अ ३१ गा १९ टी, आव ह अ ४ पृ ६६०
तुम्बे का दृष्टान्त	९००	५	४४१	ज्ञा० अ० ६
तृणवनस्पतिकाय आठ	६१२	३	१२९	ठा ८ उ ३ सू ६१३

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
तृण वनस्पति के दस भेद	७४५	३	४२२	ठा १० उ ३ सू ७७३
तृतीयसप्तरात्रिदिवसनाम की दशवीं भिक्खुपडिमा	७९५	४	२९०	सम. १२, दशा द ७, भ, श २ उ १ सू ९३ टी
तृष्णा पर सात गाथाएं	९९४	७	२४२	
तेईसअध्ययनसूयगडांगके	९२४	६	१७३	सूय
तेईसगाथाएं भगवान् महावीर की चर्या विषयक	९२२	६	१६६	आचा श्रु १ अ. ९ उ.१
तेईस भेद क्षेत्र परिमाण के	९२५	६	१७३	अनु सू १३३ पृ १६०-१६२, प्रव द्वा २५४ गा १३९१ टी.
तेईस विषय पाँचइन्द्रियोंके	९२६	६	१७५	ठा सू ४७, ३९०, ४४३, ५९९, पन्न १२ ३ सू १९३, प बोल १२, तत्वार्थ अध्या २ सू २१
तेईस स्थान साधु के उतरने योग्य तथा अयोग्य	९२३	६	१७०	आचा श्रु २ चू १ अ २ उ २
तेजस्काय	४६२	२	६४	ठा ६ उ ३ सू ४८०, दश अ ४, कर्म. भा ४ गा. १०
तेजोलेश्या	४७१	२	७४	उत्त अ ३४, कर्म भा ४ गा १३
तेजोलेश्या लब्धि	९५४	६	२९६	प्रव द्वा २७० गा १४९४
तेतलीपुत्र की कथा	९००	५	४६२	ज्ञा. अ १४
तेतीस आशातनाएं	९७५	७	६१	सम. ३३, दशा.द.३, आव ह अ.४ पृ ७२४
तेतीस बोल सिद्धों के अल्पबहुत्व के	९७६	७	६६	न सू.२० टी. पृ १२५
तेतीस बोलों का कथन करने वाली २१ गाथा	९१७	६	१३०	उत्त. अ. ३१

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
तेरह उपाय क्रोधादि की शान्ति के	८१८	४	४०२	श्राद्ध प्रका २ पृ ४३५
तेरह (कर्म) काठिया का वर्णन कहाँ है?	९८३	७	१२६	आव ह. नि गा ८४१ ८४२ पृ ३४६
तेरह क्रियास्थान	८१४	४	३९२	सूय श्रु २ अ २
तेरह गाथा असंस्कृत अ० की	८१९	४	४०६	उत्त अ ४
तेरह दृष्टान्त समकित प्राप्ति के	८२१	४	४२२	नवपद सम्यक्त्वाधिकार
तेरह द्वार आहारक और अनाहारक के	८१७	४	३९८	पन्न प २८ उ २
तेरह भव भ० ऋषभदेव के	८२०	४	४०९	त्रि प पर्व १
तेरह भेद कायक्लेश के	८१६	४	३९७	भ श २५ उ ७ सू ८०२, उव० सू १९
तेरह भेद प्रतिसंलीनता के	८१५	४	३९५	भ श २५ उ ७ सू ८०२, उव० सू १९
तेरह भेद विनय के	८१३	४	३९१	दश अ ९ उ १ नि गा ३२५-३२६, प्रव द्वा ६५ गा ५५०-५५१
तैजस शरीर	३८९	१	४१४	पन्न प २१ सू २६७, ठा ५ उ १ सू ३९५, कर्म भा १ गा ३३
तैजसशरीरबन्धननामकर्म	३९०	१	४१६	कर्म.भा १ गा ३५, प्रव द्वा २१६
तैजस समुद्घात	५४८	२	२८९	पन्न प ३६ सू ३३१, ठा ७ उ ३ सू ५८६, प्रव द्वा २३१ गा. १३११, द्रव्यलो स. ३ पृ १२५
त्याग	३५१	१	३६६	ठा ५ सू ३९६, ध अधि ३ श्लो ४६ पृ. १२७, प्रव. द्वा ६६ गा ५५४
त्रस	८	१	५	ठा २ उ ४ सू १०१
त्रस आठ	६१०	३	१२७	दश अ ४, ठा. ८ उ. ३ सू. ५९५
त्रसकाय	४६२	२	६४	ठा. ६ उ ३ सू. ४८०, दश अ ४, कर्म भा. ४ गा. १०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
त्रायस्त्रिंश	७२६	३	४१५	तत्वार्थ अध्या ४ सू.४
त्रिमासिकी भिक्खुपडिमा	७६५	४	२८६	सम.१२,भ श.२ उ.१ सू ६३ टी,दशा.द. ७
त्रेपन नाम मोहनीयकर्म के	१००८	७	२७६	सम ५२, भ श १२ उ.५
त्रैराशिक मत	५६१	२	३७१	विशे.गा २४५१-२५०८
त्र्यस्त्र संस्थान	४६६	२	६६	भ.श २५उ.३ सू ७२४, पन्न. प १ सू.४

द

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दंतवाणिज्जे कर्मादान	८६०	५	१४५	उपा अ.१ सू.७,भ.श.८उ.५ सू.३३०,आव ह.अ ६पृ ८२८
दग्धाक्षर पांच	३८५	१	४०६	सरल पिंगल
दण्ड	३	१	२	ठा.१सू.३
दण्डक चौवीस	६३४	६	२०४	ठा १सू ५१टी ,भ श.१उ १टी
दण्ड की व्याख्या और भेद	६६	१	६६	आचा.श्रु.१अ.४उ १सू १२६टी., सम ३, ठा ३उ १सू १२६
दण्ड की व्याख्या और भेद	२६०	१	२६६	ठा.५उ २ सू ४१८
दण्ड के दो भेद	३६	१	२३	ठा.२उ १ सू ६६
दण्ड नीति के सात प्रकार	५१०	२	२३८	ठा.७उ ३ सू ५५७
दण्डायतिक	३५६	१	३७३	ठा.५ उ १ सू.३६६
दमयन्ती सती	८७५	५	३५२	भरत गा ८,त्रिष पर्व ८ स.३
दया के साठ नाम	६२२	३	१५१	प्रश्न संवरद्वार१ सू.२१
दर्शन	११	१	१०	पन्न प २६ सू.३१२
दर्शन आठ	५६८	३	१०६	ठा ८ उ.३ सू ६१८
दर्शन कुशील	३६६	१	३८४	ठा ५ उ.३ सू ४४५

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दर्शन के चार भेद	१९९	१	१५७	ठा ४सू ३६५,कर्म भा ४गा.१२
दर्शन के तीन भेद	७७	१	५५	भ श.८उ २सू ३२०,ठा ३सू १८४
दर्शन छः	४९७	२	११५	तत्त्वार्थ ,रत्ना.,सर्वद ,साख्य , योग ,न्यायद ,सि सु , प्रशस्त , शास्त्र ,वेदान्त ,ब्रह्म ,हि फि.
दर्शन परिणाम	७४९	३	४२७	ठा १०उ ३सू ७१३,पन्न प १३
दर्शन पुलाक	३६७	१	३८२	ठा.५ सू ४४५,भ श २५उ ६
दर्शनभेदिनी विकथा	५३२	२	२६७	ठा० ७उ० ३ सू० ५६९
दर्शन मार्गणा और भेद	८४६	५	५८	कर्म. भा ४ गा १२
दर्शन मोहनीय	२८	१	२०	ठा.२सू.१०५,कर्म भा १गा १३
दर्शन विनय	४९८	२	२२९	उव सू २०, भ.श २५उ ७सू ८०२,ठा ७ उ ३सू ५८५,ध. अधि ३ श्लो ५४ टीपृ १४१
दर्शनविनय के दस बोल	७०९	३	३८४	भ श.२५उ ७ सू ८०२
दर्शन विनय के ५५ भेद	१०१०	७	२७७	उव सू २०
दर्शन विराधना	८७	१	६३	सम० ३
दर्शनाचार	३२४	१	३३२	ठा ५उ.२सू ४३२,ध अधि ३ श्लो ५४ पृ. १४०
दर्शनाचार आठ	५६९	३	६	पन्न प १ सू ३७गा १२८,उत्त. अ २८ गा ३१
दर्शनात्मा	५९३	३	९६	भ० श १२ उ १०सू ४६७
दर्शनाराधना	८६	१	६३	ठा० ३ उ०४ सू० १९५
दर्शनार्य	७८५	४	२६७	वृ.उ १ नि गा.३२६२
दर्शनावरणीय कर्म और उसके नौ भेद	५९०	३	५९	कर्म भा १गा १०-१२,पन्न प. २३सु २९३,तत्त्वार्थ- अध्या ८

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दर्शनावरणीय कर्म बाँधने के छः कारण	४४१	२	४४	भ श ८ उ ९ सू ३५१
दर्शनावरणीय कर्म बाँधने के छः कारण और अनुभाव	५९०	३	५९	कर्म भा १ गा ५४, पन्न प २३ सू. २९२, भ श ८ उ ९ सू. ३५१
दर्शनेन्द्र	९२	१	६६	ठा ३ उ १ सू ११६
दर्शनों का विकास	४९७	२	११६	
दर्शनों की परस्पर तुलना	४९७	२	२१४	
दर्शनोपघात	६६८	३	२५७	ठा० १० उ० ३ सू ७३८
दवग्गिदावणया कर्मादान	८६०	५	१४६	उपा अ १ सू ७, भ श ८ उ ५ सू ३३०, आव. ह. प्र. ६ पृ ८२८
दशवैकालिकसूत्र की दूसरी चूलिका की सोलह गाथाएं	८६१	५	१४७	दश चू० २
दशवैकालिकसूत्र की दूसरी चूलिका की १६ मूलगाथाएं	८६१	५	४७८	दश० चू० २
दशवैकालिकसूत्र की प्रथम चूलिका की अठारह गाथाएं	८९८	५	४२०	दश० चू० १
दशवैकालिक सूत्र की प्रथम चूलिका की १८ मूलगाथाएं	८९८	५	४८७	दश० चू० १
दशवैकालिक सूत्र के चौथे अ० की बारह गाथा का अर्थ	८११	४	३५२	दश अ ४ गा. १४-२५
दशवैकालिकसूत्र के दस अध्ययनों का विषयवर्णन	२०४	१	१७२	
दशवैकालिकसूत्र के १०वें अध्ययन की २१ गाथाएं	९१६	६	१२६	दश० अ० १०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दशवैकालिकसूत्र के दूसरे अ० की ग्यारह गाथाएं	७७१	४	११	दश अ २
दशवैकालिकसूत्रकेनवेंअ० के चौथे उ० की ७ गाथाएं	५५३	२	२९३	दश. अ ९ उ ४
दशवैकालिकसूत्रकेनवेंअ० के तीसरे उ० की १५ गाथाएं	८५३	५	१२७	दश. अ ९ उ ३
दशवैकालिकसूत्रके नवें अध्ययन के तीसरे उ० की पन्द्रह मूल गाथाएं	८५३	५	४७६	दश० अ० ९ उ० ३
दशवैकालिकसूत्रकेनवेंअ० के दूसरे उ० की २४ गाथाएं	९३३	६	२०१	दश० अ० ९ उ० २
दशवैकालिकसूत्रकेनवेंअ० के पहले उ० की १७ गाथाएं	८७७	५	३७७	दश० अ० ९ उ० १
दशवैकालिकसूत्र के नवें अध्ययन के पहले उद्देशे की सत्रह मूल गाथाएं	८७७	५	४८२	दश० अ० ९ उ० १
दशाश्रुतस्कंधदशासूत्र का संक्षिप्त विषय वर्णन	२०५	१	१८०	
दस अच्छेरे (आश्चर्य)	६८१	३	२७६	ठा १० उ ३ सू० ७७७, प्रव द्वा १३८ गा ८८५-८८९
दस अजीव परिणाम	७५०	३	४२९	ठा १० उ ३ सू ७१३, पन्न प १३ सू १८४-१८५
दस अधिपति अग्निकुमार के	७३५	३	४१८	भ श ३ उ ८ सू १६९
दस अधिपति असुर ,,	७३१	३	४१७	भ श ३ उ ८ सू १६९
दस अधिपति उदधि ,,	७३७	३	४१९	भ श ३ उ ८ सू १६९

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दस अधिपति दिक्कुमार के	७३८	३	४१९	भग. ३ उ८ सू १६९
दस अधिपति द्वीप ,,	७३६	३	४१९	भग ३ उ८ सू १६९
दस अधिपति नाग ,,	७३२	३	४१८	भग ३ उ.८ सू १६९
दस अधिपति वायु ,,	७३९	३	४१९	भ.श. ३ उ.८ सू १६९
दस अधिपति विद्युत् ,,	७३४	३	४१८	भग ३ उ ८ सू १६९
दस अधिपति सुपर्ण ,,	७३३	३	४१८	भग ३ उ ८ सू १६९
दस अधिपति स्तनित ,,	७४०	३	४२०	भग ३ उ ८ सू १६९
दस अनन्तक	७२०	३	४०३	ठा० १० उ० ३ सू. ७३१
दस अनुत्तर केवली के	६५५	३	२२३	ठा १० उ ३ सू ७६३
दस अवस्था	६७८	३	२६७	ठा १० उ ३ सू. ७७२
दस असंक्लेश	७१५	३	३८९	ठा १० उ ३ सू ७३९
दस अस्वाध्याय आन्तरिक्ष (आकाश सम्बन्धी)	६९०	३	३५६	ठा १० उ ३ सू ७१४, प्रव. द्वा २६८, व्यव. भाष्य उ ७
दस आनुपूर्वी	७१७	३	३९०	अनु सू ७१-११९
दस आशंसा प्रयोग	६६७	३	२५३	ठा. १० उ ३ सू ७५९
दस इन्द्र वैमानिक देवों के	७४१	३	४२०	ठा १० उ ३ सू ७६९
दस उपघात दोष	६६८	३	२५४	ठा० १० उ० ३ सू ७३८
दस औदारिक अस्वाध्याय	६९१	३	३५८	ठा १० उ ३ सू ७१४
दस कल्प वृक्ष	७५७	३	४४०	सम १०, ठा १० उ ३ सू. ७६६, प्रव द्वा. १७१ गा १०६७-७०
दस कल्प साधु के	६६२	३	२३४	पंचा १७ गा. ६-४०
दस कारण दीक्षा लेने के	६६४	३	२५१	ठा. १० उ० ३ सू० ७१२
दस कारण मान के	७०३	३	३७४	ठा. १० सू. ७१०, ठा ८ सू ६०६
दस कुरुक्षेत्र (महाविदेह के)	७५४	३	४३८	ठा १० उ. ३ सू ७६४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दस कुलकर आगामी उत्सर्पिणी के	७६७	३	४५०	ठा.१० उ ३ सू ७६७
दसकुलकरगतउत्सर्पिणीके	७६६	३	४४६	ठा १०उ ३ सू ७६७
* दस गणधर भगवान् पार्श्वनाथ के	५६५	३	३	ठा ८उ ३सु ६१७टी ,सम ८टी , प्रव द्वा १५गा ३३०,आव.ह गा. २६८-२६९,मश द्वा १११
दस गति	७२५	३	४१३	ठा १०उ ३ सू ७४५
दस गुण आलोचना देने योग्य साधु के	६७१	३	२५९	भ. श २५ उ ७ सु ७९९, ठा १० उ.३ सू ७३३
दस गुण आलोचना लेने योग्य साधु के	६७०	३	२५८	भ श. २५ उ ७ सु ७९९, ठा १०उ ३ सू.७३३
दस चक्रवर्ती ने दीक्षा ली	६८३	३	२९२	ठा १०उ ३ सू ७१८
दस चित्तसमाधि	६७४	३	२६२	दशा० द०५, सम १०
दस जीव परिणाम	७४९	३	४२६	पन्नप १३,ठा १० सु ७१३
दस जृम्भक देव	७४२	३	४२०	भश १४उ ८ सू ५३३
दस दान	७६८	३	४५०	ठा १०उ ३ सू ७४५
दस दिशाएं	७५३	३	४३७	ठा १० सू ७२०,भश १०उ १ सु ३९४,आचा श्र १उ.१सू.२
दस दृष्टान्त मनुष्यभव की दुर्लभता के	६८०	३	२७१	उत्त अ ३नि गा १६०,आव.ह नि गा ८३२पृ ३४०
दस दोष आलोचना के	६७२	३	२५९	भ श २५उ ७,ठा १०सु ७३३
दस दोष ग्रहणैषणा के	३६३	३	२४२	प्रव द्वा ६७गा ५६८, पि नि गा ५२०, पचा १३गा २६,ध अधि ३श्लो.२२टी पृ ४१

* पृष्ठ ३७ पर टिप्पणी देखो।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दस दोष मन के सामायिक में	७६४	३	४४७	शिक्षा
दस दोष वचन के ,,	७६५	३	४४८	शिक्षा
दस दोष वाद के	७२२	३	४०६	ठा १० उ ३ सू ७४३
दस द्रव्यानुयोग	७१८	३	३९१	ठा.१० उ ३ सू ७२७
दस नक्षत्र ज्ञानवर्धक	७६२	३	४४४	सम १०,ठा १० उ ३ सू ७८१
दस नाम आवश्यक के	६८७	३	३५०	विशे गा ८७२-७६,अनु.सू २८
दस नाम क्रोध कषाय के	७०२	३	३७४	सम ५२
दस नाम दृष्टिवाद के	६८८	३	३५१	ठा.१० उ.३ सू. ७४२
दस पइण्णा	६८९	३	३५३	द. प
दस परंपरा फल पर्युपासना के	७०८	३	३८२	ठा ३ उ ३ सू १९०
दस पुत्र	६७७	३	२६५	ठा १० उ ३ सू ७६२
दस प्रकार अद्धा पच्चक्खाण के	७०५	३	३७६	पंचा ५ गा ८-११,प्रवद्वा ४ गा २०१,आव.ह अ ६ पृ ८५१
दस प्रकार का असंवर	७११	३	३८६	ठा १० उ ३ सू ७०९
दस प्रकार का असत्य	७००	३	३७१	ठा १० सू ७४१,पन्न.प ११ सू. १६५,प्र अधि ३ श्लो ४१ टी १२..
दस प्रकार का नाम	७१९	३	३९५	अनु सू १३०
दस प्रकार का शस्त्र	६९६	३	३६४	ठा १० उ ३ सू ७४३
दस प्रकार का शुद्धवागनुयोग	६९७	३	३६५	ठा १० उ ३ सू ७४४
दस प्रकार का संवर	७१०	३	३८५	ठा १० उ ३ सू ७०९
दस प्रकार का सत्य	६९८	३	३६८	ठा १० सू ७४१,पन्न प.११ सू १६५,प्र.अधि ३ श्लो.४१ टी.१२..
दस प्रकार का सराग सम्यग्दर्शन	६९४	३	३६४	ठा.१० उ.३ सू.७५१,पन्न प.१ सू ३७
दस प्रकार की मिश्र (सत्या मृषा) भाषा	६९९	३	३७०	पन्न प ११ सू १६५,ठा.१० सू ७४१,प्र.अधि ३ श्लो.४१ टी.१२..

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दस प्रकार के धर्म	६६२	३	३६१	ठा १० उ ३ सू ७६०
दस प्रकार के नारकी, समय के अन्तर आदि की अपेक्षा	७४७	३	४२४	ठा १० उ ३ सू ७५७
दस प्रकार के शब्द	७१३	३	३८८	ठा १० उ ३ सू ७०५
दस प्रकार के सर्वजीव	७२६-२७	३	४१४-४१५	ठा १० उ ३ सू ७७१
दस प्रकार से संसार की समुद्र से उपमा	६७९	३	२६९	
[1] दस प्रतिसेवना	६६६	३	२५२	भ श २५ उ ७, ठा १० सू ७३३
दस प्रत्याख्यान	७०४	३	३७५	ठा १० उ ३ सू. ७४८, भ श ७ उ २ सू २७२
दस प्राण	७२४	३	४१३	ठा १ सू ४८ टी., प्रव द्वा. १७०
दस प्रायश्चित्त	६७३	३	२६०	भ श २५ उ ७, ठा १० सू ७३३
दस बल इन्द्रिय, ज्ञानादि के	६७५	३	२६३	ठा १० उ ३ सू ७४०
दस बातें छद्मस्थ के अगोचर	७१६	३	३८९	ठा १० सू ७५४, भ श ८ उ २
दस बोल पुण्यवान् के	६५६	३	२२४	उत्त अ ३ गा १७-१८
दस बोल सम्यक्त्वप्राप्ति के	६९३	३	३६२	उत्त अ. २८ गा. १६-२७
दस बोल सातावेदनीय के	७६१	३	४४३	भ श ७ उ ६ सू० २८६
दस बोलों का विच्छेद	६८२	३	२९२	विशे गा २५९३
दस ब्रह्मचर्य समाधि स्थान दृष्टान्त सहित	७०१	३	३७२	उत्त. अ १६
दस भवनपति	७३०	३	४१६	पन्न प १ सू ३८, ठा. १० उ ३ सू ७३६, भ श २ उ. ७ सू ११५, जी प्रति ३ उ १ सू ११५
दस भेद अरूपी अजीव के	७५१	३	४३४	पन्न प १ सू ३, जी प्रति १ सू ४

---

१ पाप या दोषों के सेवन से होने वाली संयम की विराधना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दस भेद कर्म के	७६०	३	४४१	आचा श्रु.२ उ १ गा.१८३-८८
दस भेद तृणवनस्पति के	७४५	३	४२२	ठा १० उ ३ सू ७७३
दस भेद दर्शनविनय के	७०६	३	३८४	भ.श २५ उ ७ सू ८०२
दस भेद देवों के	७२६	३	४१५	तत्त्वार्थ अध्या ४ सू.४
दस भेद संसार में आने वाले प्राणियों के	७२८	३	४१५	ठा १० उ ३ सू ७७१
दस महर्द्धिक देव	७४३	३	४२१	ठा १० उ ३ सू ७६४
दस महानदी मेरु से उत्तर में	७५९	३	४४१	ठा.१० उ ३ सू ७१७
दस महानदी मेरु से दक्षिण में	७५८	३	४४०	ठा १० उ ३ सू ७१७
दस मिथ्यात्व	६९५	३	३९४	ठा १० उ० ३ सू. ७३४
दस मुण्ड	३६४-३६५	१	३७८-३७९	ठा ५ उ ३ सू ४४३
दस मुण्ड	६५९	३	२३१	ठा.१० उ.३ सू ७४६
दस यति धर्म	३५०-३५१	१	३६४-३६६	ठा.५ उ १ सू ३९६, प्र अधि ३ श्लो ४६ टी पृ १२७, प्रव द्वा ६६ गा ५५४
दस रानियाँ श्रेणिक की	६८६	३	३३३	अन्त व ८
दस रुचि	६९३	३	३६२	उत्त अ २८ गा १६-२७
दस लक्षण श्रावक के	६८४	३	२६२	भ श २ उ ५ सू १०७
दस लब्धि ज्ञानादि की	६५८	३	२३०	भ.श ८ उ २ सू ३२०
दस लोकस्थिति	७५२	३	४३६	ठा १० उ.३ सू ७०४
दस वक्खार पर्वत सीता महानदी के दोनों तटों पर	७५५	३	४३९	ठा १० उ.३ सू ७६८
दस वक्खार पर्वत सीतोदा महानदी के दोनों तटों पर	७५६	३	४३९	ठा १० उ ३ सू ७६८

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दस विगय	७०६	३	३८२	आव ह अ ६ गा १६०१ पृ ८५३
दस विमान वैमानिक इन्द्रों के	७४४	३	४२१	ठा १० उ० ३ सू ७६६
दस विशेषण स्थण्डिल के	६७६	३	२६४	उत्त. अ २४ गा १६-१८
दस विशेष दोष	७२३	३	४१०	ठा १० उ ३ सू ७४३
दस वेदना नारकी जीवों के	७४८	३	४२५	ठा १० उ ३ सू ७५३
दस वेयावच्च (वैयावृत्त्य)	७०७	३	३८२	भ श २५ उ ७ सू ८०२
दस श्रमण धर्म	६६१	३	२३३	नव गा २३, सम १०, शा भा १ प्रक ८ संवरभावना
दस श्रावक आनन्द आदि	६८५	३	२६४	उपा अ. १-१०
दस संक्लेश	७१४	३	३८८	ठा १० उ ३ सू ७३६
दस संज्ञा	७१२	३	३८६	ठा १० सू ७५२, भ श ७ उ ८
दस समाचारी	६६४	३	२४६	भ श २५ उ ७ सू ८०१, ठा १० उ ३ सू ७४६, उत्त अ. २६ गा २-७, प्रव द्वा १०१ गा. ७६०
दस सुख	७६६	३	४५३	ठा १० उ ३ सू ७३७
दस सूक्ष्म	७४६	३	४२३	ठा १० उ ३ सू ७१६
दस स्थविर	६६०	३	२३२	ठा १० उ ३ सू ७६१
दस स्थान भद्र कर्म बाँधने के	७६३	३	४४४	ठा. १० उ ३ सू ७५८
दस स्थानों का अनुभव नारकी जीवों के	५६०	२	३४०	भ श. १४ उ ५ सू ५१६,
दस स्वप्न भगवान् महावीर के	६५७	३	२२४	भ श १६ उ ६, ठा १० सू ७५०
दाता ४० दायक दोष दूषित	६६३	३	२४३	पिनि गा ५२०
दान के चार प्रकार	१६७	१	१५६	ध र गा ७० टी
दान के विषय में ७ गाथाएं	६६४	७	२००	
दान दस	७६८	३	४५०	ठा १० उ ३ सू ७४५

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दान धर्म	१८६	१	१५४	सूय.अ ६ गा २३,प्रश्ना ३गा.६
दानसाधुयोग्य के १४ भेद	८३२	५	२६	शिक्षा , आव ह पृ ८४६
दानान्तराय	३८८	१	४१०	कर्म०भा.१गा ५२,पन्न प.२३
दायक दोष (ग्रहणैषणा का छठा दोष)	६६३	३	२४३	प्रव द्वा ६७ गा ५६८,पि नि. गा ५२०,ध अधि ३श्लो २२ टी पृ.४१,पञ्चा १३ गा.२६
दायक दोष के ४० प्रकार	६६३	३	२४३	पि.नि गा.५२०
दायकदोषदूषित४०दाता	६८८	७	१४६	पि.नि गा ५२०
दावद्रव वृक्ष का दृष्टान्त	६००	५	४५७	ज्ञा अ ११
दिक्कुमारों के दस अधिपति	७३८	३	४१६	भ श.३ उ ८ सू १६६
दिगाचार्य	३४१	१	३५२	ध अधि ३श्लो.४६टी पृ १२८
दिट्ठिया क्रिया	२६४	१	२७६	ठा २ उ १ सू ६०, ठा ५ सू ४१६
दिशाएं दस	७५३	३	४३७	ठा १० सू ७२०,भ श १० उ १ सू ३६४,आचा.अ १ उ १ सू २
दिशा परिमाण व्रत	१२८क	१	६१	आव ह अ ६ पृ ८२६
दिशा परिमाण व्रत के पांच अतिचार	३०६	१	३०३	उपा अ १ सू.७
दिशा परिमाण व्रत निश्चय और व्यवहार से	७६४	४	२८२	आगम
दिशा मोह आगार	४८३	२	६८	आव ह.अ ६पृ ८५२,प्रव द्वा ४
दीक्षा के अयोग्य १८पुरुष	८६१	५	४०६	प्रव द्वा १०७-८गा ७६०-२,ध अधि ३ श्लो.७८टी ३
दीक्षा के अयोग्य बीस स्त्रियाँ	८६१	५	४०६	
दीक्षा के दस कारण	६६५	३	२५१	ठा १० उ ३ सू ७१२
दीक्षा देने वाले गुरु के पन्द्रह गुण	८५१	५	१२४	ध अधि.३ श्लो.८० टी.पृ.

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दीक्षा पर्याय और सूत्र पढ़ाने की मर्यादा	५१४	२	२४३	ठा ५ उ १ सू ३९९, ठा ७ सू ५५४, व्यवभा उ १० सू. २१-३५
दीक्षार्थी के सोलह गुण	८६४	५	१५८	ध अधि ३ श्लो ७३-७८ पृ १
दीक्षा लेनेवाले दस चक्रवर्ती	६८३	३	२६२	ठा १० उ ३ सू ७१८
दीपक संकेत पच्चक्खाण	५८९	३	४३	आव ह अ ६ नि गा १५७८, प्रव द्वा ४ गा २००
दीपक समकित	८०	१	५८	विशे गा २६७५, द्रव्यलो स ३ श्लो. ६७०, ध अधि २ श्लो २२ टी पृ ३६, श्रा प्र गा ५०
दीर्घ आयु सुख	७६९	३	४५३	ठा १० उ ३ सू ७३७
दीर्घ संस्थान	५५२	२	२९३	ठा १ सू ४७, ठा ७ उ ३ सू ५४८
दीर्घायु-अशुभ के ३ कारण	१०६	१	७४	भ. श ५ उ ६ सू २०४, ठा ३ उ १ सू १२५
दीर्घायु शुभ के तीन कारण	१०७	१	७५	(उपर्युक्त)
दुःखगर्भित वैराग्य	९०	१	६५	क.भा २ श्लो. ११८-११९
दुःखविपाक की दस कथा	६९०	६	२९	वि अ. १-१०
दुःखशय्या के चार कारण	२५५	१	२४०	ठा० ४ उ. ३ सू ३२५
१ दुःशीलता	४०२	१	४२९	उत्त अ ३६ गा २६१, प्रव. द्वा ७३
दुःसंज्ञाप्य तीन	७५	१	५४	ठा ३ उ ४ सू २०३
२ दुद्दुपडिच्छियं	८२४	५	१५	आव ह अ ४ पृ ७३०
दुर्गन्धा का उदाहरण जुगुप्सा दोष के लिये	८२१	४	४५८	नवपद गा १८ टी. सम्यक्त्वाधिकार
दुर्लभ ग्यारह	७७२	४	१७	आव ह नि गा ८३१ पृ. ३४१
दुर्लभ बोधि	८	१	७	ठा २ उ २ सू ७९

१ दुष्ट स्वभाव, कन्दर्पभावना का एक भेद।

२ पृष्ठ १४३ पर टिप्पणी देखो

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दुर्लभबोधि के पाँच कारण	२८६	१	२६६	ठा.५ उ २ सू ४२६
दुर्लभ बोल छः	४३६	२	४३	ठा ६ उ.३ सू ४८५
दुर्लभ मनुष्य भव के दस दृष्टान्त	६८०	३	२७१	उत्त अ ३ नि गा. १६०, आव ह नि गा ८३२ पृ ३४०
दुषमदुषमा आरा अवसर्पिणी का	४३०	२	३३	ज वक्ष.२ सू ३६, ठा ६ सू ४६२, भ श ७ उ ६ सू २८७-२८८
दुषमदुषमा आरा उत्स० का	४३१	२	३६	ज वक्ष २ सू ३७, ठा ६ सू ४६२
दुषमसुषमा आरा अव० का	४३०	२	३२	ज वक्ष.२ सू ३८, ठा.६ सू ४६२
दुषमसुषमा आरा उत्स० का	४३१	२	३७	ज वक्ष.२ सू ३७, ठा ६ सू ४६२
दुषमा आरा अवसर्पिणी का	४३०	२	३३	ज वक्ष २ सू ३५, ठा ६ सू ४६२
दुषमा आरा उत्सर्पिणी का	४३१	२	३६	ज वक्ष.२ सू ३७, ठा.६ सू ४६२
दुषमा काल जानने के स्थान	५३४	२	२६८	ठा.७ उ.३ सू.५५६
दुष्प्रत्याख्यान	५४	१	३१	भ श.७ उ २ सू २७१
दूती दोष (गवेषणैषणा का एक दोष)	८६६	५	१६४	प्रव गा ५६७, ध.अधि.३ श्लो. २२ पृ ४०, पि.नि गा. ४०८, पिं वि. गा. ५८, पंचा १३ गा. १८
[1]दूषणाभास (जात्युत्तर) चौवीस	९३६	६	२०६	प्र मी भाष्या १ आ. २ सू. २८, न्यायप्र, न्यायसू भाष्या. ५ आ १
दूषित दाता चालीस	९८८	७	१४६	पिं नि गा ५२०
[2] दृष्टलाभिक	३५४	१	३६६	ठा ५ उ १ सू ३९६
दृष्टान्त	३८०	१	३९७	रत्ना परि ३, न्याय दी. प्रका ३
दृष्टान्त इक्कीस पारिणामिकी बुद्धि के	९१५	६	७३-१२६	न सू २७ गा. ७१-७४, आव ह नि गा. ९४८-९५१

१ पृष्ठ १३२ पर टिप्पणी देखो ।

२ देखे हुए आहार की गवेषणा करने वाला अभिग्रहधारी साधु ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दृष्टान्त कमलामेला का भाव अननुयोग तथा अनुयोगपर	७८०	४	२५०	आव ह नि. गा १३४ पृ ९४, वृ पीठिका नि गा १७२
दृष्टान्त कुब्जा का क्षेत्र अननुयोग तथा अनुयोग पर	७८०	४	२३९	आव ह नि गा १३३ पृ ८८, वृ पीठिका नि गा. १७१
दृष्टान्त कोङ्कणदारक का भाव अननुयोग, अनुयोगपर	७८०	४	२४८	आव. ह नि गा. १३४ पृ ९२, वृ पीठिका नि गा. १७२
दृष्टान्त गाय, बछड़े का द्रव्य अननुयोग तथा अनुयोगपर	७८०	४	२३६	आव ह नि. गा. १३३ पृ ८८, वृ पीठिका नि गा १७१
दृष्टान्त ग्रामेयक का वचन अननुयोग तथा अनुयोगपर	७८०	४	२४२	आव ह नि गा १३३ पृ ८९, वृ पीठिका नि गा १७१
दृष्टान्त तेरह सम्यक्त्व के	८२१	४	४२२	नवपद द्वा ७ सम्यक्त्वाधिकार
दृष्टान्त दस मनुष्य भव की दुर्लभता के	६८०	३	२७१	उत्त अ ३ नि गा १६०, आव ह नि गा ८३२ पृ ३४०
दृष्टान्त नकुल का भाव अननुयोग तथा अनुयोग पर	७८०	४	२४९	आव.ह नि गा १३४ पृ ९३, वृ पीठिका नि.गा १७२
दृष्टान्त बधिरोल्लापक का वचन अननुयोग तथा अनुयोगपर	७८०	४	२४१	आव ह नि गा १३३ पृ.८९, वृ पीठिका नि गा १७१
दृष्टान्त बारह अननुयोग तथा अनुयोग पर	७८०	४	२३८	आव ह.नि गा. १३३, १३४, वृ पीठिका नि.गा १७१-१७२
दृष्टान्त १२ कम्मिया बुद्धि के	७९२	४	२७६	न सू. २७, आव ह नि गा ९४७
दृष्टान्त शम्ब के साहस का भाव अननुयोग अनुयोगपर	७८०	४	२५२	आव ह नि गा १३३ पृ ९४, वृ पीठिका नि.गा १७२
दृष्टान्त श्रावक भार्या का भाव अननुयोग तथा अनुयोगपर	७८०	४	२४५	आव ह नि गा १३४ पृ ९१, वृ पीठिका नि गा १७२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दृष्टान्त श्रेणिक के कोप का भावअननुयोगअनुयोग पर	७८०	४	२५३	आव.ह नि.गा.१३४ पृ.६४, बृ पीठिका नि गा.१७२
दृष्टान्त सत्ताईस औत्पत्तिकी बुद्धि के	६४६	६	२४२	नं.सू २७गा ६२-६५टी.,
दृष्टान्तसाप्तपदिकका भाव अननुयोग तथा अनुयोग पर	७८०	४	२४६	आव ह नि.गा.१३४ पृ ६१, बृ पीठिका नि.गा.१७२
दृष्टान्त स्वाध्याय का काल अननुयोग तथा अनुयोगपर	७८०	४	२४०	आव.ह.नि.गा १३३ पृ ८६, बृ पीठिका नि गा १७१
दृष्टिजा(दिट्ठिया) क्रिया	२९४	१	२७९	ठा.२सू.६०, ठा ५सू.४१६
दृष्टि नारकियों में	५६०	२	३३७	जी प्रति ३सू.८८
दृष्टिवाद के दस नाम	६८८	३	३५१	ठा.१०उ ३सू ७४२
१ दृष्टिसम्पन्नता	७६३	३	४४५	ठा.१० उ.३सू ७५८
देव	६३	१	४४	यो प्रका २श्लो ४-११
देव आयु बन्ध के ४ कारण	१३५	१	१००	ठा ४उ.४सू ३७३
देवताओंकीपहचानकेबोल	१३७	१	१०१	ठा.४उ.२ सू.२८२ टी.
देवताओं के चार भेद	१३६	१	१०१	उत्त अ.३६गा २०२
देवता की ऋद्धि के तीन भेद	१००	१	७०	ठा.३उ ४सू २१४
देवता की तीन अभिलाषाएं	१११	१	८०	ठा. ३ उ. ३ सू १७८
देवता के एकसौ अट्ठाणु भेद	६३३	३	१७९	पन्न प.१सू.३८,उत्त अ ३६गा. २०३-२१४,जी. प्रति ३
देवता के च्यवन ज्ञान के तीन बोल	११३	१	८१	ठा.३उ ३सू १७९
देवता के दो भेद	५७	१	४०	तत्वार्थ अध्या ४ सू १७
देवता के पश्चात्ताप के ३ बोल	११२	१	८०	ठा.३उ.३सू १७८

१ सम्यग्दृष्टि होना, शुभकर्म बांधने का एक कारण।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
देवता के मनुष्यलोक में आने के चार कारण	१३९	१	१०२	ठा ४ उ ३ सू ३२३
देवता के मनुष्य लोक में आने के तीन कारण	११०	१	७९	ठा ३ उ ३ सू. १७७
देवता कौनसी भाषा बोलते हैं?	९८३	७	१२५	भ श ५ उ ४ सू १९१, सम ३४, पन्न प १ सू ३७
देवता चार कारणों से मनुष्य लोक में नहीं आ सकता	१३८	१	१०१	ठा ४ उ ३ सू ३२३
देवदत्ता रानी की कथा	९१०	६	४७	वि अ ९
देव पाँच	४२२	१	४४५	ठा ५ सू ४०१ भ श १२ उ ९
देवलोक कहाँ स्थित हैं?	८०८	४	३१८	पन्न प २ सू ५१, जी प्रति ३ सू २०७
देवलोक की गति आगति	८०८	४	३२८	जी प्रति ३ सू २१४, पन्न प. ६
देवलोक की पर्षदाएं, पारिपदों की संख्या और स्थिति	८०८	४	३२५	जी प्रति ३ सू २०८
देवलोक के देवों का उच्छ्वास	८०८	४	३२९	जी. प्रति. ३ सू २१५
देवलोक के देवों का वर्ण और स्पर्श	८०८	४	३२९	जी प्रति ३ सू २१५
देवलोक के देवों का संस्थान	८०८	४	३२९	जी प्रति ३ सू २१४
देवलोक के देवों का संहनन	८०८	४	३२९	जी प्रति ३ सू २१४
देव० के देवों की अवगाहना	८०८	४	३२९	जी प्रति. ३ सू २१३
देवलोक के देवों की वेशभूषा	८०८	४	३३१	जी. प्रति. ३ सू २१८
देवलोक के देवों के दस भेद	८०८	४	३३३	तत्त्वार्थ अध्या ४ सू. ४
देवलोक के देवों के मुकुट चिह्न	८०८	४	३१९	पन्न प. २ सू ५१
देव० के विमानों का आधार	८०८	४	३२७	जी प्रति ३ सू २०९

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
देव० के विमानों का विस्तार	८०८	४	३२७	जी.प्रति ३ सू.२१३
देव० के विमानों का संस्थान	८०८	४	३२७	जी.प्रति ३ सू.२१२
देवलोक के विमानों की मोटाई और ऊँचाई	८०८	४	३२७	जी.प्रति ३ सू.२१०-२११
देवलोक के विमानों के वर्ण, गन्ध और स्पर्श	८०८	४	३२७	जी.प्रति ३ सू.२१३
देवलोक बारह	८०८	४	३१८	पन्न.प.२,४,६, जी.प्रति ३ सू.२०७-२१३, तत्त्वार्थ.अध्या ४
देवलोक बारह की स्थिति	८०८	४	३२४	पन्न.प.४ सू.९९
देवलोक बारह के दस इन्द्र	७४१	३	४२०	ठा.१० उ.३ सू.७६६
देवलोक बारह के विमान	८०८	४	३२३	पन्न.प.२ सू.५३
देवलोक १२ में स्थिति आदि ७ बातें उत्तरोत्तर अधिक हैं	८०८	४	३३४	तत्त्वार्थ अध्या.४ सू.२०
देवलोक में अनुभाव	८०८	४	३३६	तत्त्वार्थ.अध्या ४ सू.२२
देवलोक में अवधिज्ञान	८०८	४	३३०	जी.प्रति ३ सू.२१५
देवलोक में आहार	८०८	४	३३५	तत्त्वार्थ अध्या.४ सू.२२
देवलोक में उच्छ्वास	८०८	४	३३५	तत्त्वार्थ.अध्या.४ सू.२२
देवलोक में उत्पन्न होने वाले जीव	८४८	५	११५	भग.१ उ.२ सू.२५
देवलोक में उपपात	८०८	४	३३६	तत्त्वार्थ अध्या ४ सू.२२
देवलोक में उपपात विरह और उद्वर्तना विरह	८०८	४	३३२	पन्न.प.६, प्रव.द्वा.१९९-२०० गा.१०६७ से १०७८
देवलोक में क्षुधा पिपासा	८०८	४	३३१	जी.प्रति ३ सू.२१७
देवलोक में गति आगति	८०८	४	३३२	पन्न.प.६, प्रव.द्वा.१९९-२००
देवलोक में चार बातें उत्तरोत्तर हीन होती हैं	८०८	४	३३५	तत्त्वार्थ.अध्या ४ सू.२२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
देवलोक में ज्ञान	८०८	४	३३०	जी प्रति ३ सू २१६
देवलोक में दृष्टि	८०८	४	३३०	जी प्रति ३ सू २१५
देवलोकमेंदेवोत्पत्तिसंख्या	८०८	४	३२८	जी प्रति ३ सू २१३
देवलोक में प्रवीचार	८०८	४	३३३	तत्त्वार्थ अध्या ४ सू ८,९.
देवलोक में लेश्या	८०८	४	३३०	जी प्रति ३ सू २१५
देवलोक में विकुर्वणा	८०८	४	३३१	जी प्रति ३ सू २१७
देवलोक में वेदना	८०८	४	३३६	तत्त्वार्थ. अध्या ४, उव सू ३८
देवलोक में समुद्घात	८०८	४	३३१	जी.प्रति ३ सू २१७
देवलोक मेंसुख और ऋद्धि	८०८	४	३३१	जी प्रति ३ सू २१७
देव वैमानिक के २६ भेद	९४४	६	२२७	पन्न प. १सू ३८,उत्त अ ३६गा २०७-१४,भ श ८उ.१सू ३१०
देवसम्बन्धी उपसर्ग चार	२४०	१	२१९	ठा ४उ ४सू ३६१, सूय अ ३ उ १नि गा ४८टी
१ देवाधिदेव	४२२	१	४४६	ठा ५उ १सू ४०१,भ श १२ उ.९ सू.४६२
देवाभियोग आगार	४५५	२	५९	उपा अ.१सू ८,आव ह.अ ६पृ ८१०,ध अधि २श्लो २२पृ ४१
देवार्य-भ०महावीरकानाम	७७०	४	१०	जैनविद्या वोल्यूम१ नं० १
देविंदथव पइण्णा	६८९	३	३५५	द प.
देवी(पुष्पवती)कीपारिणामिकी बुद्धि की कथा	९१५	६	८०	न सू २७गा ७२, आव ह नि. गा.९४९
देवेन्द्रावग्रह	३३४	१	३४४	भ श १६उ २सू ५६७,प्रव द्वा ८५ गा.६८१,आचा.श्रु २चू १ अ ७उ.२ सू.१६२

१ देवों से भी बढ़कर अतिशय वाले,अतएव उनकेभी आराध्य,केवलज्ञान केवल-दर्शन के धारक अरिहन्त भगवान् देवाधिदेव कहलाते है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
देवों की पाँच परिचारणा	३६८	१	४२२	पन्न प ३४,ठा ५उ १सू ४०२टी.
देवों के इन्द्र सामानिक आदि दस भेद	७२६	३	४१५	तत्वार्थ.अध्या.४ सू.४
देवों के विषय में गणधर मौर्य स्वामी का शंका समाधान	७७५	४	५०	विशे.गा १८६४-१८८४
देश अवसन्न	३४७	१	३५६	आव ह.अ ३ नि गा ११०७, प्रव.द्वा २ गा १०३-१२३
देशकथा चार	१५१	१	१०६	ठा ४उ.२ सू.२८२
देशकथा से होनेवाली हानि	१५१	१	११०	ठा ४ उ २ सू २८२ टी
देश बन्ध	५२	१	३०	कर्म भा १ गा.३५ व्याख्या
देशविरत गुणस्थान	८४७	५	७५	कर्म.भा.२ गा २
देश विरति सामायिक	१६०	१	१४४	विशे गा.२६७३-२६७७
देशविस्तार अनन्तक	४१८	१	४४२	ठा ५ उ.३ सू ४६२
देशावकाशिक व्रत	१८६	१	१४०	पंचा १गा २७,आव ह अ ६
देशावकाशिक व्रत के पाँच अतिचार	३१०	१	३१०	उपा.अ.१सू.५,आव.ह अ.६पृ. ८३४,ध्र अधि २ श्लो.५५पृ ११८
देशावकाशिक व्रत निश्चय और व्यवहार से	७६४	४	२८४	आगम.
दो उपयोग	११	१	१०	पन्न प २६ सू ३१२
दो नियम-उत्सर्ग,अपवाद	४०	१	२५	बृ गा.३१५,स्या.का ११टी
दो पोरिसी के सात आगार	५१६	२	२४६	आव ह.अ.६पृ ८५०,प्रव.द्वा ४
दो प्रकार का अवधिज्ञान	१३	१	११	ठा २उ १ सू ७१
दो प्रकार का मनःपर्ययज्ञान	१४	१	१२	ठा २उ १ सू ७१
दो प्रकार का वस्तु का स्वरूप सामान्य और विशेष	४१	१	२६	स्या.का.४,रत्ना प.५ सू १

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दो प्रकार जीव के	७ख	१	४	ठा २ सू १०१, तत्त्वार्थ अध्या. २
दो प्रकार ज्ञान के प्रमाण, नय	३७	१	२३	रत्ना परि १, ७
दो प्रकार प्रवचन माता के	२२	१	१६	उत्त. अ २४
दो भेद अधिकरण के	५०	१	२९	तत्त्वार्थ अध्या ६ सू. ७
दो भेद अवग्रह के	५८	१	४०	न सू २८, कर्म भा. १ गा ४, ५
दो भेद आकाश के	३४	१	२२	ठा. २ उ. १ सू ७४
दो भेद आधार और आधेय	४८	१	२८	विशे गा. १४०९
दो भेद आयु के	३०	१	२१	तत्त्वार्थ. अध्या २ सू ५२, भ. श. २० उ १ सू ६८५
दो भेद-आरंभ और परिग्रह	४९	१	२९	ठा. २ उ १ सू ६४
दो भेद-आविर्भाव, तिरोभाव	४४	१	२७	न्याय को
दो भेद इन्द्रिय के	२३	१	१७	पन्न. प. १५ सू. १९१ टी, तत्त्वार्थ. अध्या. २ सू १६
दो भेद ऊनोदरी के	२१	१	१६	भ. श. २५ उ ७ सू ८०२
दो भेद कर्म के दो प्रकार से	२७	१	१८	कर्म. भा १ गा १ व्याख्या, पृष्ठ ३०, कम्म. गा १ पृ. ६, वि अ. ३ सू २० टी
दो भेद कारण के	३५	१	२३	विशे गा २०९९
दो भेद-कार्य और कारण	४३	१	२७	न्याय को
दो भेद काल के	३२	१	२३	ठा २ उ ४ सू ९९
दो भेद कालचक्र के	३३	१	२२	ठा २ उ १ सू ७४
दो भेद गुण और पर्याय	४७	१	२८	उत्त अ २८ गा ६
दो भेद गुण के दो प्रकार से	५५	१	३२	सूय. अ १४ नि गा १३९, पचा ५ गा २, द्रव्यत अध्या १२ श्लो ८
दो भेद चारित्रधर्म के	२०	१	१५	ठा २ उ १ सू ७२
दो भेद चारित्रमोहनीय के	२९	१	२०	पन्न प. १४ सू १८९ टी, कर्म भा. १

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दो भेद ज्ञान के	१२	१	१०	नं सू २, ठा २ उ. १ सू. ७१
दो भेद दण्ड के	३६	१	२३	ठा २ उ १ सू ६९
दो भेद देवता के	५७	१	४०	तत्त्वार्थ. अध्या. ४ सू. १७
दो भेद-द्रव्य और गुण	४६	१	२८	उत्त अ. २८ गा ६, तत्त्वार्थ अध्या ५
दो भेद द्रव्य के	६०	१	४२	तत्त्वार्थ अध्या ५ सू ३,४
दो भेद द्रव्येन्द्रिय के	२४	१	१७	तत्त्वार्थ अध्या. २ सू १७
दो भेद धर्म के	१८	१	१४	दश. अ १ गा. १ टी, ठा. २ उ. १ सू ७२, ध. अधि. १ श्लो. ३ टी पृ १
दो भेद नय के	१७	१	१४	रत्ना परि ७ सू ५
दो भेद निगोद के	९	१	८	आगम.
दो भेद परोक्ष ज्ञान के	१५	१	१२	पन्न. प २९ सू ३१२, ठा २ उ १ सू ७१, भ. श. ८ उ. २ सू ३१८, नं सू १, कर्म भा १ गा ४
दो भेद प्रत्याख्यान के	५४	१	३१	भ श ७ उ २ सू २७१
दो भेद प्रवृत्ति और निवृत्ति	४५	१	२८	
दो भेद बन्ध के	५२	१	३०	कर्म भा. १ गा. ३५ व्याख्या
दो भेद बन्धन के	२६	१	१८	ठा २ उ ४ सू ९६
दो भेद भावेन्द्रिय के	२५	१	१७	तत्त्वार्थ अध्या. २ सू १८
दो भेद मरण के	५३	१	३१	उत्त अ ५ गा २
दो भेद मोहनीय कर्म के	२८	१	१९	ठा. २ सू. १०५, कर्म. भा १ गा १३
दो भेद रूपी के	६१	१	४२	भ श १२ उ ५ सू ४५०
दो भेद लक्षण के	६२	१	४२	न्यायदी प्रका. १
दो भेद वेदनीय कर्म के	५१	१	३०	पन्न प २३, कर्म. भा १ गा. १२
दो भेद श्रुतज्ञान के	१६	१	१३	नं सू ४४, ठा. २ उ १ सू ७१
दो भेद श्रुतधर्म के	१९	१	१५	ठा २ उ १ सू ७२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दो भेद श्रेणी के	५९	१	३३	कर्म भा २ गा २, द्रव्यलो स ३ श्लो ११६६-१२३४, विशे.गा १२८४, आव म गा ११६-१२३
दो भेद संसारी जीव के नौ प्रकार से	८	१	४	ठा.२ सू ७३, ७६, १०१, भ श.१३ उ १ सू ४७० टी, आ प्र गा ६६-६७, आतुर गा ४२-४३
दो भेद सम्यक्त्व के चार प्रकार से	१०	१	८	प्रव द्वा १४९ गा ९४२ टी, कर्म भा १ गा १५, ठा २ सू ७०, पन्न प० १ सू ३७, तत्त्वार्थ अध्या १ सू ३
दो भेद सामान्य के दो प्रकार से	५६	१	४१	रत्ना परि ७ सू १५, १६, रत्ना परि ५ सू ३-५
दो भेद स्थिति के	३१	१	२१	ठा २ उ. ३ सू ८५
दो भेद-हेतु और साध्य	४२	१	२७	रत्ना परि ३ सू ११, १४
दो राशि	७(क)	१	४	सम १४६
दो विवक्षा-मुख्य और गौण	३८	१	२४	तत्त्वार्थ अध्या ५ सू ३१
दोष	७२३	३	४११	ठा. १० उ ३ सू ७४३
दोष अठारह दो प्रकार से जो अरिहन्त देव में नहीं होते	८८७	५	३९७	प्रव द्वा ४१ गा ४५१-४५३, स श द्वा ९६ गा १९१-१९२,
दोष अठारह पौषध के	८९४	५	४१०	शिक्षा
दोष आठ अनेकान्तवाद पर	५९४	३	१०२	प्र मी अध्या १ आ १ सू. ३३
दोष आठ चित्त के	६०३	३	१२०	क भा २ श्लो. १९०-१९१
दोष आठ साधु को वर्जनीय	५८३	३	३८	उत्त अ २४ गा ९-१०
दोष उन्नीस कायोत्सर्ग के	८९९	५	४२५	आव ह अ ५ गा १५४६-४७, प्रव. द्वा ५ गा २४७, यो प्रका ३ पृ. २५०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दोष चार	२४४	१	२२१	पिं नि गा. १८२, ध अधि ३ श्लो. ५३ टी. पृ १३९
दोष दस आलोचना के	६७२	३	२५९	भ श २५ उ ७, ठा १० सू ७३३
दोष दस मन के सामायिक के	७६४	३	४४७	शिक्षा
दोष दस वचन के ,, ,,	७६५	३	४४८	शिक्षा.
दोष दस वाद के	७२२	३	४०६	ठा १० उ ३ सू ७४३
दोष निर्घातन विनय के भेद	२३३	१	२१६	दशा. द ४
दोष पाँच ग्रासैषणा (मांडला) के	३३०	१	३३९	उत्त. अ २४ गा १२, उत्त अ. २६ गा. ३२, ध अधि ३ श्लो २३ टी. पृ ५५, पि नि गा ६३५-६६८
दोष बत्तीस तथा गुण आठ सूत्र के	९६७	७	२३	अनु सू १५१ टी, विशे गा ९९९, बृ. पीठिका नि गा. २७८-२८७
दोष बत्तीस वन्दना के	९६९	७	३८	आव ह. अ ३ गा. १२०७-१२११ पृ ५४३ बृ. उ ३ गा ४४७१-८४, प्रव द्वा २ गा १५०-१७३
दोष बत्तीस सामायिक के	९७०	७	४३	शिक्षा
दोष बयालीस आहारादि के	९९०	७	१४९	पिं.नि गा. ६६९
दोष १२ काया के सामायिक के	७८९	४	२७३	शिक्षा.
दोष विशेष दस	७२३	३	४१०	ठा. १० उ ३ सू ७४३
दोष शबल इक्कीस	९१३	६	६८	दशा० द० २, सम० २१
दोष सैंतालीस आहार के	१०००	७	२६५	पिं० नि० गा० ६६९
दो स्वरूप वस्तु के-निश्चय और व्यवहार	३९	१	२५	विशे गा ३५८९, द्रव्य. त. अध्या० ८ श्लो० १
द्यूत (जूआ) प्रमाद	४४६	२	६०	ठा. ६ उ. ३ सू ५०२
द्रव्य	४६	१	२८	उत्त अ २८ गा. ६, तत्त्वार्थ. अध्या. ५ सू. ४० टी.

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
द्रव्य	२१०	१	१८९	न्यायप्र अध्या ७, रत्ना परि. ८
द्रव्य अनन्तक	४१७	१	४४१	ठा ५ उ ३ सू ४६२
द्रव्य ऊनोदरी	२१	१	१६	भ श. २५ उ ७ सू ८०२
द्रव्य और भावमन का क्या स्वरूप है? क्या वे एक दूसरे के बिना भी होते है?	९८३	७	१२२	पन्न प १५ सू २००, भ श १३ उ १ सू ४७२ टी, लोक स ३ श्लो० ५७०
द्रव्य कर्म	७६०	३	४४१	आचा अ २ उ १ नि गा १८३
द्रव्य के दो भेद	६०	१	४२	तत्त्वार्थ. अध्या ५ सू ३, ४
द्रव्य के सात लक्षण	५२७	२	२६३	विशे गा २८
द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव-इनमें कौन किससे सूक्ष्म है?	९८३	७	१२४	आव ह नि गा ३६-३७ पृ ३१
द्रव्य छह	४२४	२	३	आगम., उत्त अ ३६
द्रव्यत्व गुण	४२५	२	१६	आगम, द्रव्य त अध्या ११ श्लो २
द्रव्य नय और भाव नय	५६२	२	४१९	न्यायप्र अध्या ५
द्रव्य निक्षेप	२०९	१	१८७	अनु सू १५०, न्यायप्र अध्या. ६
द्रव्य पुद्गल परावर्तन सूक्ष्म और बादर का स्वरूप	६१८	३	१३६	कर्म भा ५ गा. ८६-८८
द्रव्य प्रतिक्रमण	४७९	२	९२	आव ह. अ ४
द्रव्य प्रत्युपेक्षणा	४५६	२	६०	ठा ६ उ ३ सू ५०२
द्रव्य लेश्या का स्वरूप तथा उसके सम्बन्ध में तीन मत	४७१	२	७१	भ.श १३ उ २, उत्त अ ३४, पन्न प १७ उ ४ सू २२५ टी, कर्म भा ४ गा. १२, आव ह अ ४ पृ ६४४ द्रव्यलो स. ३ श्लो. २८४-३८२
द्रव्य सम्यक्त्व	१०	१	८	प्रव द्वा १४९ गा ९४२ टी.

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
द्रव्य हिंसा में हिंसा का लक्षण नहीं घटता फिर वह हिंसा क्यों कही गई?	९८३	७	१२१	भग. श.१ उ.३ सू.३७टी.
द्रव्यात्मा	५९३	३	९६	भग. श.१२ उ.१० सू.४६७
द्रव्यानुपूर्वी	७१७	३	३९१	अनु. सू.७१
द्रव्यानुपूर्वी के तीन भेद	११६	१	८४	अनु. सू.९६-९८ टी. पृ.७२
द्रव्यानुयोग	२११	१	१९०	दश० नि० गा.३ पृ.३
द्रव्यानुयोग	५२६	२	२६३	विशे. गा.१३८४-१३८२
द्रव्यानुयोग	७१८	३	३९२	ठा.१० उ.३ सू.७२७
द्रव्यानुयोग दस	७१८	३	३९१	ठा.१० उ.३ सू.७२७
द्रव्यार्थिक नय	१७	१	१४	रत्ना. परि.७ सू.५
द्रव्यार्थिक नय के दस भेद	५६२	२	४२०	द्रव्य त. अध्या.५, आगम.
द्रव्यार्थिक नय के मतान्तर से तीन और चार भेद	५६२	२	४१२	नय र.
द्रव्यार्य	७८५	४	२६६	बृ. उ.१ नि. गा.३२६३
द्रव्यावश्यक के विशेषण	८७२	५	१७६	अनु. सू.१३, विशे. गा.८५३-८७
द्रव्येन्द्रिय	२३	१	१७	पन्न. प.१५ सू.१९१टी., तत्त्वार्थ भाष्य २ सू.१७
द्रव्येन्द्रिय के दो भेद	२४	१	१७	तत्त्वार्थ भाष्य. २ सू.१७
द्रव्यों का परिणाम	४२४	२	१५	आगम
द्रव्यों का पारस्परिक संबंध	४२४	२	१४	आगम.
द्रव्यों का स्व द्रव्य क्षेत्र काल भाव की अपेक्षा वर्णन	४२४	२	१२	आगम
द्रव्यों की अर्थक्रिया	४२५	२	१८	आगम

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
द्रव्यों की संख्या	४२५	२	१९	आगम.
द्रव्यों के गुण पर्यायों की नित्यानित्यता	४२४	२	७	आगम.
द्रव्यों के चार चार गुण	४२४	२	४	आगम.
द्रव्यों के चार चार पर्याय	४२४	२	४	आगम.
द्रव्यों में आठ पक्ष	४२४	२	७	आगम.
द्रव्यों में गुण पर्यायआदि की एकता और अनेकता	४२४	२	७	आगम.
द्रव्यों में गुण पर्यायों की वक्तव्यता अवक्तव्यता	४२४	२	१०	आगम.
द्रव्यों में नित्य अनित्य आदि आठ पक्ष	४२४	२	७	आगम.
द्रव्यों में नित्य अनित्य पक्ष की चौभंगी	४२४	२	११	आगम.
द्रव्यों में परस्पर समानता और भिन्नता	४२४	२	५	आगम
द्रव्यों में सत् असत् पक्ष	४२४	२	९	आगम
द्रुमपत्रक अ० की ३७ गाथा	९८४	७	१३३	उत्त अ १०
द्रौपदी	८७५	५	२७५	ज्ञा अ. १६, त्रि ष पर्व ८
द्वार १८ छोटी गतागत के	८८८	५	३९८	पन्न प ६ के आधार से
द्वार बीस परिहार विशुद्धि चारित्र के	९०५	६	१६	पन्न प १ सू. ३७ टी
द्वार सत्रह शरीर के	८८१	५	३८५	पन्न प २१
द्वितीय सप्तरात्रिदिवस नामक नवीं भिक्खुपडिमा	७९५	४	२९०	सम १२, दशा. द ७, भ श २ उ. १ सू ९३ टी.

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
द्विधा अनन्तक	४१८	१	४४२	ठा. ५उ ३सू ४६२
द्विमासिकी भिक्खुपडिमा	७९५	४	२८९	सम १२, दशा द ७,भ.श २ उ १ सू ९३टी
¹ द्विष्ट दुःसंज्ञाप्य	७५	१	५४	ठा ३ उ.४सू.२०३
द्वीपकुमारों के दस अधिपति	७३६	३	४१९	भग ३ उ ८ सू १६९
द्वेष निःसृत असत्य	७००	३	३७२	ठा १०सू ७४१,पन्न प ११ सू १६५,ध अधि ३श्लो ४१पृ १२२
द्वेष प्रत्यया क्रिया	२९६	१	२८२	ठा २उ.१सू ६०, ठा ५उ २सू ४१९, आव ह.अ ४ पृ ६१८
द्वेष बन्धन	२६	१	१८	ठा २उ ४ सू ९४-९६
द्वैक्रियनामक पाँचवाँ निह्नव	५६१	२	३६६	विशे गा २४२४-२४५०

ध

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
धनदत्त की पारिणामिकी बुद्धि की कथा	९१५	६	८३	न सू २७गा ७२,ना अ १८, आव ह. गा.९४९
धनपति कुमार की कथा	९१०	६	५९	वि.अ.२६
धनसार्थवाह की कथा सम्यक्त्व प्राप्ति पर	८२१	४	४४६	नवपद गा १२सम्यक्त्वाधिकार
धनुष के जीवों की तरह क्या ९८३ पात्रादि के जीवों को भी जीव-रक्षा कारणक पुण्यबन्ध होता है?	९८३	७	१२८	भ श.५ उ ६ सू.२०७टी.
धन्ना कुमार की कथा	७७६	४	२०४	अनुत्त ३ अ. १
धन्नासार्थवाह और विजय चोर की कथा	९००	५	४३४	ज्ञा अ.२

१ नम्र या व्याख्याता के प्रति द्वेष होने से उपदेश को अंगीकार न करनेवाला जीव।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
धर्म	६३	१	४४	यो प्रका २श्लो ११,ध अधि २ श्लो २१-२२टी.पृ ३१
धर्म कथा	६७	१	६६	ठा ३उ.३ सू १८६
धर्म कथा	३८१	१	३६८	ठा ५ उ.३ सू ४६५
धर्मकथा की व्याख्या, भेद	१५३	१	११२	ठा ४ उ २ सू.२८२
धर्मकथानुयोग	२११	१	१६०	दश० नि गा ३ पृ ३
धर्म की व्याख्या और उसके भेद	१८	१	१४	दश अ १गा.१टी ,ठा२उ १सू. ७२,ध अधि १श्लो ३ टी पृ १
धर्म के चार प्रकार	१९६	१	१५४	स श द्वा १४१ गा २६६पृ ७०
धर्म के तीन भेद	७६	१	५४	ठा ३सू १८८,ठा ३सू २१७
धर्म के बाईस विशेषण	६१६	६	१५६	ध अधि ३श्लो २७टी पृ ६१
धर्म के बारह विशेषण	८०४	४	३०६	शा भा २प्रक १०धर्मभावना.
धर्म दस	६६२	३	३६१	ठा १०उ ३ सू ७६०
धर्मदान	७६८	३	४५२	ठा १०उ ३ सू.७४५
धर्मदेव	४२२	१	४४५	ठा ५उ १सू ४०१,भ श.१२उ ६
धर्म द्रव्य	४२४	२	३	आगम ,उत्त.अ ३६ गा ५
धर्मध्यान	२१५	१	१६५	सम ४,ठा ४उ १सू २४७,दश. अ १नि गा ४८टी ,आव,ह अ.४ ध्यानशतक गा ६८
धर्मध्यान की चार भावनाएं	२२३	१	२०७	ठा ४ सू २४७, भ श २५उ ७
धर्मध्यान के चार आलंबन	२२२	१	२०६	ठा ४उ १ सू २४७
धर्मध्यान के चार प्रकार	२२०	१	२०१	ठा ४उ १ सू २४७
धर्मध्यान के चार भेद	२२४	१	२०८	ज्ञान प्रक ३७-४०,यो प्रका ७-१०,क भा २श्लो २०७-२०६
धर्मध्यान के चार लिंग	२२१	१	२०५	ठा ४सू २४७, भ श २५उ ७ सू ८०३,आव ह,अ ४पृ ६०४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
धर्म बोधि आदि ग्यारह बोलों की प्राप्ति	४६	१	२६	ठा २उ.१ सू ६४-६५
धर्म भावना	८१२	४	३७३, ३८६	शा भा. २प्रक १०,भावना ,ज्ञान प्रक २, प्रव द्वा.६७ गा.५७२, तत्त्वार्थ अध्या ६ सू ७
धर्म रुचि	६६३	३	३६३	उत्त अ २८ गा.२७
धर्मरुचि-धर्मभावना	८१२	४	३८६	ज्ञा अ १६
धर्म विषय पर आठ गाथाएं	६६४	७	१५१	
धर्माचार्य	१०३	१	७२	ठा.सू.७७
धर्माध्ययनकी ३६ गाथा	६८१	७	८७	सूय अ ९
धर्मास्तिकायके पाँचप्रकार	२७७	१	२५४	ठा.५उ ३ सू ४४१
धातकीखण्ड मेंचन्द्रसूर्यादि ज्योतिषी देवों की संख्या	७६६	४	३०१	सूर्य. प्रा १६
धातुज भावप्रमाण नाम	७१६	३	४०१	अनु. सू १३०
धात्री दोष	८६६	५	१६४	प्रव.द्वा ६७गा ५६७,प्र व पि.३ श्लो २२पृ ४०,पि.नि गा.४०८, पि.वि.गा ५८,पंचा १३गा.१८
धात्री (धाय)पाँच	४०८	१	४३४	आचा.श्रु.२चू.३अ.२ सू.१७९, भ.श.११ उ ११ सू ४२८
धान्य के चौबीस प्रकार	६३५	६	२०५	दश०अ ६नि गा २५४-२५३
धाय (धात्री) पाँच	४०८	१	४३४	आचा श्रु.२चू ३अ २सू १७९, भ श ११उ ११ सू ४२८
धारणा	२००	१	१५६	ठा ४ उ ४ सू ३६४
धारणा	६०१	३	११८	नं.,सा.गो.
धारणा व्यवहार	३६३	१	३७६	ठा ५सू ४२१,भ श८उ.८सू ३४०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
धार्मिक पुरुष के ५ आलंबन	३३३	१	३४३	ठा ५ उ ३ सू ४४७
धूम दोष	३३०	१	३४०	ध अधि ३ श्लो २२टी पृ ५५, पि. नि गा. ६३५ ६८, उत्त अ २४ गा १२, उत्त अ २६ गा. ३२
धैवत या रैवत स्वर	५४०	२	२७१	अनु सू १२७ गा २५, ठा ७ सू ५५३
धोवन पानी इक्कीस प्रकार का	९१२	६	६३	आचा श्रु २ अ १ उ. ७-८ सू ४१-४२, पि नि गा १८-२१, दश अ. ५ उ १ गा ७५-७६
ध्मात वायु	४१३	१	४३८	ठा ५ उ ३ सू ४४४
ध्यान	४७८	२	८६	उव सू २०, उत्त अ ३० गा. ३०, ठा ६ सू ५११, प्रव द्वा ६ गा २७१
ध्यान	६०१	३	११६	यो, रा यो.
ध्यान की व्याख्या और उसके भेद	२१५	१	१९३	ठा ४ उ १ सू २४७, सम ४, दश अ १ नि गा ४८टी, प्रव द्वा. ६ गा २७१टी, आव ह अ ४ ध्यानशतक पृ ५८२, आगम.
ध्यान के अड़तालीस भेद	६२२	३	१९५	उव सू २०, भ श २५ उ ७ सू ८०३
ध्यानके अड़तालीसभेद	१००२	७	२६६	उव सू २०, भ. श २५ उ ७ सू ८०३
ध्यानमेंविघ्न रूप आठ दोष	६०३	३	१२०	क भा २ श्लो १६०-१६१
ध्रुवबन्धिनी प्रकृतियाँ	८०९	४	३३७	कर्म भा ५ गा १-२
ध्रुवसत्ताक प्रकृतियाँ	८०९	४	३४२	कर्म भा ५ गा. १, ८, ९
ध्रुवोदया प्रकृतियाँ	८०९	४	३४१	कर्म भा ५ गा १-६
ध्रौव्य	६४	१	४५	तत्त्वार्थ अध्या ५ सू २९

न

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नकारे के छः चिह्न	४९१	२	१०२	उत्त. अ १८ गा ४१ नमुचि-कुमार की कथा (हस्तलिखित)

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नकुल का दृष्टान्त भाव अननुयोग पर	७८०	४	२४६	आवश्यक १३४ पृ ८१, वृ पीठिका नि गा १७२
नक्षत्र अट्ठाईस	६५३	६	२८८	जंबू.वक्ष.७सू १५५,सम.२७
नक्षत्र दस ज्ञान वर्धक	७६२	३	४४४	सम १०,ठा.१०उ ३सू ७८१
नक्षत्र प्रमाण संवत्सर	४००	१	४२५	ठा.५उ.३सू.४६०,प्रवद्वा.१४२
नक्षत्र संवत्सर	४००	१	४२५	ठा ५उ.३सू ४६०,प्रवद्वा १४२गा ६०१
नक्षत्र संवत्सर	४००	१	४२७	
नगर धर्म	६६२	३	३६१	ठा.१०उ.३ सू.७६०
नन्दमणियार की कथा	८२१	४	४४४	ज्ञा.अ.१३,नायरगा १४५४३
नन्दमणियार की कथा	६००	५	४६०	ज्ञा० अ १३
नन्दिनी पिता श्रावक	६८५	३	३३१	उपा० अ०६
नन्दी फल का दृष्टान्त	६००	५	४६४	ज्ञा० अ १५
नन्दीवर्द्धनकुमार की कथा	६१०	६	४३	विपा ६
नन्दीषेण की पारिणामिकी बुद्धि की कथा	६१५	६	८२	नं सू.२७ गा.७२, आव. ह. गा.६४६
नंदी सूत्र का विषय वर्णन	२०४	१	१७८	नं
नपुंसकलिंग सिद्ध	८४६	५	११६	पन्न. १सू ७
नपुंसक वेद	६८	१	४६	कर्म भा.१ गा २२
नमस्कार का स्वामी नमस्कार कर्ता है या पूज्य है?	६८३	७	१०१	विशे. गा २८८७से २८८२
नमस्कार के उत्पादक निमित्त क्या हैं?	६८३	७	१००	विशे०गा २८०६-२८८३०
नमस्कार पुण्य	६२७	३	१७३	ठा ६उ,३ सू ६७६
नमस्कारमहिमापरहगाथा	६६४	७	१५३	

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नमस्कारसूत्र में सिद्ध और साधु दो ही पद न कहकर पाँच पद क्यों कहे ?	९८३	७	९८	भ.मंगलाचरण टी, विशे.गा. ३२०१ से ३२०६
नमस्कार सूत्र में सिद्ध से पहले अरिहन्त को नमस्कार क्यों किया गया ?	९८३	७	९८	भ मगलाचरण टी, विशे गा ३२१०-३२२१
नमिराजर्षि-एकत्वभावना	८१२	४	३८१	उत्त० अ ९
नमुक्कार सहिय, पोरिसी आदि दस पच्चक्खाण पाठ सहित	७०५	३	३७६	प्रव० द्वा ४ गा २०१-२०२, आव ह अ ६ नि गा १५९७, पंचा ५ गा-८-११
नय	३७	१	२४	रत्ना. परि ७ सू.१
नय	४९७	२	१७१	
नय के दो भेद	१७	१	१४	रत्ना० परि.७ सू ५
नय के भेद प्रभेद	४९७	२	१७४	
नय सात	५६२	२	४११	अनु सू १५२, प्रव द्वा.१२४ गा ८४७-८४८, विशे गा २१८०-२२७८, रत्ना परि ७, तत्त्वार्थ अध्या १, आगम, द्रव्य त अध्या ५-८, न्यायप्र अध्या ५, नय, नयप्र., नयवि, नयो., आलाप,
नयों का विषय	५६२	२	४२५	रत्ना० परि.७
नयों के अपेक्षा विशेष से दो सौ से सात सौ भेद	५६२	२	४२६	प्रव.द्वा १२४ गा ८४८ टी.
नयों के तीन दृष्टान्त	५६२	२	४२७	अनु सू.१४५
नयों के दूसरी अपेक्षा से सात सौ भेद	५६२	२	४२७	

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नरकायुबन्ध के ४ कारण	१३२	१	९९	ठा.४ उ.४ सू.३७३
नरक के विषय में गणधर अकम्पित स्वामी का शंका समाधान	७७५	४	५२	विशे गा १८८४-१९०८
नरक के तीस द्वार	५६०	३	३३६	जी प्रति.३ उ.१-२
नरक के दुःखों का वर्णन करने वाली पचीस गाथाएं	९४१	६	२१९	सूय० अ ५ उ.२
नरक के दुःखों का वर्णन करने वाली २७ गाथाएं	९४७	६	२३६	सूय० अ ५ उ.१
नरकगति में अन्तर काल	५६०	२	३२०	प्रव द्वा १७७ गा १०८१ ८०
नरक में वेदना	५६०	२	३१६	जी प्रति.३ सू ८९, प्रव द्वा १७४, प्रज्ञा० पद ३५
नरक सात	५६०	२	३१४	जी.प्रति ३, प्रव.द्वा.१७२-८४, भ.श १३ उ ४-८, भ श. १० उ ५ सू. ४०, प्रज्ञा पद २
नरकावासमान नारकी के	५६०	२	३१६	जी.प्रति.३ सू ७०, प्रव.द्वा १७२
नरकावासों का विस्तार	५६०	२	३३६	जी. प्रति ३ सू ८१
नरकावासों का संस्थान	५६०	२	३३४	जी० प्रति ३ सू ८२
नरकों का परस्पर अन्तर	५६०	२	३४१	भ श. १३ उ ४ सू. ४८१
नरकों की मोटाई (बाहल्य)	५६०	२	३२८	जी० प्रति ३ सू ७८
नरकों के काण्ड	५६०	२	३२८	जी० प्रति ३ सू ६९
नरकों के नाम और गोत्र	५६०	२	३१५	जी० प्रति ३ सू ६७, प्रव० द्वा० १७२ गा. १०७२
नरकों में प्रतर (पाथड़े)	५६०	२	३२८	जी० प्रति ३ सू ७० टी
नरकों में संस्थान	५६०	२	३४१	भ श २४ उ ३ सू ७२१
नरदेव	४२२	१	४४५	ठा.५ उ १ सू ४०१, भ.श १२ उ ९

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नरयविभत्ति अध्ययन के दूसरे उ० की २७ गाथाएं	६४१	६	२१६	सूय० अ ५ उ २
नरय विभत्ति अध्ययन के पहले उ० की २७ गाथाएं	६४७	६	२३६	सूय० अ ५ उ १
नवतत्त्व	६३३	३	१७७	नव गा १, ठा ६ उ ३ सू ६६५
नव वाड़ शील की	६२८	३	१७३	सम ६, ठा ६ उ ३ सू ६६३
नवीन उत्पन्न देवता के मनुष्य लोक में आने के तीन कारण	११०	१	७६	ठा ३ उ ३ सू १७७
नाक के ४ मण्डल और उन में रहने वाली वायु के भेद	५५६	२	३०७	यो० प्रका. ५, राज, हठ,
नागकुमार के दस अधिपति	७३२	३	४१८	भ० श ३ उ ८ सू १६६
नाग सुवर्ण मद	७०३	३	३७४	ठा १० उ ३ सू. ७१०
नाणक की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२७५	न० सू २७ गा ६५ टी
नाम	४२७	२	२६	अनु. सू ७०
नाम अनन्तक	४१७	१	४४१	ठा ५ उ. ३ सू ४६२
नाम कर्म	७६०	३	४४१	आचा अ २ उ १ नि.गा १८३
नामकर्म अशुभ भोगने के चौदह प्रकार	८३६	५	३३	पन्न० प २३ सू २६२
नामकर्म और उसके बयालीस मूल भेद	५६०	३	६८	कर्म भा १ गा २३-२७, पन्न० प २३ उ २ सू २६३
नामकर्म की १४ पिंडप्रकृति के ६५ उत्तरभेद व व्याख्या	५६०	३	६६	पन्न० प २३ सू २६३-२६४, कर्म भा० १ गा ३३-४३
नामकर्म की ६३, १०३ और ६७ प्रकृतियाँ	५६०	३	७७	कर्म० भा. १ गा. ३१ व्याख्या

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नाम कर्म की ४२ प्रकृतियाँ	९९१	७	१४९	पन्न० प० २३ उ.२ सू २९३
नामकर्म के बन्ध के कारण	५९०	३	७८	भ० श ८ उ ९ सू ३५१
नामकर्म-शुभ और अशुभ का १४ प्रकार का अनुभाव	५९०	३	७८	पन्न० प० २३ सू २९२
नामकर्म-शुभ चौदह प्रकार से भोगा जाता है	८३८	५	३३	पन्न प. २३ सू २९२
नाम ११ भ० महावीर के	७७०	४	३	जैनविद्या वॉल्यूम १ नं. ३
नाम दस प्रकार का	७१९	३	३९५	अनु सू १३०
नाम नरकों के	५६०	२	३१५	जी प्रति. ३, प्रव द्वा १७२ गा १०७२
नाम निक्षेप	२०९	१	१८७	अनु सू १५०, न्यायप्र अध्या. ६
नाम सत्य	६९८	३	३६९	ठा १० सू ७४१, पन्न. प. ११ सू १६५, ध. अधि ३ श्लो. ४१ पृ १२१
नाम सत्रह माया के	८८०	५	३८५	सम. ५२
नाम से नाम	७१९	३	३९८	अनु सू १३०
नामानुपूर्वी	७१७	३	३९०	अनु सू. ७१
नामानुयोग	५२६	२	२६२	विशे गा १३८५-१३८६
नामार्य	७८५	४	२६६	सू ३ १ नि गा ३२६३
नारकी की आगति	५६०	२	३२७	प्रव द्वा. १८२ गा १०८१-८२
नारकी के दस प्रकार समय के अन्तर आदि की अपेक्षा	७४७	३	४२४	ठा १० उ.३ सू ७५७
नारकी जीवों का आयुबन्ध	५६०	२	३४१	भ.श ३० उ.१ सू ८२४
नारकी जीवों का आहार	५६०	२	३४०	भ श १८ उ.५ सू ६१६
नारकी जीवों का गन्ध	५६०	२	३३६	जी प्रति ३ सू. ८७
नारकी जीवों का वर्ण	५६०	२	३३६	जी. प्रति. ३ सू ८७

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नारकीजीवोंकाश्वासोच्छ्वास	५६०	२	३३७	जी.प्रति ३ सू ८८
नारकी जीवोंका संस्थान	५६०	२	३३७	जी प्रति ३ सू ८७
नारकी जीवों का संहनन	५६०	२	३३७	जी प्रति.३ सू.८७
नारकी जीवों का स्पर्श	५६०	२	३३६	जीप्रति ३ सू.८७
नारकीजीवोंकीअवगाहना	५६०	२	३१६	जी प्रति ३सू ८६,प्रव द्वा १७६
नारकी जीवों की उद्वर्तना	५६०	२	३२६	प्रव द्वा.१८१,पन्न प २०सू २६३
नारकी जीवोंकीविग्रहगति	५६०	२	३४०	भ श १४उ.१ सू ५०२
नारकी जीवों की स्थिति	५६०	२	३१६	जी प्रति ३सू ६०टी , प्रव द्वा १७५गा १०७५-१०७६
नारकीजीवों केअवधिज्ञान	५६०	२	३२३	जी प्रति ३सू ८८,प्रव द्वा १७६
नारकी जीवों के चौदहभेद	६३३	३	१७८	पन्न प १सू ३१, उत्त अ ३६ गा १५५-१५६, जी प्रति ३
नारकीजीवों केवेदनादस	७४८	३	४२५	ठा १०उ ३ सू ७५३
नारकी जीवों में उपयोग	५६०	२	३३७	जी प्रति ३ सू८८
नारकी जीवों में ज्ञान	५६०	२	३३७	जी प्रति ३ सू.८८
नारकी जीवोंमेंदस स्थानों का अनुभव	५६०	२	३४०	भ श १४ उ ५ सू ५१६
नारकी जीवों में दृष्टि	५६०	२	३३७	जी प्रति ३ सू ८८
नारकीजीवोंमेंपरिचारणा	५६०	२	३३६	पन्न प ३४
नारकी जीवों में युग्म	५६०	२	३४१	भ श १८उ.४सू६२४
नारकी जीवों में योग	५६०	२	३३७	जी प्रति ३ सू८८
नारकी जीवों में लेश्या	५६०	२	३२१	जी प्रति ३सू ८८,प्रवद्वा १७८
नारकी॰मेंवेदना, निर्जरा	५६०	२	३३६	भ श.७उ ३ सू २७६
नारकीजीवों में समुद्घात	५६०	२	३३८	जी प्रति ३ सू ८८
नारद नौ	६५२	३	२१६	सेन उल्ला.३ प्रश्न ६६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नाराच संहनन	४७०	२	७०	पन्न २३ सू २९३, ठा ६ उ.३ सू.४९४, कर्म.भा १ गा. ३८
निशंकित दर्शनाचार	५६९	३	७	पन्न १ सू ३७, उत्त अ.२८ गा ३१
१ निकाचना करण	५९२	३	९५	कम्म.गा २
निकाचित की व्याख्या, भेद	२५२	१	२३६	ठा.४ उ २ सू २९६
निक्खित्त दोष (ग्रहणैषणा का तीसरा दोष)	६६३	३	२४३	प्रव.द्वा.६७ गा ५६८, पिं.नि. गा ५२०, ध अधि ३ श्लो.२२ पृ ४१, पंचा.१३ गा २६
निक्षिप्त चरक	३५२	१	३६७	ठा ५ उ १ सू.३९६
निक्षेप चार	२०९	१	१८६	अनु सू १५०, न्याय प्र अध्या. ६
निक्षेप सात अनुयोग के	५२६	२	२६२	वि गा १३८५-१३९२
निगमन	३८०	१	३९७	रत्ना.परि ३ सू ५१
निगोद	९	१	८	आगम.
निगोद का वर्णन	४२५	२	१९	आगम
निगोद के दो भेद	४२५	२	२१	आगम
२ निग्रह दोष	७२२	३	४१०	ठा १० उ.३ सू ७४३
३ निग्रहस्थान बाईस	९२१	६	१९२	प्र.मी.अ.१ आ.२ सू. ३४, न्यायप्र. न्यायसू.अध्या.५ आ.२
नित्य अनित्य पक्ष की चौभंगी छः द्रव्यों में	४२४	२	११	आगम.
नित्य दोष	७२३	३	४१२	ठा १० उ.३ सू ७४३

१ कर्मों को अपवर्तना, उद्वर्तना आदि सभी करणों के अयोग्य एवं अवश्यवेद्य बनाने वाला जीव का वीर्य विशेष निकाचनाकरण कहलाता है। २ कुल जाति आदि से दूसरे को पराजित करना। ३ अपने पक्ष की सिद्धि न कर सकने के कारण वादी या प्रतिवादी की हार हो जाना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नित्यानित्यता छःद्रव्यों में	४२४	२	७	आगम
निदान कर्त्ता	४४४	२	४८	ठा ६उ ३सू ५२६,बृ (जी)उ ६
निदान (नियाणा) नौ	६४४	३	२१५	दशा द १०
निदान शल्य	१०४	१	७४	ठा ३उ ३सू १८२,सम ३,ध. अधि ३श्लो २७ पृ.७६
निद्रा	४१६	१	४४३	कर्म भा १गा ११-१२,पन्न प २३
निद्रा के पाँच भेद	४१६	१	४४३	कर्म भा १गा ११-१२,पन्न प.२३
निद्रानिद्रा	४१६	१	४४३	कर्म भा १गा ११-१२,पन्न प २३
निद्रा प्रमाद	२६१	१	२७५	ठा ६उ ३सू ५०२,ध अधि २ श्लो ३६पृ.८१,पचा १गा २३टी.
निद्रा से जागने के ५ कारण	४२०	१	४४४	ठा ५उ २ सू ४३६
निधत्त की व्याख्या और भेद	२५१	१	२३६	ठा ४उ २सू २९६
१ निधत्ति करण	५६२	३	६५	कम्म गा २
निधि के पांच प्रकार	४०७	१	४३३	ठा ५उ ३सू ४४८
निन्दा पर कथा	५७६	३	२८	आव.ह अ ४नि गा १२४२
निमन्त्रणा समाचारी	६६४	३	२५०	भ श २५उ ७सू ८०१,ठा १० सू ७४६,प्रव द्वा १०१गा ७६०
निमित्त	४०४	१	४३१	उत्त.अ ३६गा २६२,प्रव द्वा ७३
निमित्त कथन	४०५	१	४३२	उत्त अ ३६गा २६४,प्रव द्वा ७३
निमित्त कारण	३५	१	२३	विशे गा २०६६
निमित्त दोष	८६६	५	१६४	प्रव द्वा ६७गा ५६७,ध अधि ३ श्लो २२पृ ४०,पि नि गा ४०८, पि नि गा ५८,पचा १३गा,१८

१ जिससे कर्म उद्वर्तना और अपवर्तना करण के सिवाय शेष करणों के अयोग्य हो जाय ऐसा जीव का वीर्य विशेष।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नियट्टिबादर गुणस्थान	८४७	५	७६	कर्म भा.२गा २
नियत वादी	५६१	३	६४	ठा.८ उ ३ सू ६०७
नियति	२७६	१	२५७	आगम.,कारण,सम्मति भा ५ काण्ड३ गा.५३
नियम	६०१	३	११५	यो.,रा यो.
नियम चौदह श्रावक के	८३१	५	२३	शिक्षा,ध अधि.२ श्लो ३४पृ ७६
नियाणा नौ	६४४	३	२१५	दशा द १०
निरनुकम्पता	४०५	१	४३२	उत्त अ ३६ गा.२६४, प्रव. द्वा ७३ गा ६४५
निरयावलिका सूत्र के दस अध्ययनों का विषय वर्णन	३८४	१	४००	निर
निरयावलिका सूत्र के दस अध्ययनों का विषय वर्णन	७७७	४	२३२	निर
निरयावलिकासूत्रके५वर्ग	३८४	१	३६६	निर
निरयावलिका सूत्र के पाँच वर्गों के ५२ अध्ययन	३८४	१	४००	
निरुपक्रम आयु	३०	१	२१	तत्त्वार्थ अध्या २ सू.५२, भ. श २०उ १० सू. ६८५
निरुपक्रम कर्म	२७	१	१६	वि.अ ३ सू २० टी.
निर्ग्रन्थ	३६६	१	३८१	ठा.५ सू ४४५, भ श २५उ ६
निर्ग्रन्थ के पांच भेद	३७०	१	३८५	ठा ५उ ३ सू.४४५,भ श २५ उ.६ सू ७५१
निर्ग्रन्थ पांच	३६६	१	३७६	ठा ५उ ३ सू.४४५,भ श २५ उ.६ सू ७५१
निर्ग्रन्थप्रवचन पर ३ गाथा	६६४	७	१५५	
निर्ग्रन्थ श्रमण	३७२	१	३८७	प्रव द्वा ६४ गा ७३१

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
निर्जरा	४९७	२	२०६	
निर्जरा, वेदना नैरयिकों में	५६०	२	३३९	भ श ७ उ ३ सू २७९
निर्जरा के बारह भेद	४७६	२	८५	उत्त अ. ३० गा. ८, ३०, उव सू १९, २०, प्रव द्वा ६ गा २७०-२७१, ठा ६ उ ३ सू ५११
निर्जरा के बारह भेद	४७८	२	८९	
निर्जरा तत्त्व के बारह भेद	६३३	३	१८४	नव, उव सू १९-२०, भ श. २५ उ ७ सू ८०२ से ८०४
निर्जरा भावना	८१२	४	३९९, ३८६	शा भा १ प्रक ९, भावना, ज्ञान प्रक २, प्रव द्वा ६७ गा ५७२, तत्त्वार्थ. अध्या ९ सू ७
निर्मितवादी	५९१	३	९३	ठा ८ उ ३ सू ६०७
निर्याण मार्ग पाँच	२८०	१	२५९	ठा ५ उ ३ सू ४६१
निर्विकृतिक (णिव्वियते)	३५५	१	३७०	ठा ५ उ १ सू ३९६
निर्विचिकित्स दर्शनाचार	५६९	३	७	पन्न प १ सू ३७, उत्त अ २८ गा ३१, प्र र. भा २ पृ ८१४,
निर्विशमान कल्पस्थिति	४४३	२	४६	ठा ३ उ ४ सू. २०६ ठा ६ उ ३ सू ५३०, वृ (जी) ३ ६
निर्विष्टकायिक कल्पस्थिति	४४३	२	४६	
निर्वृत्ति द्रव्येन्द्रिय	२४	१	१७	तत्त्वार्थ अध्या. २ सू १७
निर्वेद	२८३	१	२६४	ध अधि २ श्लो २२ टी पृ ४३
निर्वेदनी कथा के भेद	१५७	१	११५	ठा ४ उ २ सू २८२
निर्ल्लांछण कम्मे कर्मादान	८६०	५	१४६	उपा. अ १ सू ७, भ श ८ उ ५ सू ३३०, आव ह अ ६ पृ ८२८
निवृत्ति	४५	१	२८	
निवृत्ति पर कथा	५७९	३	२६	आव ह अ. ४ नि गा. १२४२
निव्विगइ पच्चक्खाण	७०५	३	३८१	प्रव द्वा. ४ गा २०१-२०२, आव. ह अ ६ नि गा. १५९७ उ. ८५१, पचा ५ गा ८-११

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
निव्विगइपच्च० के नौ आगार	६२९	३	१७४	आव ह अ ६ पृ ८५४, प्रव द्वा. ४
निशीथसूत्र का विषय वर्णन	२०५	१	१८२	निशीथ.
निश्चय	३९	१	२५	विशे गा ३५८९, द्रव्य त. अध्या ८
निश्चय और व्यवहार नय	५६२	२	४१९	न्यायप्र अध्या ५, द्रव्य त अध्या ८
निश्चय और व्यवहार से श्रावक के बारह भाव व्रत	७९४	४	२८०	आगम
निश्चय नय के दो भेद	५६२	२	४२०	रत्ना परि ७सू ५, न्यायप्र अध्या ५
निश्चय सम्यक्त्व	१०	१	९	कर्म भा १गा १५, प्रव द्वा. १४९
निषद्या के पाँच भेद	३५८	१	३७२	ठा ५सू ३९९टी, ठा. ५सू ४००
निषाद स्वर	५४०	२	२७१	अनु सू. १२७गा २५, ठा ७सू ५५३
१ निषेक	४७३	२	७९	भ श ६ उ ८ सू २५० टी, ठा ६ उ ३ सू ५३३ टी
निष्कांक्षित दर्शनाचार	५६६	३	७	पन्न प १सू. ३७, उत्त अ २८गा ३१
२ निष्कृपता	४०५	१	४३२	उत्त अ ३६गा २६४, प्रव द्वा ७३
निष्क्रमण सूत्र	७६६	३	४५४	ठा १० उ ३सू ७३७
निसर्गरुचि	६९३	३	३६२	उत्त अ. २८गा. १७-१८
निसीहिया (नैषेधिकी) समाचारी	६६४	३	२५०	भ श २५उ ७सू ८०१, ठा १० उ ३सू ७४९, उत्त अ २६गा. २-७, प्रव द्वा १०१गा ७६०
निह्नव आठवां (शिवभूति अथवा बोटिक)	५६१	२	३६६	विशे गा २५५०-२६०९, ठा ७ उ ३ सू ५८७
निह्नव चौथा (अश्वमित्र)	५६१	२	३५८	विशे.गा. २३८९-२४२३
निह्नव छठा (रोहगुप्त)	५६१	२	३७१	विशे.गा. २४५१-२५०८

१ फल भोग के लिए होने वाली कर्म पुद्गलों की रचना विशेष। २ स्थावरादि जीवों पर दयाभाव न रखना तथा बिना उपयोग गमनादि क्रिया करना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
निह्नवतीसरा(अव्यक्तदृष्टि)	५६१	२	३५६	विशे गा-२३५६-२३८८
निह्नव दूसरा (तिष्यगुप्त)	५६१	२	३५३	विशे २३३३-२३५५
निह्नव पहला (जमाली या बहुरत)	५६१	२	३४२	विशे गा २३०६–२३३२,भ श १३ १,भ श ६ उ ३३,आव ह अ १ पृ ३१२
निह्नव पाँचवाँ(आर्यगंग)	५६१	२	३६६	विशे गा २४२४-२४५०
निह्नव सात	५६१	२	३४२	विशे.२३००-२६२०,ठा.७सू ५८७,भ.श.१३.१,भ श ६ उ ३३,आव ह अ १गा ७७८-७८८
निह्नवसातवां-गोष्ठामाहिल	५६१	२	३८४	विशे गा २५०६-२५४६
नील लेश्या	४७१	२	७३	उत्त अ ३४,कर्म.भा ४गा १३
नैगमनय और उसके दो तथा तीन भेद	५६२	२	४१२	रत्ना परि ७सू ७,तत्त्वार्थ.अध्या. १,न्यायप्र अध्या.५,द्रव्य त अध्या ६
नैपुणिक नौ	६४२	३	२१३	ठा ६ उ ३ सू ६७६
नैरयिकचारबोलोंसेमनुष्यलोक में आने में असमर्थ है	१४०	१	१०३	ठा ४उ १ सू २४५
नैरुक्त भाव प्रमाण नाम	७१६	३	४०१	अनु सू १३०
नैपधिक	३५७	१	३७२	ठा ५उ १सू ३६६
नैषेधिकी (निसीहिया) समाचारी	६६४	३	२५०	भ श २५उ ७सू ८०१,ठा १० उ ३सु ७४६,उत्त अ २६गा २–७,प्रव द्वा १०१गा ७६०
नैसर्गिक सम्यक्त्व	१०	१	६	ठा २उ १सू ७०,पन्न प १सू ३७, तत्त्वार्थ.अध्या १ सू.३
नैसर्प निधि	६५४	३	२२०	ठा.६उ ३ सू ६७३
नैसृष्टिकी(नेसत्थिया) क्रिया	२६५	१	२८०	ठा २उ १सू.६०,ठा ५उ २सू. ४१६, आव.ह.अ.४पृ ६१३

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नोउत्सर्पिणी अवसर्पिणी	४३१	२	३८	विशे गा २७०८ २७१०
नोउत्सर्पिणी अवसर्पिणी	४३१	२	३६	विशे.गा.२७०८-२७१०
कालकेक्षेत्रकीअपेक्षा४भाग				
नोकषायमोहनीय	२६	१	२१	कर्म भा १गा १७
नोकषाय वेदनीय नौ	६३५	३	२०३	ठा ६उ.३सू ७००
नोगौण नाम	७१६	३	३६५	अनु सू १३०
नौ अनृद्धि प्राप्त आर्य	६५३	३	२१६	पन्न प १सू ३७
नौआगार निव्विगई पच्च-क्खाण के	६२६	३	१७४	आव ह अ ६पृ ८५४,प्रव द्वा ४ गा २०५
नौ आचार्यों के नाम(बल देव,वासुदेवों के पूर्वभवके)	६५१	३	२१६	सम १५८
नौआत्मा ने भ०महावीरके शासन में तीर्थङ्करगोत्रबाँधा	६२४	३	१६३	ठा ६उ ३ सू ६६१
नौ आयु परिणाम	६३६	३	२०४	ठा ६उ ३सू ६८६
नौ काव्यरस	६३६	३	२०७	अनु सू १२६गा.६३-१२६
नौ कोटि भिक्षा की	६३१	३	१७६	ठा ६सू ६८१,आचा अ २उ ५
नौगणभगवान् महावीरके	६२५	३	१७१	ठा ६उ ३ सू.६८०
नौ नारद	६५२	३	२१६	सेन उल्ला ३ प्रश्न ६६
नौ निमित्त स्वप्न के	६३८	३	२०६	विशे गा १७०३
नौ नियाणा (निदान)	६४४	३	२१५	दशा द १०
नौ नैपुणिक	६४२	३	२१३	ठा ६उ ३सू ६७६
नौ नोकषाय वेदनीय	६३५	३	२०३	ठा ६उ ३ सू ७००
नौ परिग्रह	६४०	३	२११	आव ह.अ ६पृ ८२५
नौ पाप श्रुत	६४३	३	२१४	ठा.६उ ३सू.६७८

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नौ पुण्य	६२७	३	१७२	ठा ९ उ ३ सू ६७६
नौ प्रकार की वसति	९२३	६	१७०	आचा श्रु २ चू १ अ २ उ २
नौ प्रतिवासुदेव	६४८	३	२१८	सम.१५८, प्रव द्वा २११ गा. १२१३, आव ह.अ १ पृ.१५९
नौ बलदेव	६४६	३	२१७	सम १५८, प्रव द्वा २०९ गा १२११, आव ह अ.१ पृ १५९
नौ बलदेवों के पूर्वभव के नाम	६४९	३	२१८	सम १५८
नौ बातें मनःपर्यय ज्ञान के लिए आवश्यक हैं	६२६	३	१७२	न सू १७
नौ ब्रह्मचर्य गुप्ति	६२८	३	१७३	ठा ९ उ ३ सू ६६३, सम ९
नौ भेद काल के	६३४	३	२०२	विशे गा २०३०
नौ भेद ज्ञाता के	६४१	२	२१२	आचा.श्रु.१ अ.२ उ.५ सू ८८
नौ महानिधियां चक्रवर्ती की	६५४	३	२२०	ठा ९ उ ३ सू.६७३
नौ लोकान्तिक देव	६४५	३	२१७	ठा ९ उ ३ सू ६८४
नौ वासुदेव	६४७	३	२१७	आव ह.अ १ गा ४० पृ १५९, प्रव द्वा २१० गा १२१२
नौ वासुदेवों के पूर्वभव के नाम	६५०	३	२१८	सम १५८
नौ विगय	६३०	३	१७५	ठा ९ उ.३ सू ६७४, आव ह अ ६ गा १६०१ टी
नौ स्थान रोग उत्पन्न होने के	६३७	३	२०५	ठा ९ उ ३ सू ६६७
नौ स्थान संभोगी को विसंभोगी करने के	६३२	३	१७६	ठा ९ उ ३ सू ६६१
न्यग्रोध परिमंडल संस्थान	४६८	२	६८	ठा ६ सू ४९५, कर्म.भा.१ गा ४०
न्यायदर्शन	४९७	२	१३२	
न्यून तीर्थ वाले पर्व छः	४३३	२	४०	ठा ६ उ ३ सू ५२४, चन्द्र प्रा १२, उत्त.अ २६ गा १५

प

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पइण्णा दस	६८६	३	३५३	द. प.
पंच कल्याणक	२७५	१	२५३	पंचा.६गा.३०-३१,दशा द ८
पंच परमेष्ठी	२७४	१	२५२	भ मंगलाचरण
पंचम स्वर	५४०	२	२७१	अनु मू १२७, ठा.७सू.५५३
पंचमासिकी भिक्खुपडिमा	७९५	४	२८९	सम १२,भ श २३.१,दशा.द.७
पंचास्तिकाय	२७६	१	२५३	उत्त अ २८गा ७,ठा ५सू ४४१
पंचेन्द्रियजीवों का समारंभ न करने से पाँच संयम	२९८	१	२८५	ठा ५उ २ सू ४२९,४३०
पंचेन्द्रियजीवोंके आरंभ से पाँच प्रकार का असंयम	२९७	१	२८४	ठा ५उ २सू ४२९
पक्षाभास के सात भेद	५४९	२	२९१	रत्ना परि ६सू ३८-४६
पक्षी चार	२७२	१	२५१	ठा.४ उ ४सू.३५०
पचपन भेद दर्शन विनय के	१०१०	७	२७७	उव सू २०
पचास भेद प्रायश्चित्त के	१००४	७	२७१	भ.श २५उ.७सू ८०२, ठा.१० उ ३ सू ७३३, उव सू २०
पचीस क्रिया	९४०	६	२१८	ठा २सू ६०,ठा ५सू ४१९,पन्न. प.२२,आव ह.अ.४पृ ६११
पचीस गाथा सूयगडांगसूत्र के पाँचवें अ० के दूसरे उ० की	९४१	६	२१९	सूय अ.५उ.२
पचीस गुण उपाध्याय के	९३७	६	२१५	प्रव द्वा.६६-६७गा ५५२-५६६, ध अधि.३श्लो ४७पृ १३०
पचीस प्रतिलेखना	९३९	६	२१८	उत्त अ २६गा २४-२७
पचीस भावनाएं पाँच महाव्रत की	९३८	६	२१७	सम २५,आचा.श्रु २ चू.३अ. २४सू.१७९, आव ह अ.४पृ. ६५८,प्रव द्वा ७२गा ६३६-६४०, ध.अधि.३श्लो,४५टी.पृ १२५

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पच्चक्खाण के दस प्रकार	७०४	३	३७५	ठा.१०सू.७४८, भ.श ७ उ २
पच्चक्खाण में आठ तरह का संकेत (चिह्न)	५८६	३	४२	आव.ह.अ.६ नि गा.१५७८, प्रव द्वा ४ गा २००
पट की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२६२	न सू.२७ गा ६३ टी.
पडिमा ग्यारह श्रावक की	७७४	४	१८	दशा. द.६, सम ११
पडिमा बारह भिक्खु की	७९५	४	२८५	सम १२,दशा द.७,भ श २उ १
पडिलेहणा पचीस	६३६	६	२१८	उत्त.अ २६ गा २४-२७
पडुच्चमक्खिएणं-निव्विगइ पच्चक्खाण का आगार	६२६	३	१७४	आव.ह अ ६पृ ८५४,प्रव द्वा.४ गा. २०५
पद्मापद्म के चौदह द्वार	८४२	५	३८	भ श १८उ.१ सू.६१६
पणित की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२५६	न सू.२७ गा.६३ टी.
पण्डित मरण	८७६	५	३८३	सम.१७,प्रव द्वा १५७गा.१००६
पण्डित वीर्यान्तराय	३८८	१	४११	कर्म भा १गा ५२,पन्न प.२३
१पण्य वस्तु चार	२६४	१	२४६	ज्ञा. अ ८ सू.६६
पतंग वीथिका गोचरी	४४६	२	५१	ठा ६सू ५१४,उत्त अ ३० गा. १९,प्रव द्वा ६७गा ७४५, ध. अधि ३श्लो.२२टी. पृ ३७
पति की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२६६	न सू २७ गा.६३ टी
पदवियाँ सात	५१३	२	२३६	ठा.३उ.३सू १७७ टी.
पद श्रुत	६०१	६	४	कर्म.भा १गा ७

१ क्रयाणक, बेचने की वस्तु ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पद समास श्रुत	६०१	६	४	कर्म.भा १गा.७
पदस्थ धर्मध्यान	२२४	१	२०८	ज्ञान प्रक ३८,यो प्रका.८,क भा २ श्लो २०७-२०६
पदानुसारिणी लब्धि	६५४	६	२६६	प्रव द्वा.२७० गा.१४६४
पदार्थ की तीन अवस्था	६४	१	४४	तत्त्वार्थ अध्या ५ सू २६
पद्म लेश्या	४७१	२	७४	उत्त अ ३४,कर्म.भा४गा १३
पद्मावती	८७५	५	३६६	आव ह गा १३११
पद्य के आठ गुण	५४०	२	२७५	अनु ग १२७गा ५१,ठा ७सू ५५३
पन्द्रह अंग मोक्ष के	८५०	५	१२१	पच व गा १५६-१६३
पन्द्रह कर्म भूमि	८५८	५	१४२	पन्न प १,भ श २०उ ८सू ६७५
पन्द्रह कर्मादान	८६०	५	१४४	उपा अ.१सू ७,भ श ८उ ५ सू ३३०,आव ह अ ६पृ ८२८
पन्द्रह गाथा अनाथता की	८५४	५	१३०	उत्त. अ.२० गा ३८-५२
पन्द्रहगाथा पूज्यताप्रदर्शक	८५३	५	१२७	दश अ ६उ ३
पन्द्रहगुणदीक्षा देनेवाले के	८५१	५	१२४	ध अधि ३श्लो ८०-८४पृ ७
पन्द्रह नाम तिथियों के	८५७	५	१४२	चन्द्र प्रा.१०प्रा प्रा १४
पन्द्रह परमाधार्मिक	८५६	५	१४३	सम १५
पन्द्रह प्रकार के सिद्ध	८४६	५	११७	पन्न प १सू ७
पन्द्रह भेद बंधननामकर्म के	८५६	५	१४०	कर्म भा १गा ३७,कम्म गा १३
पन्द्रह योग	८५५	५	१३८	पन्न प १६सू २०२,भ श.२५उ १
पन्द्रह लक्षण विनीत के	८५२	५	१२५	उत्त अ ११गा १०-१३
पन्नवणा सूत्र के छत्तीस पदों का संक्षिप्त विषय वर्णन	७७७	४	२२१	पन्न प १-३६
परदेशी राजा की कथा	७७७	४	२१६	रा
परदेशी राजा के छः प्रश्न	४६६	२	१०७	रा सू ६३-७७

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
परपाषंडी प्रशंसा	२८५	१	२६५	उपा अ १सू ७, आव ह अ ६पृ ८१०
परपाषंडी संस्तव	२८५	१	२६५	
परमाणु	६	१	३	ठा १सू ४५
परमाणु	७३	१	५३	ठा २उ २ सू १६५
परमात्मा	१२५	१	६०	परमा गा १५
परमाधार्मिक देव पन्द्रह	५६०	२	३२४	प्रव.द्वा १८०गा १०८५-१०८६
परमाधार्मिक पन्द्रह	८५६	५	१४३	सम १५
परमावधिज्ञानी क्या चरम शरीरी होते हैं ?	६८३	७	१०३	भ श ७उ ७ सू.२६१
परमेष्ठी पाँच	२७४	१	२५२	भ मंगलाचरण
परम्परागम	८३	१	६१	अनु सू १४४
परलोक के विषय में गणधर मैतार्यस्वामी का शंकासमाधान	७७५	४	५६	विशे गा १९४९-१९७१
परलोक नास्तित्ववादी	५६१	३	६४	ठा ८उ ३ सू ६०७
परलोक भय	५३३	२	२६८	ठा ७उ ३सू ५४९,सम ७
परविस्मयोत्पादन	४०२	१	४३०	उत्त अ ३६गा २६१,प्रव द्वा ७३
पर सामान्य	५६	१	४१	रत्ना परि ७ सू १५,१६
परार्थानुमान	३७६	१	३६६	रत्ना परि ३सू २३
परार्थानुमान के पाँच अङ्ग	३८०	१	३६६	रत्ना परि ३,न्यायदी.प्रका.३
परावर्तमान प्रकृतियाँ	८०६	४	३५१	कर्म भा ५गा १-१६
परिकर्मोपघात	६६८	३	२५५	ठा १०उ ३सू ७३८
परिकुंचना प्रायश्चित्त	२४५ख	१	२२४	ठा ४उ १सू २६३
परिक्रम संख्यान	७२१	३	४०४	ठा १०उ ३सू ७४७
परिग्रह	४६	१	२६	ठा २उ १ सू ६४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
परिग्रह आभ्यन्तर के १४ भेद	८४०	५	३३	बृ.उ.१ गा ८३१
परिग्रह का स्वरूप	४६७	२	१६८	
परिग्रह के तीस नाम	६५८	६	३१०	प्रश्न. आश्रवद्वार ५
परिग्रहत्यागपर ११ गाथा	६६४	७	१८१	
परिग्रह नौ	६४०	३	२११	आव ह अ.६पृ ८२५
परिग्रह परिमाण व्रत	३००	१	२६०	आव.ह अ ६ पृ ८२५,ठा.५सू. ३८६,उपा अ.१सू ६,ध अधि. २श्लो २६पृ ६७
परिग्रह परिमाण व्रत के पाँच अतिचार	३०५	१	३००	उपा.अ.१सू ७,आव ह अ ६पृ. ८२५,ध अधि.२श्लो.४७पृ १०५
परिग्रह परिमाण व्रत निश्चय और व्यवहार से	७६४	४	२८२	आगम
परिग्रह विरमण रूप पाँचवें महाव्रत की पांच भावनाएं	३२१	१	३२६	आव ह अ ४पृ ६५८,प्रव द्वा ७२ गा ६४०,सम.२५,आचा श्रु. २चू ३अ २४ सू १७६, ध अधि ३श्लो.४५टी पृ १२५
परिग्रह संज्ञा	१४२	१	१०५	ठा ४उ.४सू ३५६,प्रव द्वा १४५
परिग्रह संज्ञा	७१२	३	३८७	ठा.१०सू.७५२,भ श.७उ.८
परिग्रह संज्ञा चार कारणों से उत्पन्न होती है	१४६	१	१०६	ठा ४ उ.४ सू ३५६, प्रव द्वा १४५गा ६२३
परिचारणा नारकी जीवों में	५६०	२	३३६	पन्न प ३४सू ३२०
परिचारणा पाँच देवों की	३६८	१	४२२	पन्न प.३४,ठा.५सू ४०२टी.
१ परिज्ञा पाँच	३६२	१	३७५	ठा ५उ २सू ४२०
परिट्ठावणियागार	५१७	२	२४७	आव ह.अ ६पृ ८५३, प्रव.द्वा ४

१ वस्तु स्वरूप का ज्ञान करना और ज्ञानपूर्वक उसे छोड़ना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
परिणामिया बुद्धि	२०१	१	१६०	ठा ४उ ४ सू ३६४,न सू २६
परिणामिया (पारिणामिकी)बुद्धि के इक्कीस दृष्टान्त	६१५	६	७३	न सू २७गा ७१-७४,आव ह नि गा ६४८-६५१,निर अ १, उत्त अ १गा ३टी.(कथा)
परित्त संसारी	८	१	६	ठा २उ २सू ७६,आतुर गा ४३,
परिमंडल संस्थान	४६६	२	६६	भ श २५उ ३सू ७२४,पन्न प १
परिमाणसंख्या के दो भेद	६१६	३	१४२	अनु सू १४६
परिमित पिण्डपातिक	३५५	१	३७०	ठा.५उ.१सू ३६६
१ परिवर्तना	३८१	१	३६८	ठा.५ उ ३ सू ४६५
परिवर्तित दोष(गवेषणैषणा का एक दोष)	८६५	५	१६३	प्रव द्वा ६७गा ५६६,ध अधि ३ श्लो २२ टी पृ ३८,पि नि गा ६३,पि वि.गा ४,पचा १३गा ६
परिषह बाईस	६२०	६	१६०	सम २२,उत्त अ २,प्रव द्वा ८६ गा ६८५-८६,तत्त्वार्थ अध्या ६
परिहरण दोष	७२२	३	४०७	ठा.१०उ ३सू ७४३
परिहरणा पर कथा	५७६	३	२४	आव ह अ ४नि गा.१२४२
परिहरणोपघात	६६८	३	२५५	ठा. १० उ ३ सू ७३८
परिहार विशुद्धि चारित्र	३१५	१	३१८	ठा ५उ.२सू ४२८, अनु सू १४४,विशे गा १२७०-१२७६
परिहार विशुद्धि चारित्र के बीस द्वार	६०५	६	१६	पन्न प १सू ३७ टी
परुष वचन	४५६	२	६२	ठा.६उ ३सू ५२७,प्रव द्वा.२३५ गा.१३२१,बृ (जी.)उ ६
परोक्षज्ञान	१२	१	११	न सू २, ठा २उ १ सू ७१

१ सीखा हुआ ज्ञान विस्मृत न हो इसके लिए उसे फेरना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
परोक्ष ज्ञान के दो भेद	१५	१	१२	ठा २ उ १ सू ७१, पन्न. प २९ सू. ३१२, भ श ८ उ २ सू ३१८, कर्म भा. १ गा ४, न सू १
परोक्ष प्रमाण के पाँच भेद	३७९	१	३९५	रत्ना परि. ३,४
पर्यङ्का (निषद्या का भेद)	३५८	१	३७२	ठा. ५ सू ३९६ टी., ठा. ५ सू ४००
पर्याप्तक	८	१	५	ठा २ उ २ सू ७६
पर्याप्ति छः	४७२	२	७७	पन्न प १ सू १२ टी, भ श. ३ उ १ सू १३०, प्रव द्वा २३२ गा १३१७-१३१८, कर्म भा १ गा ४९
पर्याप्तियों के पूर्ण होने का क्रम	४७२	२	७९	पन्न प १ सू १२ टी, प्रव द्वा २३२
पर्याय	४७	१	२८	उत्त. अ २८ गा ६
पर्याय, पर्यायसमास श्रुत आदि श्रुत ज्ञान के बीस भेद	९०१	६	३	कर्म भा. १ गा ७
पर्याय श्रुत	९०१	६	३	कर्म भा १ गा ७
पर्याय समास श्रुत	९०१	६	३	कर्म भा १ गा ७
पर्यायार्थिक नय	१७	१	१४	रत्ना परि ७ सू ५
पर्यायार्थिक नय के छः भेद	५६२	२	४२१	आगम, द्रव्य न अध्या ५
पर्युपासना के परम्परा फल	७०८	३	३८३	ठा ३ उ ३ सू १९०
पर्युषणा कल्प	६६२	३	२४१	पंचा १७ गा ३८-४०
पर्व छः अधिक तिथि वाले	४२४	२	४१	ठा ६ उ ३ सू ५२४, चन्द्र. प्रा १२
पर्व छः न्यूनतिथि वाले	४२३	२	४०	ठा ६ उ ३ सू ५२४, चन्द्र प्रा. १२, उत्त अ २६ गा १५
पर्व बीज	४६६	२	६६	दश. अ ४ सू १
पल्योपम	३२	१	२२	ठा २ उ ४ सू ९९

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पल्योपम की व्याख्या और उसके भेद	१०८	१	७५	अनु सू-१३८-१४०, प्रव द्वा. १५८गा १०१८-१०२६
पश्चानुपूर्वी	११६	१	८४	अनु सू ९६-९८
पाँच अङ्ग परार्थानुमान के	३८०	१	३९६	रत्ना परि ३, न्यायदी.प्रका ३
पाँच अणुव्रत	३००	१	२८८	आव ह अ.६पृ ८१७, ठा ५ सू ३८९, उपा.अ १सू ६, ध अधि. २श्लो २३–२९ पृ ५७-६७
पाँच अतिचार अचौर्याणु-व्रत के	३०३	१	२९६	उपा अ १सू ७, आव ह पृ ८२१, ध अधि २श्लो ४५पृ १०२
पाँचअतिचार अथितिसंवि-भाग व्रत के	३१२	१	३१३	उपा अ १सू.७, आव ह अ ६ पृ ८३६
पाँच अतिचार अनर्थदंड विरमण व्रत के	३०८	१	३०७	उपा अ १सू.७, प्रव द्वा ६गा २८२, आव ह अ ६पृ ८२९
पाँच अतिचार अपश्चिम मारणान्तिकी संलेखना के	३१३	१	३१४	उपा.अ १सू ७, ध अधि २श्लो. ६६ पृ २३०
पाँच अतिचार अहिंसाणु व्रत के	३०१	१	२९०	उपा अ १सू ७, ध अधि.२श्लो. ४३पृ १००, आव ह अ.६पृ ८१८
पाँचअतिचार उपभोगपरि-भोग परिमाण व्रत के	३०७	१	३०५	उपा.अ १सू७, प्रव द्वा ६गा २८१
पाँच अतिचार दिशा परि-माण व्रत के	३०६	१	३०३	उपा.अ.१ सू.७
पाँच अतिचार देशावका-शिक व्रत के	३१०	१	३१०	उपा अ १सू ७, आव ह अ ६पृ. ८३४, ध अधि २श्लो ५६पृ ११४
पाँच अतिचार परिग्रह परिमाण व्रत के	३०५	१	३००	उपा.अ १सू ७, आव ह अ.६ पृ ८२५, ध अधि २श्लो ४५-४८पृ १०५-१०७

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पाँच अतिचार प्रतिपूर्ण पौपध व्रत के	३११	१	३११	उपा अ १ सू ७
पाँच अतिचार संलेखना के	३१३	१	३१४	उपा अ. १ सू ७, ध. अधि. २श्लो. ६६ टी पृ. २३०
पाँच अतिचार सत्याणु व्रत के	३०२	१	२६४	उपा. अ १ सू ७, ध अधि २श्लो. ४४ पृ. १०१, आव. ह अ ६ पृ. ८२०
पाँच अतिचार समकित के	२८५	१	२६५	उपा. अ. १ सू. ७, आव ह पृ ८१०
पाँचअतिचारसामायिकव्रतके	३०६	१	३०६	उपा अ १ सू ७, आव ह पृ. ८३१
पाँच अतिचार स्वदार संतोप व्रत के	३०४	१	२६८	उपा अ १ सू ७ टी.
पाँच अतिशय आचार्य उपाध्याय के	३४२	१	३५३	ठा ५ उ २ सू ४३८
पाँच अनन्तक	४१७	१	४४१	ठा ५ उ. ३ सू ४६२
पाँच अनन्तक	४१८	१	४४२	ठा ५ उ. ३ सू ४६२
पाँच अनुत्तर केवली के	३७६	१	३६१	ठा. ५ उ. १ सू. ४१०
पाँच अनुत्तर विमान	३६६	१	४२०	पन्न प. १ सू. ३८, भ श. १४ उ. ७
१ पाँच अभिगम श्रावक के	३१४	१	३१५	भ श. २ उ. ५ सू १०६
पाँच अवग्रह	३३४	१	३४४	आचा श्रु. २ चू १ अ. ७ उ. २ सू १६२, भ श १६ उ. २ सू ५६७ प्रव द्वा ८५ गा ६८१
पाँच अवन्दनीय साधु	३४७	१	३५७	आव. ह अ. ३ नि गा ११०७, पृ ५१६, प्रव द्वा. २ गा १०३-२३
पाँच अशुभ भावना	४०१	१	४२८	प्रव. द्वा. ७३ गा ६४१, उत्त. अ. ३६ गा. २६१-२६४

१ साधु के सामने जाते समय सचित्त द्रव्यादि त्याग रूप पाले जाने वाले नियम।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पॉच असंयम	२९७	१	२८३	ठा ५उ २सू ४२९,४३०
पॉच अस्तिकाय	२७६	१	२५३	उत्त.अ २८गा ७-१२,ठा ५ उ ३ सू.४४१
1 पाँच आचार	३२४	१	३३२	ठा ५उ २सू ४३२, ध अधि ३ श्लो ५४ पृ १४०
पॉच आचार्य	३४१	१	३५२	ध अधि ३श्लो ४६टी पृ १२८
पॉचआलंबनस्थान धार्मिक के	३३३	१	३४३	ठा ५उ.३ सू.४४७
पॉच आश्रव	२८९	१	२६८	ठा ५उ २सू.४१८,सम ५
पॉच इन्द्रियाँ	३९२	१	४१८	पन्न प १५सु १९१,ठा ५उ ३ सू.४४३टी, जै प्र.
पॉच इन्द्रियों का विषय परिमाण	३९४	१	४१९	पन्न प १५उ.१सु १९५
पॉच इन्द्रियों के तेईस विषय	९२६	६	१७५	ठा सू.४७,३९०,५९९,पन्न प. २३उ.२सू.२९३,प.बोल १२, तत्त्वार्थ अध्या २ सू.२१
पॉच इन्द्रियों के संस्थान	३९३	१	४१९	पन्न प १५,ठा.५ सू ४४३टी
पाँच कलहस्थान गच्छ में आचार्य उपाध्याय के	३४४	१	३५५	ठा ५उ.१सू.३९९
पॉच कल्याणक	२७५	१	२५३	पचा ९गा.३०-३१, दशा.द.८
2 पांच कामगुण	३९५	१	४२०	ठा ५उ १सू ३९०
पांच कारण अवधिज्ञान या अवधिज्ञानी के चलित होने के	३७७	१	३९२	ठा ५उ १ सू ३९४
पॉच कारण आचार्य उपाध्याय के गण से निकलने के	३४३	१	३५४	ठा.५ उ.२ सू.४३९

1 मोक्ष प्राप्ति के लिये किये जाने वाला ज्ञानादि आसेवन रूप अनुष्ठान विशेष।

2 काम अर्थात् अभिलाषा को उत्पन्न करने वाले गुण, शब्दादि।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पाँच कारण चौमासे के पिछले सित्तर दिनों में विहार करने के	३३७	१	३४७	ठा ५ उ २ सू ४१३
पाँच कारण चौमासे के प्रारंभिक पचास दिनों में विहार करने के	३३६	१	३४७	ठा ५ उ २ सू ४१३
पाँच कारण दुर्लभ बोधि के	२८६	१	२६६	ठा ५ उ २ सू ४२६
पाँच कारण निद्रा से जागने के	४२०	१	४४४	ठा ५ उ.२ सू ४३६
पाँच कारण पारंचित प्रायश्चित्त के	३४६	१	३५६	ठा ५ उ १ सू ३६८
पाँच कारण मोक्ष प्राप्ति के	२७६	१	२५७	आगम, कारण, सम्मति भा. ५ कांड ३ गा ५३
पाँच कारण शिक्षा में बाधक	४२३	१	४४६	उत्त अ ११ गा ३
पाँच कारण संभोगी साधु को अलग करने के	३४५	१	३५६	ठा ५ उ १ सू ३६८
पाँच कारण साधु द्वारा साध्वी को ग्रहण करने या सहारा देने (स्पर्श करने) के	३४०	१	३५१	ठा ५ उ २ सू ४३७
पाँच कारण साधु साध्वी के एक जगह स्थान, शय्या, निषद्या आदि के	३३९	१	३४९	ठा ५ उ २ सू ४१७
पाँच कारण सुलभबोधि के	२८७	१	२६६	ठा ५ उ २ सू ४२६
पाँच कारण सूत्र की वाचना के	३८२	१	३९८	ठा ५ उ ३ सू ४६८
पाँच कारणों से साधु मास में दो या तीन बार पांच महानदियों को पार कर सकता है	३३५	१	३४६	ठा.५ उ.२ सू.४१२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पाँच कारणों से साधु राजा के अन्तःपुर में प्रवेश कर सकता है	३३८	१	३४८	ठा ५उ २ सू ४१५
पॉच क्रिया	२६२	१	२७६	ठा २सू ६०,ठा ५सू ४१९,
पॉच क्रिया	२६३	१	२७७	पन्न प २२सू २७९-२८४
पॉच क्रिया	२६४	१	२७६	ठा २सू ६०,ठा ५सू ४१६,
पॉच क्रिया	२६५	१	२८०	आव ह.अ ४पृ ६१२-६१३
पॉच क्रिया	२६६	१	२८२	ठा सू ६०,४१६, आव०ह अ ४ पृ ६१४,सुय श्रु २अ २गा १६८
पाँच गति	२७८	१	२५७	ठा ५उ ३ सू ४४२
पाँच जाति	२८१	१	२५६	पन्न०प २३उ २सू २६३,प्रव द्वा १८७गा. १०९६-११०४
१ पॉच दग्धाक्षर	३८५	१	४०६	सरलपिंगल
पॉच देव	४२२	१	४४५	ठा ५सू ४०१,भ०श १२उ ६
पॉच दोष मांडला (ग्रासैषणा) के	३३०	१	३३६	उत्त अ २६ गा ३२,पि नि गा ६३५-६६८,ध अधि ३श्लो २३पृ ५५,उत्त अ २४गा १२,
पॉच धाय (धात्री)	४०८	१	४३४	भ श ११उ ११सू ४२६,आचा श्रु २चू ३अ २४सू १७६
पॉच निद्रा	४१६	१	४४२	कर्म भा १गा ११-१२,पन्न०प २३
पॉच निर्ग्रन्थ	३६६	१	३७६	ठा ५सू ४४५, भ श २५ उ ६
पाँच निर्याण मार्ग	२८०	१	२५६	ठा ५उ ३ सू ४६१
पाँच परमेष्ठी	२७४	१	२५२	भ मंगलाचरण
पाँच परिचारणा देवों की	३६८	१	४२२	पन्न प ३४,ठा ५सू ४०२ टी
पॉच परिज्ञा	३६२	१	३७५	ठा ५उ २सू ४२०

१ काव्य में विशेष अशुभ तथा दूषित माने जाने वाले अक्षर।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पाँच पाँच भावनाएं अदत्तादान विरमण व्रत,	३१९	१	३२६	समं २५, आचा श्रु २ चू ३ अ २४ सू १७९, आव. ह. अ ४ पृ ६५८, प्रव द्वा ७२ गा ६३६ से ६४०, ध अधि, ३ श्लो. ४५ टी पृ १२५
परिग्रह विरमण व्रत,	३२१	१	३२९	
प्राणातिपात विरमण व्रत,	३१७	१	३२४	
मृषावाद विरमण व्रत और	३१८	१	३२५	
मैथुन विरमण व्रत रूप पांच महाव्रतों की	३२०	१	३२७	
पाँच पाँच भेद अस्तिकाय के	२७७	१	२५४	ठा ५ उ ३ सू. ४४१
पाँच प्रकार आभियोगिकी भावना के	४०४	१	४३१	उत्त. अ ३६ गा २६२, प्रव द्वा ७३ गा ६४४
पाँच प्रकार आसुरी भावना के	४०५	१	४३१	उत्त अ. ३६ गा २६४, २६१, प्रव द्वा ७३ गा ६४५, ६४२
पाँच प्रकार कन्दर्प भावना के	४०२	१	४२८	
पाँच प्रकार का आचार प्रकल्प	३२५	१	३३३	ठा ५ उ २ सू ४२३
पाँच प्रकार का दण्ड	२९०	१	२६६	ठा ५ उ २ सू ४१८
पाँच प्रकार का प्रत्याख्यान	३२८	१	३३६	ठा ५ सू ४६६, आव. ह पृ ८४०
पाँच प्रकार का स्वप्न दर्शन	४२१	१	४४४	भग १६ उ ६ सू ५७७
पाँच प्रकार किल्विषी भावना के	४०३	१	४३०	उत्त अ ३६ गा. २६३, प्रव द्वा ७३
पाँच प्रकार की अचित्त वायु	४१३	१	४३८	ठा ५ उ. ३ सू ४४४
पाँच प्रकार के मच्छ	४१०	१	४३६	ठा ५ उ ३ सू ४५३
पाँच प्रकार के मुण्ड	३६४	१	३७८	ठा ५ उ ३ सू ४४३
पाँच प्रकार के मुण्ड	३६५	१	३७९	ठा. ५ उ ३ सू ४४३
पाँच प्रकार के वनीपक	३७३	१	३८७	ठा. ५ उ ३ सू ४५४
पाँच प्रकार के श्रमण	३७२	१	३८७	प्रव द्वा ९४ गा ७३१

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पाँच प्रकार सम्मोही भावना के	४०६	१	४३२	उत्त अ ३६ गा २६५ टी, प्रव द्वा ७३ गा. ६४६
पाँच प्रतिक्रमण	३२६	१	३३७	ठा ५ उ ३ सू ४६७, आव ह अ ४ गा १२५०-१२५१
पाँच प्रतिघात	४१६	१	४४०	ठा ५ उ १ सू ४०६
पाँच प्रमाद	२६१	१	२७०	पचा १ गा २३ टी, ध अधि २ श्लो ३६ टी पृ ८१, ठा ६ उ ३ सू ५०२, अष्ट १९ श्लो. १ टी
पाँच बोल छद्मस्थ साक्षात् नहीं जानता	३८६	१	४०६	ठा ५ उ ३ सू ४५०
पाँच बोल पास जाकर वंदना करने के असमय के	३४८	१	३६३	प्रव द्वा २ गा १२४, आव ह अ ३ नि गा ११९८ पृ ५४०
पाँच बोल पास जाकर वंदना करने योग्य समय के	३४९	१	३६४	प्रव द्वा २ गा १२५, आव ह अ ३ नि गा ११९९ पृ ५४१
पाँच बोल भगवान् महावीर से उपदिष्ट एवं अनुमत	३५०, ३५१	१, १	३६४, ३६५	ठा ५ सू ३९६, प्रव द्वा ६६ गा ५५४, ध अधि. ३ श्लो. ४६ पृ १२७
पाँच बोल भगवान् महावीर से उपदिष्ट एव अनुमत	३५२	१	३६७	ठा ५ उ १ सू ३९६
पाँच बोल महानिर्जरा और महापर्यवसान के	३६०	१	३७४	ठा ५ उ १ सू ३९७
पाँच बोल महानिर्जरा और महापर्यवसान के	३६१	१	३७४	ठा ५ उ १ सू ३९७
पाँच भाव जीवों के	३८७	१	४०७	कर्म भा. ४ गा. ६४-६८, अनु सू १२६, प्रव द्वा. २२१ गा. १२६०-१२६८

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पाँच भिक्षुक मच्छ की उपमा से	४११	१	४३७	ठा ५ उ २ सू ४५३
पाँच भूषण समकित के	२८४	१	२६४	ध अधि २ श्लो २२टी पृ ६३
पाँच भेद अन्तराय कर्म के	३८८	१	४१०	पन्न प. २३, कर्म भा १गा ५२
पाँच भेद आरोपणा के	३२६	१	३३४	ठा ५ उ २ सू ४३३, सम २८टी.
पाँच भेद कुशील के	३६९	१	३८४	ठा ५ उ ३ सू.४४५
पाँच भेद चारित्र के	३१५	१	३१५	ठा ५ सू ४२८, अनु सू १४४, विशे गा १२६०-१२८०
पाँच भेद ज्ञान के	३७५	१	३९०	ठा ५ सू ४६३, कर्म भा १, नं सू १
पाँच भेद ज्ञानावरणीय के	३७८	१	३९३	ठा ५ सू ४६४, कर्म भा १गा ९
पाँच भेद ज्योतिषी देवों के	३९९	१	४२३	ठा ५ सू ४०१, जी प्रति ३ सू. १२२
पाँच भेद तिर्यंच पंचेन्द्रिय के	४०९	१	४३५	पन्न प १, उत्त अ. ३६ गा १६९-९३
पाँच भेद निर्ग्रन्थ के	३७०	१	३८५	ठा. ५ उ ३ सू ४४५
पाँच भेद निषद्या के	३५८	१	३७२	ठा ५ सू ३९६टी, ठा ५ सू ४००
पाँच भेद परोक्ष प्रमाण के	३७९	१	३९५	रत्ना परि ३,१
पाँच भेद पुलाक के	३६७	१	३८२	ठा. ५ सू. ४४५ भ.श २५ उ ६
पाँच भेद बकुश के	३६८	१	३८३	ठा ५ उ ३ सू ४४५
पाँच भेद बन्धन नामकर्म के	३९०	१	४१५	कर्म भा १गा ३५, प्रव द्वा २१६
पाँच भेद वस्त्र के	३७४	१	३८९	ठा ५ उ ३ सू ४४६
पाँच भेद वेदिका प्रतिलेखना के	३२२	१	३२९	ठा ६ उ. ३ सू ५०३ टी.
पाँच भेद शरीर के	३८९	१	४१२	ठा ५ उ १ सू ३९५, पन्न प. २१ सू २६७, कर्म भा १ गा. ३३
पाँच भेद संघातन नामकर्म के	३९१	१	४१६	कर्म भा १गा ३६, प्रव द्वा २१६
पाँच भेद संसारी जीव के	४०७	१	४३३	ठा. ५ उ ३ सू ४४८
पाँच भेद समकित के	२८२	१	२६१	कर्म भा १गा. १५

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पाँच भेद स्नातक के	३७१	१	३८६	ठा.५सू ४४५,भ श २५ उ ६
पाँच भेद स्वाध्याय के	३८१	१	३६८	ठा ५ उ ३ सू ४६५
पाँच महानदियों को १ मास में दो, तीन बार साधु द्वारा पार करने के पाँच कारण	३३५	१	३४६	ठा.५उ.२सू.४१२
पाँच महाव्रत	३१६	१	३२१	दश.अ.४,ठा ५उ.१सू.३८६, प्रव द्वा ६६गा ५५३,ध अधि ३ श्लो ३६-४४ पृ १२०
पाँच मिथ्यात्व	२८८	१	२६७	कर्म भा ४ गा ५१,ध अधि २ श्लो २२टी पृ. ३६
पाँच रस	४१५	१	४३६	ठा ५उ १सू ३६०
पाँच लक्षण समकित के	२८३	१	२६३	ध अधि २श्लो २२ टी. पृ ४३
पाँच वर्ग निरयावलिका के	३८४	१	३६६	निर
पाँच वर्ण	४१४	१	४३६	ठा ५उ १सू ३६०
पाँच व्यवहार	३६३	१	३७५	ठा ५सू ४२१, भ.श ८ उ.८ सू ३०४,व्यवभा पीठिका गा १-२
पाँच शौच (शुद्धि)	३२७	१	३३५	ठा.५उ ३सू ४४६
पाँच संयम	२६८	१	२८४	ठा ५उ २सू ४२६-४३०
पाँच संवत्सर	४००	१	४२४	ठा ५सू ४६०, प्रव. द्वा १४२
पाँच संवर	२६६	१	२८५	ठा.५सू ४१८,४२७,प्रश्न धर्मद्वार
पाँच सभाएं इन्द्रस्थान की	३६७	१	४२१	ठा ५उ ३सू ४७२
पाँच समिति की व्याख्या और उसके भेद	३२३	१	३३०	सम ५,उत्त अ २४गा २,ठा ५सू. ४५७,ध अधि.३श्लो ४७पृ १३०
पाँच स्थान केवली के परिषह उपसर्ग सहन करने के	३३२	१	३४२	ठा.५उ १सू ४०६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पाँचस्थानछद्मस्थकेपरिषह उपसर्ग सहन करने के	३३१	१	३४०	ठा ५उ १ सू ४०६
पाँचस्थानभगवान् महावीर से उपदिष्ट एवं अनुमत	३५३-३५७	१	३६७-३७३	ठा ५उ १सू.३६६
पाँचस्थानभगवान् महावीर से उपदिष्ट एवं अनुमत	३५८	१	३७३	ठा ५उ.१सू.३६६
पाँच स्थान सूत्र सीखने के	३८३	१	३६६	ठा.५उ ३ सू.४६८
पाँच स्थावरकाय	४१२	१	४३७	ठा.५उ.१सू ३६३
पाखण्ड धर्म	६६२	३	३६१	ठा १०उ.३सू ७६०
पाणिमाण विशोधन प्रतिलेखना	४४८	२	५३	ठा.६उ.३सू ५०३,उत्त अ २६ गा २५
[1] पाण्डुक निधि	६५४	६	२२१	ठा ६उ ३ सू ६७३
पात्र परिकर्मोपघात	६६८	३	२५५	ठा १०उ.३सू ७३८
पादपोपगमन मरण	८७६	५	३८५	सम १७,प्रव द्वा. १५७गा.१००७
पान पुण्य	६२७	३	१७२	ठा ६उ ३ सू ६७६
पानी(धोवन) इक्कीस प्रकार का	६१२	६	६३	आचा.श्रु २अ.१उ ७ ८सू ४१, ४३, पि नि गा १८-२१,दश. अ.५उ १ गा.७५-७६
पानैषणा के सात भेद	५२०	२	२५०	आचा.श्रु २ चू. १अ १उ ११ सू ६२,ठा.७उ.३ सू ५४५टी. ध अधि ३ श्लो २२टी पृ ५५
पाप प्रकृतियाँ बयासी	८०६	४	३५१	कर्म भा.५ गा. १६-१७, नव गा.१३-१५
पाप प्रकृतियाँ बयासी	६३३	३	१८२	कर्म भा.५ गा. १६-१७, नव गा.१३-१५

[1] चक्रवर्ती की नौ महानिधियों में से दूसरी निधि।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पापबाँधनेके अठारहप्रकार	६३३	३	१८२	दशा.द ६,ठा.१ सू ४८,भ.श १३.६
पापभोगनेकेब्यासीप्रकार	६३३	३	१८२	नव. कर्म भा.५गा १६-१७
पाप श्रुत के उनतीस भेद	६५६	६	३०५	सम २६,उत्त अ.३१गा.१६टी., आव ह.अ ४ पृ ६६०
पाप श्रुत नौ	६४३	३	२१४	ठा ६ड.३ सू.६७८
पाप स्थानक अठारह	८६५	५	४१२	ठा.१ सू ४८,प्रव द्वा. २३७गा १३५१-१३५३,दशा द ६, भ.श.१३ ६, भ श १२ उ.५
पारंचितप्रायश्चित्तके५बोल	३४६	१	३५६	ठा ५ उ १ सू ३६८
पारिग्रहिकी क्रिया	२६३	१	२७८	ठा २उ १सू ६०,ठा ५उ २सू. ४१६, पन्न प.२२ सू.२८४
पारिणामिक भाव की व्याख्या औरउसके तीनभेद	३८७	१	४०६	कर्म भा ४गा ६६, अनु सू १२६, प्रव द्वा २२१ गा १२६४
पारिणामिकी बुद्धि	२०१	१	१६०	ठा ४उ.४सू ३६४,न सू २६
पारिणामिकी(परिणामिया)बुद्धिके इक्कीसदृष्टान्त	६१५	६	७३	न सू.२७गा.७१-७४,आव.ह. गा-६४८-६५१
पारितापनिकी क्रिया	२६२	१	२७७	ठा २उ १सू ६०,ठा ५उ २सू. ४१६, पन्न प.२२ सू २७६
पारिषद्य	७२६	३	४१६	तत्त्वार्थ अध्या.४ सू.४
१ पार्श्वनाथ भगवान्के गणधर आठ	५६५	३	३	ठा ८उ.३सू ६१७,सम ८
पास जाकर वन्दना करने के पाँच असमय	३४८	१	३६३	प्रव द्वा २गा १२४,आव ह अ. ३ नि.गा.११६८ पृ ५४०
पास जाकर वन्दना करने योग्य समय पाँच	३४६	१	३६४	प्रव द्वा २गा.१२५,आव.ह अ.३ नि गा.११६६पृ.५४१

१ पृष्ठ ३७ पर टिप्पणी देखो।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पासत्थ(पार्श्वस्थ)साधु	३४७	१	३५७	प्रव द्वा २गा.१०४-१०५,आव ह अ.३नि गा.११०७-११०८
पिंगल निधि	६५४	३	२२१	ठा ६उ ३सू ६७३
पिण्डस्थ धर्मध्यान	२२४	१	२०८	ज्ञान प्रक ३७,यो प्रका ७,क भा २ श्लो २०७
पिंडैपणाएं सात	५१६	२	२४६	आचा.श्रु.२ चू १अ १उ ११ सू ६२,ठा.७उ.३सू.५४५टी ध अधि ३श्लो.२२टी.पृ ४५
पिता के तीन अङ्ग	१२२	१	८७	ठा ३उ ४सू २०६
पिहिय दोष(ग्रहणैषणा का एक दोष)	६६३	३	२४३	प्रव द्वा ६७गा ५६८,पि नि.गा. ५२०,ध अधि ३ श्लो २२टी. पृ ४१,पचा १३गा.२६
पीड़ित वायु	४१३	१	४३६	ठा ५उ ३सू ४४४
पुण्डरीक,कुण्डरीककी कथा	६००	५	४७२	ज्ञा०अ १६
पुण्य की तीन अवस्थाएं	६३३	३	२०१	नव०गा.१ व्याख्या
पुण्य के नौ भेद	६२७	३	१७२	ठा.६ उ ३सू ६७६
पुण्यपाप विषयक गणधर अचलभ्राताका शंकासमाधान	७७५	४	५४	विशे.गा १६०५-१६४८
पुण्य प्रकृतियाँ	८०६	४	३५०	कर्म भा ५ गा १,१५,१७, नव०गा १०-१२
पुण्य प्रकृतियाँ बयालीस	६३३	३	१८२	कर्म भा ५ गा १,१५,१७, नव०गा १०-१२
पुण्य प्रकृतियाँ बयालीस	६६३	७	१५०	कर्म भा ५ गा १,१५,१७, नव०गा १०-१२
पुण्य बाँधने के नौ प्रकार	६३३	३	१८१	नव , ठा.६उ.३सू ६७६
पुण्यभोगने के ४२ प्रकार	६३३	३	१८२	नव , कर्म भा ५ गा १५-१७
पुण्यवान को प्राप्त दसबोल	६५६	३	२२४	उत्त अ.३गा १७-१८
पुत्र की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२७१	नं सू २७ गा.६३ टी

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पुत्र के दस प्रकार	६७७	३	२६५	ठा १० उ ३ सू.७६२
पुद्गल के छः भेद	४२६	२	२५	दश अ.४ भाष्य गा ६० टी
पुद्गलछःकीइन्द्रियविषयता	४२६	२	२५	दश० अ.४ भाष्य गा ६० टी
पुद्गल द्रव्य	४२४	२	३	आगम, उत्त अ ३६ गा १०
पुद्गल परमाणुओं की वर्गणा आठ	६१७	३	१३४	विशे गा ६३१-६३७
पुद्गल परावर्तन आठ	६१८	३	१३६	कर्म भा ५ गा ८६-८८
पुद्गल परावर्तन सात	५४६	२	२८४	ठा ३ उ ४ सू १६३ टी, भ श १२ उ ४ सू ४४६, कर्म भा ५ गा. ८७-८८, प्रव द्वा. १६२ गा १०३६ से १०५२, पच द्वा २ गा ३६ टी.
पुद्गल परिणाम चार	२६६	१	२४७	ठा ४ उ. १ सू २६५
पुद्गलास्तिकाय के ५ प्रकार	२७७	१	२५६	ठा ५ उ ३ सू ४४१
पुद्गलोंकेशुभाशुभपरिणाम	६००	५	४५८	ज्ञा० अ १२
पुप्फचूलिया सूत्र के दस अध्ययनों का विषय वर्णन	३८४	१	४०३	निर०
पुप्फचूलिया सूत्र के दस अध्ययनों का विषयवर्णन	७७७	४	२३४	निर०
पुप्फियासूत्र के दस अध्ययनोंकासंक्षिप्तविषयवर्णन	३८४	१	४०१	निर०
पुप्फिया सूत्र के दस अध्ययनों कासंक्षिप्त विषयवर्णन	७७७	४	२३३	निर०
पुरिमड्ढ(दो पहर) अवड्ढ (तीन पहर) का पच्चक्खाण	७०५	३	३७७	प्रव द्वा. ४ गा २०१-२, आव ह. अ ६ गा १५६७, पंचा ५ गा ८-११
पुरिमड्ढ (दो पोरिसी) के सात आगार	५१६	२	२४६	आव ह अ ६ पृ ८५३, प्रव द्वा ४ गा २०३

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पुरुषकार(उद्योग)	२७६	१	२५७	आगम,कारण,सम्मति.भा ४ कांड ३ गा.५३
पुरुष के तीन प्रकार	८४	१	६१	ठा ३ उ ३ सू १६६
पुरुष लिंग सिद्ध	८४६	५	११६	पन्न.प १ सू.७
पुरुष वेद	६८	१	४६	वृ उ ४,कर्म.भा.१ गा.२२
पुरुषार्थ	२७६	१	२५७	आगम ,कारण ,सम्मति भा ४ कांड ३ गा ५३
पुरुषार्थ के चार भेद	१६४	१	१५१	पुरुषा
पुलाक	३६६	१	३७६	ठा.५ उ ३ सू ४४५,भग श २५ उ ६ सू.७५१
पुलाक (प्रतिसेवा पुलाक) के पाँच भेद	३६७	१	३८२	
पुलाक लब्धि	६५४	६	२६७	प्रव द्वा २७० गा १४६४
पुष्करवरद्वीपमेंचन्द्रसूर्यादि ज्योतिषी देवों की संख्या	७६६	४	३०१	सूर्य प्रा.१६ सू.१००
पुष्करोदधिसमुद्रमेंचन्द्रसूर्यादि ज्योतिषी देवोंकीसंख्या	७६६	४	३०२	सूर्य प्रा १६ सू १००
पुष्पचूला	८७५	५	३६४	आव ह नि गा १२८४
पुष्पवती देवी की कथा पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	८०	न.सू २७ गा ७२, आव ह नि. गा ६४६
पूजातिशय	१२६ख	१	६७	स्या. का १ टी
पूजा प्रशंसा के त्याग पर दस गाथाएं	६६४	७	१६०	
पूज्यता प्रदर्शक १५ गाथाएं	८५३	५	१२७	दश अ.६ उ ३

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पूति कर्म दोष	८६५	५	१६२	प्रव द्वा ६७गा ५६५, ध अधि. ३श्लो २२टी पृ ३८, पिं नि गा ६२, पि.वि गा ३, पचा १३गा ५
पूरक प्राणायाम	५५६	२	३०३	यो प्रका ५ श्लो ७
पूर्णिमाएं बारह	८००	४	३०२	सूर्य प्रा १०प्रा प्रा ६ सू ३८
पूर्वकृत कर्म क्षय	२७६	१	२५७	आगम, कारण, सम्मति. भा ५ काड३ गा ५३
पूर्व चौदह	८२३	५	१२	न सु ५७, सम १४,१४७
पूर्वधर लब्धि	६५४	६	२६४	प्रव द्वा २७० गा १४६३
पूर्वमीमांसा दर्शन	४६७	२	१५२	
पूर्वश्रुत	६०१	६	५	कर्म भा. १ गा ७
पूर्व समास श्रुत	६०१	६	५	कर्म भा १ गा ७
पूर्वानुपूर्वी	११६	१	८४	अनु सू ६६-६८
पूर्वार्द्धिक (पुरिमड्ढी)	३५५	१	३७०	ठा ५उ १ सू ३६६
१ पृच्छना	३८१	१	३६८	ठा ५उ ३ सु ४६५
पृथक्त्व वितर्क सविचारी शुक्लध्यान	२२५	१	२०६	ठा ४उ १सु २४७, ज्ञान प्रक ४२, आव ह अ ४ ध्यानशतक गा ७७-७८, क.भा २श्लो ११२
पृथुल संस्थान	५५२	२	२६३	ठा १सू ४७, ठा ७ सू ५४८
पृथ्वियां आठ	६०८	३	१२६	ठा ८उ ३सू ६४८
पृथ्वीआदिभूतोंके विषयमें व्यक्तस्वामीकाशंकासमाधान	७७५	४	३६	विशे गा १६८७-१७६६
पृथ्वीकाय	४६२	२	६४	ठा ६उ ३सु ४८०, दश अ ४, कर्म.भा ४ गा १०

१ सीखे हुए सूत्रादि ज्ञान में शंका होने पर प्रश्न करना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पृथ्वीकाय के चालीस भेद	९८७	७	१४५	पन्न प १ सू.१५
पृथ्वीकाय के सात भेद	५४५	२	२८४	पन्न प.१ सू १४
पृथ्वी के छः भेद	४६५	२	६५	जी. प्रति ३ सू १०१
पृथ्वी के देशतः धूजने के ३ बोल	११६	१	८२	ठा ३उ ४ सू १९८
पृथ्वी ३ वलयों से वलयित है	११५	१	८१	ठा ३उ.४ सू २२४
पृथ्वी सारी धूजने के ३ बोल	११७	१	८२	ठा ३उ.४ सू १९८
१ पृष्ट लाभिक	३५४	१	३६९	ठा ५उ.१ सू ३९६
पृष्टिजा (पुट्टिया) क्रिया	२९४	१	२७९	ठा.२ सू ६०, ठा ५सू ४१९
पेटा गोचरी	४४६	२	५१	ठा ६उ.३सू ५१४, उत्त अ ३० गा १९, प्रव द्वा ९७गा ७४५, ध अधि ३श्लो २२टी पृ ३७
पैंतालीस आगम	९९७	७	२६०	जैन ग्र., अभि.रा भा.१प्रस्तावना
पैंतालीस गाथा उत्तराध्ययन सूत्र के पचीसवें अध्ययन की	९९६	७	२५४	उत्त अ २५
पैंतीस गुण गृहस्थ धर्म के	९८०	७	७४	यो प्रका १श्लो ४७-५६पृ ५०
पैंतीस वाणी के अतिशय	९७९	७	७१	सम.३५टी, राप्र ४टी, उव सू १० टी.
पोट्टिल अनगार	६२४	३	१६४	ठा.९सू६९१, अणु व.३अ ६
२ पोतक वस्त्र	३७४	१	३८९	ठा ५उ ३सू ४४६
पोरिसी का प्रमाण बारह महीनों का	८०३	४	३०४	उत्त अ २६गा १३-१४
पोरिसी के छः आगार	४८३	२	९७	प्रव द्वा ४ गा २०१-२०२, आव ह अ.६नि गा १५९७पृ. ८५१-५२, पंचा ५गा ८-११
पोरिसी साड्ढपोरिसी का पच्चक्खाण	७०५	३	३७७	प्रव द्वा ४ गा २०१-२०२, आव ह अ.६नि गा १५९७पृ. ८५१-५२, पंचा ५गा ८-११

१ आहार आदि के लिए पूछने वाले दाता से ही भिक्षा देने वाला अभिग्रहधारी साधु।

२ कपास का बना हुआ वस्त्र।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पौद्गलिक सम्यक्त्व	१०	१	१०	प्रव द्वा १४९ गा ९४२ टी.
पौषध के अठारह दोष	८९४	५	४१०	शिक्षा.
पौषध के पाँच अतिचार	३११	१	३११	उपा.अ १ सू ७
पौषध व्रत निश्चय और व्यवहार से	७९४	४	२८४	आगम.
पौषधोपवास व्रत	१८६	१	१४०	पंचा १गा २९,आव ह अ ६पृ-८३५
१ प्रकीर्णक	७२९	३	४१६	तत्त्वार्थ-अध्या ४ सू ४
प्रकीर्ण तप	४७७	२	८८	उत्त-अ ३० गा ११
प्रकृति बन्ध	२४७	१	२३१	ठा.४सू.२९६,कर्म-भा १गा २
प्रकृतियाँ२८मोहनीयकर्मकी	९५१	६	२८४	कर्म.भा १गा १३-२२,सम २८
प्रकृतियाँ४१उदीरणाबिना उदय में आने वाली	९८९	७	१४६	कर्म भा ६गा ५४-५५
प्रकृतियाँ४२नाम कर्म की	९९१	७	१४९	पन्न.प २३उ.२सू २९३
प्रकृतियाँ४२ पुण्य की	९९३	७	१५०	कर्म.भा-५गा १५,१७
प्रचला	४१९	१	४४३	कर्म भा १गा.११, पन्न प २३ उ २सू २९३
प्रचलाप्रचला	४१९	१	४४३	
प्रच्छन्न काल आगार	४८३	२	९८	आव.ह अ ६ पृ ५८२,प्रव द्वा.४
२ प्रज्ञा अवस्था	६७८	३	२६८	ठा १०उ ३सू ७७२
प्रतर तप	४७७	२	८७	उत्त अ ३०गा १०
प्रतर नरकों में	५६०	२	३२८	जी प्रति.३सू ७० टी
प्रतर भेद	७५०	३	४३३	ठा १०सू ७१३टी ,पन्न प ११

१ वे देव जो नगरनिवासी अथवा साधारण जनता की तरह रहते हैं।

२ दस अवस्थाओं में से एक अवस्था, इस अवस्था को प्राप्त होने पर पुरुष को अपने अभीष्ट की सिद्धि एवं कुटुम्बवृद्धि की बुद्धि उत्पन्न होती है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
प्रतान स्वप्न दर्शन	४२१	१	४४४	भ श १६ उ ६ सू ५७७
प्रतिक्रमण आवश्यक	४७६	२	६१	आव ह अ ४
प्रतिक्रमण कल्प	६६२	३	२४०	पचा १७ गा. ३२-३४
प्रतिक्रमण के आठ भेद और उन पर दृष्टान्त	५७६	३	२१	आव ह अ ४ नि गा १२३३-१२४२
प्रतिक्रमण के छः भेद	४८०	२	६४	ठा. ६ उ ३ सू. ५३८
प्रतिक्रमण क्या व्रतरहित को भी करना चाहिए?	९१८	६	१४४	आव ह अ ४ नि. गा १२७० टी पृ ५६८, पंच प्र (वंदित्ता सूत्र)
प्रतिक्रमण पर कथा	५७६	३	२२	आव. ह अ ४ नि गा १२४२
प्रतिक्रमण पाँच	३२६	१	३३७	ठा ५ उ ३ सू ४६७, आव ह अ ४ नि गा १२५०-१२५१
प्रतिघात पाँच	४१६	१	४४०	ठा ५ उ १ सू ४०६
१ प्रतिचरणा पर कथा	५७६	३	२३	आव ह अ ४ नि गा १२४२
प्रतिज्ञा	३८०	१	३६६	रत्ना परि. ३, न्यायदी. प्रका ३
प्रतिपत्ति श्रुत	९०१	६	४	कर्म भा १ गा. ७
प्रतिपत्ति समास श्रुत	९०१	६	४	कर्म. भा १ गा ७
प्रतिपाती अवधिज्ञान	४२८	२	२८	ठा ६ सू. ५२६, नं सू १४
प्रतिपूर्ण पौषध व्रत के पाँच अतिचार	३११	१	३११	उपा अ १ सू. ७
२ प्रतिपृच्छा समाचारी	६६४	३	२५०	भ श २५ उ ७ सू ८०१, ठा १० उ ३ सू ७४९, उत्त. अ २६ गा २, प्रव द्वा १०१ गा ७६०

१ संयम का सावधानता पूर्वक निर्दोष पालन करना प्रतिचरणा है।

२ गुरु ने पहले जिस कार्य के लिए निषेध कर दिया है उसी कार्य में आवश्यकतानुसार फिर प्रवृत्त होना हो तो विनय पूर्वक गुरु से पूछना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
प्रतिमास्थायी[१]	३५७	१	३७२	ठा ५ उ १ सू ३६६
प्रतिलेखना की विधि के छः भेद	४४७	२	५२	उत्त अ २६ गा २४
प्रतिलेखना के पचीस भेद	९३९	६	२१८	उत्त अ २६ गा. २४-२७
प्रतिवासुदेव नौ	६४८	३	२१८	सम १५८, प्रव द्वा २११ गा. १२१३, आव ह. भाष्यगा ४२ पृ १५९
प्रतिसंलीनता तप	४७६	२	८६	उत्त अ ३० गा ८, ठा ६ सू ५११, उव सू. १९, प्रव द्वा ६ गा २७०
प्रतिसंलीनता तप के तेरह भेद	८१५	४	३९५	भ श २५ उ ७ सू ८०२ उव सू १९
प्रतिसंलीनता तप के भेद चार और अवान्तर भेद तेरह	६३२	३	१९२	उव सू. १९, भ श २५ उ ७ सू ८०२
प्रतिसेवना कुशील	३६६	१	३८१	ठा ५ सू. ४४५, भ. श २५ उ ६
प्रतिसेवना कुशील के ५ भेद	३६९	१	३८४	ठा ५ उ ३ सू ४४५
प्रतिसेवना दस	६६६	३	२५२	भ श. २५ उ ७ सू ७९९, ठा. १० उ ३ सू ७३३
प्रतिसेवना प्रायश्चित्त	२४५ ख	१	२२३	ठा ४ उ १ सू २६३
प्रतिसेवा पुलाक	३६६	१	३८०	ठा ५ सू. ४४५, भ. श २५ उ. ६
प्रतिस्रोतचारी भिक्षु	४११	१	४३७	ठा ५ उ ३ सू ४५३
प्रतिस्रोतचारी मच्छ	४१०	१	४३६	ठा ५ उ ३ सू ४५३
प्रतीत सत्य	६९८	३	३६९	ठा १० सू ७४१, पन्न प ११ सू १६५, ध अधि ३ श्लो ४१ पृ १२१
प्रतीत साध्य धर्म विशेषण पक्षाभास	५४९	२	२९१	रत्ना परि ६ सू ३९
प्रतीति	१२७	१	९०	भ श १ उ ९ सू ७६
प्रतीति निराकृतवस्तुदोष	७२३	३	४११	ठा. १० उ ३ सू ७४३ टी

[१] एक रात्रि आदि की पडिमा अंगीकार कर कायोत्सर्ग में स्थिर रहने वाला साधु।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
प्रत्यक्ष ज्ञान	१२	१	११	ठा २उ १सू ७१,नं सू २
प्रत्यक्ष निराकृत वस्तु दोष	७३३	३	४११	ठा १०उ.३सू ७४३ टी
प्रत्यक्ष निराकृत साध्यधर्म विशेषण पक्षाभास	५४६	२	२६१	रत्ना परि.६ सू ४१
प्रत्यक्ष प्रमाण	२०२	१	१६	भ श ५उ ४सू १९३,अनु सू १४४
प्रत्यक्ष व्यवसाय	८५	१	६२	ठा ३उ ३सू १८५
प्रत्यनीक के छः प्रकार	४४५	२	४६	भ.श ८ उ.८ सू ३३६
प्रत्यभिज्ञान	३७६	१	३६५	रत्ना परि ३ सू ५
प्रत्याख्यान आवश्यक	४७६	२	६३	आव ह अ ६
प्रत्याख्यान के दो भेद	५४	१	३१	भ श ७ उ २ सू २७१
प्रत्याख्यान दस	७०४	३	३७५	ठा १० सू ७४८,भ.श.७उ २
प्रत्याख्यान पाँच प्रकार का	३२८	१	३३६	ठा ५सू.४६६,आव ह.पृ ८४७
प्रत्याख्यान पालने के छः अङ्ग	४८२	२	६६	आव.ह अ ६नि गा १५६३पृ ८५१,ध अधि.२श्लो.६३पृ.१६२
प्रत्याख्यान विशुद्धि के छः प्रकार	४८१	२	६५	ठा ६उ.३सू ४६६ टी,आव ह. अ ६नि गा.१५८६ पृ ८४६
प्रत्याख्यानावरण कषाय	१५८	१	११६	पन्न प.१४सू.१८८,ठा ४उ १सू २४६,कर्म भा १गा १७,१८
प्रत्याहार(योगका एक अंग)	६०१	३	११८	यो०,रा०यो०
प्रत्याहार प्राणायाम	५५६	२	३०३	यो.प्रका ५श्लो.८
प्रत्युत्पन्न दोष	७२३	३	४१२	ठा.१०उ ३ सू ७४३
प्रत्युपकार तीन का दुःशक्य है	१२४	१	८७	ठा.३उ १ सू १३५
प्रत्युपेक्षणा प्रमाद	४५६	२	६०	ठा.६उ.३ सू ५०२
प्रत्येक बुद्ध सिद्ध	८४६	५	११८	पन्न प.१ सू ७
प्रत्येक मिश्रिता सत्यामृषा	६६६	३	३७१	ठा.१० सू.७४१, पन्न प.११,ध अधि ३श्लो.४१टी.पृ.१२०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
प्रथमसप्तरात्रिदिवसनामक आठवीं भिक्खु पडिमा	७९५	४	२९०	सम १२,दशा द ७,भ श २उ १ सू ६३ टी.
प्रथम समय निर्ग्रन्थ	३७०	१	३८५	ठा ५ उ ३ सू ४४५
[1] प्रदेश	५	१	३	ठा.१ सू ४५
प्रदेश	७३	१	५३	ठा ३ उ २ सू १६६
प्रदेश अनन्तक	४१७	१	४४१	ठा ५ उ ३ सू ४६२
प्रदेश नाम निधत्तायु	४७३	२	८०	भ श ६ उ ८,ठा ६ सू ५३६ टी.
प्रदेश बन्ध	२४७	१	२३२	ठा ४ सू २९६,कर्म भा १ गा २
प्रदेशवत्त्व गुण	४२५	२	१६	द्रव्य त अध्या ११ श्लो ४
प्रधान (मुख्य)	३८	१	२४	तत्त्वार्थ.अध्या ५ सू ३१
प्रधानतापद नाम	७१९	३	३९७	अनु० सू १३०
[2] प्रपञ्चा अवस्था	६७८	३	२६८	ठा १० उ ३ सू ७७२
[3] प्रभावक आठ	५७२	३	१०	प्रव द्वा १४८ गा ९३४
प्रभावती	८७५	५	३६५	आव.ह नि गा १२८४
प्रभावना दर्शनाचार	५६९	३	८	पन्न प १ सू ३७,उत्त अ २८ गा ३१
प्रभासस्वामी की मोक्ष विषयक शंका और समाधान	७७५	४	६०	विशे गा १९७२-२०२४
प्रमत्त संयत गुणस्थान	८४७	५	७६	कर्म भा २ गा २
प्रमाण	३७	१	२३	रत्ना० परि १ सू.२
प्रमाण	४२७	२	२६	अनु० सू ७०
प्रमाण और नय	४९७	२	१७०	
प्रमाण चार	२०२	१	१६०	भ श.५ उ ४ सू १९३, अनु सू १४४

१ स्कन्ध या देश में मिला हुवा द्रव्य का अति सूक्ष्म विभाग ।

२ इस अवस्था को प्राप्त होने पर पुरुष का स्वास्थ्य गिरने लगता है ।

३ जो धर्म के प्रचार में सहायक होते है वे प्रभावक कहलाते है ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
प्रमाण नाम	७१६	३	३९९	अनु० सू १३०
प्रमाण नाम के चार भेद	७१६	३	४००	अनु० सू १३०
प्रमाण संवत्सर की व्याख्या और उसके पाँच भेद	४००	१	४२५	ठा ५ उ ३ सू ४६०, प्रव द्वा. १४२ गा ९०१
प्रमाणांगुल	११८	१	८३	अनु० सू १३३
प्रमाद आठ	५८०	३	३६	प्रव द्वा २०७ गा १२०७-८
प्रमाद आश्रव	२८९	१	२६८	ठा ५ उ २ सू ४१८, सम. ५
प्रमाद छः	४५६	२	५९	ठा ६ उ ३ सू ५०२
प्रमाद पाँच	२९१	१	२७०	ठा ६ सू ५०२, ध अधि. श्लो ३९ टी पृ ८१, प्रवा १२७-२१, अष्ट १६ श्लो १ टी
प्रमाद प्रतिलेखना	५२१	२	२५१	उत्त. अ २६ गा २७
प्रमाद प्रतिलेखना छः	४४९	२	५३	ठा ६ सू ५०३, उत्त अ. २६ गा २६
प्रमाद प्रतिलेखना सात	५२१	२	२५१	उत्त अ. २६ गा २७
प्रमादविषयक दस गाथाएं	९९४	७	२३१	
प्रमेयत्व गुण	४२५	२	१६	आगम, द्रव्यानु [illegible]
प्रमोद भावना	२४६	१	२२६	भावना, [illegible] ४२ ४३
प्रयत्न आदि के योग्य दस स्थान	६०६	३	१९४	ठा १०, उ ३ सू ७४८
प्रयोग कर्म	७६०	३	४४२	आचा [illegible] नि गा १८२
प्रयोग गति के पन्द्रह भेद	८५५	५	१३८	पन्न प १६ सू २०५, भग श ८ उ १ सू ३१५
१ प्रयोगमति सम्पदा	५७४	३	१४	दशा द ४, ठा ८ उ ३ सू ६०१
प्रलम्ब प्रमादप्रतिलेखना	५२१	२	२५१	उत्त अ २६ गा २७

१ शास्त्रार्थ या विवाद के लिए [illegible] आदि के ज्ञान की, [illegible]

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
[1] प्रवचन उद्भावनता	७६३	३	४४६	ठा १० उ ३ सू ७५८
प्रवचन माता	२२	१	१६	उत्त. अ २४ गा. १-२
प्रवचन माता आठ	५७०	३	८	उत्त. अ २४ गा १-२, सम ८
प्रवचन वत्सलता	७६३	३	४४६	ठा. १० उ ३ सू ७५८
प्रवचन संग्रह तयालीस	९९४	७	१५१	उत्त, दश, आचा, सूय, प्रश्न, द प, भ, ज्ञा, विशे, आव ह., उव., ध., आगम, समय, चू, प्रतिमा., पचव., पिं नि, पि वि, ध र, दशा
प्रवर्तक पदवी	५१३	२	२४०	ठा ३ उ. ३ सू १७७ टी
प्रवृत्ति	४५	१	२८	
प्रव्रज्या के दस कारण	६६५	३	२५१	ठा. १० उ ३ सू ७१२
प्रव्रज्या दस	६६५	३	२५१	ठा १० उ ३ सू ७१२
प्रव्रज्या प्राप्त पुरुष चार	१७६	१	१३०	ठा ४ उ ४ सू ३२७
प्रव्रज्या स्थविर	९१	१	६६	ठा ३ उ ३ सू १५९
[2] प्रव्राजकाचार्य	३४१	१	३५२	ध अधि. ३ श्लो ४६ टी पृ १२८
प्रशस्त काय विनय सात	५०३	२	२३२	भ श २५ उ ७ सू ८०२, ठा ७ उ ३ सू ५८५, उवे सू २०
प्रशस्त मन विनय सात	४९९	२	२३१	भ श २५ उ ७ सू ८०२, ठा ७ उ ३ सू ५८५, उवे सू २०
प्रशस्त वचन विनय सात	५०१	२	२३२	भ श २५ उ ७, ठा ७ सू ५८५
प्रशान्त रस	६३९	३	२११	अनु सू १२९ गा ८०-८१
प्रशास्तृ दोष	७२२	३	४०७	ठा १० उ ३ सू ७४३
प्रशिथिलप्रमादप्रतिलेखना	५२१	२	२५१	उत्त अ. २६ गा २७

---

१ द्वादशाङ्ग रूप प्रवचन का वर्णवाद एवं गुण कीर्तन करना प्रवचन उद्भावनता है।

२ सामायिक व्रत आदि का आरोपण करने वाले आचार्य।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
प्रश्न (आभियोगी की भावना का एक भेद)	४०४	१	४३१	उत्त.अ ३६ गा २६२, प्रव द्वा. ७३ गा ६४४
प्रश्न छः परदेशी राजा के	४६६	२	१०७	रा सू ६३
प्रश्न छः प्रकार का	४६४	२	१०३	ठा ६ उ ३ सू ५३४
प्रश्न व्याकरण सूत्र के दस अध्ययनों का विषय वर्णन	७७६	४	२०८	
प्रश्नाप्रश्न	४०४	१	४३१	उत्त.अ. ३६ गा. २६२, प्रव द्वा ७३
*प्रश्नोत्तर इक्कीस	६१८	६	१३३	
*प्रश्नोत्तर छत्तीस	६८३	७	६८	
प्रस्थापिता आरोपणा	३२६	१	३३५	ठा ५ उ २ सू ४३३
प्रस्फोटना प्रतिलेखना	४४६	२	५४	ठा. ६ सू ५०३, उत्त अ २६ गा २६
प्राकृत आदि १२ भेद भाषा के	७७६	४	२३८	प्रश्न धर्मद्वार २ सू २४ टी.
प्राकृत भाषा के छः भेद	४६२	२	१०२	प्रा, षड्भाषा
प्राक्पश्चात्संस्तव दोष	८६६	५	१६५	प्रव द्वा ६७ गा ५६८, ध. अधि. ३ श्लो २२ पृ ४०, पिं नि गा ४०६, पिं वि गा ५६, पंचा १३ गा. १६
प्राग्भारा अवस्था	६७८	३	२६८	ठा १० उ ३ सू. ७७२
प्राजापत्य स्थावरकाय	४१२	१	४३८	ठा ५ उ. १ सू ३६३
प्राण	१३०	१	६७	ठा ४ सू. ४३०, भ श २ उ १ सू ८८
प्राण	५५१	२	२६२	ज वक्ष. २ सू १८
प्राण अपानादि पाँच वायु	५५६	२	३०४	यो. प्रका. ५, राज., हठ
प्राण अपानादि पाँच वायु को जीतने का फल	५५६	२	३०५	यो. प्रका ५, राज., हठ,
प्राण दस	७२४	३	४१३	ठा १ सू. ४८ टी, प्रव.द्वा. १७० गा १०६६, नव.

* पृथक् पृथक् शास्त्रों एवं धर्म ग्रन्थों में से चुन कर लिये हुए प्रश्न तथा उनके उत्तर।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
प्राणातिपात विरमण व्रत रूप प्रथम महाव्रत की पाँच भावनाएं	३१७	१	३२४	आव.ह अ ४पृ ६५८,प्रव.द्वा. ७२गा ६३६-६४०,सम २५, आचा श्रु.२चू ३अ.२४सू १७६, ध अधि ३ श्लो.४५टी पृ १२५
प्राणातिपात विरमण व्रत निश्चय और व्यवहार से	७६४	४	२८०	आगम.
प्राणातिपातिकी क्रिया	२९२	१	२७७	ठा.२.उ १सू ६०,ठा ५उ २सू. ४१६,पन्न प २२सू.२७६
प्राणायाम	६०१	३	११८	यो०, रा०यो०
प्राणायाम सात	५५६	२	३०२	यो प्रका.५,रा.यो ,हठ
प्रातीत्यिकी क्रिया	२९४	१	२७९	ठा २सू ६०,ठा ५सू ४१९
प्रात्ययिक व्यवसाय	८५	१	६२	ठा ३उ.३ सू १८५
प्रादुष्करण दोष	८६५	५	१६३	प्रव.द्वा ६७गा ५६५,ध अधि ३श्लो २२टी पृ ३८,पि.नि गा. ९२,पि वि गा ३,पचा १३गा ५
प्राद्वेषिकी क्रिया	२९२	१	२७७	ठा २उ १सू.६०, ठा ५उ २सू ४१९, पन्न प २२ सू २७९
[1] प्रान्त चरक	३५२	१	३६७	ठा ५ उ १सू ३९६
प्रान्ताहार	३५६	१	३७१	ठा ५उ.१ सू ३९६
प्राप्यकारी इन्द्रियाँ चार	२१४	१	१९३	ठा ४सू ३३६,रत्ना परि २सू ५
प्राभृतप्राभृत श्रुत	९०१	६	४	कर्म भा १गा ७
प्राभृतप्राभृत समास श्रुत	९०१	६	४	कर्म भा १गा.७
प्राभृत श्रुत	९०१	६	४	कर्म भा.१गा.७
प्राभृत समास श्रुत	९०१	६	५	कर्म भा १गा.७

[1] भोजन से अवशिष्ट तुच्छ एवं हल्के आहार का गवेषक अभिग्रहधारी साधु।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
प्राभृतिका दोष	३४७	१	३५९	आव ह अ. नि गा. ११०७-८ पृ ५१६, प्रव द्वा २ गा १०३-२३
प्राभृतिका दोष	८६५	५	१६३	प्रव. द्वा ६७ गा ५६४, ध अधि ३ श्लो २२ टी पृ ३८, पि नि गा ९२, पि. वि गा ३, पचा. १३ गा ५
प्रामित्य दोष	८६५	५	१६३	
प्रायश्चित्त	४७८	२	८९	उव सू २०, उत्त अ ३० गा ३०, ठा ६ सू ५११, प्रव द्वा. ६ गा. २७१
प्रायश्चित्त आठ	५८१	३	३७	ठा ८ उ ३ सू ६०५
प्रायश्चित्त के अन्य चार भेद	२४५ख	१	२२३	ठा ४ उ. १ सू २६३
प्रायश्चित्त के पचास भेद	६३३	३	१९३	भ श. २५ उ ७ सू ८०२, उव. सू २०, ठा. १० उ ३ सू ७३३
प्रायश्चित्त के पचास भेद	१००४	७	२७१	भ श २५ उ ७ सू. ८०२
प्रायश्चित्त चार	२४५क	१	२२२	ठा ४ उ १ सू २६३
प्रायश्चित्त झूठा कलंक लगाने वाले को	४६०	२	६२	बृ (जी) उ. ६
प्रायश्चित्त दस	६७३	३	२६०	भ श २५ उ. ७, ठा. १० सू ७३३
प्रायोगिकी क्रिया	२९६	१	२८२	ठा. २ उ. १ सू ६० ठा ५ उ २ सू ४१९, आव ह अ. ४ पृ ६१४
प्रियसेन कृष्णारानी	६८६	३	३४७	अन्त० व ८ अ ९
प्रेम निःसृत असत्य	७००	३	३७२	ठा १० सू ७४१, पन्न प. ११ सू १६५, ध अधि. ३ श्लो. ४१ पृ १२२
प्रेम प्रत्यया (पेज्जवत्तिया) क्रिया	२९६	१	२८२	ठा २ उ १ सू ६०, ठा. ५ उ. २ सू ४१९, आव ह अ ४ पृ. ६१४

फ

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
फूल की उपमा से पुरुष चार	२७१	१	१२७	ठा ४ उ. ४ सू ३२०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
फूल के चार प्रकार	१७०	१	१२६	ठा.४उ ४ सू.३२०
फोड़ी कम्मे कर्मादान	८६०	५	१४५	उपा अ १सू ७,भ श.८उ ५सू. ३३०,आव ह अ ६पृ ८२८
ब				
बकुश	३६६	१	३८०	ठा ५सू.४४५,भ श २५उ.६
बकुश के पाँच भेद	३६८	१	३८३	ठा ५उ ३ सू.४४५
बत्तीस अस्वाध्याय	९६८	७	२८	ठा ४उ २सू.२८५,ठा १०उ ३ सू.७१४,प्रव द्वा २६८गा.१४५०-१४७१,व्यव.भा उ ७गा.२६६-३१६,आव ह अ.४गा १३२१-६०
बत्तीस उपमा शील की	९६४	७	१५	प्रश्न धर्मद्वार ४ सू २७
बत्तीस गाथा अकाम मरणीय अध्ययन की	९७२	७	४६	उत्त अ ५
बत्तीस गाथा बहुश्रुत पूजा अध्ययन की	९७३	७	५१	उत्त अ ११
बत्तीसगाथासूयगडांगसूत्र केदूसरे अ०केदूसरे उ०की	९७४	७	५६	सूय अ २उ २
बत्तीस दोष तथा आठ गुण सूत्र के	९६७	७	२३	अनु सू १५१टी ,विशे गा ९९९ टी ,बृ गा २८७-२८८पीठिका
बत्तीस दोष वन्दना के	९६९	७	३८	आव ह अ ३गा १२०७-११पृ ५४३,बृ उ.३गा ४४७१-९४, प्रव द्वा २गा १५०-१७३
बत्तीस दोष सामायिक के	९७०	७	४३	शिक्षा०
बत्तीस योग संग्रह	९६५	७	१९	उत्त अ ३१,प्रश्न धर्मद्वार५ सू २८,सम ३२, आव.ह अ ४ गा. १२७-४७८ पृ.६६३

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
वत्तीस विजय	६७१	७	४३	ज.वक्ष ४, लोक भा.२स १,
वत्तीस सूत्र	६६६	७	२१	
वधिरोल्लाप का दृष्टान्त वचन अननुयोग पर	७८०	४	२४१	आव ह गा.१३३, वृ पीठिका नि गा.१७१
वन्ध	२५३	१	२३७	कर्म भा २गा १ व्याख्या
वन्ध	४६७	२	२०१	
वन्ध का स्वरूप समझाने के लिये मोदक का दृष्टान्त	२४८	१	२३२	ठा ४उ २सू २६६, कर्म भा १ गा २
वन्ध की व्याख्या और भेद	२४७	१	२३१	ठा ४सू २६६,कर्म भा १गा २
वन्ध के कारण आठ कर्मों के	५६०	३	४३	भ श ८ उ ६ सू ३५१
वन्ध के दो भेद	५२	१	३०	कर्म. भा.१ गा ३५ व्याख्या
वन्ध के भेद	४६७	२	२०४	
वन्ध तत्त्व के चार भेद	६३३	३	१६७	कर्म भा १गा २,नय ,ठा ४सू २६६
वन्धन करण	५६२	३	६५	कम्म गा २
वन्धन की व्याख्या और भेद	२६	१	१८	ठा २उ ४ सू ९६
वन्धन नामकर्म का स्वरूप और उसके पाँच भेद	३६०	१	४१५	कर्म भा १गा ३५,प्रव द्वा २१६ गा.१२७२
वन्धन नामकर्म के पन्द्रह भेद	८५६	५	१४०	कर्म भा.१गा.३७,कम्म.गा.१टी.
वन्धन परिणाम	७५०	३	४३०	ठा १०सू ७१३,पन्न प १३
वन्धन प्रतिघात	४१६	१	४४०	ठा ५ उ.१ सू.४०६
वन्ध मोक्ष विषयक गणधर मंडितस्वामी का शंकासमाधान	७७५	४	४४	विशे.गा १८०२-१८६३
वन्धाधिकार कर्मप्रकृतियों का गुणस्थान में	८४७	५	८८	कर्म.भा.२गा.३-१२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
बयालीसदोषआहारादिके	९९०	७	१४९	पिं नि गा ६६९
बयालीस पुण्य प्रकृतियाँ	९९३	७	१५०	कर्म भा ५ गा. १५-१७ ।
बयालीसप्रकृतिनामकर्मकी	९९१	७	१४९	पन्न प २३ उ ३ सू २९३
बयालीस भेद आश्रव के	९९२	७	१४९	नव० गा १६
बयासी पाप प्रकृतियाँ	६३३	३	१८२	कर्म भा ५ गा १५-१७, नव०
बलदस इन्द्रिय, ज्ञानादिके	६७५	३	२६३	ठा. १० उ ३ सू ७४०
बलदेव	४३८	२	४२	ठा ६ सू ४६१, पन्न. प १ सू ३७
बलदेव नौ	६४६	३	२१७	आव. ह पृ १५९, प्रव द्वा. २०९ गा १२११, सम. १५८
बलदेव और वासुदेवों के पूर्वभव के आचार्य नौ	६५१	३	२१९	सम १५८
बलदेव लब्धि	९५४	६	२९४	प्रव द्वा २७० गा १४९३
बलदेवों के पूर्वभव के नाम	६४९	३	२१८	सम १५८
बलमद	७०३	३	३७४	ठा १० सू ७१०, ठा ८ सू ६०६
बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रम का प्रतिघात	४१६	१	४४१	ठा ५ उ १ सू ४०६
[1] बला अवस्था	६७८	३	२६८	ठा १० उ ३ सू ७७२
बलाभियोग आगार	४५५	२	५९	उपा अ. १ सू ८, आव. ह अ ६ पृ ८१०, ध अधि २ श्लो २२ पृ ४१
बहिरात्मा	१२५	१	८९	परमा गा १३
[2] बहुमानाचार	५६८	३	६	ध अधि १ श्लो १९ टी पृ १८
बहुरत निह्नव का मत शंका समाधान सहित	५६१	२	३४२	विशे गा २३०६-२३३२, भ श ९ उ ३३, भ श. १ उ १, आव. ह भाष्य गा १२५-१२६ पृ ३१२

[1] दस अवस्थाओं में से चौथी अवस्था ।

[2] ज्ञानाचार का एक भेद, ज्ञानी और गुरु के प्रति भक्ति एव श्रद्धा रखना

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
बहुश्रुतपूजा अ० की ३२ गाथा	६७३	७	५१	उत्त अ ११
बहुश्रुतसाधु की १६ उपमाएं	८६३	५	१५५	उत्त अ. ११ गा १५-३०
बाईस निग्रह स्थान	६२१	६	१६२	प्र मी. अध्या १ आ १ सू ३४, न्यायप्र, न्यायसू अध्या ५ आ २
बाईस परिषह	६२०	६	१६०	सम २२, उत्त अ २, प्रव द्वा ८६ गा ६८५-६८६, तत्वार्थ अध्या. ६
बाईस विशेषण धर्म के	६१६	६	१५६	ध अधि ३ श्लो २७ टी. पृ. ६१
बादर	८	१	५	ठा २ उ १ सू ७३
बादर पुद्गल	४२६	२	२५	दश. अ. ४ भाष्य गा. ६० टी.
बादर बादर पुद्गल	४२६	२	२५	दश अ ४ भाष्य गा ६० टी
बादर वनस्पतिकाय छः	४६६	२	६६	दश० अ. ४ सू. १
बादर सूक्ष्म पुद्गल	४२६	२	२५	दश अ ४ भाष्य गा ६० टी.
बारह अमावस्याएं	८०१	४	३०३	सूर्य प्रा १० प्रा. प्रा ६ सू ३८
बारह आगार कायोत्सर्ग के	८०७	४	३१६	आव ह. अ ५ पृ. ७७८
बारह उपमाएं साधु की	८०५	४	३०६	अनु० सू १५० गा १३१
बारह उपयोग	७८६	४	२६७	पन्न. प. २६ सू ३१२
बारह उपांग सूत्र	७७७	४	२१५	
बारह गाथा दशवैकालिक सूत्र के चौथे अध्ययन की	८११	४	३५२	दश० अ ४ गा १४-२५
बारह गाथाएं समुद्रपालीय अध्ययन की	७८१	४	२५५	उत्त. अ. २१
बारह गाथाएं साधु के लिये मार्ग प्रदर्शक	७८१	४	२५५	उत्त० अ. २१
बारह गुण अरिहन्त देव के	७८२	४	२६०	सम ३४, प्रव द्वा. ४०, स्या गा. १

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
बारह ग्लान प्रतिचारी	७९७	४	२९७	प्रव द्वा ७१ गा. ६२९ से ६३५, नवपद गा १२६ पृ ३१६
* बारह चक्रवर्ती	७८३	४	२६०	ठा ८ उ ३ सू. ६३३, ठा २ उ ४ सू ११२, सम. ६४, १५८, आव ह अ १ नि गा. ३९७, त्रि प
बारह चक्रवर्ती आगामी उत्सर्पिणी के	७८४	४	२६५	सम. १५९
बारह दृष्टान्त अननुयोग तथा अनुयोग के	७८०	४	२३८	आव ह गा १३३-१३४, वृ पीठिका नि गा १७१-१७२
बारह दोष काया के सामायिक के	७८९	४	२७३	शिक्षा.
बारह द्वार कर्म प्रकृतियों के	८०९	४	३३६	कर्म भा ५ गा १-१९
बारह नाम ईषत्प्राग्भारा के	८१०	४	३५२	सम १२
बारह नाम मान के	७९०	४	२७५	भ. श १२ उ ५ सू ४४९
बारह पूर्णिमाएं	८००	४	३०२	सूर्य प्रा १० प्रा प्रा ६ सू ३८
बारह प्रकार का तप (निर्जरा)	४७६, ४७८	२, २	८५, ८९	उत्त अ ३०, उव सू १९-२०, ठा ६ सू ५११. प्रव द्वा. ६ गा २७०
बारह प्रकार के आर्य	७८५	४	२६६	वृ उ १ नि. गा ३२६३
बारह बाल मरण	७९८	४	२९८	भ श २ उ १ सू ९१
बारह भावना (अनुप्रेक्षा)	८१२	४	३५५	शा भा १, २, भावना ज्ञान प्रक २, प्रव द्वा ६७ गा ५७२-५७३, तत्त्वार्थ. अध्या ९ सू ७

* हरिभद्रीयावश्यक निर्युक्ति गाथा ४०१ में सुभूम और ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती का सातवीं नरक में जाना, मघवा और सनत्कुमार चक्रवर्ती का तीसरे सनत्कुमार देवलोक में उत्पन्न होना एवं शेष आठ चक्रवर्तियों का सिद्ध होना बतलाया है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
बारह भावना पर दोहे	८१२	४	३७६	
बारह भाव व्रत श्रावक के निश्चय और व्यवहार से	७९४	४	२८०	आगम.
बारह भिक्खु पडिमा	७९५	४	२८५	सम १२, दशा द ७, भ श. २ उ १
बारह भेद अप्रशस्त मन विनय के	७९१	४	२७५	अ सू २०
बारह भेद अवग्रह ज्ञान के	७८७	४	२६६	ठा ६ उ ३ सू ५१० टी, विशे. गा. ३०७. तत्त्वार्थ अध्या १ सू. १६
बारह भेद असत्यामृषा भाषा के	७८८	४	२७२	पन्न प ११ सू १६५ टी.
बारह भेद कल्पोपपन्न देवों के	८०८	४	३१८	पन्न प. २, ४, ६, जी प्रति. ३ सू. २०७-२२३, तत्त्वार्थ अध्या ४
बारह भेद भाषा के	७७९	४	२३८	प्रश्न धर्मद्वार २ सू. २४ टी
बारह भेद सूत्र के	७७८	४	२३५	सू उ १ गा १२२१
बारह महीनों में पोरिसी का परिमाण	८०३	४	३०४	उत्त अ २६ गा १३-१८
बारह मान्यताएं चन्द्र और सूर्यों की संख्या के विषय में	७९९	४	३००	सूर्यप्रा. १६ सू. १००
बारह मास	८०२	४	३०३	सूर्य प्रा १० प्रा. प्रा. १६
बारह विशेषण धर्म के	८०४	४	३०६	शा. भा २ प्रक १० (धर्मभावना)
बारह विशेषण सापेक्ष यति धर्म के	८०६	४	३१४	ध वि सू. ३६६
बारह व्रत श्रावक के				
(पाँच अणुव्रत)	३००	१	२८८	आवह अ. ६ पृ ८१७-३६, उपा अ. १ सू ६, ठा. ५ उ. ३८६, पंचा १ गा ७-३२, ध. अधि. २ श्लो. २२-४० पृ ५३-६४
(तीन गुणव्रत)	१२८क	१	९१	
(चार शिक्षाव्रत)	१८६	१	१४०	

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
बारह श्रमणोपासक आजीवक के	७६३	४	२७६	भ श ८ उ ५ सू ३३०
बारह संभोग	७६६	४	२६२	निशी.उ.५, सम १२, व्यव.भा उ ५
बाल अवस्था	६७८	३	२६७	ठा १० उ ३ सू ७७२
बाल पण्डित मरण	८७६	५	३८३	सम १७, प्रव द्वा १५७ गा १००६
बाल पण्डित वीर्यान्तराय	३८८	१	४१२	कर्म भा १ गा ५२, पन्न.प. २३
बाल मरण	८७६	५	३८३	सम १७, प्रव द्वा १५७ गा. १००६
बाल मरण के बारह भेद	७६८	४	२६८	भ श. २ उ १ सू ६१
बाल वीर्यान्तराय	३८८	१	४११	कर्म भा १ गा ५२, पन्न. प. २३
बावन अनाचीर्ण साधु के	१००७	७	२७२	दश अ. ३
बावन भेद विनय के	१००६	७	२७२	प्रव द्वा ६५ गा ५५१
बाहल्य (मोटाई) नरकों की	५६०	२	३२८	जी प्रति ३ सू. ६८
बाह्य तप छः	४७६	२	८५	उत्त. अ ३० गा ८, ठा. ६ सू ५११, उव सू १६, प्रव द्वा ६ गा २७०
[1] बाह्याबाह्यानुयोग	७१८	३	३६४	ठा १० उ ३ सू ७२७
बीज बुद्धि लब्धि	६५४	६	२६६	प्रव द्वा २७० गा १४६४
बीजरुचि (समकित का भेद)	६६३	३	३६३	उत्त अ २८ गा. २२
[2] बीज रूह	४६६	२	६६	दश अ. ४
बीभत्स रस	६३६	३	२०६	अनु सू १२६ गा. ७४-७५
बीस असमाधि स्थान	६०६	६	२१	सम २०, दशा. द. १
बीस आश्रव	६०७	६	२५	सम ५, प्रश्न. नि. गा २ पृ ३, ठा. ५ सू ४१८, ४२७, ७०६

१ द्रव्यानुयोग का भेद, बाह्य (विलक्षण) और अबाह्य (समान) का विचार।

२ बीज से उगने वाली वनस्पति, जैसे शालि आदि।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
बीस कल्प	९०४	६	९	बृ उ १
बीसगाथाचतुरंगीयअ०की	९०९	६	२६	उत्त०अ ३
बीस बोल तीर्थङ्करगोत्र बाँधने के	९०२	६	५	आव ह नि.गा.१७९-१८१प्र ११८, ज्ञा अ ८सू.६४, प्रव द्वा. १०गा ३१३-३१९
बीस भेद श्रुत ज्ञान के	९०१	६	५	कर्म भा १गा.७
बीस विहरमान	९०३	६	८	ठा.८सू ६३७टी.,विहर.,त्रिलोक.
बीस संवर	९०८	६	२५	ठा.५सू ४१८,४२७, ठा.१०सू. ७०९, प्रश्न संवरद्वार, सम ५
बीस स्त्रियाँ दीक्षा के अयोग्य	८९१	५	४०९	प्रव द्वा १०८गा.७९२, ध. अधि.३श्लो ७८टी पृ ३
बुद्ध बोधित सिद्ध	८४९	५	११९	पन्न १ सू ७
बुद्धि औत्पत्तिकी (उत्पातिया) के सत्ताईस दृष्टान्त	९४९	६	२४२	नं०सू २७
बुद्धि कम्मिया के १२ दृष्टान्त	७९२	४	२७६	नं०सू २७, आव ह नि गा ९४७
बुद्धि के चार भेद	२०१	१	१५९	नं०सू.२६, ठा ४ उ ४सू ३६४
बुद्धि पारिणामिकी (परिणामिया) के इक्कीस दृष्टान्त	९१५	६	७३	नं०सू २७गा.७१-७४, आव. ह नि गा ९४८-९५१
बृहत्कल्पसूत्र का विषयवर्णन	२०५	१	१८१	बृ.
बृहस्पतिदत्तकुमार की कथा	९१०	६	४१	वि०अ ५
बोटिकनामक आठवाँ निह्नव	५६१	२	३९९	विशे गा २५५०-२६०९
बोधि दुर्लभ भावना	८१२	४	३७१, ३८८	शा.भा.२प्रक १२ ठा.४उ ३सू ५८७, भावना.शान्त सु २, प्रव. द्वा ६७गा.५७३, नवतत्त्व गा ६
बौद्ध दर्शन	४९७	२	११७	

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
ब्रह्मचर्य	६६१	३	२३४	नव,सम १,शा.भा.१ प्रक.८
ब्रह्मचर्य की बत्तीस उपमा	९६४	७	१५	प्रश्न धर्मद्वार ४ सू २७
ब्रह्मचर्य के अठारह भेद	८९२	५	४१०	सम.१८,प्रव द्वा.१६८गा.१०६१
ब्रह्मचर्य के असमाधिस्थान	७०१	३	३७२	उत्त० अ १६
ब्रह्मचर्यगुप्ति नौ	६२८	३	१७३	ठा ९उ ३सू.६६३,सम ९
ब्रह्मचर्य पर सोलह गाथाएं	९९४	७	१७७	
ब्रह्मचर्य महाव्रत की पाँच भावनाएं	३२०	१	३२७	आव.ह म ४पृ ६५८,प्रव द्वा. ७२गा ६३९,सम २५,आचा. श्रु २चू.३अ २४ सू.१७९,ध. अधि ३श्लो ४५ टी पृ १२५
ब्रह्मचर्य वास	३५१	१	३६६	ठा.५उ.१सू ३९६,ध अधि ३ श्लो ४६ पृ १२७,प्रव.द्वा ६६
ब्रह्मदेवलोक का वर्णन	८०८	४	३२२	पन्न प २ सू ५३
ब्रह्म स्थावर काय	४१२	१	४३८	ठा ५उ १ सू ३९३
१ ब्राह्मण वनीपक	३७३	१	३८८	ठा ५उ ३ सू ४५४
ब्राह्मी	८७५	५	१८५	आव ह गा १९६,त्रि ष पर्व १,२
ब्राह्मीलिपि के ४६ मातृकाक्षर	९८९	७	२६४	सम.४६

भ

भंग उनपचास श्रावक के प्रत्याख्यान के	१००३	७	२६७	भ श ८ उ ५ सू ३२९
भंग छब्बीस सान्निपातिक भाव के	४७४	२	८१	अनु. मृ १२६, ठा.६उ ३सू ५३७,कर्म भा ४गा.६४-६९
भंग सात (सप्तभंगी)	५६३	२	४३५	सूय श्रु २अ ५गा १०,आगम, सप्त.,रत्ना परि.४,स्या.का.२३

१ ब्राह्मण दान की प्रशंसा कर भिक्षा लेने वाला याचक।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
भगवती सूत्र के इकतालीस शतकों का विषय वर्णन	७७६	४	१३८	
[1] भगवान् पार्श्वनाथ के दस गणधर	५६५	३	३	ठा ८ उ ३ सू ६१७ टी., सम ८ टी आव ह नि गा २६८-६९, प्र. सा द्वा १११, प्रव द्वा १५ गा ३३०
भगवान् मल्लिनाथ आदि एक साथ दीक्षा लेने वाले सात	५५३	२	२७७	ठा.७ उ ३ सू ५६०
भगवान् महावीर की चर्या विषयक गाथाएं तेईस	९२२	६	१६६	आचा० श्रु १ अ ९ उ. १
भगवान् महावीर की तपश्चर्या विषयक सत्रह गाथाएं	८७८	५	३८०	आचा० श्रु १ अ ९ उ ४
भगवान् महावीर की वसति विषयक सोलह गाथाएं	८७४	५	१८२	आचा० श्रु. १ अ ९ उ २
भगवान् महावीर के ११ नाम	७७०	४	३	जैन शिक्षा बोल संग्रह १ नं० १
भगवान् महावीर के दस स्वप्न	६५७	३	२२४	भ. श १६ उ. ६ सू ५७८, ठा. १० उ ३ सू ७५०
भगवान् महावीर के नौ गण	६२५	३	१७१	ठा. ९ उ. ३ सू ६८०
भगवान् महावीर के पास आठ राजा दीक्षित हुए	५६६	३	३	ठा ८ उ ३ सू ६२१
भ० महावीर के शासन में तीर्थंकर गोत्र बांधने वाले नौ आत्मा	६२४	३	१६२	ठा ९ उ. ३ सू ६९१
भगवान् महावीर से उपदिष्ट एवं अनुमत पांच पांच बोल	३५०-३५७	१	३६४-३७२	ठा ५ उ. १ सू ३९६, प्र. अभि ... टी पृ १२७, प्रव. द्वा ६६ गा ५५४

[1] पृष्ठ ३० पर टिप्पणी देखो।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
भगवान् महावीरसे उपदिष्ट एवं अनुमत पाँच स्थान	३५६	१	३७३	ठा ५ उ १ सू ३६६
भक्त कथा चार	१५०	१	१०८	ठा ४ उ २ सू २८२
भक्तकथासेहोनेवालीहानि	१५०	१	१०६	ठा. ४ उ २ सू २८२ टी
भक्त प्रत्याख्यान मरण	८७६	५	३८४	सम १७, प्रव द्वा १५७ गा. १००७
भक्त परिण्णा पइण्णा	६८६	३	३५३	द० प०
भद्र कर्म बाँधने के दस स्थान	७६३	३	४४४	ठा १० उ ३ सू ७५८
भद्रनन्दी कुमार की कथा	६१०	६	५८	वि० श्र १२
भद्रनन्दी कुमार की कथा	६१०	६	६०	वि० श्र १८
भद्रोत्तरप्रतिमा तप की विधि और उसका यन्त्र	६८६	३	३४७	अंत० व ८
[1] भयदान	७६८	३	४५१	ठा १० उ ३ सू ७४५
भय निःसृत असत्य	७००	३	२७२	ठा १० सू ७४१, पन्न प ११ सू १६५, ध अधि ३ श्लो ४१ पृ १२२
भय संज्ञा	१४२	१	१०५	ठा ४ उ ४ सू ३५६, प्रव द्वा १४५
भय संज्ञा	७१२	३	३८६	ठा १० सू ७५२, भ श ७ उ ८
भय संज्ञा चार कारणों से उत्पन्न होती है	१४४	१	१०६	ठा ४ उ ४ सू ३५६, प्रव द्वा १४५ गा ६२३
भय स्थान सात	५३३	२	२६८	ठा ७ उ ३ सू ५४६, सम ७
भरत क्षेत्र की आगामी उत्सर्पिणी के चौबीस तीर्थङ्कर	६३०	६	१६६	सम १५८, प्रव द्वा ७ गा २६३-२६५
भरत क्षेत्र की गत उत्सर्पिणी के चौबीस तीर्थङ्कर	६२७	६	१७६	प्रव द्वा ७ गा २८८-२६०

[1] राजा आदि के डर से दिया जाने वाला दान।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
भरतक्षेत्र के वर्तमान अवसर्पिणी के चौबीस तीर्थङ्कर	६२६	६	१७७	सम १५७, आव ह गा २०६-२६०, आव म गा २३१-३८६, स श., प्रव द्वा ७ से ४५,
भरतचक्रवर्ती अनित्यभावना	८१२	४	३७८	त्रि प. पर्व १ स ६
भरतशिला की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२४३	नं सू २७ गा. ६२ टी.
भव तेरह भ० ऋषभदेव के	८२०	४	४०६	त्रि प. पर्व १
भवनपति देवों के दस दस अधिपति	७३१-७४०	३	४१७-४२०	भ.श ३ उ ८ सू १६६
भवनवासी (भवनपति) देव दस	७३०	३	४१६	पन्न प. १ सू ३८, ठा १० उ ३ सू. ७३६, भ श. २ उ ७ सू. ११५, जी प्रति. ३ उ १ सू ११५
भवपुद्गल परावर्तन	६१८	३	१४०	कर्म भा. ५ गा ८६-८८
भवप्रत्यय अवधि ज्ञान	१३	१	११	ठा २ उ १ सू ७१
भव सिद्धिक	८	१	७	ठा २ उ २ सू ७६, आ प्र गा ६६
भव स्थिति	३१	१	२२	ठा २ उ ३ सू ८५
भव्य अभव्य स्त्री पुरुषों में कितनी लब्धियां हो सकती हैं?	६५४	६	२६८	प्रव द्वा २७० गा. १५०५ से १५०८
भव्य जीवों के सिद्ध हो जाने पर क्या लोक भव्यों से शून्य हो जायगा?	६१८	६	१३६	भ श. १२ उ २ सू ४४३
भव्यत्व मार्गणा और उसके भेद	८४६	५	५८	कर्म. भा. ४ गा. १३

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ भव्य द्रव्य देव	४२२	१	४४५	ठा ५सू ४०१, भ श १२उ ६
२ भांगिक वस्त्र	३७४	१	३८६	ठा ५उ ३ सू ४४६
भांगे सोलह आश्रव आदि के	८६८	५	१६८	भ श १६उ.४ सू ६५४
भाडी कम्मे कर्मादान	८६०	५	१४५	उपा अ १सू ७, भ श ८उ ५सू. ३३०, आव ह अ ६पृ ८२८
भाण्ड (पण्यवस्तु) चार	२६४	१	२४६	ज्ञा अ.८ सू ६६
भार प्रत्यवरोहणता विनय के चार प्रकार	२२८	१	२१८	दशा द.४
भाव	२१०	१	१८६	न्यायप्र अध्या ७, रत्ना.परि ४
भाव इन्द्र के तीन भेद	६२	१	६६	ठा.३उ १सू ११६
भाव ऊनोदरी	२१	१	१६	भ श २५उ ७सू ८०२
भाव कर्म	७६०	३	४४३	आचा अ २उ १ नि गा.१८४
भाव छः	४७४	२	८१	अनु सू १२६, ठा ६ उ ३ सू ५३७, कर्म भा.४ गा.६४-६६
भावदुःखशय्या के ४ प्रकार	२५५	१	२४०	ठा.४उ ३ सू ३२५
भाव देव	४२२	१	४४६	ठा ५सू ४०१, भ श.१२उ ६
भावना अशुभ पाँच	४०१	१	४२८	प्रव द्वा.७३गा ६४१, उत्त अ.३६
भावना चार	१४१	१	१०३	उत्त अ ३६गा २६१-२६४
भावना चार	२४६	१	२२४	भावना, क भा २श्लो ३५-५५, च.
भावना चार	४६७	२	१८८	
भावना छः समकित की	४५४	२	५८	प्रव द्वा १४८ गा ६४०, ध. अधि २श्लो २२ टी.पृ ४६
भावना धर्म	१६६	१	१५६	ध.अधि ३श्लो.४७ टी पृ १३१

१ आगामी भव में देव होने वाला जीव । २ अलसी का बना हुआ वस्त्र ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
भावना २५ पाँच महाव्रत की	९३८	६	२१७	आचा.श्रु २ चू ३ अ २४ सू १७६, सम २५, आव ह अ.४ पृ. ६५८, पव द्वा ७२ गा ६३६-४०, ध अधि ३ श्लो ४५ टी पृ.१२५
भावना पचीस पाँच महाव्रतों की	३१७-३२१	१	३२४-३२९	
भावना बारह	८१२	४	३५५	शा भा १,२, भावना ज्ञान प्रक २, प्रव द्वा ६७ गा ५७२-५७३ तत्त्वार्थ.अध्या ९ सू ७
भाव निक्षेप	२०९	१	१८८	अनु सू १५०, न्याय.प्र.अध्या ६
भाव पाँच जीव के	३८७	१	४०७	अनु सू १२६, पव द्वा २२१ गा. १२६०-६८, कर्म भा.४ गा.६४-६८
भाव पुद्गल परावर्तन सूक्ष्म और बादर का स्वरूप	६१८	३	१३९	कर्म.भा ५ गा ८६-८८
भाव प्रतिक्रमण	३२९	१	३३९	ठा ५ उ ३ सू.४६७, आव ह.अ ४ गा १२५०-१२५१ पृ ५६४
भाव प्रत्यनीक	४४५	२	५१	भ श.८ उ ८ सू ३३९
भाव प्रत्युपेक्षणा	४५६	२	६०	ठा ६ उ ३ सू ५०३
भाव प्रमाण नाम के चार भेद	७१९	३	४०१	अनु सू १३०
भाव भाषा की व्याख्या, भेद	१९८	१	१५७	पन्न प.११ सू १६१ टी.
भाव लेश्या	४७१	२	७२	भ श.१२ उ ५, उत्त अ ३४, पन्न प १७ उ ४, कर्म भा ४ गा १३ तथा ५०, आव ह अ.४ पृ ६४४, द्रव्यलोक ३ श्लो. २८५-३८७
भाव शुद्ध प्रत्याख्यान	३२८	१	३३७	ठा ५ उ ३ सू ४६६, आव ह अ ६ पृ ८४७
भाव श्रावक के सत्रह लक्षण	८८२	५	३९२	ध अधि.२ श्लो.२२ टी पृ.४८
भाव सत्य	६९८	३	३७०	ठा १० सू ७४१, पन्न प.११ सू. १६५, ध अधि ३ श्लो ४१ पृ.१२१

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
भाव सम्यक्त्व	१०	१	८	प्रव. द्वा. १४६ गा ६४२ टी.
१ भावानुपूर्वी	७१७	३	३६१	अनु सू ७१
२ भाविताभावितानुयोग	७१८	३	३६४	ठा १० उ. ३ सू ७२७
भावेन्द्रिय	२३	१	१७	पन्न प १५, तत्त्वार्थ अध्या २ सू १६
भावेन्द्रिय के दो भेद	२५	१	१७	तत्त्वार्थ अध्या २ सू १८
भाषा के चार भेद	२६६	१	२४८	पन्न प ११ सू १६१
भाषा के बारह भेद	७७६	४	२३८	प्रश्न संवरद्वार २ सू २४ टी
भाषा पर्याप्ति	४७२	२	७८	पन्न प १ सू. १२ टी., भ श. ३ उ. १ सू १३०, प्रव.द्वा २३२ गा १३१७, कर्म भा. १ गा ४६
भाषार्य	७८५	४	२६६	बृ उ १ नि. गा ३२६२
भाषा समिति	३२३	१	३३१	सम ५, ठा ५ उ. ४५७, उत्त अ २४, ध अधि ३ श्लो. ४७ टी पृ १३०
भिक्खु पडिमा बारह	७६५	४	२८५	सम १२, भ श २ उ १ टी, दशा द ७
भिक्षा की नौ कोटियाँ	६३१	३	१७६	ठा ६ उ ३ सू ६८१, आचा श्रु. २ उ. ५ सू ८८ टी
भिक्षाचर्या	४७६	२	८६	उत्त अ ३० गा ८, ठा ६ सू ५११, उव सू १६, प्रव द्वा ६ गा. २७०
भिक्षाचर्या के तीस भेद	६३३	३	१८६	उव सू १६, भ.श २५ उ ७ सू. ८०२
भिक्षाचर्या के तीस भेद	६५६	६	३१०	उव सू १६, भ.श २५ उ ७ सू. ८०२
भिक्षुक ४ मच्छ की उपमा से	४११	१	४३७	ठा ५ उ ३ सू ४५३
भिक्षुक का स्वरूप बताने वाली सोलह गाथाएं	८६२	५	१५२	उत्त अ १५

१ औदारिक परिणाम आदि भावों का क्रम, परिपाटी।

२ द्रव्यानुयोग का एक भेद

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
भिक्षु की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२७६	नं.सू.२७गा ६४टी.
भिक्षु प्रतिमा (पडिमा)	६८६	३	३४३	दशा०७.दशा.५
[1] भिन्न पिण्डपातिक	३५५	१	३७०	ठा ५उ १ सू ३९६
[2] भुज परिसर्प	४०६	१	४३६	पन्न प.१सू ३५,उत्त.अ.३६
[3] भूत (जीव)	१३०	१	९८	ठा ५सू ४३०,भ श २उ.१सू.८८
भूतग्राम (जीवों) के १४ भेद	८२५	५	१७	सम.१४,आव ह अ ४ पृ ६४९
भूति कर्म	४०४	१	४३१	उत्त.अ ३६गा २६२,प्रवद्वा.७३
भेद तेईस क्षेत्र परिमाण के	९२५	६	१७३	अनु सू १३३, प्रव द्वा २५४
भेद परिणाम	७५०	३	४३३	ठा १०उ.३सू ७१३,पन्न प.१३
भेद प्रभेद आठ कर्मों के	५९०	३	४३	पन्न.प.२३,उत्त.अ.३३, कर्म. भा.१,तत्त्वार्थ अध्या ८,भ.श ८ उ ९,भ.श.१उ ८,९,विशे.गा १९०६-४८तथा१९४३-४५
भेद बयालीस आश्रव के	९९२	७	१४९	नव गा.१६
भोग प्रतिघात	४१६	१	४४०	ठा.५उ १ सू ४०६
भोग सुख	७६९	३	४५४	ठा.१०उ ३ सू ७३७
भोगान्तराय	३८८	१	४११	कर्म.भा १गा ५२,पन्न प २३
भोजनपरिणामछःप्रकारका	४८६	२	९९	ठा ६उ.३सू ५३३
भ्रमर वृत्ति पर चार गाथाएं	९९४	७	१८५	

म

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मंगल रूप लोकोत्तम तथा शरण रूप चार हैं	१२९क	१	९४	आव ह.अ ४ पृ ५६९

१ पूरी वस्तु न लेकर टुकड़े की हुई वस्तु को ही लेने वाला अभिग्रहधारी साधु।
२ भुजाओं से चलने वाले जीव, चूहे आदि।
३ भूत, भविष्यत और वर्तमान तीनों कालों में विद्यमान होने से जीव भूत कहलाता है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
म्रक्षित दोष (ग्रहणैषणा का एक दोष)	६६३	३	२४२	प्रव द्वा ६७गा ५६८पृ १४८, पि नि गा ५२०,ध अधि ३श्लो. २२टी पृ ४१,पचा १३ गा.२६
मच्छ की उपमा से ५ भिक्षुक	४११	१	४३७	ठा.५उ ३ सू ४५३
मच्छ के पाँच प्रकार	४१०	१	४३६	ठा ५उ.३सू ४५३
मणि का दृष्टान्त पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	११३	नं सू २७ गा ७४, आव.ह गा ९५१
मण्डितस्वामीगणधरकाबंधमोक्षविषयकशंकासमाधान	७७५	४	४४	विशे०गा १८०२–१८६३
मतिज्ञान	१५	१	१२	पन्न.प.२९सू ३१२,ठा २सू ७१
मतिज्ञान	३७५	१	३९०	ठा ५उ ३ सू ४६३, नं सू.१, कर्म भा १गा ४ व्याख्या
मतिज्ञान के अठाईस भेद	९५०	६	२८३	सम.२८, कर्म भा.१ गा ४-५
मतिज्ञान के चार भेद	२००	१	१५८	ठा ४ उ ४ सू ३६४
मतिज्ञानावरणीय	३७८	१	३९४	कर्म.भा १गा ९,ठा ५सू ४६४
[1] मतिभंग दोष	७२२	३	४०६	ठा १०उ.३सू ७४३
मति सम्पदा	५७४	३	१४	दशा द ४,ठा ८उ ३सू.६०१
मत्यज्ञान साकारोपयोग	७८६	४	२६८	पन्न०प २९ सू.३१२
मद दस	७०३	३	३७४	ठा १० सू.७१०,ठा ८सू ६०६
मद्य प्रमाद	२९१	१	२७१	ठा ६उ ३सू ५०२,ध अधि २ श्लो.३६टी पृ ८१,पंचा १गा २३टी,अष्ट १९श्लो १टी.
मधु सिक्थ की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२७२	नसू २७गा ६५ टी.

[1] वाद या शास्त्रार्थ के समय अपनी जानी हुई बात को भी भूल जाना अथवा समय पर उसका याद न आना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
*मध्यग्रामकी७मूर्छनाएं	५४०	२	२७३	अनु सू १२७ गा ४०, ठा ७ सू ५५३
१ मध्यचारी भिक्षु	४११	१	४३७	ठा ५ उ. ३ सू ४५३
मध्यचारी मच्छ	४१०	१	४३७	ठा ५ उ ३ सू ४५३
मध्यम स्वर	५४०	२	२७१	अनु सू. १२७ गा २५, ठा ७ सू ५५३
मनःपर्ययज्ञान	३७५	१	३६१	ठा ५ उ ३ सू ४६३, कर्म भा १ गा ४, नं० सू १
मनःपर्ययज्ञान का विषय क्या है ?	९८३	७	१०४	विशे० गा ८१२-८१४
मनःपर्ययज्ञान की अवधि ज्ञान से विशेषता	९१८	६	१३७	भ श १८ उ ३ सू ३७३, तत्त्वार्थ अध्या १ सू २५
मनःपर्ययज्ञानकीव्याख्या, भेद	१४	१	१२	ठा. २ उ १ सू ७१
मनःपर्यय ज्ञान के लिये आवश्यक नौ बातें	६२६	३	१७२	नं० सू १७
२ मनःपर्ययज्ञानसाकारोपयोग	७८६	४	२६८	पन्न० प० २९ सू ३१२
मनःपर्ययज्ञानावरणीय	३७८	१	३९४	ठा ५ सू ४६४, कर्म भा १ गा ९
मनःपर्यय ज्ञानी जिन	७४	१	५३	ठा. ३ उ. ४ सू २२०

* श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह भाग २ पृष्ठ २७३ पर मध्य ग्राम की जो सात मूर्छनाएं छपी हैं वे संगीत शास्त्र नामक ग्रन्थ से ली हुई हैं। अनुयोगद्वार तथा ठाणांग सूत्र में मध्य ग्राम की मूर्छनाओं के नाम दूसरी तरह हैं। उनकी गाथा इस प्रकार है—

उत्तरमंदा रयणी, उत्तरा उत्तरासमा।
समोक्कंता य सोवीरा, अभिरूवा होइ सत्तमा॥

अर्थ—उत्तरमंदा, रत्ना, उत्तरा, उत्तरासमा, समवक्रान्ता, सौवीरा और अभिरूपा।

१ केवल बीच बीच के घरों से भिक्षा लेने वाला अभिग्रहधारी साधु।

२ ढाई द्वीप और समुद्रों में रहे हुए संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों के मनोगत भावों को जानना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मनःपर्यय दर्शन नहीं है फिर मनःपर्ययज्ञानी अनन्त प्रदेशी स्कन्ध जानता और देखता है यह कैसे कहा ?	६८३	७	१०५	न०सू,१८टी ,विशे गा ८१५
मनःपर्याप्ति	४७२	२	७८	पन्न.प १सू १२टी ,भ श.३उ १सू १३०,प्रव द्वा २३२,कर्म भा १ गा ४६
मनःपुण्य	६२७	३	१७२	ठा ६उ ३ सू ६७६
मनःशिला पृथ्वी	४६५	२	६६	जी प्रति ३ सू १०१
मनके दस दोष सामायिक के	७६४	३	४४७	शिक्षा०
मन विनय	४६८	२	२३०	उव सू २०,भ श २५उ.७ सू. ८०२,ठा ७उ ३सू ५८५, ध. अधि ३श्लो ५४टी पृ.१४१
मन विनय (अप्रशस्त) के बारह भेद	७६१	४	३७५	उव सू २०
मनविनय (अप्रशस्त) सात	५००	२	२३१	भ श २५उ.७सू८०२,ठा ७ उ ३सू.५८५, उव सू २०
मन विनय (प्रशस्त) सात	४६६	२	२३१	भ श २५उ.७सू८०२,ठा ७ उ ३सू.५८५, उव सू २०
मनुष्य आयुबन्ध के ४ कारण	१३४	१	१००	ठा ४उ ४ सू ३७३
मनुष्य के छः प्रकार	४३७	२	४१	ठा ६उ ३ सू ४६०
मनुष्य के तीन भेद	७१	१	५१	ठा ३उ १सू १३०,पन्न प १सू ३७,जी प्रति ३सू १०७
मनुष्य के तीनसौ तीन भेद	६३३	३	१७६	पन्न प.१,उत्त अ ३६,जी प्रति ३
मनुष्य क्षेत्र छः	४३६	२	४१	ठा ६उ ३ सू.४६०
मनुष्य भव आदि ११ दुर्लभ	७७२	४	१७	आव ह नि गा ८३१पृ ३४१
मनुष्यभव आदि ४ अङ्गों की दुर्लभता बताने वाली बीस गाथा	६०६	६	२६	उत्त अ.३

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मनुष्य भव की दुर्लभता के दस दृष्टान्त	६८०	३	२७१	उत्त.अ.३ नि गा १६०, आव ह. नि गा ८३२ पृ ३४०
मनुष्य संमूर्छिम के चौदह उत्पत्ति स्थान	८२६	५	१८	पन्न०प १ सू ३७, अनु सू १३३ पृ १६६
मनुष्यसम्बन्धी उपसर्ग चार	२४१	१	२१६	ठा ४ सू ३६१, सूय अ ३ उ.१ टी
मनोगुप्ति	१२८ख	१	९२	उत्त.अ २४, ठा.३ सू २१६
मनोयोग	९५	१	६८	ठा ३ सू १२४, तत्त्वार्थ अध्या.६
मनोरथ तीन श्रावक के	८८	१	६४	ठा ३ उ.४ सू २१०
मनोरथ तीन साधु के	८९	१	६४	ठा.३ उ ४ सू २१०
मन्त्र दोष	८६६	५	१६५	प्रवा द्वा ६७ गा ५६८, ध अधि ३ श्लो २२ पृ ४०, पि नि.गा ४०६, पि वि.गा ५९, पंचा.१३ गा १९
मन्दा अवस्था	६७८	३	२६७	ठा १० उ ३ सू ७७२
मयूराण्ड और सार्थवाह की कथा सम्यक्त्व में शंका के लिए	८२१	४	४५३	नवपद गा १८ टी. सम्यक्त्वाधिकार, ज्ञा.अ ३
मरण के दो भेद	५३	१	३१	उत्त.अ ५ गा २
मरण(बाल) के बारह भेद	७९८	४	२९८	भग.२ उ.१ सू ९१
मरण के सत्रह प्रकार	८७९	५	३८२	सम.१७, प्रवद्वा १५७ गा.१००६
मरण भय	५३३	२	२६८	ठा ७ उ.३ सू ५४९, सम ७
मरण समाहि पइण्णा	६८९	३	३५५	द०१०
मर्यादा छब्बीस बोलों की	९४३	६	२२५	उपा.अ १ सू ५, धा.अधि.२ अधि. श्लो.३ टी पृ ८०
मल्लिनाथ आदि एक साथ दीक्षा लेने वाले सात	५४३	२	२७७	ठा ७ उ ३ सू ५६४
मल्लिनाथ भगवान् और उन के छः साथियों का पूर्वभव	५४३	२	२७७	ठा.७ उ ३ सू ५६४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मल्लिनाथ भगवान् की कथा	६००	५	४४४	ज्ञा० अ.८
मल्लिनाथ भगवान् के छः मित्रराजा (संसार भावना)	८१२	४	३८०	ज्ञा० अ ८
मल्लिनाथ भ० के साथ दीक्षा लेनेवाले छः राजाओं की कथा	५४३	२	२७८	ठा ७ उ ३ सू ५६४
मसि कर्म	७२	१	५२	जी प्रति ३ उ १ सू १११, तन्दुल सू १४-१५ पृ ४०
महति वीर (महावीर)	७७०	४	६	जैनविद्या वोल्यूम १ न १
महत्तरागार	५१६	२	२४७	आव ह अ ६ पृ ८५३ टी, प्रव. द्वा ४ गा २०४
महर्द्धिक देव दस	७४३	३	४२१	ठा १० उ. ३ सू ७६४
महाकाल निधि	६५४	३	२२१	ठा ६ उ ३ सू ६७३
महाकाली रानी	६८६	३	३४१	अंत० व ८ अ ३
महा कृष्णा रानी	६८६	३	३४४	अंत० व ८ अ ६
महाग्रह आठ	६०४	३	१२१	ठा ८ उ ३ सू ६१२
महा चन्द्र कुमार की कथा	६१०	६	६०	वि० अ १६
महानदियाँ चौदह	५३८-५३६	२	२७०	ठा ७ उ. ३ सू ५५५
महानदियाँ चौदह	८४४	५	४५	सम १४
महानदियाँ दस मेरु से उत्तर में	७५६	३	४४१	ठा १० उ ३ सू ७१७
महानदियाँ दस मेरु से दक्षिण में	७५८	३	४४०	ठा १० उ ३ सू ७१७
महानदियाँ सात सात	५३८-५३६	२	२७०	ठा ७ उ ३ सू ५५५
महानदियों को साधु द्वारा एक मास में दो, तीन वार पार करने के पाँच कारण	३३५	१	३४६	ठा ५ उ २ सू ४१२
महानिधि नौ चक्रवर्ती की	६५४	३	२२०	ठा. ६ उ. ३ सू ६७३

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
महानिमित्त आठ	६०५	३	१२१	ठा ८सू ६०८, प्रव द्वा २५७
महानिर्ग्रन्थीय अध्ययन की पन्द्रह गाथाएं	८५४	५	१३०	उत्त अ २० गा. ३८-५२
महा निर्जरा और महापर्यवसान के पाँच पाँच बोल	३६०, ३६१	१	३७४	ठा ५ उ १ सू. ३९७
महा पच्चक्खाण पइण्णा	६८९	३	३५३	द०प०
महा पद्मनिधि	६५४	३	२८१	ठा ९ उ ३ सु ६७३
महाप्रातिहार्य ८ अरिहन्त के	७८२	४	२६०	सम ३४, स प द्वा. ३९
महाबल कुमार की कथा	९१०	६	५९	भ० श. ११
महामोहनीय कर्म के तीस स्थान	९६०	६	२१०	दशा द ९, सम ३०, उत्त. अ ३१ गा १९ टी, आव ह प्र. अ पृ ६६०
महायुग्म सोलह	८७१	५	१७२	भ श. ३५ उ. १ सु ८५५
महाविदेह क्षेत्र के बत्तीस विजय	९७१	७	४३	जम्बू. व. ४ सू ९३-१०२, लोक. भा २ स १७
महावीर	७७०	४	४	जैनविद्या वोल्यूम १ नं. १
महावीर भगवान् की चर्याविषयक तेईस गाथाएं	९२२	६	१६६	आचा अ ९ उ १
महावीर भगवान् की तपश्चर्याविषयक सत्रह गाथाएं	८७८	५	३८०	आचा श्रु. १ अ. ९ उ. ४
महावीर भगवान् की वसतिविषयक सोलह गाथाएं	८७४	५	१८२	आचा श्रु. १ अ ९ उ. २
महावीर भगवान् के ग्यारह गणधर	७७५	४	२३	विशे गा. १५४९-२०२४, सम. ११, आव ह. टिप्पणी पृ. २८-३४, आव मु नि. गा ५९३-६५९

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
महावीर भगवान् के ११ नाम	७७०	४	३	जैनविद्या वोल्यूम १ नं १
महावीर भगवान् के दस स्वप्न और उनका फल	६५७	३	२२४	भ श १६ उ. ६ सू ५७६, ठा १० उ ३ सू ७५०
महावीर भगवान् के नौ गण	६२५	३	१७१	ठा ६ उ ३ सू ६८०
महावीर भगवान् के पास दीक्षित आठ राजा	५६६	३	३	ठा ८ उ. ३ सू ६२१
महावीर भ० के शासन में तीर्थंकर गोत्र बाँधने वाले नौ आत्मा	६२४	३	१६३	ठा ६ उ ३ सू ६६१
महावीर स्तुति अध्ययन की उनतीस गाथाएं	६५५	६	२६६	सूय० अ ६
महाव्रत की व्याख्या और उसके भेद	३१६	१	३२१	दश अ ४, ठा ५ उ १ सू. ३८६, प्रव द्वा ६६ गा ५५३, ध. अधि ३ श्लो. ३६-४४ पृ १२०
महाव्रत चार	१८०	१	१३५	ठा ४ उ १ सू २६६
महाव्रत पाँच की पचीस भावनाएं	३१७-३२१	१	३२४-३२६	आचा श्रु २ चू ३ अ २४ सू १७६, आव ह. अ. ४ पृ ६५८, सम २५, प्रव द्वा ७२ गा. ६३६-६४०, ध अधि ३ श्लो. ४५ टी पृ १२५
महाव्रत पाँच की पचीस भावनाएं	६३८	६	२१७	
महाव्रतों की पचीस भावनाएं	४६७	२	१८४	
महाशतक श्रावक	६८५	३	३२७	उपा० अ. ८
महाशुक्र देवलोक का वर्णन	८०८	४	३२२	पन्न प २ सू ५३
महासर्वतोभद्र तप यंत्र सहित	६८६	३	३४५	अंत० व. ८ अ. ७
महा सामान्य	५६	१	४१	रत्ना परि ७ सू १५
महासिंहनिष्क्रीडित तप व यंत्र	६८३	३	३४१	अंत० व ८ अ. ४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
महासेन कृष्णा रानी	६८६	३	३४६	अंत० व.८ अ.१०
महास्वप्न चौदह	८३०	५	२२	भ श.१६ उ.६ सू ५७८, ज्ञा.अ.८ सू.६५, कल्पसू ४
महेश्वरदत्तकीकथासम्यक्त्व के विचिकित्सा दोषकेलिए	८२१	४	४५६	नवपद,गा १८टी सम्यक्त्वाधिकार
मांगलिक पदार्थ आठ	५६४	३	३	उव सू ४टी, रा० सू.१४
मांडला (ग्रासैषणा) के पाँच दोष	३३०	१	३३६	ध अधि ३ श्लो.२३ टी पृ ५५, पि.नि.गा ६३५-६८, उत्त अ २४
१ माणवक निधि	६५४	३	२२२	ठा ९ उ.३ सू ६७३
माता के तीन अङ्ग	१२३	१	८७	ठा ३ उ ४ सू २०६
मातापितास्वामीधर्माचार्य का प्रत्युपकार दुःशक्य है	१२४	१	८७	ठा.३ उ १ सू १३५
मातृकाक्षर४६ब्राह्मीलिपि के	९९९	७	२६४	सम.४६
२ मातृकानुयोग	७१०	३	३९२	ठा १० उ.३ सू ७२७
माध्यस्थ भावना	२४६	१	२२८	भावना (परिशिष्ट), श.भा. १ श्लो.५१-५५, न०
मान के चार भेद और उनकी उपमाएं	१६०	१	१२१	पन्न.प.१४ सू.१८८, ठा ४ उ २ सू.२८३, कर्म भा.१ गा.१९
मान के दस कारण	७०३	३	३७४	ठा.१० सू.७१०, ठा ८ सू ६०६
मान के बारह नाम	७९०	४	२७५	भग श १२ उ ५ सू ४४९
मान दोष	८६६	५	१६५	प्रव.द्वा ६७ गा ५६७, ध अधि ३ श्लो २२ टी पृ ४०, पि.नि गा. ४०८, पि नि गा ५८, पंचा.१३ गा.१८

१ चक्रवर्ती की नौ महानिधियों में से एक निधि।

२ उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य इन तीन पदों को मातृकापद कहते हैं। इन्हें द्रव्यादि द्रव्यों में घटाना मातृकानुयोग है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मान निःसृत असत्य	७००	३	३७१	ठा.१०उ.३सू.७४१,पन्नप ११ सू.१६५,ध.अधि ३श्लो.४१पृ.१२२
मानसंज्ञा	७१२	३	३८७	ठा १०उ ३सू ७५२,भ श ७उ.८
माया का फल	५७८	३	१६	ठा ८उ ३सू ५६७
माया की आलोयणा के आठ स्थान	५७७	३	१६	ठा ८उ ३ सू ५६७
माया की आलोयणा न करने के आठ स्थान	५७८	३	१८	ठा ८उ ३सू ५६७
माया के चार भेद और उनकी उपमाएं	१६१	१	१२१	पन्न.प १४सू १८८, ठा ४उ २ सू २९३,कर्म.भा १गा.२०
माया के चौदह नाम	८३६	५	३१	सम ५२
माया के सत्रह नाम	८८०	५	३८५	सम ५२
माया दोष	८६६	५	१६५	प्रव द्वा ६७गा ५६७,ध अधि ३ श्लो २२पृ ४०,पि नि गा ४०८, पि वि.गा.४८.पंचा १३गा १८
माया निःसृत असत्य	७००	३	३७१	ठा.१०सू.७४१,पन्न प ११सू. १६५,ध अधि ३श्लो ४१पृ १२२
१ मायाप्रत्यया क्रिया	२९३	१	२७८	ठा २उ १ सू ६०,ठा ५उ २सू. ४१९,पन्न प २२ सू २८४
मायावी भावना	४०३	१	४३०	उत्त अ ३६गा.२६३,प्रव द्वा ७३ गा ६४३
माया शल्य	१०४	१	७३	सम ३,ठा ३उ ३सू १८२,ध. अधि ३श्लो २७टी पृ.७६
माया संज्ञा	७१२	३	३८७	ठा १०उ.३सू ७५२,भ श ७उ ८

१ छल एवं माया द्वारा दूसरों को ठगने के व्यापार में लगने वाली क्रिया ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मारणान्तिक समुद्घात	५४८	२	२८८	पन्न प.३६, ठा ७ उ ३ सू ५८६, द्रव्यलो.स.३ पृ १२४, प्रव द्वा.२३१
मार्ग की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	८४६	६	२६७	नं० सू २७ गा.६ टी
मार्गणा चौदह और उसके अवान्तर भेद	६३३	३	१६६	नव गा.३४, कर्म भा ४ गा ६
मार्गणा स्थान के अवान्तर भेद बासठ	८४६	५	५७	कर्म भा ४ गा १०-१४
मार्गणा स्थान चौदह	८४६	५	५५	कर्म भा.४ गा.६-१४
१ मार्ग दूषण	४०६	१	४३३	उत्त अ ३६ गा २६४ टी, प्रव द्वा. ७३ गा ६४६
२ मार्गविप्रतिपत्ति	४०६	१	४३३	उत्त अ ३६ गा २६४ टी, प्रव द्वा.७३ गा ६४६
मार्दव (मृदुता)	३५०	१	३६५	ठा ५ सू ३९६, प्रव द्वा ६६ गा ५५४, ध अधि ३ श्लो ४६ पृ १२७
मार्दव (मृदुता)	६६१	३	२३३	नव.गा २३, सम १०, शा भा.१ प्रक ८ संवरभावना
३ मालापहृत दोष	८६५	५	१६३	प्रव द्वा.६७ गा.५६६, ध अधि.३ श्लो.२२ टी पृ ३८, पिं नि गा [illegible], पिं वि गा.४, पंचा १३ गा.६
४ मास कल्प	६६३	३	२४०	पंचा १७ गा ३५-३७

१ ज्ञान, दर्शन, चारित्र रूप सत्य धर्म में तथा उसके पालन करने वाले साधुओं में कल्पित दूषण बतलाना। २ ज्ञान दर्शन चारित्र रूप सत्यमार्ग को छोड़ कर विपरीत मार्ग को ग्रहण करना। ३ ऐसी जगह जहाँ आसानी से हाथ न पहुंच सके वहाँ पर से सीढ़ी या निसरणी आदि लगाकर आहार देना। ४ साधुओं के लिए चतुर्मास या किसी दूसरे कारण के बिना एक मास से अधिक एक स्थान पर न ठहरना मास कल्प कहलाता है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मास बारह	८०२	४	३०३	सूर्य प्रा १० प्रा.प्रा. १९
१ मासिक अनुद्घातिक	३२५	१	३३३	ठा.५उ २ सू ४३३
२ मासिक उद्घातिक	३२५	१	३३४	ठा ५उ २ सू ४३३
माहण का अर्थ क्या श्रावक भी होता है ?	९८३	७	१२९	भ श १उ ७सू ६२टी, भ श.२ उ ५सू ११२टी
माहेन्द्र देवलोक का वर्णन	८०८	४	३२१	पन्न प २सू ५३
मिच्छाकार (मिथ्याकार) समाचारी	६६४	३	३५०	भ श २५उ ७सू ८०१,ठा १० उ ३सू ७४९, उत्त अ २६गा ३, प्रव द्वा १०१गा ७६०
३ मितवादी	५९१	३	९२	ठा ८उ ३सू ६०७
मिथ्यात्व आश्रव	२८९	१	२६८	ठा ५उ २ सू ४१८, सम ५
मिथ्यात्व दस	६९५	३	३६४	ठा १०उ ३सू ७३४
मिथ्यात्व पाँच	२८८	१	२६७	ध अधि २श्लो २२टी पृ ३९, कर्म भा ४ गा ५१
मिथ्यात्व प्रतिक्रमण	३२९	१	३३८	ठा ५उ ३सू. ४६७, आव.ह अ. ४गा. १२५०-१२५१पृ ५६४
मिथ्या दर्शन	७७	१	५५	भ श ८उ २सू ३२०,ठा ३सू १८४
४ मिथ्या दर्शन प्रत्यया क्रिया	२९३	१	२७८	ठा २उ.१सू.६०, ठा ५उ २सू ४१९,पन्न.प २२सू २८४
मिथ्या दर्शन शल्य	१०४	१	७४	सम ३,ठा.३उ ३सू.१८२

१ जिस प्रायश्चित्त का भाग न हो यानि गुरु प्रायश्चित्त।

२ जो प्रायश्चित्त विभाग करके दिया जाय यानि लघु प्रायश्चित्त।

३ जीवों के अनन्तानन्त होने पर भी उन्हें परिमित बताने वाले अक्रियावादी।

४ मिथ्या दर्शन अर्थात् तत्त्व में अश्रद्धान या विपरीत श्रद्धान से लगने वाली क्रिया मिथ्या दर्शन प्रत्यया क्रिया कहलाती है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मिथ्या दृष्टि गुणस्थान	८४७	५	७२	कर्म भा २ गा २ व्याख्या
मिथ्या श्रुत	८२२	५	७	नं०सू.४२,विशे.गा.५२७-३६
मिश्र गुणस्थान	८४७	५	७३	कर्म भा २ गा.२ व्याख्या
१ मिश्र जात दोष	८६५	५	१६२	प्रव द्वा ६७गा ५६५,ध अधि ३ श्लो २२टी पृ ३८,पि नि गा ९२,पि वि गा ३,पचा १३गा ५
मिश्र दर्शन	७७	१	५५	भ श ८उ २,ठा २उ.२सू १८४
मिश्र भाषा	२६६	१	२४६	पन्न प ११ सू.१६१
मिश्र भाषा के दस प्रकार	६९६	३	३७०	ठा १०उ ३सू.७४१,पन्न.प ११सू १६५,ध अधि ३श्लो ४१पृ १२२
२ मुंमुही अवस्था	६७८	३	२६८	ठा १०उ.३ सू ७७२
मुख्य (प्रधान)	३८	१	२४	तत्त्वार्थ अध्या ५ सू ३१
मुण्ड दस	६५६	३	२३१	ठा १०उ ३ सू ७४६
मुक्तावली तप यंत्र सहित	६८६	३	३४८	अंत.व ८ अ.५
मुक्ति	३५०	१	३६५	ठा ५सू ३९६,प्रव.द्वा.६६ गा. ५५४,ध अधि ३श्लो.४९ पृ १२०
मुक्ति	६६१	३	२३२	द्वा गा १२ सम १०,ना गा ३ पृ ८ [illegible]
मुनि(मुणि)माहण(ब्राह्मण)	७७०	४	७	[illegible]
मुद्रिका की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	८४६	६	२७२	न.सू २७गा.६४ टी.
मुहूर्त	५५१	२	२६३	जीवा.प्र १८ कालाधिकार

१ अपने और साधु के लिए एक साथ पकाया हुआ आहार।

२ [illegible] में से नहीं [illegible], उस अवस्था को [illegible] [illegible] से [illegible] होकर अपने जीवन के प्रति [illegible] हो जाता है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मुष्टि संकेत पच्चक्खाण	५८६	३	४३	आव ह अ ६ नि गा १५७८, प्रव.द्वा ४ गा २००
मूढ़	७५	१	५४	ठा.३ उ ४ सू २०३
*मूर्छना २१ तीन ग्रामों की	५४०	२	२७३	अनु सू १२७, ठा ७ सू ५५३, संगीत
मूर्त कर्म का अमूर्त आत्मा पर प्रभाव	५९०	३	४७	विशे अग्निभूतिगणधरवाद
मूल गुण	५५	१	३२	सूय श्र १४ नि गा १२६, पचा १ गा २
मूलगोत्र सात	५४२	२	२७६	ठा.७ उ ३ सू ५५१
मूल कर्म दोप	८६६	५	१६६	प्रव द्वा ६७ गा ५६८, ध अधि ३ श्लो २२ टी पृ ४०, पिं नि गा ४०६, पि वि गा ५६, पचा १३ गा १६

* श्री जैन सिद्धान्त बोलसंग्रह भाग २ पृष्ठ २७३ पर षड्ज, मध्यम और गान्धार ग्रामों की जो इक्कीस मूर्छनाएं छपी हैं वे संगीतशास्त्र नामक ग्रन्थ से ली हुई हैं। अनुयोगद्वार तथा स्थानांग सूत्र में इन तीनों ग्रामों की मूर्छनाओं के नाम दूसरी तरह दिये हैं। उनकी गाथा इस प्रकार है —

मग्गी कोरविश्रा हरिया, रयणी अ सारकंता य।
छट्टी अ सारसी नाम, सुद्ध सज्जा य सत्तमा ॥३९॥
उत्तरमंदा रयणी, उत्तरा उत्तरासमा।
समोक्कंता य सोवीरा, अभिरूवा होइ सत्तमा ॥४०॥
नंदी अ खुद्दिआ पूरिमा य, चउत्थी अ सुद्धगंधारा।
उत्तरगंधारा वि अ, सा पंचमिश्रा हवइ मुच्छा ॥४१॥
सुट्ठुत्तरमायामा सा छट्टी सव्वओ य णायव्वा।
अह उत्तरायया कोडिमा य, सा सत्तमी मुच्छा ॥४२॥

अर्थ - षड्ज ग्राम की सात मूर्छनाएं–मार्गी, कौरवी, हरिता, रत्ना, सारकांता, सारसी और शुद्धषड्जा। मध्यम ग्राम की सात मूर्छनाएं–उत्तरमंदा, रत्ना, उत्तरा, उत्तरासमा, समक्रांता, सुवीरा और अभिरूपा। गान्धार ग्राम की सात मूर्छनाएं–नंदी, क्षुद्रिका, पूरिमा, शुद्धगान्धारा, उत्तरगान्धारा, सुष्ठुतरमायामा और उत्तरायतकोटिमा।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ मूल बीज	४६६	२	६६	दश अ.४
मूल सूत्र चार	२०४	१	१६३	
मूलातिशय अरिहन्त देव के	१२६ख	१	६६	स्या. का १ टी.
मृगचर्या पर नौ गाथाएं	६६४	७	१८६	
मृगापुत्र (अन्यत्वभावना)	८१२	४	३८२	उत्त अ १९
मृगापुत्र की कथा	६१०	६	२६	वि अ १
मृगावती	८७५	५	३०३	आव ह नि गा १०४८, दश.अ १ नि गा.७६
मृदुकारुणिकी विकथा	५३२	२	२६७	ठा.७ उ ३ सू ५६९
मृषावाद चार प्रकार का	२७०	१	२४६	दश अ ४ दूसरे महाव्रत की टीका
मृषावाद दस प्रकार का	७००	३	३७१	ठा.१० सू ७४१, पन्न प.११ सू १६५, ध.अधि ३ श्लो ४१ टी पृ १२२
मृषावादविरमणरूप द्वितीय महाव्रत की पाँच भावनाएं	३१८	१	३२५	सम २५, आचा श्रु.२ चू ३ अ.२४ सू १७९, आव ह अ ४ पृ ६५८, प्रव.द्वा ७२ गा ६३६-४०, ध. अधि ३ श्लो.४५ टी पृ.१२५
मृषावाद विरमण व्रत निश्चय और व्यवहार से	७६४	४	२८१	आगम.
मेघ की उपमा से ४ दानी पुरुष	१७५	१	१२६	ठा ४ उ.४ सू ३४६
मेघ की उपमा से पुरुष चार	१७३	१	१२७	ठा ४ उ ४ सू ३४६
मेघकुमार की कथा	६००	५	४२६	ज्ञा अ.१
मेघ की उपमा से वक्ता और दाता के चार प्रकार	१७४क	१	१२८	ठा ४ उ.४ सू ३४७

१ जिस वनस्पति का मूल भाग बीज का काम देता है, जैसे कमल आदि।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मेघ के अन्य चार भेद	१७४ख	१	१२६	ठा.४ उ४ सू ३४६
मेघ चार	१७२	१	१२७	ठा ४ उ ४ सू. ३४६
मेतार्यस्वामी का परलोक के विषयमें शंकासमाधान	७७५	४	५६	विशे.गा.१६४६-१६७१
मेरुपर्वत के चार वन	२७३	१	२५१	ठा.४उ.२सू ३०२
मेरुपर्वत के सोलह नाम	८७०	५	१७१	सम.१६,ज.वच.४सू १०६
मैत्री,प्रमोद,करुणा और माध्यस्थ्य भावनाएं	४६७	२	१८८	
मैत्री भावना	२४६	१	२२४	भावना,च,क.भा २श्लो.३५-४२
मैथुन विरमण रूप चतुर्थ महाव्रत की पाँच भावनाएं	३२०	१	३२७	सम २५,आचा श्रु २चू ३अ २४ सू १७६,प्रव द्वा ७२गा ६३६, आव ह अ.४पृ ६५८,ध अधि ३ श्लो ४५ टी. पृ १२५
मैथुन विरमण व्रत निश्चय और व्यवहार से	७६४	४	२८२	आगम
मैथुन संज्ञा	१४२	१	१०५	ठा ४ सू.३५६, प्रव द्वा १४५
मैथुन संज्ञा	७१२	३	३८७	ठा १०उ ३सू.७५२,भ श ७उ ८
मैथुनसंज्ञा चार कारणों से उत्पन्न होती है	१४५	१	१०६	ठा ४उ ४सू ३५६,प्रवद्वा १४५ गा ६२३
मोक्ष	४६७	२	२०६	
मोक्ष के पन्द्रह अंग	८५०	५	१२१	पंच व गा.१५६-१६३
मोक्षगामीआत्माके१४स्वप्न	८२६	५	२०	भ श १६उ ६सू ५८०
मोक्षतत्त्वकानौद्वारोंसेवर्णन	६३३	३	१६८	नवगा ३२-३३
मोक्षप्राप्ति के काल स्वभाव आदि पाँच कारण	२७६	१	२५७	आगम,कारण,सम्मति भा ५ काण्ड ३गा ५३

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मोक्षमार्ग के चार भेद	१६५	१	१५३	उत्त अ २८ गा २
मोक्षमार्ग के तीन भेद	७६	१	५७	उत्त अ २८गा ३०,तत्त्वार्थ.अध्या १
मोक्षमार्गपर१५गाथाएं	६६४	७	१६५	
मोक्षविषयकगणधरप्रभासस्वामीका शंका समाधान	७७५	४	६०	विशे. गा १६७२-२०२४
मोसली प्रतिलेखना	४४६	२	५४	ठा.६सू ५०३,उत्त.अ.२६गा.२६
मोह (सम्मोही भावना)	४०६	१	४३३	उत्त अ.३६,प्रव द्वा ७३ गा.६४७
मोह गर्भित वैराग्य	६०	१	६५	अ.भा २ श्लो.११८
मोह जनन	४०६	१	४३३	उत्त.अ ३६,प्रव द्वा.७३गा.६४६
मोहनीयकर्म और उसके भेद	५६०	३	६२	कर्म भा १गा.१३-२२,तत्त्वार्थ अध्या ८,पन्न प २३सू २६३
मोहनीयकर्मकी२८प्रकृति	६५१	६	२८४	कर्म.भा १गा १३-२२,सम २८
मोहनीयकर्मकीव्याख्या,भेद२८		१	१६	ठा.२सू १०५,कर्म.भा.१गा.१३
मोहनीय कर्म के ५३ नाम	१००८	७	२७६	सम ५२,भग श १२उ ५सू ४५०
मोहनीयकर्मबाँधनेकेछःकारण	४४२	२	४४	भ श.८ उ ६ सू ३५१
मोहनीयकर्मबाँधने के प्रकार और उसका अनुभाव	५६०	३	६३	भग श ८उ ९सू ३५१,पन्न प.२३ सू २९२
मोहनीयकर्मवेदताहुआजीव क्या मोहनीय कर्म बाँधता है या वेदनीय कर्म बाँधता है?	६८३	७	१२०	उत्त०सू.३८
मौखरिक	४४४	२	४८	ठा ६उ ३सू ५२९,बृ(औ.)उ.६
[1] मौन चरक	३५३	१	३६८	ठा ५उ.१ सू.३९६
मौर्यपुत्र गणधरका देवोंके विषय में शंका समाधान	७७५	४	५०	विशे गा १८६४-१८८४

[1] मौन या पूर्व भाषण को त्याग करने वाला अभिग्रहधारी साधु।

य

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
यतना के विषय में ३ गाथा	६६४	७	१६५	
यतिधर्म दस	३५०, ३५१	१	३६४, ३६६	ठा १०सू ७१२,ध.अधि.३ श्लो ४६पृ १२७,प्रव द्वा ६६ गा.५५४
यति धर्म दस	६६१	३	२३३	नव गा २३,सम १०,शा.भा.१प्रक ८
यथाख्यात चारित्र	३१५	१	३२१	ठा ५उ २सू ४२८ अनु सू १४४, विशे गा १२६०-१२८०
यथाच्छन्द साधु	३४७	१	३६३	आव ह अ.३ नि गा ११०७-८ पृ ८१६,प्रव द्वा २गा १२१-१२३
यथाप्रवृत्तिकरण	७८	१	५५	आव म. गा १०६-१०७टी, विशे गा.१२०२-१२१८,प्रव द्वा २२४गा १३०२टी ,कर्म भा २गा २व्याख्या ,आगमें
यथालन्दिक कल्प	५२२	२	२५६	विशे गा.७
यथा सूक्ष्म कुशील	३६६	१	३८४	ठा ५उ ३ सू ४४५
यथा सूक्ष्म निर्ग्रन्थ	३७०	१	३८६	ठा ५उ,३ सू ४४५
यथा सूक्ष्म पुलाक	३६७	१	३८२	ठा ५सू ४४५, भ श २५उ ६
यथा सूक्ष्म बकुश	३६८	१	३८३	ठा ५उ ३ सू.४४५
यम	६०१	३	११५	यो,रा यो
याथातथ्य स्वप्न दर्शन	४२१	१	४४४	भ.श १६उ ६सू ५७७
यावत्तावत् संख्यान	७२१	३	४०५	ठा १०उ ३सू ७४७
युग संवत्सर की व्याख्या और उसके पाँच भेद	४००	१	४२५	ठा ५उ ३स ४६०,प्रव द्वा १४२ गा ६०१
युग्म नारकी जीवों में	५६०	२	३४१	भ श १८उ ४ सू ६२४
योग आश्रव	२८६	१	२६६	ठा.५उ २सू ४१८,सम.५

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
योग का चौथा अङ्ग (प्राणायाम)	५५६	२	३०२	यो प्रका ५, रा यो, हठ, पी १, गीता अध्याय ६
योग का साधन करने के लिये नियमित आहार विहारादि	५५६	२	३१४	गीता अध्याय ६
योग की व्याख्या और भेद	६५	१	६८	ठा. ३ सू. १२४, तत्त्वार्थ अध्या १
योग के कुछ आसन	५५६	२	३१०	पी० १०
योग के पन्द्रह भेद	८५५	५	१३८	पन्न प १६ सू २०२, भ श. २५ उ. १
योग दर्शन	४६७	२	१४६	
योग दोष	८६६	५	१६५	प्रव. द्वा. ६७ गा ५६८, ध. अधि ३ श्लो २२ पृ. ४०, पि. नि गा. ४०६, पिं. वि गा. ५६, पंचा. १३ गा १६
योग नारकियों में	५६०	२	३३७	जी० प्रति ३ सू ८८
योग परिणाम	७४६	३	४२७	ठा १० उ ३ सू ७१३, पन्न प. १३
योग प्रतिक्रमण	३२६	१	३३८	ठा ५ उ. ३ सू ४६७, आव. ह अ. ४ गा. १२५०-१२५१ पृ ५६४
योगमार्गणा और उसके भेद	८४६	५	५८	कर्म. भा ४ गा १०
१ योगवाहिता	७६३	३	४४५	ठा १० उ. ३ सू ७५८
योग संग्रह बत्तीस	६६५	७	१६	उत्त अ ३१ गा. २० टी., प्रश्न धर्म-द्वा ५ सू २८ टी, सम. ३२, आव. ह अ ४ गा. १२७४-१२८ पृ ६६३
योग सत्य	६६८	३	३७०	ठा. १० सू ७४१, पन्न. प. ११ सू. १६५, ध अधि ३ श्लो ४१ टी. पृ. १२१
योगांग आठ	६०१	३	११४	यो०, रा० यो०
योगात्मा	५६३	३	६६	भ श १२ उ १० सू. ४६७

१ शुभकर्म बांधने का कारण, सांसारिक पदार्थों पर से राग हटा कर शास्त्रों का पठन पाठन करना, इससे शुभ कर्मों का बन्ध होता है ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
योनि की व्याख्या और भेद	६७	१	४७	तत्त्वार्थ अध्या २, ठा. ३ सू. १४०
योनि संग्रह आठ	६१०	३	१२७	दश० अ ४, ठा. ८ उ ३ सू. ५९५

र

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
रज्जु की व्याख्या	८४५	५	४६	प्रव द्वा १४३ गा ९१७, तत्त्वार्थ अध्या १ सू ८ टिप्पणी
१ रज्जु संख्यान	७२१	३	४०४	ठा १० उ ३ सू. ७४७
रति अरति पर छः गाथाएं	९९४	४	१९०	
रत्न चौदह चक्रवर्ती के	८२८	५	२०	सम १४
रत्नावली आदि तप काली आदि रानियों के	६८६	३	३३५	अत० व ८
रत्नावली तप यंत्र सहित	६८६	३	३३६	अत० व ८
रस गौरव (गारव)	९८	१	७०	ठा ३ उ ४ सू २१४
रस घात	८४७	५	७८	कर्म भा २ गा २
रसना के संयम पर ७ गाथा	९९४	७	२१२	
रसनेन्द्रिय	३९२	१	४१८	पन्न प १५ उ १ सू १९१, ठा ५ उ ३ सू ४४३, जै प्र.
रस नौ काव्य के	६३९	३	२०७	अनु० सू १२९ गा. ६३-८१
रस परिणाम	७५०	३	४३४	ठा १० उ ३ सू ७१३ टी., पन्न प १३ सू १८४-१८५
रस परित्याग	४७६	२	८६	उत्त. अ ३० गा ८, ठा ६ सू ५११, उव सू १९, प्रव द्वा ६ गा २७०
रस परित्याग के नौ भेद	६३३	३	१८९	उव सू १९, भ श २५ उ ७ सू ८०२
रस पाँच	४१५	१	४३९	ठा ५ उ १ सू ३९०

१ रस्सी से नाप कर लम्बाई चौड़ाई मालूम करना रज्जु सख्यान कहलाता है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
रस वाणिज्जे कर्मादान	८६०	५	१४५	उपा अ १ सू ७, भग. श ८ उ ५ सू. ३३०, आव ह अ ६ पृ ८२८
राग द्वेष विषयक दस गाथाएं	९९४	७	२३३	
राग बन्धन	२६	१	१८	ठा २ उ.४ सू ९६
राज कथा चार	१५२	१	११०	ठा. ४ उ २ सू २८२
राजकथा से होने वाली हानि	१५२	१	१११	ठा ४ उ २ सू २८२ टी.
१ राजपिण्ड कल्प	६६२	३	२३७	पंचा १७ गा २०-२१
राजमती रहनेमि की कथा	७७१	४	१३	दश० अ २ टी.
राजमती सती	८७५	५	२४९	दश. अ २, त्रि. प. पर्व ८, उत्त अ. २२, राजमती (पूज्य श्री जवाहिराचार्य)
राजा की ऋद्धि के तीन भेद	१०१	१	७१	ठा ३ उ ४ सू. २१४
राजा के अन्तःपुर में साधु के प्रवेश करने के पाँच कारण	३३८	१	३४८	ठा ५ उ.२ सू ४१५
राजाभियोग आगार	४५५	२	५८	उपा अ १ सू. ८, आव. ह अ. ६ पृ ८१०, प्रव सा. द्वा ४ गा २१०
२ राजावग्रह	३३४	१	३४४	भग. श १६ उ २ सू ५६७, प्रव सा. द्वा ८१ गा ६८१, आचा श्रु. २ चू. १ अ. ७ उ. २ सू १६२
राजा श्रेणिक के कोप का दृष्टान्त भाव अननुयोग पर	७८०	४	२५३	आव ह. गा १३४, सू. टीका नि. गा १७२
रात्रिभोजन त्याग पर ५ गाथा	९९४	७	१८४	

१ राजा के महलों से आहारादि लेने के विषय में बताया गया साधु का आचार विशेष।

२ चक्रवर्ती आदि राजा जितने क्षेत्र के स्वामी हैं उस क्षेत्र में रहते हुए साधुओं को राजा की आज्ञा लेना राजावग्रह है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
राम कृष्णा रानी	६८६	३	३४६	अंत व ८ अ ८
रायप्पसेणी (राजप्रश्नीय) सूत्र का संक्षिप्त विषय वर्णन	७७७	४	२१६	
राशि की व्याख्या और भेद	७क	१	४	सम १४९
[1] राशि संख्यान	७२१	३	४०४	ठा १० उ ३ सू ७४७
राष्ट्र धर्म	६९२	३	३६१	ठा. १० उ. ३ सू ७६०
रुचक प्रदेश आठ	६०७	३	१२५	आचा श्रु १ अ १ उ १ नि गा ५२ टी, आगम, भ श ८ उ ९ सू ३४७ टी, ठा ८ उ ३ सू ६२४
[2] रुचि	१२७	१	९१	भ श १३ उ ९ सू ७१९
रुचि दस	६९३	३	३६२	उत्त. अ २८ गा १६-२७
रूप मद	७०३	३	३७४	ठा १० सू ७१०, ठा ८ सू ६०६
[3] रूप सत्य	६९८	३	३६९	ठा १० सू ७४१, पन्न प ११ सू १६५, ध अधि ३ श्लो ४१ टी पृ १२१
रूपस्थ धर्मध्यान	२२४	१	२०८	ज्ञान प्रक ३९, यो प्रका ९, कभा २ श्लो २०९
रूपातीत धर्मध्यान	२२४	१	२०९	ज्ञान प्रक ४०, यो प्रका १०, कभा २ श्लो २०९
रूपी	६०	१	४२	तत्त्वार्थ अध्या ५ सू. ४
रूपी अजीव के ५३० भेद	६३३	३	१८१	पन्न प १ सू ३, उत्त अ. ३६ गा ४६
रूपी के दो भेद	६१	१	४२	भ श १२ उ ५ सू ४५०

1 धान आदि के ढेर का नाप कर या तोल कर परिमाण जानना।

2 श्रद्धा पूर्वक ज्ञान दर्शन चारित्र आदि के सेवन की इच्छा।

3 वास्तविकता न होने पर भी रूप विशेष को धारण करने से किसी व्यक्ति या वस्तु को उस नाम से पुकारना रूपसत्य है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
रेचक प्राणायाम	५५६	२	३०३	यो.प्रका.५ श्लो.६, रा.यो, ह्ठ.
रेचकादिप्राणायामकाफल	५५६	२	३०४	यो.प्रका.५ श्लो.१०—१२
रेवती	६२४	३	१७०	ठा ६उ.३ सू.६६१
रैवत या धैवत स्वर	५४०	२	२७१	अनु.सू.१२७गा.२५,ठा ७सू५५३
रोग उत्पन्न होने के नौ स्थान	६३७	३	२०५	ठा.६उ.३ सू.६६७
१ रोचक समकित	८०	१	५८	विशे.गा.२६७५,द्रव्यलो स.३ श्लो.६६६,ध अधि.२श्लो.२२ टी पृ.३६,प्र.सा.गा ४६
रोहक की औत्पत्तिकी बुद्धि के चौदह दृष्टान्त	६४६	६	२४३	न.सू.२७ गा.६४
रोहगुप्तनामकछठेनिह्नवका त्रैराशिकमत समाधान सहित	५६१	२	३७१	विशे.गा २४५१-२५०८
रौद्रध्यान	२१५	१	१६४	सम ४,प्रव.द्वा ६गा २७१टी, दशा.अ १नि.गा.४८ टी.
रौद्रध्यान के चार प्रकार	२१८	१	१६८	ठा.४ उ.१सू.२४७
रौद्र ध्यान के चार लक्षण	२१६	१	२००	ठा ४उ १सू २४७,भ.श.२५उ ७ सू८०३,आव ह.अ ४ ध्यान [illegible] गा.२६पृ.५६०
रौद्र रस	६३६	३	२०६	अनु सू.१३०गा ७०-७१

ल

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
लक्खवाणिज्जे कर्मादान	८६०	५	१८५	उपा अ १सू.७, भ श ८उ ५ सू ३३०,आव.ह.अ ६पृ.८२८
लक्षण की व्याख्या व भेद	६२	१	४३	स्याद्वादमं.प्रका.१

१ जिस समकित के होने पर जीव सदनुष्ठान में रुचि रखता है किन्तु सदनु-
ष्ठान नहीं कर पाता वह रोचक समकित है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
लक्षण दस श्रावक के	६८४	३	२६२	भ श २३ ५सू १०७
१ लक्षण दोष	७२२	३	४०८	ठा १०उ ३सू ७४३
लक्षण पन्द्रह विनीत के	८५२	५	१२५	उत्त अ ११गा १०-१३
लक्षणसंवत्सर की व्याख्या और उसके पाँच भेद	४००	१	४२७	ठा ५ उ ३ सू ४६०, प्रव द्वा १४२ गा ६०१
लक्षण सत्रह श्रावक के	८८३	५	३६२	ध अधि २श्लो.२२टी पृ ४६
लक्षणाभास की व्याख्या और भेद	१२०	१	८४	न्यायदी.प्रका १
२ लगण्डशायी	३५६	१	३७३	ठा ५उ १ सू ३६६
लघुसर्वतोभद्रतपयंत्रसहित	६८६	३	३४५	अंत व ८अ.६
लघुसिंहक्रीड़ातपयंत्रसहित	६८६	३	३४१	अंत व ८ अ ३
लघुसिंह निष्क्रीड़ित तप	६८६	३	३४१	अंत व ८ अ.३
लज्जादान	७६८	३	४५१	ठा १०उ ३सू ७४५
लब्धि दस	६५८	३	२३०	भ श ८उ २ सू ३२०
लब्धि पुलाक	३६६	१	३८०	ठा ५उ ३सू ४४५, भ श.२५ उ ६सू ७५१ टी.
लब्धि प्रत्यय वैक्रिय शरीर	३८६	१	४१३	पन्न प २१सू २६७,ठा ५उ १ सू.३९५,कर्म भा १गा ३३
लब्धि भावेन्द्रिय	२५	१	१७	तत्त्वार्थ अध्या २सू १८
लब्धि मद	७०३	३	३७४	ठा १०सू ७१०,ठा ८सू ६०६
लब्धियाँ अठाईस	६५४	६	२८६	प्रव द्वा २७०गा १४६२-१५०८
लयन पुण्य	६२७	३	१७२	ठा.६उ ३ सू.६७६

१ वाद का एक दोष, इसके अव्याप्ति, अतिव्याप्ति और असम्भव तीन भेद हैं।

२ दु संस्थित या बांकी लकड़ी की तरह कुबड़ा होकर मस्तक और कोहनी को जमीन पर लगाते हुए एवं पीठ से जमीन को स्पर्श न करते हुए सोने वाला साधु।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
लव (७स्तोक का एक लव)	५५१	२	२६३	जं.वक्ष.२सू.१८
लवणसमुद्रमें चन्द्रसूर्यादि ज्योतिषी देवों की संख्या	७६६	४	३००	सूर्य प्रा १६सू १००
लाघव	३५०	१	३६५	ठा.५सू ३९६, प्र [illegible] ४६पृ १२७, प्रव द्वा ६६गा.५५४
लान्तकदेवलोक का वर्णन	८०८	४	३२२	पन्न प २सू.५३
लाभान्तराय	३८८	१	४१०	कर्म भा.१गा.५२, पन्न प २३
लिंगकुशील	३६६	१	३८४	ठा ५उ.३सू.४४५
लिंग तीन समकित के	८१	१	५६	प्रव द्वा १४८गा [illegible]
लिंग पुलाक	३६७	१	३८२	ठा.५सू ४४५, भ.श २५उ ६
लिप्त दोष(दायक दोष का एक भेद)	६२२	३	२४७	प्रव द्वा ६७ गा.५६८पृ १४८, पिं नि गा ५२०, [illegible]
लिपियाँ अठारह	८८६	५	४०१	पन्न प.१ सू ३७, सम.१८
* लूक्ष चरक	३५२	१	३६७	ठा ५उ १सू [illegible]
* लूक्षाहार	३५६	१	३७१	ठा ५उ १सू ३९६
लेवालेवेणं आगार(आयंबिल का)	५८८	३	४२	[illegible]
लेश्या का स्वरूप समझाने के लिए दो दृष्टान्त	४७१	२	७४	[illegible]
लेश्या छः	४७१	२	७०	[illegible]

* [illegible]

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
लेश्या नारकी जीवों में	५६०	२	३२१	जीवाभि ३सू.८८,प्रव द्वा १७८
लेश्या परिणाम	७४६	३	४२७	ठा १०उ ३सू ७१३,पन्न प १३
लेश्या मार्गणा और भेद	८४६	५	५८	कर्म.भा ४गा.१३
लोक का नक्शा	८४५	५	५३	
लोक का नक्शा बनाने की विधि	८४५	५	४८	प्रव द्वा १४३गा.९०६-९०७
लोक का संस्थान	८४५	५	४७	तत्त्वार्थ.अध्या ३सू ६,प्रव द्वा १४३गा.९०५
लोक की व्याख्या और भेद	६५	१	४५	लोक भा २स १२,स श ११ उ १०सू ४२०
लोक की व्यवस्था ४ प्रकार से	२६७	१	२४७	ठा ४उ.२ सू २८६
लोक के भेद	८४५	५	४६	तत्त्वार्थ.अध्या ३ सू.६ टी
लोक चौदह राजू परिमाण	८४५	५	४५	प्रव द्वा १४३गा ९०२-९१७, तत्त्वार्थ अध्या.३ सू ६ टी ,भ श.५उ ९सू २२६,भ श.१३ उ ४ सू ४७९-४८०
लोक निराकृत साध्य धर्म विशेषण पक्षाभास	५४९	२	२९१	रत्ना परि ६सू ४४
[1] लोकपाल	७२९	३	४१६	तत्त्वार्थ अध्या ४ सू ४
लोक भावना	८१२	६	३७०	शा भा २प्रक ११,भावना ज्ञान. प्रक २, प्रव द्वा ६७ गा ५७२, तत्त्वार्थ.अध्या ९ सू ७
लोक में अन्धकार कितने कारणों से होता है?	९१८	६	१५६	ठा ४उ ३ सू ३२४

[1] सीमा (सरहद) की रक्षा करने वाले देव लोकपाल कहलाते हैं।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
लोक में चौदह राजू और खण्ड रज्जु का वर्णन	८४५	५	४८	प्रव.सा.१४३गा ९०२-९१७
लोकरूढिनिराकृतवस्तुदोष	७२३	३	४११	ठा १०उ.३ सू ७४३टी
लोकवादी	१९२	१	१४९	आचा श्रु १उ १ सू ५
१लोक संज्ञा	७१२	३	३८७	ठा १०उ ३सू ७५२,भग.श ७उ ८
लोकस्थिति आठ	६२१	३	१४८	भग श १उ.६,ठा.८उ.३सू ६००
लोकस्थिति दस	७५२	३	४३६	ठा.१०उ ३सू ७०४
लोकाकाश	३४	१	२३	ठा २उ १ सू ७४
लोकोपचार विनय	४९८	२	२३०	उवसू २०,भग श २५उ ७सू.८०२, ठा ७उ ३सू ५८५,ध.अधि ३श्लो. ६४ टी.पृ १४१
लोकोपचार विनय के सात भेद	५०५	२	२३३	भग २५उ ७सू८०२ ठा.७उ ३ सू ५८५, उवसू २०
लोभ के चार भेद और उनकी उपमाएं	१६२	१	१२२	ठा.४उ २सू २९३, पन्न प.१४ सू १८८,कर्म.भा १गा २०
लोभ के चौदह नाम	८३७	५	३२	सम ५२
लोभ दोष	८६६	५	१६५	प्रव सा ६७गा.५६७,धर्म अधि ३ श्लो.२२टी पृ ४०,पिं नि गा ४०८, पिं नि गा ५८,पंचा.१३गा.१८
लोभ संज्ञा	७१२	३	३८७	ठा १०उ ३सू ७५२,भग.श.७उ८
लोभ निःसृत असत्य	७००	३	३७१	ठा १०उ,३सू ७४१,पन्न प.११ सू १६५,धर्म अधि ३श्लो ४१टी पृ १२२

१ [illegible] के आधार से लिखा गया है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
¹लोल प्रमाद प्रतिलेखना	५२१	२	२५१	उत्त अ २६गा २७
लौकान्तिक देव आठ और उनके विमान	६१५	३	१३२	भ श ६उ ५सू २४३, ठा ८उ ३ सू ६२३
लौकान्तिक देव नौ	६४५	३	२१७	ठा ६उ ३सू ६८४
लौकिक फल के लिए यक्ष यक्षिणी की पूजा करने में क्या दोष है?	८१८	६	१४६	भ श २३ ५सू १०७, श्राद्ध प्रति (रत्नशेखरसूरिकृतविवरण) पृ ३३, ध अधि २श्लो २२पृ ३८

व

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
वक्खार पर्वत दस सीता महानदी के दोनों तटों पर स्थित	७५५	३	४३६	ठा १०उ.३सू ७६८
वक्खार पर्वत दस सीतोदा महानदी के दोनों तटों पर स्थित	७५६	३	४३६	ठा १०उ ३सू ७६८
वक्तव्य अवक्तव्य	४२४	२	१०	आगम, उत्त अ ३६
वक्तव्यता	४२७	२	२६	अनु सू ७०
वचन के दस दोष सामायिक के	७६५	३	४४८	शिक्षा.
वचन के सोलह भेद	८६६	५	१७०	पन्न प ११सू १७३, आचा.श्रु २चू १अ १३ उ १
वचन गुप्ति	१२८ख	१	६२	उत्त.अ २४, ठा.३उ १सू १२६
वचन पुण्य	६२७	३	१७२	ठा ६उ ३ सू ६७६
वचनयोग	६५	१	६८	ठा ३सू १२४, तत्त्वार्थ अध्या ६
वचन विकल्प सात	५५४	२	२६५	ठा ७उ ३ सू ५८४
वचन विनय	४६८	२	२३०	उव सू २०, भ श २५उ ७ सू. ८०२, ठा.७उ ३सू ५८५, ध. अधि ३श्लो ५४ टी पृ ४१

१ जमीन के साथ वस्त्र को रगड़ते हुए उपेक्षा पूर्वक प्रतिलेखना करना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
वचन विनय अप्रशस्त स्थान	५०२	२	२३२	भग. श. २५ उ. ७ सू. ८०२, ठा. ७ उ. ३ सू. ५८५
वचन विनय प्रशस्त स्थान	५०१	२	२३२	
वचन विभक्तियाँ आठ	५९५	३	१०५	अनु. सू. १२८, गा. ८, ठा. ३ सू. ६०८, [illegible]
वचन सम्पदा	५७४	३	१३	[illegible]
वचनातिशय पैंतीस	९७९	७	७१	[illegible]
वज्रऋषभ नाराच संहनन	४७०	२	६९	[illegible]
वज्रस्वामी की कथा पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	१०६	[illegible]
वज्रस्वामी की कथा वात्सल्य के लिए	८८१	४	४८१	[illegible]
वणकम्मे कर्मादान	८६०	५	१४४	[illegible]
वनस्पतिकाय	४६२	२	६४	[illegible]
वनस्पति काय के दस भेद	७४४	३	४२२	[illegible]
वनस्पति के तीन भेद	७०	१	५०	[illegible]
वनीपक की व्याख्या, भेद	३७३	१	३८७	[illegible]
वनीपक दोष	८६६	५	१६५	[illegible]
वन्दना आवश्यक	४७९	२	६१	[illegible]
वन्दना के लाभ	४७७	२	८४	[illegible]
वन्दना के पाँच अपवाद	३४८	१	३६३	[illegible]

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
वन्दना के बत्तीस दोष	९६६	७	३८	आव ह गा १२०७-१२११ पृ. ५८३, बृ उ ३गा ४४७१-८४, प्रव द्वा २गा १५०-१७३
वन्दना योग्य समय के पाँच बोल	३४९	१	३६४	आव ह अ ३नि गा. ११९९ पृ ५८१, प्रव द्वा २गा १२५
'वमन किये हुए को ग्रहण न करना' विषय पर छः गाथाएं	९९४	७	१८९	
[1] वय स्थविर	९१	१	६६	ठा ३उ ३सू १५९
वरदत्त कुमार की कथा	९१०	६	६०	वि श्र २०
वर्गणा आठ	६१७	३	१३४	विशे गा ६३१-६३७
वर्ग तप	४७७	२	८८	उत्त० अ ३० गा १०
वर्ग वर्ग तप	४७७	२	८८	उत्त अ ३०गा ११
वर्ग वर्ग संख्यान	७२१	३	४०६	ठा १०उ ३ सू ७४७
वर्ग संख्यान	७२१	३	४०६	ठा १०उ ३ सू ७४७
वर्ण नारकी जीवों का	५६०	२	३३६	जी प्रति ३सू ८७
वर्ण परिणाम	७५०	३	४३३	ठा. १०उ ३सू ७१३, पन्न प १३
वर्ण पाँच	४१४	१	४३९	ठा ५उ १ सू ३९०
वर्ण संज्वलनता विनय चार	२३७	१	२१७	दशा द ४
वर्णादि के भेद से स्त्रियों का स्वर भेद	५४०	२	२७५	अनु सू १२७ गा ५५, ठा ७ उ ३सू ५५३
वर्तमान अवसर्पिणी के कुलकरों की भार्याओं के नाम	५०९	२	२३८	सम १५७, ठा ७उ ३सू ५५६
वर्तमान अवसर्पिणी के चौबीस तीर्थङ्कर	९२९	६	१७७	सम १५७ आव ह नि गा. २०९-२६०, आव स गा २३१-३८९, स.ग, प्रव द्वा ७ से ५५

[1] साठ वर्ष की अवस्था के साधु वय स्थविर (जाति स्थविर) कहलाते हैं।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
वर्तमान अवसर्पिणी के सात कुलकर	५०८	२	२३७	ठा.७ उ.३ सू.५५६, सम.१५७, जं.भा.२ सू.२९
वर्धमान (महावीर)	७७०	४	३	[illegible]
१ वर्धमान अवधिज्ञान	४२८	२	२७	ठा.६ उ.३ सू.५२६, नं.सू.१२
वर्षधर पर्वत सात	५३७	२	२७०	ठा.७ उ.३ सू.५५५, सम.७
वलन्मरण	७६८	४	२६८	भग.२ उ.१ सू.९१
वलन्मरण	८७६	५	३८३	सम.१७, प्रव.द्वा.१५७ गा.१००६
वलय तीन	११५	१	८१	ठा.३ उ.४ सू.२२४
*वशार्तमरण	८७६	५	३८३	सम.१७, प्रव.द्वा.१५७ गा.१००६
*वसट्ट मरण	७६८	४	२६८	भग.२ उ.१ सू.९१
वसति के नौ भेद	६२३	६	१७०	[illegible]
वसति परिकर्मोपघात	६६८	३	२५५	ठा.१० उ.३ सू.७३८
वसुमती (चन्दनबाला)	८७५	५	१६७	[illegible]
वस्तु का लक्षण	४६७	२	१८२	
वस्तु के स्वपर चतुष्टय के चार भेद	२१०	१	१८८	[illegible]
वस्तुत्व गुण	४२५	२	१६	[illegible]
+ वस्तु दोष	७२२	३	४१०	ठा.१० उ.३ सू.७४३
+ वस्तु दोष	७२३	३	४११	ठा.१० उ.३ सू.७४३

१ [illegible]

* [illegible]

+ [illegible]

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
वस्तु श्रुत	९०१	६	५	कर्म भा १ गा ७
वस्तु समास श्रुत	९०१	६	५	कर्म भा. १ गा ७
वस्त्र के पाँच भेद	३७४	१	३८९	ठा ५उ ३ सू.४४६
वस्त्र पुण्य	६२७	३	१७२	ठा ९उ ३ सू-६७६
वह्निदशा सूत्र के १२ अ० का संक्षिप्त विषय वर्णन	७७७, ३८४	४, १	२३४, ४०५	निरयावलिका सूत्र
वाक् कौत्कुच्य	४०२	१	४२९	उत्त अ ३६गा २६१,प्रवद्वा ७३
वागतिशय	१२९ख	१	९७	स्या का १ टी.
वाचना	३८१	१	३९८	ठा ५उ ३सू ४६५
वाचना के चार अपात्र	२०७	१	२८५	ठा ४उ ३ सू ३२६
वाचना के चार पात्र	२०६	१	२८५	ठा.४उ ३सू ३२६
वाचना देने के पाँच बोल	३८२	१	३९८	ठा-५उ ३ सू ४६८
[1] वाचना सम्पदा	५७४	३	१४	दशा द ४,ठा ८उ ३सू-६०१
वाणी के पैंतीस अतिशय	९७९	७	७१	सम ३५टी, रा सू ४ टी, उव.सू १०टी.
[2] वात्सल्य दर्शनाचार	५६९	३	८	पन्न०प १सू ३७गा.१२८,उत्त. अ २८ गा ३१
वाद के दस दोष	७२२	३	४०६	ठा १०उ ३सू ७४३
वादी के चार भेद	१९१	१	१४४	भ श ३०उ १सू ८२४टी ,आचा श्र १उ १सू ३टी,सूय श्र.१२
वादी चार	१९२	१	१४९	आचा श्र १उ १सू ५
[3] वामन संस्थान	४६८	२	६८	ठा.६सू ४९५,कर्म भा १गा.४०

१ गणि की एक सम्पदा, शिष्यों को शास्त्र पढाने की योग्यता।

२ अपने धर्म में तथा स्वधर्मियों में प्रेम रखना। ३ जिस शरीर में छाती, पेट पीठ आदि अवयव पूरे हों किन्तु हाथ पैर आदि अवयव छोटे हों।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
वायुकाय	४६२	२	६४	ठा.६ उ.३ सू.४८०, दश.अ.४, धर्म भा.४ [illegible]
वायुकुमारों के दस अधिपति	७२९	३	४१९	भग.३ उ.८ सू.१६८
वायु (अचित्त) के पाँच प्रकार	४१३	१	४३८	ठा.५ उ.३ सू.४४४
वायु के प्राण अपानादि प्रभेद	५५९	२	३०४	यो.प्र.५, यो.शा., [illegible]
वायु धारण करने का फल	५५९	२	३०६	यो.प्र.५, यो.शा., [illegible]
वायुभूति गणधर का जीव और शरीर की एकता और भिन्नता विषयक शंका समाधान	७७५	४	३४	विशे.गा.१६८५-१६८६
वारत्ता पर कथा	५७९	३	२५	[illegible]
वालुका पृथ्वी	४६५	२	६६	[illegible]
वासुदेव	४३८	२	४२	[illegible]
वासुदेव नौ	६४७	३	२१७	[illegible]
वासुदेव लब्धि	९५४	६	२९४	[illegible]
वासुदेवों के पूर्व भव के नाम	६५०	३	२१८	सम.१५८
विकथा की व्याख्या व भेद	१४८	१	१०७	[illegible]
विकथा प्रमाद	२९१	१	२७३	[illegible]
विकथा सात	५३२	२	२६७	[illegible]
* विक्षिप्ता प्रतिलेखना	४४९	२	५४	[illegible]
विक्षेपणा विनय के चार भेद	२३२	१	२१५	[illegible]
विक्षेपणी कथा की व्याख्या और उसके भेद	१९५	१	१९३	[illegible]

* [illegible]

विषय	बोल भाग	पृष्ठ	प्रमाण
विगत मिश्रिता सत्यामृषा	६९९ ३	३७०	ठा १०सू ७४१, पन्न ११सू. १६५, ध अधि ३श्लो ४१पृ १२२
विगय दस	७०६ ३	३८२	आव ह अ ६गा १६०१ पृ ८५३
विगय नौ	६३० ३	१७५	ठा ९उ ३सू ६७४, आव ह अ ६गा १६०१ पृ. ८५३ टी.
विग्रहगति नारकी जीवों की	५६० २	३४०	भ श १४उ १सू ५०२
१ विचिकित्सा	२८५ १	२६५	उपा अ.१सू ७, आव ह अ ६
विच्छिन्न बोल दस	६८२ ३	२९२	विशे०गा २५९३
विजय के विषय में ८ गाथाएं	९९४ ७	१९८	
विजय बत्तीस	९७१ ७	४३	जं वक्ष ४सू ९३-१०२, लोक भा २ स १७
विज्ञ (जीव का एक नाम)	१३० १	९८	भ श २उ.१ सू८८
विणीया (वैनयिकी) बुद्धि	२०१ १	१५९	न सू २६गा ६१, ठा-४सू-३६४
विदेह, विदेहदिन्न (महावीर)	७७० ४	४	जैनविद्यावोल्यूम १ न १
विद्यमान पदार्थ की अनुपलब्धि के इक्कीस कारण	९१४ ६	७१	विशे गा.१६८३ टी
२ विद्या दोष	८६६ ५	१६५	प्रव द्वा ६७गा ५६८, ध अधि ३ श्लो २२टी.पृ ४०, पि नि गा ४०९, पि वि गा ५९, पचा.१३गा १९
३ विद्याधर	४३८ २	४३	ठा ६सू ४९१, पन्न प १सू.३७
विद्युत्कुमारों के दस अधिपति	७३४ ३	४१८	भ श.३उ ८सू १६९

---

१ आगम तथा युक्ति संगत क्रिया विषय में फल के प्रति संदेह करना।

२ स्त्री रूप देवता अधिष्ठित जप होमादि से सिद्ध होने वाली विद्या का प्रयोग करके आहारादि लेना। ३ वैताढ्य पर्वत अधिवासी प्रज्ञप्ति आदि विद्याओं को धारण करने वाले विशिष्ट शक्ति सम्पन्न व्यक्ति।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
विनय	४७८	२	८९	उव.सू.२०, उत्त.अ.३० गा.३०, प्रव.द्वा.६ गा.२७१, ठा.६ सू.५११
विनय के तेरह भेद	८१३	४	३६१	दश.अ.९ उ.१ नि.गा.३२५-३२६, प्रव.द्वा.६५ गा.५५०-५१
विनय के बावन भेद	१००६	७	२७२	प्रव.द्वा.६५ गा.५५१, ध.अधि.३ श्लो.५४ पृ.१४१
विनय के मूल भेद सात और १३४ अवान्तर भेद	६३२	२	१९३	उव.सू.२०, भ.श.२५ उ.७ सू.८०२
विनय के विषय में ११ गाथाएं	९९४	७	१९५	
विनय के सात भेद	४९८	२	२२९	उव.सू.२०, भ.श.२५ उ.७ सू.८०२, ठा.७ उ.३ सू.५८५, ध.अधि.३ श्लो.५४ टी.पृ.१४१
विनयप्रतिपत्ति के ४ प्रकार	२३४	१	२१६	दशा.द.४
विनय प्रतिपत्ति चार	२२९	१	२१३	दशा.द.४
विनयवादी की व्याख्या और उसके बत्तीस भेद	१९१	१	१४७	भ.श.३० उ.१ सू.८२४ टी., आचा.श्रु.१ अ.१ उ.१ सू.३ टी., सूय.श्रु.१ अ.१२
विनय शुद्ध प्रत्याख्यान	२९८	१	३३७	आ.ह.अ.६, भा.ह.प्र.१ पृ.८४
विनय समाधि अध्ययन की चौदह गाथाएं	९३३	६	२०१	दश.अ.९ उ.२
विनयसमाधि अ० की १४ गाथा	८५३	५	१२७	दश.अ.९ उ.३
विनयसमाधि अ० की १७ गाथा	८७७	५	३७७	दश.अ.९ उ.१
विनयसमाधि अ० की ७ गाथा	५५३	२	२९३	दश.अ.९ उ.४
विनय समाधि के चार भेद	५५३	२	२९३	दश.अ.९ उ.४
विनय समाधि के चार भेद	५५३	२	२९४	दश.अ.९ उ.४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ विनयाचार	५६८	३	६	ध अधि १श्लो. १६टी पृ १८
विनीत के पन्द्रह लक्षण	८५२	५	१२५	उत्त उ ११गा १०-१३
२ विपक्ष पद नाम	७१६	३	३६६	अनु सू १३०
विपरीत स्वप्न दर्शन	४२१	१	४४५	भ श १६उ ६ सू. ५७७
विपर्यय	१२१	१	८६	रत्ना परि १, न्यायप्र मध्या. ३
विपाक विचय धर्मध्यान	२२०	१	२०४	ठा ४उ १सु २४७
विपाकसूत्र की बीस कथाएं	६१०	६	२६	वि
विपाक सूत्र के दोनों श्रुत-स्कन्धों का संक्षिप्त विषयवर्णन	७७६	४	२१३	
विपुलमति मनःपर्ययज्ञान	१४	१	१२	ठा २उ.१ सू ६७१
विपुलमति लब्धि	६५४	६	२६१	प्रव द्वा २७० गा १४६२
विप्रुडौषधिलब्धि	६५४	६	२६०	प्रव द्वा २७० गा १४६२
विभंगज्ञान साकारोपयोग	७८६	४	२६८	पन्न प २६सू ३१२
विभंगज्ञान सात	५५८	२	३०१	ठा ७उ ३सू ५४२
विभक्तियाँ आठ	५६५	३	१०५	सि कारकप्रकरण, अनु सू १२८, ठा ८उ ३ सू ६०६
विमान दस बारह देवलोक के दस इन्द्रों के	७४४	३	४२१	ठा १०उ ३सू ७६६
विमानों के तीन आधार	११४	१	८१	ठा ३उ ३ सू १८०
विरसाहार	३५६	१	३७१	ठा ५उ.१ सू ३९६
विराधना की व्याख्या, भेद	८७	१	६३	सम ३
विरुद्ध हेत्वाभास	७२२	३	४१०	ठा १०उ. ३सू ७४३टी
विरुद्धोपलब्धि हेतु के ७ भेद	५५५	२	२६६	रत्ना परि. ३सू ८३-९२

१ ज्ञानाचार का एक भेद, ज्ञानदाता गुरु का विनय रखना विनयाचार है।
२ विवक्षित वस्तु में जो धर्म है उससे विपरीत धर्म बताने वाला पद।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
विरोध दोष	५६४	३	१०३	प्र मी अध्या.१ आ १ सू.३३
विवाद के छः प्रकार	४६३	२	१०३	ठा.६ उ.३ सू ५१२
विविक्तचर्या की १६ गाथा	८६१	५	१४७	दश चू २
विविधगुण विशिष्ट श्रावक अन्त समय आलोचना प्रतिक्रमण कर संथारा पूर्वक काल कर कहाँ उत्पन्न होते हैं?	९८३	७	११४	उव सू ४१
विविध गुण सम्पन्न अनगार महात्मा इस भव की स्थिति पूरी कर कहाँ उत्पन्न होते हैं?	९८३	७	११५	उव सू. ४१
विवृतयोनि	६७	१	४८	तत्त्वार्थ भाष्य २, ठा.३ सू १४०
विशेष	४१	१	२६	रत्नाकर परि १, स्या.,का ४
विशेषण बाईस धर्म के	९१९	६	१५९	ध र्म १ श्लो. २ टी.पृ ४१
विशेषण १६ द्रव्यावश्यक के	८७२	५	१७६	विशे गा. ८४१-८५०, अनु सू. १३
विशेष दोष दस	७२३	३	४१०	ठा १० उ.३ सू ७४३
विशुद्धि दस	६६९	३	२५७	ठा १० उ.३ सू. ७३८
विश्राम चार	१८७	१	१४१	ठा ४ उ ३ सू ३१४
विश्राम चार श्रावक के	१८८	१	१४२	ठा ४ उ ३ सू ३१४
विष परिणाम छः	४८७	२	१००	ठा. ६ उ ३ सू ५३३
विषभक्षण मरण	७९८	४	२९९	भग.२ उ.१ सू ९१
विषय तेईस पांच इन्द्रियों के	९२६	६	१७५	[illegible]
विषय प्रमाद	२९१	१	२७२	[illegible]
विष्णुकुमार का दृष्टान्त भक्त रत्न प्रभावना के लिये	८२१	४	४८५	[illegible]

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
विसंभोगीकरनेके नौस्थान	६३२	३	१७६	ठा ९ उ ३ सू ६६१
विस वाणिज्जे कर्मादान	८६०	५	१४५	उपा.अ.१सू ७, भ.श.८उ.५सू. ३३०, आव ह अ ६ पृ ८२८
विस्तार नरकावासों का	५६०	२	३३६	जी.प्रति ३सू ८४
विस्तार रुचि	६९३	३	३६३	उत्त अ २८ गा.२४
विहरमान बीस	९०३	६	८	त्रिलोक, विहर, ठा.८सू ६३७
विहायोगति के सत्रह भेद	८२२	५	३८९	पन्न प १६ सू २०५
वीर कृष्णा रानी	६८६	३	३४५	अंत व.८ अ ७
वीर रस	६३९	३	२०७	अनु.सू १२९गा ६४-६५
वीरस्तुति अ० की २९ गाथा	९५५	६	२९९	सूय अ ६
[1] वीरासनिक	३५७	१	३७२	ठा ५उ १सू ३९६
[2] वीर्याचार	३२४	१	३३३	ठा.५उ २सू ४३२, ध अधि ३ श्लो ४४ पृ १४०
वीर्यात्मा	५९३	३	९६	भग १२ उ १० सू ४६७
वीर्यान्तराय के तीन भेद	३८८	१	४११	कर्म भा १गा ५२, पन्न प २३
वृक्ष की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२५७	नं सू.२७ गा ६३ टी
वृत्त संस्थान	४६९	२	६९	भ श २५उ ३सू ७२४, पन्न प.१
वृत्तिकान्तार आगार	४५५	२	५९	उपा अ.१सू ८, आव ह अ.६पृ. ८१०, ध अधि २श्लो २२पृ ४१
वृद्धि छः प्रकार की	४२५	२	२४	आगम.
वृषभ स्वर	५४०	२	२७१	अनुसू १२७गा २५, ठा ७सू ५५३

१ पैर जमीन पर रख कर सिंहासन पर बैठे हुए पुरुष के नीचे से सिंहासन निकाल लेने पर जो अवस्था रहती है उस अवस्था से बैठने वाला साधु।

२ धर्म कार्यों में यथाशक्ति मन वचन काया द्वारा प्रवृत्ति करना वीर्याचार है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
वेद	१३०	१	६८	भ.श २३-१सू ८८
१ वेदक समकित	२८२	१	२६२	कर्म भा.१ गा.१५
वेद की व्याख्या और भेद	६८	१	४६	कर्म भा १ गा २२
वेदना दस नारकी जीवों के	७४८	३	४२५	ठा.१० उ.३ सू ७५३
वेदना नरकों में	५६०	२	३१६	जी.प्रति ३सू ८६,प्रव द्वा १७४ गा १०७४,प्रश्नसंग्रह १सू.४
वेदना,निर्जरा नारकी जीवों में	५६०	२	३३६	भ श.७ उ ३ सू २७८
वेदना भय	५३३	२	२६८	ठा.७ उ ३ सू ५४६,सम ७
वेदना समुद्घात	५४८	२	२८८	पन्न प ३६ सू ३३१,द्रव्यलोक स ३ गा.१३-२६४,प्रव द्वा २३१गा १३११,ठा ७सू ५८६
वेदनीय कर्म का स्वरूप और उसके भेद	५९०	३	६०	कर्म भा.१गा १२व्याख्या,ठाणांग ८सू ५९६,पन्न प.२३ सू २९३
वेदनीय कर्म के दो भेद	५१	१	३०	पन्न प.२३, कर्म भा १ गा १२
वेदनीय कर्मबन्ध के कारण	५९०	३	६०	भ श ८उ ९ सू ३५१,भ श ८उ ९
वेद परिणाम	७४६	३	४२८	ठा.१० सू ७१३,पन्न प १३सू १८२
वेदमार्गणा और उसके भेद	८४६	५	५८	कर्म भा ४ गा.११
वेदान्त दर्शन	४६७	२	१५४	
२ वेदिका प्रतिलेखना	४४६	२	५४	उ.अ २६ गा.२५,ठा ६ उ.३ सू ५०३ [illegible]
वेदिका प्रतिलेखना के ५ भेद	३०२	१	३२६	[illegible]
वेदों का अकर्तृत्व	५६६	३	१०६	[illegible]
वैयावच्च दस	७०७	३	३८२	भ श २५ उ ७ सू ८०२

१ [illegible]

२ [illegible]

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
वेसालिय (महावीर)	७७०	४	६	जैनविद्या वोल्यूम १ न १
वैकुर्विक देह लब्धि	६५४	६	२६७	प्रव.द्वा २७० गा १४६५
वैक्रिय काययोग	५४७	२	२८६	भ श २५ उ १ सू ७१६, कर्म भा. ४ गा २४, द्रव्यलो स ३ पृ ३५८
वैक्रिय मिश्रकाययोग	५४७	२	२८७	भ.श २५ उ १ सू ७१६, कर्म भा. ४ गा २४, द्रव्यलो स ३ पृ ३५८
वैक्रिय शरीर	३८६	१	४१३	ठा. ५ उ १ सू ३९५, पन्न.प. २१ सू. २६७, कर्म भा १ गा ३३
वैक्रियशरीरबंधननामकर्म	३९०	१	४१६	कर्म भा १ गा ३५, प्रव द्वा २१६
वैक्रिय समुद्घात	५४८	२	२८९	पन्न प ३६ सू. ३३१, ठा ७ उ ३ सू. ५८६, द्रव्यलो स ३ पृ. १२८, प्रव द्वा २३१ गा. १३११
वैदारिणी (वेयारणिया) क्रिया	२९५	१	२८१	ठा २ उ १ सू ६०, ठा ५ उ २ सू ४१६, आव ह अ ४ पृ ६१३
वैदिक दर्शनों की सत्रह बातों से परस्पर तुलना	४९७	२	२१४	
वैनयिकी (विणीया) बुद्धि	२०१	१	१५६	न० सू. २६, ठा ४ उ ४ सू. ३६४
वैभाविक गुण	५५	१	३३	द्रव्य.त अध्या ११ श्लो ८
वैमानिक इन्द्रों के दस विमान	७४४	३	४२१	ठा १० उ ३ सू. ७६६
वैमानिक देवों के छब्बीस भेद	९४४	६	२२७	पन्न प १ सू ३८, उत्त अ. ३६ गा. २०७-२१४, भ श ८ उ १ सू ३१०
वैमानिक देवों के दस इन्द्र	७४१	३	४२०	ठा १० उ ३ सू ७६६
वैयधिकरण्य दोष	५९४	३	१०३	प्र मी. अध्या १ आ १ सू. ३२
वैयावृत्त्य	४७८	२	८९	उव सू २०, उत्त अ ३० गा ३०, प्रव द्वा ६ गा २७१, ठा ६ सू ५११

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
वैयावृत्य के दस बोल	३६०	१	३७४	ठा.५ उ.१ सू.३९७
वैयावृत्य के दस बोल	३६१	१	३७४	ठा.५ उ.१ सू.३९७
वैयावृत्य के दस भेद	६३३	३	१९५	उत्त.अ.३०, भग.श.२५ उ.७ सू.८०२
वैयावृत्य दस	७०७	३	३८२	भग.श.२५ उ.७ सू.८०२
वैराग्य की व्याख्या और भेद	९०	१	६५	[illegible] ११८-११९
वैराग्य पर बारह गाथाएं	९९४	७	२२८	
वैशेषिक दर्शन	४९७	२	१४४	
वैश्रमणकुमार की कथा	९१०	६	५९	[illegible]
* वैहानस मरण	७९८	४	२९९	[illegible]
* वैहायस मरण	८७९	५	३८४	[illegible]
व्यक्त स्वामी गणधर की पृथ्वी आदि भूतों के अस्तित्व विषय में शंका और उसका समाधान	७७५	४	३६	[illegible]
१ व्यञ्जनाचार	५६८	३	६	[illegible]
व्यञ्जनावग्रह	५८	१	४०	[illegible]
व्यतिकर दोष	५९४	३	१०४	[illegible]
व्यतिक्रम	२४४	१	२२१	[illegible]
व्यन्तर देव आठ	६१४	३	१३०	[illegible]
व्यन्तर देवों का स्थान और उनकी स्थिति	६१४	३	१३१	[illegible]
व्यन्तर देवों के इन्द्र	६१४	३	१३१	[illegible]
व्यय	६४	१	४५	[illegible]

* वृक्ष की शाखा आदि से लटकने से होने वाला मरण।

१ ज्ञानाचार का एक भेद, सूत्र के अक्षरों का शुद्ध उच्चारण करना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
[1] व्यवशमित वचन	४५६	२	६२	ठा.६उ ३सू ५२७,प्रवद्वा.२३५ गा.१३२१, बृ.(जी.) उ.६
व्यवसाय की व्याख्या, भेद	८५	१	६२	ठा ३ उ ३ सू १८५
व्यवसाय सभा	३९७	१	४२२	ठा ५ उ ३ सू ४७२
व्यवहार	३६	१	२५	विशे.गा.३५८६, द्रव्य.त.अध्या.८
व्यवहार और निश्चय पर दो गाथाएं	६६४	७	१६३	
व्यवहार नय और उसके दो भेद	५६२	२	४१५	अनु सू १५२ गा.१३७, द्रव्य त अध्या ६ श्लो १३
व्यवहार नय के सद्भूत, असद्भूत आदि भेद	५६२	२	४२४	द्रव्य.त अध्या.७
व्यवहार पाँच	३६३	१	३७५	ठा ५सू ४२१, भ श ८उ ८सू. ३४०, व्यव पीठिकाभाष्य गा.१-२
व्यवहार भाषा	२६६	१	२४६	पन्न प ११सू १६१
व्यवहारभाषा के बारह भेद	७८८	४	२७२	पन्न प ११सू.१६५
व्यवहार राशि	६	१	८	आगम.
व्यवहार राशि	४२५	२	२१	आगम
व्यवहार संख्यान	७२१	३	४०४	ठा १०उ ३सू ७४७
व्यवहार सत्य	६६८	३	३६६	ठा १०उ ३सू ७४१, पन्न प ११सू. १६५, ध अधि ३श्लो ४१पृ.१२१
व्यवहार सम्यक्त्व	१०	१	६	कर्म भा.१गा.१५, प्रव द्वा १४६ गा ६४२टी
व्यवहारसूत्र का विषयवर्णन	२०५	१	१८२	
व्यसन सात	६१८	६	१५५	गौ कु, ज्ञा.अ.१८ सू १३७, सू उ १ गा.६४०

[1] एक बार शान्त हुए कलह को फिर से उभाड़ने वाले वचन कहना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र के इकतालीस शतकों का विषयवर्णन	७७६	४	१३८	
व्याधि चार	२६५	१	२४७	ठा.४ उ.४ सू.३४३
१ व्युत्सर्ग	४७८	२	८९	उव.सू.२०, उत्त.अ.३० गा.३०, प्रव.द्वा.६ गा.२७१, ठा.६ सू.५११
व्युत्सर्ग तप के भेद, प्रभेद	६३३	३	१९६	उव.सू.२०, भ.श.२५ उ.७ सू.८०२
व्युत्सर्ग सात	५५७	२	३००	उव.सू.२०
२ व्युद्ग्राहित	७५	१	५४	ठा.२ उ.४ सू.२०?
व्रत फल	६६२	३	२३९	[illegible]
व्रत धारण न करने वाले के लिये भी क्या प्रतिक्रमण करना आवश्यक है?	९१८	६	१४४	[illegible]
व्रतधारी तिर्यञ्च विधिपूर्वक काल करके कहाँ उत्पन्न होता है?	९८३	७	११७	[illegible]
व्रीडा रस	६३९	३	२०९	अनु. [illegible]

श

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
शंका (समकित का अतिचार)	२८५	१	२६५	[illegible]
शंका प्रमाद प्रतिलेखना	५२१	२	२५१	[illegible]
शंख और पोखली श्रावक	६२४	३	१६४	भ.श.१२ उ.१ [illegible]
शंख निधि	६५४	३	२२२	ठा.९ उ.३ सू.६७३
शकट कुमार की कथा	९१०	६	३९	वि.अ.४
शक्रेन्द्र की सेना तथा सेनापति सात	५४१	२	२७३	ठा.७ उ.३ सू.५८३

१ [illegible] है।

२ [illegible] हों।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
शत सहस्र की कथा औत्पत्तिकी की बुद्धि पर	६४६	६	२८२	न सू २७ गा ६५ टी
शनैश्चर संवत्सर	४००	१	४२८	ठा.५ उ ३ सू ४६०, प्रव द्वा १४२
१ शवल दोष इक्कीस	६१३	६	६८	दशा.द २, सम २१
शब्द के दस प्रकार	७१३	३	३८८	ठा १० उ ३ सू ७०५
शब्द नय	५६२	२	४१७	अनु सू १५२, रत्ना परि ७ सू ३२
शब्द परिणाम	७५०	३	४३४	ठा १० उ ३ सू ७१३, पन्न प १३ सू १८४-१८५
शम्ब के साहस का दृष्टान्त भाव अननुयोग पर	७८०	४	२५२	आव ह.नि गा १३४, वृ पीठिका नि गा १७२
२ शम्बूकावर्त्ता गोचरी	४४६	२	५२	ठा ६ उ ३ सू ५१४, उत्त अ ३० गा १९, प्रव द्वा ६७ गा ७४५, ध अधि ३ श्लो २२ टी पृ ३७
शयन पुण्य	६२७	३	१७२	ठा ६ उ ३ सू ६७६
शय्यातर पिण्ड कल्प	६६२	३	२३७	पचा १७ गा १७-१६
शय्यादाता अवग्रह	३३४	१	३४५	भ श १६ उ २ सू ५७६, प्रव द्वा ८५ गा ६८१-६८४, आचा. श्रु २ चू १ अ ७ उ २ सू १६२
शरट (गिरगिट) की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२६२	नं सू २७ गा ६३ टी
शरीर, आत्मा की भिन्नता विषयक परदेशी राजा के छः प्रश्न	४६६	२	१०७	रा सू ६३-७७
शरीर की व्याख्या और उसके भेद	३८६	१	४१२	ठा.५ उ.१ सू ३६५, पन्न.प २१ सू २६७, कर्म भा १ गा ३३

१ जिन कार्यों से चारित्र की निर्मलता नष्ट हो जाती है उन्हें शवलदोष कहते हैं।

२ शंख के आवर्त्त की तरह वृत्त (गोल) गति वाली गोचरी।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
शरीर के सत्रह द्वार	८८१	५	३८५	पन्न. प. २१ के आधार से
शरीर पर्याप्ति	४७२	२	७७	पन्न. प. १ सू. १२ टी., प्र. सा. ३३१ गा. १३०, प्रव. द्वा. २३२ गा. [illegible], कर्म भा. १ गा. ४९
शरीर बकुश	३६६	१	३८०	ठा. ५ उ. ३ सू. ४४५ टी., भग. श. २५ उ. ६ सू. ७५१ टी.
शरीर सम्पदा	५७४	३	१३	दशा. द. ४, ठा. ८ उ. ३ सू. ६०१
शरीरानुगत वायु	४१३	१	४३८	ठा. ५ उ. ३ सू. ४४४
शर्करा पृथ्वी	४६५	२	६६	जी. प्रति. ३ सू. १०१
शल्य तीन	१०४	१	७३	सम. ३, ठा. ३ उ. ३ सू. १८२, प्रति. [illegible]
शल्य विषयक नौ गाथाएं	९९४	४	२४४	
शस्त्र दस प्रकार का	६९६	३	३६४	ठा. १० उ. ३ सू. ७४३
शस्त्रावपाटन मरण	७९८	४	२९९	भग. श. २ उ. १ सू. ९१
शाक्य श्रमण	३७२	१	३८७	[illegible]
शान्त प्राणायाम	५५९	२	३०३	[illegible]
शालेयिकापिता श्रावक	६८५	३	३३२	उपा. अ. १०
शाश्वत अनन्तक	४१८	२	४४२	ठा. ५ उ. ३ सू. ४६२
शाश्वताशाश्वतानुयोग	७१८	३	३९४	ठा. १० उ. ३ सू. ७२७
शिक्षा की कथाएं चित्तशुद्धि पर	९४९	६	२७९	[illegible]
शिक्षाप्राप्तिबाधक पांच कारण	४२३	१	४४६	उत्त. अ. ११ गा. ३
शिक्षा व्रत चार	१८६	१	१४०	[illegible]
शिक्षाव्रत चार	४६७	२	२०१	
शिक्षा शील के आठ गुण	५८४	३	२८	उत्त. अ. ११ गा. ४-५

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
शिल्प स्थावर काय	४१२	१	४३८	ठा ५उ १सू ३९३
शिल्पाचार्य	१०३	१	७२	रा सू ७७
शिल्पार्य	७८५	४	२६६	बृ उ १नि गा.३२६३
शिवभूतिनामक दवेंनिह्नव५६१		२	३९९	विशे गा.२५५०-२६०९,
कामतशंकासमाधानसहित				ठा ७उ ३सू ५८७
शिवराजर्षि(लोकभावना)	८१२	४	३८७	भ श ११उ ९सू ४१७-४१८
शिवा सती	८७५	५	३४६	आव ह.अ नि गा १२८४
शीत योनि	६७	१	४८	तत्त्वार्थ अध्या २,ठा.३सू १४०
शीतलेश्या लब्धि	९५४	६	२९७	प्रव द्वा २७०गा १४९४
शीतोष्ण योनि	६७	१	४८	तत्त्वार्थ अध्या २,ठा ३सू १४०
शील की नववाड़	६२८	३	१७३	ठा ९उ ३सू ६६३, सम ९
शील की बत्तीस उपमा	९६४	७	१५	प्रश्न धर्मद्वार ४सू २७
शील के अठारह भेद	८९२	५	४१०	सम १८,प्रवद्वा १६८गा.१०६१
शील धर्म	१९६	१	१५५	ध अधि २श्लो २८टी पृ ६६
शील पर सोलह गाथाएं	९९४	७	१७७	
शुक्लध्यान	२१५	१	१९६	सम ४, ठा ४ उ १ सू.२४७, आगम ,क भा श्लो २११
शुक्लध्यान के ४ आलम्बन	२२७	१	२११	ठा ४उ १सू २४७,आव ह अ ४ ध्यानशतक गा ६९, उव सू २०
शुक्लध्यान के चार भेद	२२५	१	२०९	आव ह अ ४ध्यानशतक गा ७७-८२,ठा ४उ १सू २४७,ज्ञान प्रक. ४२, क भा श्लो.२११-२१९
शुक्लध्यान के चार लिंग	२२६	१	२११	आव ह अ.४ ध्यानशतक गा ९० पृ.६०९, ठा.४ उ १सू २४७, भ.श २५ उ.७ सू.८०३

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
शुक्लध्यान की ४ भावनाएं	२२८	१	२१२	ठा.४ उ.१ सू.२४७, आव.ह.अ.४ ध्यानशतक गा.६८ पृ.६०८, भ. श.२५ उ.७ सू.८०३, उव.सू.२०
१शुक्लपाक्षिक	८	१	७	भग.श.१३ [illegible]
शुक्ललेश्या	४७१	२	७४	उत्त.अ.३४ गा.३१, [illegible]
शुद्ध पृथ्वी	४६५	२	६६	जीवाभि.३ सू.१०१
शुद्धवागनुयोग के दस प्रकार	६९७	३	३६५	ठा.१० उ.३ सू.७४४
शुद्धि पर कथा	५७९	३	३६	आव.ह.अ.४ नि.गा.[illegible]
शुद्धि पांच	३२७	१	३३५	ठा.५ उ.३ सू.४४८
शुद्धैषणिक	३५४	१	३६६	ठा.५ उ.१ सू.३९६
शुभकर्म बांधने के दस स्थान	७६३	३	४४४	ठा.१० उ.३ सू.७५८
शुभ दीर्घायु के तीन कारण	१०७	१	७५	ठा.३ सू.१२५, भग.श.५ उ.६ सू.२०४
शुभ नामकर्म चौदह प्रकार से भोगा जाता है	८३८	५	३३	पन्न.प.२३ सू.२९३
शुभ योग सूत्र	७६९	३	४५४	ठा.१० उ.३ सू.[illegible]
शूर पुरुष के चार प्रकार	१९३	१	१५०	ठा.४ उ.३ सू.३१७
शृंगार रस	६३९	३	२०८	अनुयो.सू.१२६ गा.[illegible]
शैलक राजर्षि की कथा	९००	५	४३८	ज्ञा.अ.५
शौच (श्रमण धर्म)	६६१	३	२३४	[illegible]
शौच पांच	३२७	१	३३५	ठा.५ उ.३ सू.४४८
श्रद्धा	१२७	१	९०	उत्त.अ.३ गा.९
श्रद्धान शुद्ध प्रत्याख्यान	३२८	१	३३६	[illegible]
श्रमण (महावीर)	७७०	४	३	जैन सि. [illegible]

१ जो जीव किंचित् न्यून अर्द्ध पुद्गल परावर्तन काल में [illegible] है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
श्रमण (समण, समन) की चार व्याख्याएं	१७८	१	१३१	दश अ. २नि. गा १५४-१५७, अनु सू १५०गा. १२९-१३२
श्रमण की बारह उपमाएं	८०५	४	३०९	अनु सू १५० गा १३१
श्रमण के पाँच प्रकार	३७२	१	३८७	प्रव द्वा ९४गा ७३१
श्रमण को सर्प पर्वत आदि बारह बोलों की उपमा	१७८	१	१३१	दश अ २नि. गा. १५४-१५७, अनु सू १५०गा १२९-१३२
श्रमण धर्म दस	६६१	३	२३३	नव गा २३, सम १०, शा भा १प्रक ८
[1] श्रमण वनीपक	३७३	१	३८९	ठा ५उ ३सू. ४५४
श्रमणोपासक श्रावक के तीन मनोरथ	८८	१	६४	ठा. ३उ ४ सू २१०
श्रामण्यपूर्विका अध्ययन की ग्यारह गाथाएं	७७१	४	११	दश अ २
श्रावक का सूत्र पढ़ना क्या शास्त्र सम्मत है?	९१८	६	१५१	न सू ५२, सम. १४२, उत्त अ. २१गा २, उत्त अ २२ गा ३२, ज्ञा अ १२सू ९२, उव सू ४१,
श्रावक की आदर्श, पताका, स्थाणु, खरकण्टक से समानता	१८५	१	१३९	ठा ४उ ३ सू ३२१
श्रावक की ग्यारह पडिमाएं	७७४	४	१८	दशा द ६, सम ११
श्रावक के अणुव्रत पाँच	३००	१	२८८	आव ह अ ६ पृ ८१७-८२६, ठा ५सु ३८९, उपा अ. १सू ६, ध अधि २श्लो २३-२९पृ ५७ ६७
श्रावक के अन्य चार प्रकार	१८५	१	१३९	ठा ४ उ ३सू ३२१
श्रावक के इक्कीस गुण	९११	६	६१	प्रव द्वा २३९गा १३५६-५८, ध अधि १श्लो २०पृ २८

[1] जो दाता श्रमणों का भक्त है उसके आगे श्रमणदान की प्रशंसा कर भिक्षा लेने वाला याचक श्रमण वनीपक कहलाता है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
श्रावक के चार प्रकार	१८४	१	१३८	ठा ४उ.३सू.३२१
श्रावक के चार विश्राम	१८८	१	१४२	ठा ४उ.३सू.३१४
श्रावक के चार शिक्षाव्रत	१८६	१	१४०	श्राव ह अ.६पृ८३१-८३६, पंचा १गा.२५-३२
श्रावक के चौदह नियम	८३१	५	२३	शिक्षा.,ध अधि २श्लो ३४पृ ७६
श्रावक के छः गुण	४५२	२	५६	ध०र गा ३३
श्रावक के तीन गुण व्रत	१२८क	१	६१	श्राव ह अ ६पृ८२६-८२६
श्रावक के तीन मनोरथ	८८	१	६४	ठा ३उ ४ सू २१०
श्रावक के दस लक्षण	६८४	३	२६२	भग २उ.५सू १०७
श्रावक के पॉच अणुव्रत	३००	१	२८८	श्राव ह अ.६पृ ८१७ ८२६, ठा ५ सू ३८६,उपा अ १सू ६,ध अधि २श्लो.२३-२६पृ.५७ ६०
श्रावक के पाँच अभिगम	३१४	१	३१५	भग २उ ५सू १०६
श्रावक के पैंतीस गुण	६८०	७	७४	यो प्रका १श्लो ४७-५६
श्रावक के प्रत्याख्यान के उनचास भंग	१००३	७	२६७	भग ८उ ५सू ३२६
श्रावक के बारह भावव्रत निश्चय और व्यवहार से	७६४	४	२८०	आगम
श्रावक के बारह व्रत				
(तीन गुणव्रत)	१२८क	१	६१	श्राव ह अ ६पृ ८१७-८३६, उपा.अ १सू ६,ध अधि.२श्लो. २३-४०पृ.५३-६४, ठा ५ सू.३८६,पंचा.१गा ७-३२
(चार शिक्षा व्रत)	१८६	१	१४०	
(पॉच अणुव्रत)	३००	१	२८८	
श्रावक के बारह व्रत	४६७	२	२००	
श्रावक के बारह व्रतों के साठ अतिचार	३०१-३१२	१	२६०-३१४	उपा अ १सू ७,श्राव.ह अ ६ पृ ८१७,ध अधि २श्लो. ४३-५८पृ.१००-११६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
श्रावक के सत्रह लक्षण	८८३	५	३९२	ध.अधि २ श्लो.२२टी.पृ.४६
श्रावक के सातवें उपभोग परिभोग परिमाण व्रत में मर्यादा के छब्बीस बोल	९४३	६	२२५	उपा अ १सू ६,ध अधि.२श्लो. २४टी पृ ८०, श्रा प्रति.
श्रावक को माता पिता, भाई, मित्र और सौत से उपमा	१८४	१	१३८	ठा ४उ.३सू ३२१
श्रावक दस	६८५	३	२९४	उपा.अ १-१०
श्रावक भार्या का दृष्टान्त भाव अननुयोग पर	७८०	४	२४५	आव ह गा १३४, बृ.पीठिका नि.गा १७२
श्रावक भार्या की पारिणामिकी बुद्धि की कथा	९१५	६	८४	न सू २७गा ७२, आव ह. गा ९४६
श्रावकों के अप्पारंभा अप्पपरिग्गहा आदि विशेषण	८९०	५	१४४	उव सू ४१,सूय श्रु.२अ.२सू ३९
श्रुत ज्ञान	१५	१	१३	ठा २उ १सू.७१, भ.श ८उ २सू. ३१८,कर्म भा १गा ४,नं.सू.१
श्रुतज्ञान	३७५	१	३९०	ठा ५उ ३ सू.४६३,कर्म.भा १-गा ४,नसू १
श्रुतज्ञान के चौदह भेद	८२२	५	३	न सू ३८-४४,विशे गा.४५४-५५२
श्रुतज्ञान के दो भेद	१६	१	१३	न सू ४४,ठा २उ १सू ७१
श्रुत ज्ञान के बीस भेद	९०१	६	३	कर्म भा.१गा ७
श्रुतज्ञान साकारोपयोग	७८६	४	२६८	पन्न प २९ सू ३१२
श्रुतज्ञानावरणीय	३७८	१	३९४	ठा ५सू ४६४,कर्म भा १गा.४
श्रुत धर्म	१८	१	१५	ठा २उ १सू ७२
श्रुत धर्म	६९२	३	३६१	ठा १०उ ३ सू ७६०
श्रुत धर्म के दो भेद	१९	१	१५	ठा २उ.१ सू ७२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
श्रुत प्रत्यनीक	४४५	२	५०	भ.श.८उ.८सू.३३६
श्रुत मद	७०३	३	३७४	ठा.१०सू.७१०,ठा.८सू.६०६
श्रुत विनय के चार प्रकार	२३१	१	२१५	दशा०द.४
श्रुत व्यवहार	३६३	१	२७५	ठा.५उ.२सू.४२१,भ.श.८उ.८
श्रुत समाधि के चार भेद	५५३	२	२६४	दश.अ.६उ.४
श्रुत सम्पदा	५७४	३	१२	दशा.द.४, ठा.८उ.३सू.६०१
श्रुत सामायिक	१६०	१	१४४	विशे.गा.२६७३-२६७७
श्रुताज्ञान साकारोपयोग	७८६	४	२६८	पन्न.प.२६सू.३१२
श्रेणिक की कथा सम्यक्त्व के उपबृंहण आचार के लिए	८२१	४	४६५	नवपद गा.१८टी.सम्यक्त्वाधिकार
श्रेणिक के कोप का दृष्टान्त भाव अननुयोग पर	७८०	४	२५३	आव.ह.नि.गा.१३४,बृ.पीठिका नि.गा.१७२
श्रेणिकराजा की दस रानियाँ	६८६	३	३३३	अंत.व.८
श्रेणियाँ सात	५४४	२	२८२	ठा.७उ.३सू.५८१,भ.श.२५उ.३
श्रेणी के दो भेद	५६	१	३३	कर्म भा.२गा.२, विशे.गा.१२८४-१३१३,द्रव्यलो.स.३श्लो.११६६-१२३४,आव.म.गा.११६-२३
श्रेणी तप	४७७	२	८७	उत्त.अ.३०गा.१०
श्रेयांसकुमार की सम्यक्त्व प्राप्ति की कथा	८२१	४	४२३	नवपद गा.१२८ सम्यक्त्वाधिकार
श्रोत्रेन्द्रिय	३६२	१	४१८	पन्न.प.१५सू.१६१, ठा.५उ.३सू.४४३टी.,जै.प्र.
श्लक्ष्ण पृथ्वी	४६५	२	६५	जी.प्रति.३सू.१०१
श्लक्ष्ण बादर पृथ्वी के ७ भेद	५४५	२	२८४	पन्न.प.१सू.१४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति	४७२	२	७७	पन्न.प १सू १२टी, भ श ३उ १ सू १३०, प्रव.द्वा २३२ गा १३१७, कर्म भा १गा.४६
श्वावनीपक	३७३	१	३८८	ठा.५उ ३ सू.४५४
श्वास तथा उच्छ्वास	५५१	२	२९२	ज वक्ष.२ सू १८
श्वासोच्छ्वास नारकियों का	५६०	२	३३७	जी.प्रति ३सू ८८
ष				
षट्पुरिम नव स्फोटका प्रतिलेखना	४४८	२	५३	ठा ६उ ३सू ५०३, उत्त.अ २६ गा २५
* षड्जग्राम की सात मूर्छनाएं	५४०	२	२७३	अनु सू १२७गा.३६, ठा.७उ ३ सू ५५३, संगीत
षड्ज स्वर	५४०	२	२७१	अनु सू १२७गा २५, ठा ७सू ५५३
षाण्मासिकी भिक्खु पडिमा	७९५	४	२८९	सम.१२, भ श.२उ १ सू ९३ टी, दशा द ७
स				
संकर दोष	५९४	३	१०४	प्र मी अध्या १आ १सू ३३
१ संकिय दोष	६६३	३	२४२	प्रव द्वा ६७गा ५६८पृ १४८, पि नि गा ५२०, ध अधि ३श्लो २२टी पृ ४१, पंचा १३गा.२६

* श्री जैनसिद्धान्त बोल संग्रह भाग २ पृष्ठ २७३ पर षड्जग्राम की सात मूर्छनाएं छपी है वे संगीत शास्त्र नामक ग्रन्थ से ली हुई है। अनुयोग द्वार तथा स्थानांग सूत्र में षड्जग्राम की मूर्छनाओं के नाम दूसरी तरह दिये हैं। उनकी गाथा इस प्रकार है—

मग्गी कोरविआ हरिया, रयणी य सारकंता य।
छट्ठी य सारसी नाम, सुद्धसज्जा य सत्तमा॥

अर्थ—मार्गी, कौरवी, हरिता, रत्ना, सारकांता, सारसी और शुद्ध षड्जा।

१ आहार में आधाकर्म आदि दोषों की शंका होने पर भी उसे लेना संकिय (शंकित) दोष है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
संक्रम की व्याख्या और भेद	२५०	१	२३५	ठा.४ सू.२९६, कर्म भा.२ गा.१
संक्रमण करण	५९२	३	९५	कम्म. गा २
१ संक्रामण दोष	७२२	३	४१०	ठा.१० उ.३ सू.७४३
संक्लेश दस	७१४	३	३८८	ठा.१० उ.३ सू.७३६
संक्षेप रुचि	६९३	३	३६३	उत्त.अ.२८ गा.२६
२ संख्यातजीविक वनस्पति	७०	१	५०	ठा.३ उ.१ सू.१४१
संख्यादत्तिक	३५४	१	३६९	ठा.५ उ.१ सू.३९६
संख्यान दस	७२१	३	४०४	ठा.१० उ.३ सू.७४७
संख्या प्रमाण आठ	६१९	३	१४१	अनु.सू.१४६
संख्या या परिमाण जानने के दस बोल	७२१	३	४०४	ठा.१० उ.३ सू.७४७
संख्येय के तीन भेद	६१९	३	१४४	अनु. सू.१४६
संगीत के आठ तथा अन्य गुण	५४०	२	२७३	अनु.सू.१२७ गा.४८,४९, ठा.७ उ.३ सू.५५३
संगीत के छः दोष	५४०	२	२७३	अनु.सू.१२७ गा.४७, ठा.७ सू.५५३
संग्रह दान	७६८	३	४५०	ठा.१० उ.३ सू.७४५
संग्रह नय और उसके दो भेद	५६२	२	४१४	रत्ना.परि.७ सू.१३-२२, अनु. सू.१५२ गा.१३७
संग्रह परिज्ञा सम्पदा	५७४	३	२५	दशा.द.४, ठा.८ उ.३ सू.६०१
संघ की आठ उपमाएं	६२३	३	२५६	नन्दीटीका गा.४-१७
संघ तीर्थ है या तीर्थङ्कर तीर्थ है?	९१८	६	१३४	विशे.गा.१०३३-१०३७, भग.२० उ.८ सू.६८१
संघ धर्म	६९२	३	३६१	ठा.१० उ.३ सू.७६०

१ दस का एक दोष, प्रस्तुत विषय को छोड़कर अप्रस्तुत विषय को कहना।

२ जिन वनस्पतियों में संख्यात जीव हों, जैसे नालिके तथा फूटा फल

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
संघातनामकर्म के पाँच भेद	३९१	१	४१६	कर्म भा १ गा ३६,प्रव द्वा २१६
संघात श्रुत	९०१	६	४	कर्म भा १ गा. ७
संघात समास श्रुत	९०१	६	४	कर्म भा १ गा. ७
संज्ञा की व्याख्या और भेद	१४२	१	१०४	ठा ४ उ ४ सू ३५६,प्रव द्वा १४५
संज्ञा चार का अल्प बहुत्व चार गति में	१४७	१	१०७	पन्न प ८ सू १४८
संज्ञा दस	७१२	३	३८६	ठा १० उ ३ सू ७५२,भ श ७ उ ८
संज्ञी श्रुत	८२२	५	४	न सू ४०, विशे गा ५०४-५२६
संज्ञी	८	१	६	ठा २ उ. २ सू ७९
संज्ञी के तीन भेद	८२२	५	५	न सू ४०, विशे गा ५०४
संज्ञीमार्गणा और उसके भेद	८४६	५	६३	कर्म भा ४ गा १३
संज्वलन कषाय	१५८	१	११९	पन्न प १४ सू १८८, ठा ४ उ १ सू २४९,कर्म भा १ गा १७-१८
संठाण छः अजीव के	४६९	२	६९	भ श २५ उ ३ सू ७२४,पन्न प १ सू ४
संठाण छः जीव के	४६८	२	६७	ठा. ६ सू. ४९५, कर्म भा १ गा ४०
संथारग पइण्णा	६८९	३	३५४	द प
[1] संभिन्न श्रोतो लब्धि	९५४	६	२९१	प्रव द्वा २७० गा १४९२
संभोगी को विसंभोगी करने के नौ स्थान	६३२	३	१७६	ठा ९ उ ३ सू ६६१
संभोगी साधुओं को अलग करने के पाँच बोल	३४५	१	३५६	ठा ५ उ १ सू ३९८
संयत	६९	१	५०	भ श ६ उ ३ सू २३७
संयतासंयत	६९	१	५०	भ श. ६ उ ३ सू २३७

[1] ऐसी शक्ति विशेष जिससे शरीर के प्रत्येक भाग से सुना जाय।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
संयम	३५१	१	३६६	ठा.५सू ३९६,प्रव द्वा ६६गा. ५५४,ध.अधि. ३श्लो ४६टी पृ.१२७
संयम (श्रमण धर्म)	६६१	३	२३४	नव.गा २३,सम १०,शा भा.१ प्रक्र ८संवरभावना
संयम आठ	५७२	३	११	तत्त्वार्थ अध्या ६सू.६
संयम की विराधना दस	६६६	३	२५२	भ श २५उ.७,ठा १०सू ७३३
संयम के चार प्रकार	१७६	१	१३४	ठा ४उ २ सू ३१०
संयम के सत्रह भेद	८८४	५	३६३	सम १७,आव ह अ ४पृ.६५१, प्रव द्वा.६६गा ५५६
संयम के सत्रह भेद	८८५	५	३६५	प्रव द्वा ६६गा ५५५
संयम पाँच	२९८	१	२८४	ठा ५उ.२सू ४२९-४३०
संयम मार्गणा और भेद	८४६	५	५८	कर्म भा.४गा १२
संयोग नाम	७१९	३	३९९	अनु सू १३०
१ संयोजना दोष	३३०	१	३३९	पि नि गा ६३६-३७,ध अधि ३ श्लो २२पृ ५५,उत्त अ.२४गा.१२टी.
संयोजना प्रायश्चित्त	२४५ख	१	२२३	ठा ४उ १ सू.२६३
२ संरक्षणोपघात	६६८	३	२५७	ठा १०उ.३सू ७३८
संरम्भ	९४	१	६७	ठा ३उ.१सू १२४
संलेखना के पाँच अतिचार	३१३	१	३१४	उपा अ.१सू ७,ध अधि.२श्लो. ६६ टी पृ २३०
संवत्सर पाँच	४००	१	४२४	ठा.५सू ४६०,प्रव द्वा १४२गा ९०१
संवर के बीस भेद	९०८	६	२५	नव गा.२०,ठा ५ सू ४१८, ४२७,ठा १०उ.३सू ७०९, प्रश्न नवद्वार, सम.५
संवर के सत्तावन भेद	१०१२	७	२८०	

१ मांडला का एक दोष, रसलोलुपता के कारण एक द्रव्य का दूसरे द्रव्य के साथ संयोग करना। २ परिग्रह से निवृत्त साधु का वस्त्र पात्र तथा शरीरादि में ममत्व होना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
संवर तत्त्व के बीस और सत्तावन भेद	६३३	३	१८४	
संवर दस	७१०	३	३८५	ठा १० उ ३ सू ७०९
संवर पाँच	२९९	१	२८५	ठा.५ सू ४१८, ४२७, प्रश्न. सवर द्वार ५,
संवर भावना	८१२	४	३६८, ३८६	शा भा २ प्रक ८, भावना, ज्ञान प्रक २, प्रव.द्वा ६७ गा.५७२, तत्त्वार्थ अध्या ९ सू ७
संवृतबकुश	३६८	१	३८३	ठा.५ उ ३ सू ४४५
संवृत योनि	६७	१	४८	तत्त्वार्थ अध्या.२ सू ३३, ठा ३ उ १ सू.१४०
संवृत विवृत योनि	६७	१	४८	तत्त्वार्थ अध्या.२ सू ३३, ठा ३ उ १ सू.१४०
संवेग	२८३	१	२६४	ध.अधि २ श्लो २२टी पृ.४३
संवेगनीकथाकीव्याख्या, भेद	१५६	१	११४	ठा ४ उ २ सू २८२
संशय	१२१	१	८५	रत्ना परि.१, न्यायप्र अध्या.३
संशय दोष	५९४	३	१०४	प्र.मी.अध्या १ आ १ सू ३३
संशुद्ध ज्ञान दर्शनधारी अरिहन्त जिन केवली	३७१	१	३८६	ठा ५ उ ३ सू ४४५, भ श.२५ उ ६ सू ७५१
संसक्त	३४७	१	३६२	आव ह अ ३ नि गा ११०७-११०८ पृ ५१६, प्रव.द्वा २ गा ११६-१२०
संसक्त तप	४०५	१	४३२	उत्त अ ३६, प्रव.द्वा ७३ गा ६४५
संसार की लवण समुद्र के साथ दस उपमा	६७९	३	२९६	
संसार भावना	८१२	४	३६०, ३८०	शा.भा.१ प्रक.३, भावना, ज्ञान. प्रक.२, प्रव द्वा.६७, तत्त्वार्थ.अध्या.९

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
संसार में आने वाले प्राणियों के दस भेद	७२८	३	४१५	ठा.१०उ.३ सू ७७१
संसारी	७(ख)	१	४	ठा २सू.१०१,तत्त्वार्थ अध्या.२सू.१०
संसारी जीव के चार प्रकार	१३०	१	६७	ठा ४उ २सू ४३०,भ श २उ.१सू ८८
संसारी जीव के नौ प्रकार से दो दो भेद	८	१	४	
[1] संसृष्ट कल्पिक	३५३	१	३६८	ठा ५उ.१सू ३९६
संस्थान छः अजीव के	४६६	२	६६	भ श २५उ ३सू ७२४,पन्न प.१ सू ४,जी प्रति १
संस्थान छः जीव के	४६८	२	६७	ठा ६सू ४९५, कर्म भा १गा.४०
संस्थान नरकावासों का	५६०	२	३३४	जी प्रति ३ सू ८२
संस्थान नरकों में	५६०	२	३४१	भ श.२५उ ३ सू ७२४
संस्थान नारकी जीवों का	५६०	२	३३७	जी प्रति ३ सू ८७
संस्थान परिणाम	७५०	३	४३३	ठा १०उ ३सू.७१३,पन्न.प.१३
संस्थान विचय धर्मध्यान	२२०	१	२०४	ठा ४उ १सू २४७
संस्थान सात	५५२	२	२९३	ठा १सू ४७, ठा ७उ ३सू ५४८
संस्थानानुपूर्वी	७१७	३	३९१	अनु सू ७१
संहनन (संघयण) छः	४७०	२	६९	पन्न प.२३सू २९३,ठा ६उ.३ सू ४९४,कर्म भा.१गा ३८-३९
संहनन नारकी जीवों का	५६०	२	३३७	जी प्रति.३ सू ८७
संहरण के अयोग्य सात	५३०	२	२६६	प्रव द्वा २६१ गा १४१९
सकडाल(सद्दाल)पुत्र श्रावक	६८५	३	३१९	उपा अ.७
सकाम मरण	५३	१	३१	उत्त अ ५गा २

[1] संसृष्ट अर्थात् खरंटे हुए हाथ या भाजन आदि से दिये जाने वाले आहार को ही ग्रहण करने वाला साधु।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सचित्त योनि	६७	१	४८	तत्त्वार्थ अध्या. २ सू. ३३, ठा ३ उ. १ सू. १४०
सचित्ताचित्त योनि	६७	१	४८	
सच्चे त्यागी का स्वरूप बताने वाली दो गाथाएं	६६४	७	१८८	
सतियाँ सोलह	८७५	५	१८५-३७५	ठा. ६ उ. ३ सू. ६६१ टी., ज्ञा. अ १६, त्रि. श पर्व १,२,७,८,१०, पचा. १६ गा ३१, राज., चन्दन., भरत. गा ८-१०, आव ह.
सतियों के लिये प्रमाण भूत शास्त्र	८७६	५	३७५	
सत् असत् पक्ष द्रव्यों में	४२४	२	६	आगम.
सत्ता	२५३	१	२३७	कर्म. भा २ गा. १ व्याख्या
सत्ताईस कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२४२	नं सू २७ गा. ६२-६५
सत्ताईस गाथा सूयगडांग सूत्र के १४वें अध्ययन की	६४६	६	२३०	सूय. अ. १४
सत्ताईस गाथा सूयगडांग सूत्र के पाँचवें अ० के १ उ० की	६४७	६	२३६	सूय अ ५ उ १
सत्ताईस गुण साधु के	६४५	६	२२८	सम. २७, आव ह अ. ४ पृ ६५६, उत्त. अ ३१ गा १८
सत्ताईस नाम आकाश के	६४८	६	२४१	भ श २० उ. २ सू ६६४
सत्ता का स्वरूप	६४	१	४४	तत्त्वार्थ अध्या ५ सू २६
सत्ताधिकार कर्मप्रकृतियों का गुणस्थानों में	८४७	५	६६	कर्म भा. २ गा. २५-३४
सत्तावन भेद संवर के	१०१२	७	२८०	नव गा ३०
सत्त्व (जीव का एक नाम)	१३०	१	६८	ठा. ५ सू ४३०, भ श २ उ. १ सू ८८

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सत्त्व गुण	४२५	२	२२	आगम
सत्य	३५१	१	३६५	ठा ५सू ३९६,ध अधि ३श्लो ४६ टी पृ १२७,प्रव द्वा ६६गा.५५४
सत्य (श्रमण धर्म)	६६१	३	२३४	नव गा २३,सम १०,शा भा.१प्रक ८
सत्य पर चौदह गाथाएं	६६४	७	१७२	
सत्य भाषा	२६६	१	२४६	पन्न प ११सू १६१
सत्य महाव्रत की पाँच भावनाएं	३१८	१	३२५	आचा श्रु २चू ३अ.२४सू १७६, सम २५,आव ह प ४पृ ६५८, प्रव द्वा.७२गा ६३७, ध अधि. ३ श्लो ४५टी पृ १२५
सत्य वचन के दस प्रकार	६६८	३	३६८	ठा १०उ ३सू ७४१,पन्न प ११सू. १६५,ध अधि ३श्लो. ४१टी पृ १२१
सत्य वचन में भी क्या विवेक होना चाहिए?	६८३	७	१०७	प्रश्न संवर द्वार २ सू २४,सूय. अ ६गा २३
सत्याणुव्रत (स्थूल मृषावाद विरमण व्रत)	३००	१	२८८	आव ह.अ ६पृ ८२०,ठा ५उ १सू ३८६, उपा अ. १सू. ६, ध.अधि २श्लो २६पृ ५८
सत्याणुव्रत के पाँच अतिचार	३०२	१	२९४	उपा अ १सू ७, ध अधि २श्लो ४४पृ १०१,आव ह अ ६पृ ८२०
सत्यामृषा भाषा	२६६	१	२४६	पन्न प ११सू १६१
सत्यामृषा भाषा के दस प्रकार	६९९	३	३७०	ठा १०सू ७४१, पन्न.प.११सू १६५,ध अधि ३श्लो ४१टी पृ १२२
सत्रह गाथाएं भगवान महावीर की तपश्चर्या विषयक	८७८	५	३८०	आचा श्रु १अ ६उ.४
सत्रह गाथाएं विनय समाधि अध्ययन की	८७७	४	३७७	दश अ ६उ १

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सत्रह द्वार शरीर के	८८१	५	३८५	पन्न प २१
सत्रह प्रकार का मरण	८७९	५	३८२	सम १७, प्रव द्वा १५७गा १००६
सत्रह प्रकार का संयम	८८४	५	३९३	सम १७, प्रव द्वा ६६ गा ५५६, आव ह अ ४पृ ६५१
सत्रह प्रकार का संयम	८८५	५	३९५	प्रव द्वा ६६गा ५५५
सत्रह प्रकार की विहायोगति	८८२	५	३८९	पन्न प १६सू २०५
सत्रह बातें चरम शरीरी को प्राप्त होती हैं	८८६	५	३९५	ध वि अ५या ८सू ४८४-४८६
सत्रह बातों की अपेक्षा अवैदिक दर्शनों की परस्पर तुलना	४९७	२	२२३	
सत्रह बातों की अपेक्षा वैदिक दर्शनों की परस्पर तुलना	४९७	२	२१४	
सत्रह माया के नाम	८८०	५	३८५	सम ५२(मोहनीय के ५२नामों में)
सत्रह लक्षण भावश्रावक के	८८३	५	३९२	ध अधि २श्लो २२टी पृ ४६
१ सदा विग्रहशीलता	४०५	१	४३२	उत्त अ ३६गा २६४, प्रव द्वा ७३ गा ६४५
सद्दहणा चार	१८९	१	१४२	उत्त अ २८गा २८,ध अधि २ श्लो २२टी पृ ४३
सद्दाल(सकडाल)पुत्र श्रावक	६८५	३	३१९	उपा अ ७
सनत्कुमार चक्रवर्ती	८१२	४	३८४	त्रि प पर्व ४स ७
सनत्कुमार देवलोक का वर्णन	८०८	४	३२१	पन्न प २सू ५३
सन्तोष सुख	७६९	३	४५४	ठा १०उ ३सू ७३७
सन्मति (महावीर)	७७०	४	८	जैनविद्या वोल्यूम १न १

१ आसुरी भावना का एक भेद, हमेशा लड़ाई झगड़े करते रहना, करने के बाद पश्चात्ताप न करना, दूसरे के खमाने पर भी प्रसन्न न होना और सदा विरोध भाव रखना ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सपर्यवसित श्रुत	८२२	५	८	नं सू ४३, विशे गा ५३७-५४८
सप्तभंगी	५६३	२	४३५	सूय श्रु २अ.५गा १०-१२ टी. आगम.,रत्ना परि-४,स्या का.२३,सप्त.
सप्तमासिकी भिक्खुपडिमा	७९५	४	२८९	सम.१२, भ श.२उ १सू.६३ टी, दशा द.७
सप्त स्वर सीभर	५४०	२	२७४	अनुसू.१२७गा ४९-५०,ठा.७ उ ३ सू ५५३
सप्रदेशीअप्रदेशीके१४बोल	८४१	५	३४	भ श ६उ.४ सू.२३९
सभिक्खु अ० की२१ गाथा	९१६	५	१२६	दश अ.१०
सभिक्खु अ० की१६गाथा	८६२	५	१५२	उत्त अ.१५
सम (समकित का लक्षण)	२८३	१	२६३	ध अधि २श्लो २२टी.पृ.४३
समकित	२	१	२	प्रव.द्वा.१४९गा.९४२,तत्त्वार्थ. अध्या १,पंचा.१गा ३
समकित की छः भावना	४५४	२	५८	प्रव.द्वा.१४८गा ९४०,ध.अधि. २श्लो.२२टी.पृ.४३
समकित की तीन शुद्धियां	८२	१	६०	प्रव.द्वा १४८गा ९३२
समकित के छः आगार	४५५	२	५८	उपा अ १सू ८,आव ह.अ.६पृ ८१०,ध अधि.२श्लो २२टी पृ ४१
समकित के छः स्थान	४५३	२	५७	ध अधि २श्लो २२ टी.पृ.४६, प्रव द्वा.१४८ गा.९४१
समकित के तीन लिंग	८१	१	५९	प्रव द्वा.१४८गा.९२९
समकित के दो प्रकार से तीन भेद	८०	१	५८	विशे गा २६७५,द्रव्यलो.स.३ श्लो.६६८-६७०,ध अधि २ श्लो २२ टी पृ. ३६, प्रव द्वा. १४९गा ९४३-९४४,कर्म.भा. १गा १५,श्रा.प्र गा.४९-५०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
समकित के पाँच अतिचार	२८५	१	२६५	उपा अ १सू ७,आव.ह पृ ८१०
समकित के पाँच भूषण	२८४	१	२६४	ध अधि २श्लो २२टी पृ ४३
समकित के पाँच भेद	२८२	१	२६१	कर्म.भा १ गा १५
समकित के पाँच लक्षण	२८३	१	२६३	ध अधि २श्लो २२टी पृ ४३
समचतुरस्र संस्थान	४६८	२	६७	ठा ६सू ४६५,कर्म भा १गा ४०
समपादयुता (निषद्या)	३५८	१	३७२	ठा ५सू ३६६टी ,ठा ५सू ४००
समभिरूढ़ नय	५६२	२	४१७	अनु सू १५२गा १३६, रत्ना. परि ७सू ३६
'समयं गोयम मा पमायए' का उपदेश देने वाली ३७ गाथा	६८४	७	१३३	उत्त अ १०
समय	७३	१	५३	ठा ३उ २सू १६५
समय	५५१	२	२६२	ज वक्ष २सू १८
समयक्षेत्र के ३६ कुल पर्वत	६८६	७	१४४	सम ३६
समवतार	४२७	२	२७	अनु सू ७०
समवायांग सूत्र का संक्षिप्त विषय वर्णन	७७६	४	११४	
समवायी कारण	३५	१	२३	विशे गा २०६६
समाचारी दस	६६४	३	२४६	भ श २५उ ७सू ८०१,ठा १० उ ३सू ७४६ ,उत्त.अ २६ गा २-७, प्रव द्वा १०१गा ७६०
समाचार्यनुपूर्वी	७१७	३	३६१	अनु सू ७१
समाधि	६०१	३	११८	यो,रा यो.
समाधि अ० की २४ गाथा	६३२	६	१६७	सूय.श्रु १अ १०
समाधि का फल	५५३	२	२६५	दशा अ ६उ.४
समारम्भ	६४	१	६७	ठा ३उ १सू १२४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
समारोप का लक्षण और भेद	१२१	१	८५	रत्ना परि १, न्यायप्र.अध्या ३
समास के द्वन्द्व आदि सात भेद	७१९	३	४०१	अनु सू १३०
समिति	२२	१	१६	उत्त अ २४ गा २
समिति की व्याख्या और उसके भेद	३२३	१	३३०	पम ५,अ ५सू ४५७,उत्त अ २४ गा २,ध अधि ३श्लो ४७पृ.१३०
समुच्छिन्न क्रिया अप्रतिपाती शुक्लध्यान	२२५	१	२१०	आव ह.अ ४ध्यानशतक गा.८२…ठा ४उ १सू २४७, ज्ञान.प्रक. ४२, क भा २ श्लो २१७
समुच्छेदवादी	५६१	२	६४	ठा ८उ ३सू ६०७
समुदान कर्म	७६०	३	४४२	आचा.अ २उ १नि गा १८३
समुद्घात नारकी जीवों में	५६०	२	३३८	जी प्रति ३सू.८८
समुद्घात सात	५४८	२	२८८	पन्न प ३६सू ३३१, ठा ७सू. ५८६,प्रवद्वा २३१गा १३११…१३१६,द्रव्यलो स ३पृ १२…
१ समुद्देशानुज्ञाचार्य	३४१	१	३५२	ध अधि ३श्लो.४६टी पृ.१२…
समुद्रपाल मुनि	८१२	४	३८५	उत्त अ.२१
समुद्रपालीय अ० की गाथाएं	७८१	४	२५५	उत्त अ.२१गा १३-२४
समूह प्रत्यनीक	४४५	२	५०	भश ८उ ८सू ३३९
सम्पदा आठ	५७४	२	११	दशा द ४,ठा.८उ ३ सू ६०१
सम्भोग बारह	७९६	४	२९२	निशी उ ५,सम १२,व्यव.उ ५भाष्य गा ४८-५०
सम्मत सत्य	६९८	३	२६८	ठा १०सू ७४१,पन्न प ११ सू १६५,ध अधि ३श्लो ४१पृ १… (?)

१ श्रुत की वाचना देने वाले गुरु के न होने पर श्रुत को स्थिर परिचित करने… अनुमति देने वाले आचार्य।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सम्मति स्थावरकाय	४१२	१	४३८	ठा ५उ १ सू ३६३
सम्मर्दा प्रतिलेखना	४४६	२	५४	ठा ६सू ५०३,उत्त अ २६गा २६
सम्मूर्छिम जन्म	६६	१	४७	तत्त्वार्थ अध्या.२सू ३२
सम्मूर्छिम मनुष्यों के उत्पत्ति स्थान चौदह	८२६	५	१८	पन्न प १सू ३७,अनु सू १३३
सम्मूर्छिम वनस्पति	४६६	२	६६	दश अ ८ सू.१
सम्मूर्छिम वायु	४१३	१	४३६	ठा ५उ ३ सू ४४४
सम्मोही भावना के ५ प्रकार	४०६	१	४३२	उत्त अ ३६गा २६५टी ,प्रव द्वा. ७३ गा ६४६
सम्यक्चारित्र	७६	१	५७	उत्त अ २८गा ३०,तत्त्वार्थ.अध्या.१
सम्यक्चारित्र	४६७	२	१८४	
सम्यक्त्व के उपबृंहणा आचार पर श्रेणिक की कथा	८२१	४	४६५	नवपद गा १८टी सम्यक्त्वाधिकार
सम्यक्त्व के कॉक्षा दोष के लिए कुशध्वज का दृष्टान्त	८२१	४	४५५	नवपद गा.१८ टी सम्यक्त्वाधिकार
सम्यक्त्व के चार प्रकार से दो दो भेद	१०	१	८	प्रव द्वा १४६गा ६४२,कर्म भा. १गा.१५,तत्त्वार्थ अध्या १,पंन्न प १ सू ३७,ठा २उ १सू ७०
सम्यक्त्व के जुगुप्सा दोष के लिये दुर्गन्धा का उदाहरण	८२१	४	४५८	नवपद.गा १८टी सम्यक्त्वाधिकार
सम्यक्त्व के दो प्रकार से तीन भेद	८०	१	५८	विशे गा.२६७५, द्रव्यलो.स ३ श्लो ६८-७०,ध अधि.२श्लो २२टी पृ ३६,श्राप्र गा ४६-५०, प्रव द्वा १४६गा ६४३-६४५,कर्म भा.१ गा.१५

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सम्यक्त्वकेपरपाषंडप्रशंसा दोष पर सयडाल की कथा	८२१	४	४६१	नवपद गा १८टी सम्यक्त्वाधिकार
सम्यक्त्वके प्रभावना आचारपरविष्णुकुमारकीकथा	८२१	४	४८५	नवपद गा १८ टी सम्यक्त्वाधिकार
सम्यक्त्व के लिये १३दृष्टान्त	८२१	४	४२२	नवपद ७ वां सम्यक्त्व द्वार
सम्यक्त्वकेवात्सल्य आचार केलिये वज्रस्वामी का दृष्टान्त	८२१	४	४८१	नवपद गा. १८टी सम्यक्त्वाधिकार
सम्यक्त्व के विचिकित्सा दोष के लिये महेश्वरदत्त वणिक् का दृष्टान्त	८२१	४	४५६	नवपद गा १८ टी सम्यक्त्वाधिकार
सम्यक्त्व के शंका दोष के लिये मयूराण्ड,सार्थवाह कीकथा	८२१	४	४५३	नवपद गा. १८ टी सम्यक्त्वाधिकार, ज्ञा अ ३
सम्यक्त्व के स्थिरीकरण आचार के लिये आर्याषाढ़ आचार्य का दृष्टान्त	८२१	४	४६६	नवपद.गा १८ टी सम्यक्त्वाधिकार, उत्त अ.२ (कथा)
सम्यक्त्वप्राप्तिके दसबोल	६६३	३	३६२	उत्त अ २८गा. १६-२७
सम्यक्त्व प्राप्ति के लिए चिलाती पुत्र की कथा	८२१	४	४३४	नवपद गा १४टी , ज्ञा अ १८
सम्यक्त्व प्राप्ति के लिये धन सार्थवाह की कथा	८२१	४	४४६	नवपद.गा. १६सम्यक्त्वाधिकार
सम्यक्त्व प्राप्ति के लिये श्रेयाँसकुमार की कथा	८२१	४	४२३	नवपद गा १२८
सम्यक्त्व भ्रष्ट होने पर नन्द मणियार की कथा	८२१	४	४४४	ज्ञा.अ. १३, नवपद गा १४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सम्यक्त्व मार्गणा और भेद	८४६	५	५८	कर्म भा ४ गा १३
सम्यक्त्व सामायिक	१६०	१	१४४	विशे गा २६७३-२६७७
सम्यग्ज्ञान	७६	१	५७	उत्त अ २८, तत्त्वार्थ. अध्या. १ सू १
सम्यग्ज्ञान	४६७	२	१६८	
सम्यग्ज्ञान पर सात गाथा	६६४	७	१६०	
सम्यग्दर्शन	७७	५	५५	भ श ८ उ २ सू ३२०, ठा २ सू. १८४
सम्यग्दर्शन	७६	१	५७	उत्त अ. २८, तत्त्वार्थ. अध्या १ सू १
सम्यग्दर्शन	४६७	२	१६६	
सम्यग्दर्शन पर दस गाथा	६६४	७	१५८	
सम्यग्दर्शन सराग के दस प्रकार	६६४	३	३६४	ठा १० सू. ७५१, पन्न प १ सू ३७
सम्यग्मिथ्यादृष्टिगुणस्थान	८४७	५	७३	कर्म भा २ गा २
सम्यक्श्रुत	८२२	५	७	न सू ४१, विशे गा ५२७ ५३६
सयडालकीकथापरपापंड-प्रशंसा दोष के लिये	८२१	४	४६१	नवपद गा १८ टी सम्यक्त्वाधिकार
सयोगी केवली गुणस्थान	८४७	५	८५	कर्म भा २ गा २ व्याख्या
सरदहतलायसोसणया कर्मादान	८६०	५	१४६	उपा अ १ सू ७, भ श ८ उ ५ सू ३३०, आव ह अ ६ पृ ८२८
सराग सम्यग्दर्शन दस	६६४	३	३६४	ठा १० सू ७५१, पन्न प १ सू ३७
सर्वअवसन्न(ओसन्ना साधु का भेद)	३४७	१	३५८	आव ह अ ३ नि गा ११०७ पृ ५१७, प्रव द्वा २ गा १०६
सर्वचारी मच्छ	४१०	१	४३७	ठा ४ उ ३ सू ४५३
सर्वदेशघाती प्रकृतियाँ	८०६	४	३४७	कर्म भा ५ गा १३, १४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सर्व प्राण भूत जीव सत्त्व का समारंभ न करने से होने वाला पाँच प्रकार का संयम	२९८	१	२८५	ठा ५ उ.२ सू.४२९-४३०
सर्व प्राण भूत जीव सत्त्व के आरंभ से होने वाला पाँच प्रकार का असंयम	२९७	१	२८४	ठा ५ उ २ सू ४२९-४३०
सर्वबन्ध	५२	१	३०	कर्म भा १ गा ३५ व्याख्या
सर्वरत्न निधि	६५४	३	२२१	ठा ९ उ ३ सू ६७३
सर्व विरति रूप सामायिक वाले को पोरिसी आदि प्रत्याख्यानों की क्या आवश्यकता है?	९८३	७	१०७	भ श.१ उ १ सू ३७ टी
सर्वविरति साधु के ३ मनोरथ	८९	१	६४	ठा.३ उ.४ सू २१०
सर्व विरति सामायिक	१९०	१	१४४	विशे.गा २६७३-२६७७
सर्व विस्तार अनन्तक	४१८	१	४४२	ठा ५ उ.३ सू.४६२
सर्वसमाधिप्रत्यय आगार (पोरिसी का आगार)	४८३	२	९८	आव ह अ ६ पृ ८५२, प्रव द्वा ४ गा २०३
सर्व स्रोतचारी भिक्षु	४११	१	४३७	ठा ५ उ.३ सू ४५३
सर्वौषधि लब्धि	९५४	६	२९०	प्रव द्वा २७० गा १४९२
सहसाकार आगार	४८३	२	९७	आव ह अ ६ पृ ८५२, प्रव द्वा ४
सहस्रार देवलोक का वर्णन	८०८	४	३२३	पन्न प २ सू ५३
सहायता विनय के चार प्रकार	२३६	१	२१७	दशा द ४
सांख्य दर्शन	४९७	२	१४४	
सांशयिक मिथ्यात्व	२८८	१	२६७	कर्म भा ४ गा ५१, ध.अधि.२ श्लो.२२ टी.पृ.३९

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सांसारिकनिधिके ५ प्रकार	४०७	१	४३३	ठा ५ उ ३ सू ४४८
सागरोपम	३२	१	२२	ठा २ उ ४ सू ९९
सागरोपम के तीन भेद	१०९	१	७८	अनु.सू १३८-१४०, प्रव द्वा. १५९ गा १७२७-१७३२
सागारियागार (एगट्ठाण का आगार)	५१७	२	२४७	आव ह अ. ६ पृ ८५३, प्रव.द्वा ४ गा २०४
सागारी (शय्यादाता) अवग्रह	३३४	१	३४५	भ श १६ उ.२ सू ५६७, प्रव द्वा ८५ गा ६८१, आचा श्रु २ चू १ अ.७ उ २ सू १६२
साठ नाम अहिंसा (दया) के	६२२	३	१५१	प्रश्न संवरद्वार १ सू. २१
साडीकम्मे कर्मादान	८६०	५	१४४	उपा अ १ सू ७, भ श ८ उ.५ सू ३३०, आव ह अ ६ पृ ८२८
साढ़े पचीस आर्य क्षेत्र	९४२	६	२२३	प्रव द्वा २७५ गा. १५८७-९२, पन्न. प १ सू ३७, बृ उ १ नि गा ३२६३
सात अवग्रह प्रतिमाएं	५१८	२	२४८	आचा श्रु २ चू १ अ ७ उ २ सू १६१
सात आगार एगट्ठाण के	५१७	२	२४७	आव ह अ ६ पृ ८५३, प्रवद्वा ४
सात आगार पुरिमड्ढ (दो पोरिसी) के	५१६	२	२४६	आव ह अ ६ पृ ८५२, प्रव द्वा ४ गा २०३
सात आयु भेद	५३१	२	२६६	ठा ७ उ ३ सू ५६१
सात एकेंद्रिय रत्न चक्रवर्ती के	५२९	२	२६५	ठा ७ उ ३ सू ५५७
सात कर्मों का एक साथ बन्ध होने पर बन्ध के विशेष कारण से विशेष कर्म का बन्ध होना कैसे संगत हो सकता है?	५९०	३	८३	तत्त्वार्थ (सु०) अध्या ६ सू २६ व्याख्या.
सात का संहरण नहीं होता	५३०	२	२६६	प्रव द्वा २६१ गा. १४१९

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सात कुलकर आगामी उत्सर्पिणी के	५११	२	२३९	ठा ७उ.३ सू.५५६, सम १५९
सातकुलकरगतउत्सर्पिणीके	५१२	२	२३९	ठा ७उ ३सू.५५६,सम १५७
सात कुलकर वर्तमान अवसर्पिणी के	५०८	२	२३७	ठा ७उ ३सू.५५६, सम १५७ जै भा २पृ.२६२
सात गणापक्रमण	५१५	२	२४४	ठा ७ उ ३ सू ५४१
सात गाथा विनयसमाधि अध्ययन के चौथे उद्देशे की	५५३	२	२९३	दश.अ ९उ.४
सात नय	५६२	२	४११	अनु सू १५२,प्रव द्वा.१२४ गा. ८४७,८४८,विशे.गा २१८०-२२७८, रत्ना परि ७, तत्वार्थ अध्या १, द्रव्यग.त अध्या ५-८, न्यायप्र अध्या ५, आगम,नय, नयप्र,नयवि,नयो आलाप,
सात नरक	५६०	२	३१४	जीप्रति.३ सू.६६-९५, प्रव द्वा १७२-१८४,भ श.१,७,१४,१८, २५,३०,पन्न प २०,३४, प्रश्न सू ४
सात निक्षेप अनुयोग के	५२६	२	२६२	विशे.गा.१३८५-१३९२
सात निह्नव	५६१	२	३४२	विशे गा २३००-२६२०,आव ह अ १ गा ७७८ ७८८,भ श १ उ.१,भ श.९उ ३३,ठा ७सू.५८७
सातपंचेंद्रियरत्नचक्रवर्तीके	५२८	२	२६५	ठा ७ उ ३ सू ५५७
सात पक्षाभास	५४९	२	२९१	रत्ना परि.६ सू ३८-४६
सात पदवियाँ	५१३	२	२३९	ठा.२उ.३ सू.१७७ टी.
सात पानैषणा	५२०	२	२५०	आचा श्रु २ चू १ अ १ उ ११ सु ६२,ठा.७उ ३सू ५४५,प्र अभि.३ श्लो २२टी पृ.४५
सात पिण्डैषणा	५१९	२	२४९	(ऊपर के अनुसार)

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सात पुद्गलपरावर्तन	५४६	२	२८४	ठा.३सू १६३टी, भ श.१२उ ४ सू ४४६, प्रव द्वा २गा ३६टी, कर्म भा.५गा ८७ ८८, प्रव द्वा १६२
सात पृथ्वी के नाम व गोत्र	५६०	२	३१५	जी.प्रति ३सू ६७, प्रव द्वा.१७२
सात प्रकार का अप्रशस्त काय विनय	५०४	२	२३३	भ श २५उ ७ सू.८०२, ठा ७ उ ३सू ५८५, उव.सू २०
सात प्रकार का अप्रशस्त मन विनय	५००	२	२३१	भ श २५उ ७सू ८०२, ठा ७ उ.३सू ५८५
सात प्रकार का अप्रशस्त वचन विनय	५०२	२	२३२	भ श.२५उ ७सू ८०२, ठा ७ उ ३ सू ५८५
सात प्रकार का काययोग	५४७	२	२८६	भ श २५उ १सू ७१६, कर्म भा ४गा २४, द्रव्यलो स ३पृ ३५८
सात प्रकार का प्रशस्त काय विनय	५०३	२	२३२	भ श २५उ ७ सू ८०२, ठा ७ उ ३सू ५८५, उव सू २०
सात प्रकार का प्रशस्त मन विनय	४९९	२	२३१	भ श २५उ ७सू ८०२, ठा ७ उ ३सू ५८५
सात प्रकार का प्रशस्त वचन विनय	५०१	२	२३२	भ श.२५उ ७सू ८०२, ठा ७ उ ३ सू ५८५
सात प्रकार का लोकोपचार विनय	५०५	२	२३३	भ श २५उ ७सू ८०२, ठा ७ उ.३सू ५८५, उव सू २०, ध. अधि ३श्लो ५४टी पृ ४१
सात प्रकार का विनय	४९८	२	२२९	(उपर्युक्त)
सात प्रकार की दण्डनीति	५१०	२	२३८	ठा ७ उ ३ सू ५५७
सात प्रकार के सब जीव	५५०	२	२९२	ठा ७उ ३सू ५६२
सात प्रकार श्लक्ष्ण बादर पृथ्वी काय के	५४५	२	२८४	पन्न प १सू १८

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सात प्रमाद प्रतिलेखना	५२१	२	२५१	उत्त अ २६गा.२७
सात प्राणायाम	५५६	२	३०२	यो प्रका ५,रा यो , हठ,गी१
सात फल चिन्तन के	५०७	२	२३५	आ प्र.गा.३६३
सातवातेंछद्मस्थकेअविषय	५२५	२	२६१	ठा ७उ ३सू ५६७
सात बातों से केवली जाना जा सकता है	५२४	२	२६१	ठा.७उ.३ सू ५५०
सात बातों से छद्मस्थ जाना जा सकता है	५२३	२	२६०	ठा ७उ ३ सू ५५०
सात बोल सूत्र सुनने के	५०६	२	२३४	विशे.गा ५६५, सम ७
सात भंग	५६३	२	४३५	सूय श्रु.२अ.५गा.१० १२टी., आगम ,सप्त ,रत्ना परि ४, स्या का २३
सात भयस्थान	५३३	२	२६८	ठा ७उ.३ सू.५४९, सम ७
सात भेद अविरुद्धानुपलब्धि हेतु के	५५६	२	२९८	रत्ना परि.३सू ९५-१०२
सात भेद काल के	५५१	२	२९२	ज वत्त २ सू.१८
सातभेद विरुद्धोपलब्धि के	५५५	२	२९६	रत्ना परि ३ सू ८३-९२
सात भेद व्युत्सर्ग के	५५७	२	३००	उअग २०
सात महानदियाँ	५३८	२	२७०	ठा ७उ ३सू.५५५
सात महानदियाँ	५३९	२	२७०	ठा ७उ ३ सू ५५५
सात मूलगोत्र	५४२	२	२७६	ठा.७उ ३ सू.५५१
सात लक्षण द्रव्य के	५२७	२	२६३	विशे.गा २८
सात वचन विकल्प	५५४	२	२९५	ठा ७उ ३सू.५८४
सात वर्तमान अवसर्पिणी के कुलकरों की भार्याओं के नाम	५०९	२	२३८	ठा.७उ ३ सू.५५६,सम.१५७

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सात वर्षधर पर्वत	५३७	२	२७०	ठा.७उ.३सू.५५५, सम ७
सातवादी (सुखवादी)	५६१	३	६४	ठा.८उ ३सू.६०७
सात वास (क्षेत्र) जम्बूद्वीप में	५३६	२	२६९	ठा ७उ ३सू ५५५, सम. ७, तत्त्वार्थ अध्या ३ सू १०
सात विकथा	५३२	२	२६७	ठा.७उ ३ सू ५६९
सात विभंगज्ञान	५५८	२	३०१	ठा ७उ.३ सू ५४२
सात व्यक्तियों (भ० मल्लिनाथ आदि) ने एक साथ दीक्षा ली	५४३	२	२७७	ठा ७उ ३सू ५६४
सात व्यसन	९१८	६	१५५	ज्ञा.अ १८सू १३७,बृ.उ १नि. गा ९४०,गौ कु.
सात श्रेणी	५४४	२	२८२	ठा ७सू ५८१,भ श २५सू ७३०
सात संग्रहस्थान आचार्य तथा उपाध्याय के	५१४	२	२४२	ठा.५ उ १सू ३९९, ठा ७उ ३ सू ५४४
सात संस्थान	५५२	२	२९३	ठा १सू ४७,ठा ७उ ३सू ५४८
सात समुद्घात	५४८	२	२८८	पन्न प ३६ सू ३३१,ठा.७ सू ५८६,प्रव द्वा २३१गा १३११-१३१६,द्रव्यलो स ३पृ १२४
सात सेनापति शक्रेन्द्र के	५४१	२	२७६	ठा ७उ ३सू ५८२
सात स्थान दुष्प्रमाजनने के	५३४	२	२६८	ठा ७उ ३ सू ५५९
सात स्थान सुप्रमाजनने के	५३५	२	२६९	ठा ७उ ३ सू ५५६
सात स्थान स्थविरकल्प के	५२२	२	२५१	विशे गा ७
[1] सात स्वर	५४०	२	२७०	ठा ७उ ३सू ५५३,अनु सू १२७
साता और असाता वेदनीय का अनुभाव आठ आठ प्रकार का	५९०	३	६१	पन्न प २३सू २९२

[1] इस बोल के अन्तर्गत जो इक्कीस मूर्छनाएं छपी हैं उनके सम्बन्ध में पृष्ठ २६१ पर टिप्पणी देखो।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
साता गौरव (गारव)	६८	१	७०	ठा ३ उ ४सू २१५
साता वेदनीय	५१	१	३०	पन्न प २३सू २९३,कर्म भा १गा १२
साता वेदनीय कर्म बाँधने के दस बोल	७६१	३	४४३	भ श ७उ ६सू २८६
साता वेदनीय की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त की या बारह मुहूर्त की ?	९१८	६	१३९	उत्त अ ३३ गा १९-२०,पन्न प २३सू २९४
साता वेदनीय की जघन्य स्थिति दो तरह किस विवक्षा से कही गई है?	९१८	६	१३९	उत्त अ ३३ गा १९-२०, पन्न प २३सू २९४
सादिश्रुत	८२२	५	८	नं सू ४३,विशे गा ५३७-५४८
सादि संस्थान	४६८	२	६८	ठा ६सू ४९५,कर्म.भा १गा ४०
साधर्मिक अवग्रह	३३४	१	३४५	भ श १६उ २सू ५६७,प्रव द्वा ८५ गा ६८१,आचा श्रु २चू १अ ७उ २
साधु	२७४	१	२५६	भ मंगलाचरण
साधु आलोचना करने योग्य के दस गुण	६७०	३	२५८	भ श २५उ ७सू ७९९,ठा १० उ ३सू ७३३
साधु आलोचना देने योग्य के दस गुण	६७१	३	२५९	भ श २५उ ७सू ७९९,ठा १० उ ३सू.७३३
साधुओं की सेवा भक्ति के परम्परा फल दस	७०८	३	३८३	ठा ३उ ३ सू १९०
साधु और सोने की आठ गुणों से समानता	५७१	३	९	पचा १८ गा ३२-३४

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
साधु का पाँच कारणों से राजा के अन्तःपुर में प्रवेश	३३८	१	३४८	ठा ५उ.२सू ४१५
साधु का स्वरूप बताने वाली सभिक्खु अ० की १६ गाथाएं	८६२	५	१५२	उत्त अ.१५
साधु का स्वरूप बताने वाली सभिक्खु अ० की २१ गाथाएं	६१६	६	१२६	दश. अ १०
[1]साधु की अवग्रह प्रतिमा सात	५१८	२	२४८	आचा श्रु.२चू.१अ ७उ २
साधु की इकतीस उपमाएं	६६२	७	४	प्रश्न सवरद्वार ५सू २६,उव सू १७
साधु की बारह उपमाएं	८०५	४	३०६	अनु सू.१५० गा १३१
साधु की बारह पडिमाएं	७६५	४	२८५	सम.१२,भ श २उ १,दशा द ७
साधु की समाचारी दस	६६४	३	२४६	भ.श २५उ ७सू ८०१,ठा १० उ ३सू ७४६, उत्त अ.२६ गा २-७,प्रव द्वा १०१गा ७६०-६७
साधु के अठारह कल्प	८६०	५	४०२	सम १८, दश अ ६ गा ८-६६
साधु के आहार ग्रहण करने के दस दोष	६६३	३	२४२	प्रव द्वा ६७गा ५६८,पि नि गा ५२०, ध अधि ३श्लो २२ टी पृ.४२,पचा १३गा २६
[2]साधु के आहारसंबंधी सैंतालीस दोष	१०००	७	२६५	पि नि गा ६६६
साधु के इक्कीस शबल दोष	६१३	६	६८	सम २१, दशा द २
साधु के उतरने योग्य तथा अयोग्य स्थान तेईस	६२३	६	१७०	आचा श्रु २चू १अ २उ २

१ मकान, वस्त्र, पात्र आदि वस्तुएं लेने में विशेष प्रकार की मर्यादा धारण करना।

२ आहार के सैंतालीस दोषों में एक दायक दोष है। इसके चालीस भेद हैं। वे ४० भेद श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के तीसरे भाग के बोल नं. ६६३ में दिये गये हैं।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
साधु के चारित्र को दूषित करने वाले दस उपघात दोष	६६८	३	२५४	ठा.१० उ ३ सू ७३८
साधु के तीन मनोरथ	८६	१	६४	ठा ३ उ ४ सू २१०
साधु के दस कल्प	६६२	३	२३४	पचा १७ गा ६-४०
साधु के पाँच महाव्रत	३१६	१	३२१	दश.अ ४, ठा.५ उ १ सू ३८६, प्रव द्वा ६६ गा ५५३, ध अधि ३ श्लो ३९-४४ पृ.१२०-१२४
साधु के बाईस परिषह	९२०	६	१६०	सम २२, उत्त अ २, प्रव द्वा ८६ गा ६८५, तत्त्वार्थ अध्या ९ सू ९
साधु के बारह विशेषण	८०६	४	३१४	ध वि सू ३६९
[1]साधु के बारह सम्भोग	७९६	४	२९२	निशी उ ५, सम.१२, व्यव उ.५ भाष्य गा ५०
साधु के बावन अनाचीर्ण	१००७	७	२७२	दश अ ३
साधु के बीस कल्प	९०४	६	९	बृ उ १
साधु के मलादि परठने के लिये दस विशेषण वाला स्थण्डिल	६७६	३	२६४	उत्त अ २४ गा १६-१८
साधु के लिये अकल्पनीय चौदह बातें	८३४	५	२९	बृ उ ३ सू.१९-२१
साधु के लिये, आवश्यक आदि क्रिया के समय उनकी उपेक्षा कर क्या ध्यानादि करना उचित है?	९१८	६	१४३	दश अ ५ उ २ गा ५, गुण श्लो ३०
साधु के लिये आवश्यक बातें	४९७	२	१९८	

[1] समान समाचारी वाले साधुओं का सम्मिलित आहार आदि व्यवहार सम्भोग कहलाता है ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
साधु के लिये ग्लान साधु की सेवा करना आवश्यक है या उसकी इच्छा पर निर्भर है?	६८३	७	१०८	वृ गा १८७१-१८७८, भ श २५ उ.७ सू ८०२, उत्त अ २६ गा. ८-१०, उत्त अ २६ प्रश्न ४३, ओ गा ४८,४६,६२,५३२-३३
साधु (स्थविरकल्पी) के लिये चौदह प्रकार का उपकरण	८३३	५	२८	पंच व गा ७७१-७७६
साधु (जिनकल्पी) के लिये बारह प्रकार का उपकरण	८३३	५	२८	पंच व गा ७७१-७७८
साधु के लिये वर्जनीय ८ दोष	५८३	३	३८	उत्त अ २४ गा ६
साधु के संयम की विशुद्धि दस	६६६	३	२५७	ठा १० उ ३ सू ७३८
साधु के संयम में संक्षोभ (अशान्ति) होने के दस कारण	७१४	३	३८८	ठा १० उ ३ सू ७३६
साधु के सत्ताईस गुण	९४५	६	२२८	सम २७, आव.ह अ.४ पृ ६४६, उत्त अ ३१ गा १८
साधु के सत्य वचन में भी क्या विवेक होना चाहिये?	६८३	७	१०७	प्रश्न संवरद्वार २ सू २४, सूय. अ.६ गा २३
साधु को आहार की गवेषणा में लगने वाले १६ उद्गम दोष	८६५	५	१६१	प्रव द्वा ६७ गा ५६५-५६६, ध. अधि ३ श्लो २२ पृ ३८, पि नि गा ९२-९३, पि वि गा ३-४, पंचा १३ गा ५-६
साधु को आहार की गवेषणा में लगने वाले सोलह उत्पादना दोष	८६६	५	१६४	प्रव द्वा ६७ गा ५६७-५६८, ध अधि ३ श्लो २२ पृ ४०, पि नि गा ४०८-४०९, पि वि गा ५८-५९, पंचा १३ गा १८-१९

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
साधु को कल्पनीय ग्रामादि सोलह स्थान	८६७	५	१६६	बृ उ.१ सू.६
साधु को कौनसा वाद किस के साथ करना चाहिये ?	९१८	६	१५७	अष्ट १२, उत्त (क) अ.१६ (कथा)
साधु ग्लान की सेवा करने वाले बारह और अड़तालीस	७९७	४	२९७	प्रव द्वा.७१ गा ६२९-६३५, नवपद. सलेखनाद्वार गा.१२९
साधु द्वारा आहार करने के छः कारण	४८४	२	९८	उत्त अ.२६.गा.३२-३३, पिं नि गा.६६२
साधु द्वारा आहार त्याग करने के छः कारण	४८५	२	९८	उत्त. अ.२६ गा.३४, पि. नि. गा ६६६
साधु द्वारा साध्वी को ग्रहण करने या सहारा देने के ५ बोल	३४०	१	३५१	ठा ५ उ.२ सू ४३७
साधु मंगलकारी लोकोत्तम और शरण रूप है	१२९क	१	९४	आव ह अ ४ पृ.५६९
साधुयोग्य १४ प्रकार का दान	८३२	५	२६	शिक्षा., आव ह अ.६ पृ ८४९
साधु वचन आगार	४८३	२	९८	आव.ह अ.६ पृ ८५२, प्रव.द्वा.४
साधु साध्वी के एक जगह स्थानशय्या निषद्या के ५ कारण	३३९	१	३४९	ठा.५ उ.२ सू.४१७
साधु साध्वी के साथ चार कारणों से आलाप संलाप करता हुआ निर्ग्रन्थाचार का अतिक्रमण नहीं करता	१८३	१	१३७	ठा ४ उ.२ सू.२९०
साध्य	४२	१	२७	रत्नापरि ३ सू.१४
सानक वस्त्र	३७४	१	३८९	ठा ५ उ.३ सू ४४६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सान्निपातिक भाव छः	४७४	२	८१	अनु सू १२६, ठा ६उ ३ सू ५३७, कर्म भा.४गा ६४-६९
सान्निपातिक भाव के छब्बीस भंग	४७४	२	८१	अनु सू १२६, ठा ६ उ ३ सू ५३७, कर्म भा ४गा ६४ ६९
सान्निपातिकभावके भंग २६में से जीवों में पाये जाने वाले छः भंग	४७४	२	८३	अनु सू १२६, ठा ६ उ.३ सू. ५३७, कर्म भा ४गा ६४-६९
सापेक्ष यतिधर्म के विशेषण	८०६	४	३१४	ध वि सू ३६९ पृ.७५
सामपदिकव्रत का दृष्टान्त भाव अननुयोग पर	७८०	४	२४६	आव ह गा.१३४ वृ पीठिका नि गा १७२
सामन्तोपनिपातिकी (सामन्तोवणिया) क्रिया	२९४	१	२७९	ठा.२उ १सू ६०,ठा ५उ २सू ४१९ आव ह अ ४पृ ६१२
सामानिक	७२९	३	४१५	तत्त्वार्थ अध्या ४सू ४
सामान्य	४१	१	२६	रत्ना परि ५सू १,स्या का.४
सामान्य के दो प्रकार से दो भेद	५९	१	४१	रत्ना परि ५सु ३-५, रत्ना परि ७ सू १५-१९
सामान्य गुण छः	४२५	२	१६	आगम,द्रव्य त अध्या ११श्लो २-४
सामान्य विशेष	५९	१	४१	रत्ना परि ५ सू ३-५
सामायिक आवश्यक	४७९	२	९०	आव ह अ.१
सामायिक और छेदोपस्थापनिक चारित्र अलग अलग क्यों कहे गये हैं ?	९८३	७	११८	भ श १३ ३सू ३७टी पृ ६०
सामायिक कल्प स्थिति	४४३	२	४५	ठा ३उ ४सू २०६,ठा ६ उ.३ सू ५३०,वृ (जी) उ ६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सामायिक की व्याख्या और उसके भेद	१९०	१	१४३	ध र. प्र. अधि. २ श्लो ३७ टी पृ ८३, विशे गा. २६७३-२६७७
सामायिक के चार भेद	४३१	२	३८	विशे गा. २७०८-२७१०
सामायिक के बत्तीस दोष	९७०	७	४३	शिक्षा
सामायिक चारित्र	३१५	१	३१६	ठा ५ उ २ सू ४२८, अनु सू १४४, विशे.गा १२६०-१२६७
सामायिक चारित्र के अनवस्थित कल्प छः	४४३	२	४५	ठा ३ उ ४ सू २०६ टी, ठा.६ उ ३ सू ५३० टी
सामायिक चारित्र के अवस्थित कल्प चार	४४३	२	४५	ठा ३ उ ४ सू २०६ टी, ठा.६ उ ३ सू ५३० टी.
सामायिक में १२ काया दोष	७८९	४	२७३	शिक्षा.
सामायिक में दस मन दोष	७६४	३	४४७	शिक्षा
सामायिक में दस वचन दोष	७६५	३	४४८	शिक्षा.
सामायिक व्रत	१८६	१	१४०	आव ह अ, ६ पृ ८३१, पंचा १ गा, २४
सामायिक व्रत के ५ अतिचार	३०९	१	३०९	उपा. अ १, आव ह अ ६ पृ ८३१
सामायिक व्रत निश्चय और व्यवहार से	७९४	४	२८४	आगम
सामायिक भाव प्रमाण नाम	७१९	३	४०१	अनु सू १३०
सामुच्छेदिक दृष्टि नामक चौथे निह्नव का मत	५६१	२	२५८	विशे गा २३८९-२४२२
सामुदानिकी क्रिया	२९६	१	२८२	ठा २ उ १ सू ६०, ठा ५ उ २ सू ४१९, आव ह अ. ४ पृ ६१४, सूय श्रु. २ अ. २ नि गा १६८ टी.
साम्यवाद	४९७	२	२१३	
सारी पृथ्वी धूजने के ३ बोल	११७	१	८२	ठा.३ उ ४ सू १९८

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सास्वादान समकित	२८२	१	२६१	कर्म भा १ गा १५
सास्वादानसम्यग्दृष्टिगुण०	८४७	५	७३	कर्म भा २ गा २ व्याख्या
साहरिय दोष(आहार का दोष)	६६३	३	२४३	प्रव द्वा ६७ गा ५६८ पृ. १४८, पिनि गा. ५२९, पचा १३ गा. २६, ध अधि ३ श्लो. २२ टी पृ ४१
सिद्ध	७ख	१	४	ठा. २ उ ४ सू १०१, तत्त्वार्थ अध्या २
सिद्ध	२७४	१	२५२	भ मंगलाचरण
सिद्ध भगवान् के आठ गुण	५६७	३	४	अनु सू १२६ पृ ११५, प्रव द्वा. २७६ गा. १५९३-९४, सम. ३१
सिद्ध भगवान् के इकतीस गुण दो प्रकार से	९६१	७	२	उत्त अ. ३१ गा. २० टी, प्रव द्वा. २७६ गा १५९३-१५९४, सम ३१, आचा श्रु. १ अ. ५ उ ६ सू १७०, आव. ह अ ४ पृ. ६६२
सिद्ध मंगलकारी लोकोत्तम और शरण रूप हैं	१२९क	१	९४	आव ह अ ४ पृ ५६९
सिद्धशिला और अलोक के बीच कितना अन्तर है?	९१८	६	१३५	भ श १४ उ ८ सू ५२७ टी.
सिद्ध शिला के आठ नाम	६०९	३	१२६	पन्न प २ सू ५४, ठा ८ उ ३ सू. ६४८, उत्त अ ३६ गा ५६-६२
सिद्धों का अल्प बहुत्व	८४९	५	१२१	पन्न प १ सू. ७
सिद्धों के अल्पबहुत्व के ३३ बोल	९७६	७	६६	नं सू २० टी पृ १२५
सिद्धों के पन्द्रह भेद	८४९	५	११७	पन्न प १ सू ७
सीता सती	८७५	५	३२१	त्रि प पर्व ७
सुंसुमा, चिलातीपुत्र की कथा	९००	५	४७०	ज्ञा अ १८
सुकाली रानी	६८६	३	३३८	अंत व ८ अ. २

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सुकृष्णा रानी	६८६	३	३४३	अंत व ८ अ ५
सुख दस	७६६	३	४५३	ठा.१०उ ३सू ७३७
सुख विपाक की दस कथा	६१०	६	५३-६०	वि श्र ११-२०
सुख शय्या चार	२५६	१	२४१	ठा.४उ ३सू.३२५
सुजात कुमार की कथा	६१०	६	५८	वि श्र १३
* सुदुद्दिन्नं	८२४	५	१५	आव ह अ ४ पृ ७३०
सुधर्मा सभा	३६७	१	४२१	ठा.५उ.३सू ४७२
सुधर्मास्वामी गणधर के, 'जो जैसा है, परभव में वह वैसा ही रहता है' मन का समाधान	७७५	४	४०	विशे.गा.१७७०--१८०१
सुन्दरी (सती)	८७५	५	१६	त्रि प पर्व१-२, आव ह.नि गा.३४८
सुन्दरीनन्द की पारिणामिकी बुद्धि की कथा	६१५	६	१०५	आव ह गा.६५०, न सू २७ गा.७३
सुपर्णकुमार के दस अधिपति	७३३	३	४१८	भ श ३उ.८सू १६६
सुप्रत्याख्यान	५४	१	३२	भ श ७उ २सू २७१
सुबाहुकुमार की कथा	६१०	६	५३	वि श्र ११
सुबुद्धि व जितशत्रु की कथा	६००	५	४५८	ज्ञा अ.१२
सुभद्रा सती	८७५	५	३४०	दश अ.१नि.गा.७३-७४
सुरादेव श्रावक	६८५	३	३१३	उपा अ ४
सुलभ बोधि	८	१	७	ठा.२उ.२ सू ७६
सुलभ बोधि के पाँच बोल	२८७	१	२६६	ठा ५उ २ सू.४२६
सुलसा	६२४	३	१६६	ठा.६उ ३सू.६६१
सुलसा सती	८७५	५	३१३	आव ह नि.गा १२८४, ठा ६उ.३ सू.६६१ टी

* पृष्ठ १४३ पर टिप्पणी देखो।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सुवासव कुमार की कथा	९१०	६	५८	वि श्र.१४
सुश्रामण्यता	७६३	३	४४६	ठा १०उ ३सू.७५८
सुषमदुषमा आरा अवसर्पिणी का	४३०	२	३१	जं. वक्ष २ सू २७-३३, ठा ६ उ ३ सू ४९२
सुषम दुषमा आरा उत्सर्पिणी का	४३१	२	३७	जं वक्ष २ सू.३७-४०, ठा ६ उ ३ सू ४९२
सुषम सुषमा आरा अवसर्पिणी का	४३०	२	३०	जं वक्ष २ सू.१९-२५, ठा ६ उ ३ सू ४९२
सुषम सुषमा आरा उत्सर्पिणी का	४३१	२	३८	जं वक्ष २ सू.३७-४०, ठा.६ उ ३सू ४९२
सुषमा आरा अवसर्पिणी का	४३०	२	३०	जं वक्ष.२सू.२६,ठा.६ सू.४९२
सुषमा आरा उत्सर्पिणी का	४३१	२	३८	जं वक्ष.२सू.३७-४०,ठा ६सू ४९२
सुषमाकाल जानने के ७ स्थान	५३५	२	२६९	ठा ७उ.३ सू.५५९
सूक्ष्म	८	१	५	ठा.२ उ.१ सू.७३
सूक्ष्म क्रिया अनिवर्ती शुक्ल ध्यान	२२५	१	२१०	आव.ह.अ ४ ध्यानशतक गा. ८१,ठा.४उ.१ सू.२४७, ज्ञान. प्रक.४२,क भा २ श्लो २१६
सूक्ष्म जीव आठ	६११	३	१२८	दश.अ.८गा १५,ठा ८सू ६१५
सूक्ष्म दस	७४६	३	४२३	ठा १०उ ३ सू.७१६
सूक्ष्म पुद्गल	४२६	२	२५	दश अ ४भाष्य गा ६० टी.
सूक्ष्म बादर पुद्गल	४२६	२	२५	दश अ ४भाष्य गा.६० टी
सूक्ष्मसम्पराय गुणस्थान	८४७	५	८२	कर्म भा.२ गा २
सूक्ष्मसम्पराय चारित्र	३१५	१	३२०	ठा ५उ २सू ४२८, अनु सू १४४, विशे.गा १२६०–१२८०
सूक्ष्म सूक्ष्म पुद्गल	४२६	२	२५	दश अ ४भाष्य गा ६०टी.

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सूत्र की वाचना देने के ५ बोल	३८२	१	३६८	ठा.५ उ ३ सू ४६८
सूत्र के बत्तीस दोष तथा आठ गुण	६६७	७	२३	अनु सू १५१टी., विशे.गा.६६६टी, वृ पीठिका नि गा २७८-२८७
सूत्र के बारह भेद	७७८	४	२३५	वृ उ.१नि गा.१२२१
[1] सूत्रधर पुरुष	८४	१	६१	ठा ३उ ३सू १६६
सूत्र पढ़ने के बत्तीस अस्वाध्याय	६६८	७	२८	ठा सू २८५,७१४, प्रव द्वा. २६८गा १४५०-१४७१,व्यव. भा उ ७नि.गा २६६–३१६, आव हृश ४नि गा.१३२१-६०
सूत्र पढ़ाने की मर्यादा और दीक्षा पर्याय	५१४	२	२४३	ठा ५उ १सू ३६६,ठा ७सू ५४४, व्यव भा उ १०सू २१–३५
सूत्र बत्तीस	६६६	७	२१	
सूत्र रुचि	६६३	३	३६३	उत्त अ २८गा २१
सूत्र श्रुत धर्म	१६	१	१५	ठा.२उ १सू ७२
सूत्र सीखने के पाँच स्थान	३८३	१	३६६	ठा ५उ ३सू ४६८
सूत्र सुनने के सात बोल	५०६	२	२३४	विशे. गा ५६५
[2] सूत्र स्थविर	६१	१	६६	ठा ३उ ३सू.१५६
सूत्रागम	८३	१	६०	अनु सू १४४
सूयगडांगसूत्र के ग्यारहवें मार्गाध्ययनकी ३८गाथाएं	६८५	७	१३६	सूय अ.११
सूयगडांग सूत्र के चौथे अ० प्रथम उ० की ३१ गाथाएं	६६३	७	८	सूय अ ४ उ १

---

१ सूत्र को धारण करने वाला शास्त्र पाठक पुरुष सूत्रधर कहलाता है।

२ ठाणांग और समवायांग सूत्र के ज्ञाता साधु सूत्रस्थविर कहलाते हैं।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सूयगडांग सूत्र के चौदहवें अध्ययनकी २७ गाथाएं	९४६	६	२३०	सूय अ १४
सूयगडांग सूत्र के तेईस अध्ययनों के नाम	९२४	६	१७३	
सूयगडांगसूत्र के दसवें समाधि अ०की २४गाथाएं	९३२	६	१९७	सूय अ १०
सूयगडांगसूत्रके दूसरे अ०के दूसरे उ०की३२गाथाएं	९७४	७	५६	सूय अ २उ २
सूयगडांग सूत्र केनवें धर्मा-ध्ययन की छत्तीस गाथाएं	९८१	७	८७	सूय अ ९
सूयगडांग सूत्र के पाँचवें नरयविभत्ति अ०के दूसरे उद्देशे की पचीस गाथाएं	९४१	६	२१९	सूय अ ५उ २
सूयगडांग सूत्र के पाँचवें नरयविभत्ति अ०के पहले उ०की सत्ताईस गाथाएं	९४७	६	२३६	सूय अ ५उ १
सूयगडांगसूत्रके प्रथमद्वितीय दोनों श्रुतस्कन्धों के तेईस अध्ययनों का विषय वर्णन	७७६	४	७६	
सूयगडांगसूत्र के वीरस्तुति अध्ययन कीउनतीस गाथाएं	९५५	६	२९९	सूय अ ६
सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्रकेवीसप्राभृतों का संक्षिप्त विषय वर्णन	७७७	४	२३०	
सेठ (कालसेठ) की पारि-णामिकी बुद्धि की कथा	९१५	६	७८	नसू २७ गा ७२,आव ह गा ९४९

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सेवार्त्तक (छेवट्ट) संहनन	४७०	२	७०	पन्न.प २३ सू.२९३, ठा.६उ.३ सू ४९४, कर्म भा.१ गा.३९
१ सैंतालीसदोषआहारके	१०००	७	२६५	पिं नि.गा.६६६
सैंतीसगाथाए उत्तराध्ययन सूत्र के दसवें अध्ययन की	९८४	७	१३३	उत्त.अ.१०
२ सोपक्रम आयु	३०	१	२१	तत्त्वार्थ.अध्या.२सू ५२, भ.श. २० उ.१०सू ६८५
३ सोपक्रम कर्म	२७	१	१९	वि भ ३सू२० टी.
सोलह उत्पादना दोष	८६६	५	१६४	प्रवद्वा ६७गा.५६५-५६८, ध अधि.३श्लो २२टी पृ ३८, पिं नि गा.४०८,४०९,९२, ९३, पिं वि.गा ५८,५९,३४, पचा.१३गा.१८-१९,५-६
सोलह उद्गम दोष	८६५	५	१६१	
सोलहगाथाएंउत्तराध्ययन सूत्रकेपन्द्रहवें अध्ययन की	८६२	५	१५२	उत्त.अ.१५
सोलहगाथाएंदशवैकालिक सूत्र की दूसरी चूलिका की	८६१	५	१४७	दश. चू.२
सोलहगाथाएंबहुश्रुतसाधु की उपमा की	८६३	५	१५५	उत्त अ.११गा.१५-३०
सोलहगाथाएं भगवान् महावीर की वसतिविषयक	८७४	५	१८२	आचा अ ९उ २
सोलहगुणदीक्षालेनेवालेके	८६४	५	१५८	ध अधि.३ श्लो ७३-७८पृ १
सोलह नाम मेरु पर्वत के	८७०	५	१७१	सम.१६, जं.वक्त.४सू.१०९
सोलह भंग आभवआदिके	८६८	५	१६८	भ.श.१९उ.४ सू.६५४

१ पृष्ठ ३२१ की टिप्पणी देखो। २ जो आयु पूरी भोगे बिना आयु टूटने के सात कारणों में से किसी कारण से असमय में ही टूट जाय। ३ जिस कर्म का फल उपदेश आदि से शान्त हो जाय।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सोलह भेद वचन के	८६६	५	१७०	पन्न प ११ सू १७३, आचा श्रु २ चू १ अ १ ३ उ १
सोलह महायुग्म	८७१	५	१७२	भ श ३५ उ १ सु ८५५
सोलह विशेषण द्रव्यावश्यक के	८७२	५	१७६	अनु सू १३, विशे गा ८५१-५७
सोलह सतियां	८७५	५	१८५-३७५	ठा ६ उ ३ सू ६६१ टी, ज्ञा अ १६, त्रि ष पर्व १, २, ७, ८, १०, पवा १६ गा ३१, चन्दन, राज, भरत गा ८-१०, आव ह
सोलह सतियों के लिये प्रमाण भूत शास्त्र	८७६	५	३७५	
सोलह स्थान (ग्रामादि) साधु के लिये कल्पनीय हैं	८६७	५	१६६	बृ उ १ सू ६
सोलह स्वप्न चन्द्रगुप्त राजा के और उनका फल	८७३	५	१७८	व्यव चू हस्तलिखित
सौधर्म देवलोक का वर्णन	८०८	४	३१६	पन्न प २ सू ५२
सौर्यदत्त की कथा	६१०	६	४६	वि अ ८
[1] स्कन्ध बीज	४६६	२	६६	दश अ ४
स्तनितकुमार के दस अधिपति	७४०	३	४२०	भ श. ३ उ ८ सू १६६
स्तम्भ की कथा औत्पतिकी बुद्धि पर	६४६	६	२६६	नं सू २७ गा ६३ टी.
[2] स्तिबुकसंकेत पच्चक्खाण	५८६	३	४३	आव ह अ ६ गा १५७८, प्रव द्वा ४
स्तूप की कथा पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	११७	उत्त (क) अ १ गा ३ टी, निर., न. सू २७ गा ७४, आव ह गा ६५१

१ जिस वनस्पति का स्कन्ध भाग बीज का काम देता है, जैसे शल्की आदि।

२ पच्चक्खाण करने में एक तरह का संकेत, पानी रखने के स्थान पर पड़ी हुई बूंदें जब तक सूख न जांय अथवा जब तक ओस की बूंदें न सूखें तब तक का पच्चक्खाण।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्तोक	५५१	२	२९३	जं.वक्ष.२ सू.१८
स्त्यानगृद्धि निद्रा	४१९	१	४४३	पन्न प.२३, कर्म भा.१ गा.११-१२
स्त्री कथा के चार भेद	१४९	१	१०७	ठा.४ उ.२ सू.२८२ टी.
स्त्रीकथा से होनेवाली हानि	१४९	१	१०८	ठा.४ उ.२ सू.२८२ टी.
स्त्री की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२६८	नं.सू.२७ गा.६३ टी.
स्त्री के गर्भ में जीव उत्कृष्ट कितने काल तक रहता है?	९१८	६	१४१	भग श.२ उ.५ सू.१०१, प्रव द्वा. २४१-२४२ गा १३६०
स्त्रीतीर्थंकर आश्चर्य	६८१	३	२७८	ठा.१० उ.३ सू.७७७, प्रव द्वा.१३८
स्त्रीलिंग सिद्ध	८४९	५	११९	पन्न १ सू.७
स्त्री वेद	६८	१	४९	बृ उ.४, कर्म भा १ गा २२
स्थण्डिल के चार भांगे	१८२	१	१३७	उत्त अ २४ गा.१६
स्थण्डिल के दस विशेषण	६७६	३	२६४	उत्त अ.२४ गा.१६-१८
स्थलचर	४०९	१	४३६	पन्न प.१ सू.३२, उत्त अ.३६ गा.१७०
स्थविर कल्प का क्रम	५२२	२	२५१	विशे गा ७
स्थविरकल्प के १२ विशेषण	८०६	४	३१४	ध.वि सू ३६६
स्थविर कल्पस्थिति	४४३	२	४७	ठा ३ उ ४ सू २०६, ठा ६ उ ३ सू ५३०, बृ.(नी) उ ६
स्थविरकल्पी यथालन्दिक	५२२	२	२६०	विशे गा ७
स्थविरकल्पी साधुओं के लिये १४ प्रकार के उपकरण	८२२	५	२८	पंच व गा ७७२-७७९
स्थविर तीन	९१	१	६६	ठा ३ उ.३ सू १५९
स्थविर दस	६६०	३	२३२	ठा.१० उ.३ सू ७६१
स्थविर पदवी	५१३	२	२४०	ठा.३ उ ३ सू १५७ टी

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्थान तेईस साधु के उतरने योग्य तथा अयोग्य	९२३	६	१७०	आचा श्रु २ चू १ अ. २ उ २
स्थान परिहरणोपघात	६६८	३	२५६	ठा १० उ ३ सू ७३८
१ स्थानातिग	३५७	१	३७१	ठा ५ उ १ सू ३९६
स्थापन दोष	८६५	५	१६२	प्रव द्वा ६७ गा ५६५, ध अधि ३ श्लो २२ टी पृ ३८, पि नि गा ९२, पि वि गा ३, पचा १३ गा ५
स्थापना अनन्तक	४१७	१	४४१	ठा ५ उ ३ सू ४६२
स्थापना कर्म	७६०	३	४४१	आचा श्रु २ उ १ नि गा १८१
स्थापना दोष	३४७	१	३५९	आव ह अ ३ नि गा ११०७ पृ. ५१७, प्रव द्वा २ गा १०६
स्थापना निक्षेप	२०९	१	१८७	अनु सू १५०, न्यायप्र अध्या ६
स्थापनानुपूर्वी	७१७	३	३९०	अनु सू ७१
स्थापनानुयोग	५२६	२	२६२	विशे गा १३९०
स्थापनाप्रमाणनाम के ७ भेद	७१९	३	४००	अनु सू १३० गा ८५
स्थापनार्य	७८५	४	२६६	बृ उ १ नि गा ३२६३
२ स्थापना सत्य	६९८	३	३६९	ठा १० सू ७४१, पन्न प ११ सू १६५, ध अधि ३ श्लो ४१ पृ १२१
स्थापिता आरोपणा	३२६	१	३३५	ठा ५ उ २ सू ४३३
स्थावर	८	१	५	ठा २ उ ४ सू १०१
स्थावरकाय पाँच	४१२	१	४३७	ठा ५ उ १ सू ३९३

१ अतिशय रूप से स्थान अर्थात् कायोत्सर्ग करने वाला साधु।

२ सदृश या विसदृश आकार वाली वस्तु में किसी की स्थापना करके उसे उस नाम से कहना स्थापना सत्य है। जैसे शतरज के मोहरों को हाथी घोड़ा आदि कहना अथवा 'क' इस आकार विशेष को 'क' कहना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्तोक	५५१	२	२९३	जं.वक्ष.२ सू.१८
स्त्यानगृद्धि निद्रा	४१९	१	४४३	पन्न प २३, कर्म भा १ गा.११-१२
स्त्री कथा के चार भेद	१४९	१	१०७	ठा ४ उ २ सू २८२ टी.
स्त्रीकथा से होनेवाली हानि	१४९	१	१०८	ठा ४ उ २ सू २८२ टी.
स्त्री की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२६८	नसू.२७ गा ६३ टी
स्त्री के गर्भ में जीव उत्कृष्ट कितने काल तक रहता है?	९१८	६	१४१	भश २ उ.५ सू १०१, प्रव द्वा. २४१-२४२ गा १३६०
स्त्रीतीर्थंकर आश्चर्य	६८१	३	२७८	ठा.१० उ ३ सू ७७७, प्रव द्वा.१३८
स्त्रीलिंग सिद्ध	८४९	५	११९	पन्न प १ सू.७
स्त्री वेद	६८	१	४९	वृ उ ४, कर्म भा १ गा २२
स्थण्डिल के चार भांगे	१८२	१	१३७	उत्त अ २४ गा.१६
स्थण्डिल के दस विशेषण	६७६	३	२६४	उत्त अ २४ गा १६-१८
स्थलचर	४०९	१	४३६	पन्न प १ सू.३२, उत्त अ ३६ गा.१७०
स्थविर कल्प का क्रम	५२२	२	२५१	निशि गा ७
स्थविरकल्प के १२ विशेषण	८०६	४	३१४	व वि सू ३३६
स्थविर कल्पस्थिति	४४३	२	४७	ठा ३ उ ४ सू २०६, ठा ६ उ ३ सू ५३०, बृ (नी) उ.६
स्थविरकल्पी यथालन्दिक	५२२	२	२६०	निशि गा.७
स्थविरकल्पी साधुओं के लिये १४ प्रकार के उपकरण	८३३	५	२८	पंच व गा ७७३-७७६
स्थविर तीन	९१	१	६६	ठा ३ उ.३ सू १५९
स्थविर दस	६६०	३	२३२	ठा १० उ ३ सू ७६१
स्थविर पदवी	५१३	२	२४०	ठा ३ उ.३ सू १७७ टी.

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्थान तेईस साधु के उतरने योग्य तथा अयोग्य	६२३	६	१७०	आचा श्रु.२ चू १ अ २ उ २
स्थान परिहरणोपघात	६६८	३	२५६	ठा १० उ ३ सू ७३८
१ स्थानातिग	३५७	१	३७१	ठा ५ उ १ सू ३६६
स्थापन दोष	८६५	५	१६२	प्रव द्वा ६७ गा ५६५, ध अधि ३ श्लो २२ टी पृ ३८, पि नि गा ९२, पि वि गा ३, पचा १३ गा ५
स्थापना अनन्तक	४१७	१	४४१	ठा ५ उ ३ सू ४६२
स्थापना कर्म	७६०	३	४४१	आचा श्र २ उ १ नि गा १८१
स्थापना दोष	३४७	१	३५९	आव ह अ ३ नि गा ११०७ पृ. ५१७, प्रव द्वा २ गा १०६
स्थापना निक्षेप	२०९	१	१८७	अनु सू १५०, न्यायप्र अध्या ६
स्थापनानुपूर्वी	७१७	३	३९०	अनु सू ७१
स्थापनानुयोग	५२६	२	२६२	विशे गा १३९०
स्थापनाप्रमाणनाम के ७ भेद	७१९	३	४००	अनु सू १३० गा ८५
स्थापनार्य	७८५	४	२६६	बृ उ १ नि गा ३२६३
२ स्थापना सत्य	६९८	३	३६९	ठा १० सू ७४१, पन्न प ११ सू १६५, ध अधि ३ श्लो ४१ पृ १२१
स्थापिता आरोपणा	३२६	१	३३५	ठा ५ उ २ सू ४३३
स्थावर	८	१	५	ठा २ उ ४ सू १०१
स्थावरकाय पाँच	४१२	१	४३७	ठा ५ उ १ सू ३९३

१ अतिशय रूप से स्थान अर्थात् कायोत्सर्ग करने वाला साधु।

२ सदृश या विसदृश आकार वाली वस्तु में किसी की स्थापना करके उसे उस नाम से कहना स्थापना सत्य है। जैसे शतरज के मोहरों को हाथी घोड़ा आदि कहना अथवा 'क' इस आकार विशेष को 'क' कहना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्थावरजीवोंकीअवगाहना के अल्प बहुत्व के ४४ बोल	६६५	७	२५२	भ श १६उ ३ सू ६५१
स्थिति आठ कर्मों की	५६०	३	५६-८२	पन्न प २३सू २९४, तत्त्वार्थ अध्या ८, उत्त अ ३३
स्थिति की व्याख्या और भेद	३१	१	२१	ठा २उ ३ सू ८५
स्थिति घात	८४७	५	७८	कर्म भा २गा.२
स्थिति नाम निधत्तायु	४७३	२	७९	भ श ६उ ८सु २५०,ठा.६सू ५३
स्थिति नारकी जीवों की	५६०	२	३१९	जी प्रति.३ सू ९० टी ,प्रवद्वा १७५ गा.१०७५-१०७६
स्थिति प्रतिघात	४१६	१	४४०	ठा ५उ १ सू ४०६
स्थिति बन्ध	२४७	१	२३२	ठा.४सु २९६,कर्म भा १गा
स्थिरीकरण दर्शनाचार	५६९	३	८	पन्न प १सु ३७गा १२८,उत्त अ २८गा ३१
स्थूल अदत्तादानका त्याग	३००	१	२८९	आव ह अ ६पृ ८१७-८२६ ठा ५उ १सू ३८९,उपा अ सू ६,ध अधि २श्लो २५पृ ५
स्थूलअसत्य(मृषा)कात्याग	३००	१	२८८	
स्थूलप्राणातिपातकात्याग	३००	१	२८८	
स्थूलभद्र की पारिणामिकी बुद्धि की कथा	९१५	६	९५	आव ह गा.९५०,नं सू २७गा ७
स्नातक	३६६	१	३८२	ठा ५उ ३सु ४४५,भ श.२५ उ ६ सू.७५१.
स्नातक के पाँच भेद	३७१	१	३८६	
स्पर्श आठ	५९७	३	१०८	ठा ८उ ३सु.५९९, पन्न प २
स्पर्श नारकी जीवों का	५६०	२	३३६	जी प्रति ३ सु.८७
स्पर्शनेन्द्रिय	३९२	१	४१९	पन्न प.१५उ.१सु १९१,ठा ५ उ.३सु ४४३, जै प्र.

ह

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
हरिकेशीमुनि(संवरभावना)	८१२	४	३८६	उत्त अ १२
हरिवंशकुलोत्पत्ति आश्चर्य	६८१	३	२८४	ठा १०उ ३सू ७७७, प्रव द्वा १३८ गा ८८६
हस्ति शुण्डिका	३५८	१	३७२	ठा ५सू ३६६टी ,ठा ५सू ४००
हाड़ाहड़ा आरोपणा	३२६	१	३३५	ठा ५उ २सू ४३३
हानि छः प्रकार की	४२५	२	२५	आगम
हायणी अवस्था	६७८	३	२६८	ठा १०उ ३सू ७७२
हासनिःसृत असत्य	७००	३	३७२	ठा १०सू ७४१, पन्न प.११सू १६५,ध अधि ३श्लो ४१पृ १२२
हास्य कीउत्पत्तिके४स्थान	२५७	१	२४३	ठा ४ उ.१ सू २६ε
हास्य रस	६३६	३	२१०	अनु सू १२६गा ७६–७७
हास्योत्पादन	४०२	१	४२६	उत्त.अ ३६गा २६१,प्रव द्वा ७३
हिंसा का स्वरूप	४६७	२	१६०	
हिंसा के छः कारण	४६१	२	६३	आचा श्रु १अ १उ १सू ११
हीयमान अवधिज्ञान	४२८	२	२८	ठा ६उ ३सू ५२६,न सू १३
हीलित वचन	४५६	२	६२	ठा ६उ ३सू ५२७,प्रव द्वा २३५ गा १३२१, वृ (जी)उ ६
हुंडक संस्थान	४६८	२	६८	ठा ६सू ४६५,कर्म भा १गा ४०
हेतु	४२	१	२७	रत्ना परि.३ सू ११
हेतु	३८०	१	३६७	रत्ना परि ३ सू ११
हेतुअविरुद्धानुपलब्धि के सात भेद	५५६	२	२६८	रत्ना परि ३सू ६४–१०२
हेतु अविरुद्धोपलब्धि के छः भेद	४६५	२	१०४	रत्ना परि ३सू.६८–८२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
हेतु दोष	७२२	३	४०६	ठा १० उ ३ सू ७४३
हेतु विरुद्धोपलब्धि के ७ भेद	५५५	२	२६६	रत्ना परि ३ सू ८३–९२
ह्रस्व संस्थान	५५२	२	२६३	ठा १ सू ४७, ठा ७ उ ३ सू ५४८

न्यूनाधिकमशुद्धं वा, यद्वा स्याद्धीप्रमादितम् ।
दुष्कृतं तस्य मिथ्याऽस्तु, क्षन्तव्यं तच्च ज्ञानिभिः ॥

भावार्थ–श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के सात भागों में तथा उनके विषयानुक्रमसूचक इस आठवें भाग में बुद्धि प्रमाद से जो न्यून, अधिक अथवा अशुद्ध लिखा गया हो उससे होने वाला पाप निष्फल हो एवं ज्ञानी पुरुष उसके लिये क्षमा करें ।

अन्तिम मंगल कामना

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः ।
काले काले च वृष्टिं वितरतु मघवा व्याधयो यान्तु नाशम् ॥
दुर्भिक्षं चोरमारी क्षणमपि जगतां मा स्म भूज्जीवलोके ।
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रसरतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ॥

भावार्थ–सकल प्रजाजनों का कल्याण हो, राजा बलवान् और धर्मात्मा हो, वृष्टि यथासमय हुआ करे, सभी रोग नष्ट हो जायँ, दुर्भिक्ष (दुष्काल), चोरी और महामारी आदि दुःख संसार में कभी किसी भी प्राणी को न सतावें और रागद्वेष के विजेता श्री जिनेश्वर देव द्वारा प्रवर्तित, सर्व सुखों को देने वाले धर्मचक्र का सदा सर्वत्र विस्तार हो ।

शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्पर्श परिणाम	७५०	३	४३४	ठा १०उ ३सू ७१३, पन्न.प १३
स्मृति	३७६	१	३६५	रत्ना.परि.३ सू ३
स्याद्वाद	४६७	२	१७६, २११	
स्वदार सन्तोष व्रत	३००	१	२८६	आव ह अ ६पृ ८२२, ठा ५उ १ सू ३८६, उपा अ. १सू. ६, ध. अधि २ श्लो २८ पृ ६६
स्वदार सन्तोष व्रत के पाँच अतिचार	३०४	१	२६८	उपा.अ १सू ७ टी.
स्व द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावकी अपेक्षा छः द्रव्यों का वर्णन	४२४	२	१२	आगम.
स्व द्रव्यादि की चौभंगी जीवादि द्रव्यों में	४२४	२	१२	आगम.
स्वप्न के नौ निमित्त	६३८	३	२०६	विशे गा १७०३
स्वप्न १४ मोक्षगामी आत्मा के	८२६	५	२०	भ.श १६उ ६ सू ५८०
स्वप्न (महास्वप्न) १४ तीर्थङ्कर चक्रवर्ती के जन्म सूचक	८३०	५	२२	भ श १६उ ६सू ५७८, ज्ञा अ ८ सू ६५, कल्पसू ४
स्वप्न दर्शन के पाँच भेद	४२१	१	४४४	भ श-१६ उ ६सू ५७७
स्वप्न दस भगवान् महावीर के और उनका फल	६५७	३	२२४	भ श. १६उ ६ सू ५७६, ठा १० उ ३सू ७५०
स्वप्न सोलह चंद्रगुप्त राजा के और उनका फल	८७३	५	१७८	व्यव चू हस्तलिखित
स्वभाव	२७६	१	२५७	आगम, कारणा., सम्मति भा ५ काण्ड ३ गा ५३
स्वयंबुद्ध सिद्ध	८४६	५	११७	पन्न प १सू ७

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्वयंबुद्ध सिद्ध और प्रत्येक बुद्ध सिद्ध का अन्तर	८४९	५	११८	पन्न.प.१सू.७टी.
* स्वर सात	५४०	२	२७०	अनु सू.१२७,गा २५-४६. ठा ७उ.३सू.५५३
स्वरों का फल	५४०	२	२७२	
स्वरों के उत्पत्ति स्थान	५४०	२	२७१	
स्वरों के तीन ग्राम	५४०	२	२७३	अनु.सू.१२७गा.२६-४२, ठा ७उ ३सू ५५३,संगीत.
*स्वरों के तीनग्रामकीमूर्छना	५४०	२	२७३	
स्वलिंग सिद्ध	८४९	५	११९	पन्न प.१सू.७
स्ववचननिराकृतवस्तुदोष	७२३	३	४११	ठा १०उ ३सू ७४३ टी.
स्व वचन निराकृत साध्य-धर्म विशेषण पक्षाभास	५४९	२	२९१	रत्ना.परि ६सू.४८
स्वाध्याय	४७८	२	८९	उव सू.२०,उत्त.अ.३०गा.३०, प्रव द्वा.६गा २७१,ठा ६सू ५११
स्वाध्याय का दृष्टान्त काल अननुयोग पर	७८०	४	२४०	आव ह.नि.गा १३३,वृ.पीठिका नि गा.१७१
स्वाध्याय की व्याख्या,भेद	३८१	१	३९८	ठा ५उ ३सू ४६५
स्वाध्याय के पाँच भेद	६३३	३	१९५	उव सू २०,भ श २५उ ७सू८०२
स्वापनी अवस्था	६७८	३	२६८	ठा.१०उ.३सू.७७२
स्वाभाविक गुण	५५	१	३३	द्रव्य त अध्या.१२श्लो ८
स्वार्थानुमान	३७९	१	३९६	रत्ना.परि.३ सू.१०
स्वाहस्तिकी (साहत्थिया) क्रिया	२९४	१	२७९	ठा.२उ १सू ६०, ठा ५उ.२ सू ४१९
स्वेद संकेत पच्चक्खाण	५८९	३	४३	आव ह.अ.६ नि गा.१५७८, प्रव द्वा ४गा.२००

* मूर्छनाओं के सम्बन्ध में पृष्ठ २६१ पर टिप्पणी देखो।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सुवासव कुमार की कथा	९१०	६	५८	वि अ. १४
सुश्रामण्यता	७६३	३	४४६	ठा १० उ ३ सू. ७५८
सुषमदुषमा आरा अवसर्पिणी का	४३०	२	३१	जं. वक्ष २ सू २७-३३, ठा ६ उ ३ सू ४९२
सुषम दुषमा आरा उत्सर्पिणी का	४३१	२	३७	जं वक्ष २ सू. ३७-४०, ठा ६ उ. ३ सू ४९२
सुषम सुषमा आरा अवसर्पिणी का	४३०	२	३०	जं. वक्ष २ सु १९-२५, ठा ६ उ ३ सू ४९२
सुषम सुषमा आरा उत्सर्पिणी का	४३१	२	३८	जं वक्ष २ सु ३७-४०, ठा ६ उ ३ सू ४९२
सुषमा आरा अवसर्पिणी का	४३०	२	३०	जं वक्ष. २ सु. २६, ठा. ६ सु. ४९२
सुषमा आरा उत्सर्पिणी का	४३१	२	३८	जं वक्ष. २ सू. ३७-४०, ठा ६ सू ४९२
सुषमाकाल जानने के ७ स्थान	५३५	२	२६९	ठा ७ उ. ३ सू. ५५९
सूक्ष्म	८	१	५	ठा. २ उ. १ सू. ७३
सूक्ष्म क्रिया अनिवर्ती शुक्ल ध्यान	२२५	१	२१०	आव. ह अ ४ ध्यानशतक गा. ८१, ठा. ४ उ. १ सू. २४७, ज्ञान. प्रक. ४२, क भा. २ श्लो २१६
सूक्ष्म जीव आठ	६११	३	१२८	दश. अ ८ गा १५, ठा. ८ सू ६१५
सूक्ष्म दस	७४६	३	४२३	ठा. १० उ. ३ सू. ७१६
सूक्ष्म पुद्गल	४२६	२	२५	दश अ ४ भाष्य गा ६० टी
सूक्ष्म बादर पुद्गल	४२६	२	२५	दश अ ४ भाष्य गा. ६० टी.
सूक्ष्मसम्पराय गुणस्थान	८४७	५	८२	कर्म भा २ गा. २
सूक्ष्मसम्पराय चारित्र	३१५	१	३२०	ठा ५ उ ३ सू ४२८, अनु सू १४४, विशे गा १२६०-१२८०
सूक्ष्म सूक्ष्म पुद्गल	४२६	२	२५	दश अ, ४ भाष्य गा ६० टी.

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सूत्र की वाचना देने के ५ बोल	३८२	१	३९८	ठा ५ उ ३ सू ४६८
सूत्र के बत्तीस दोष तथा आठ गुण	९६७	७	२३	अनु सू १५१ टी., विशे. गा. ९९९ टी., बृ. पीठिका नि गा २७८-२८७
सूत्र के बारह भेद	७७८	४	२३५	बृ उ. १ नि गा १२२१
[1] सूत्रधर पुरुष	८४	१	६१	ठा ३ उ ३ सू १६६
सूत्र पढ़ने के बत्तीस अस्वाध्याय	९६८	७	२८	ठा सू २८५, ७१४, प्रव. द्वा २६८ गा १४५०-१४७१, व्यव. भा उ ७ नि गा २६६-३१६, आव ह अ. ४ नि गा १३२१-६०
सूत्र पढ़ाने की मर्यादा और दीक्षा पर्याय	५१४	२	२४३	ठा ५ उ १ सू ३९९, ठा ७ सू ५४४, व्यव भा उ १० सू २१-३५
सूत्र बत्तीस	९६६	७	२१	
सूत्र रुचि	६९३	३	३६३	उत्त अ २८ गा २१
सूत्र श्रुत धर्म	१९	१	१५	ठा २ उ. १ सू. ७२
सूत्र सीखने के पाँच स्थान	३८३	१	३९९	ठा. ५ उ ३ सू ४६८
सूत्र सुनने के सात बोल	५०६	२	२३४	विशे गा ५६५
[2] सूत्र स्थविर	९१	१	६६	ठा ३ उ. ३ सू. १५६
सूत्रागम	८३	१	६०	अनु सू १४४
सूयगडांगसूत्र के ग्यारहवें मार्गाध्ययन की ३८ गाथाएं	९८५	७	१३९	सूय अ. ११
सूयगडांग सूत्र के चौथे अ० प्रथम उ० की ३१ गाथाएं	९६३	७	८	सूय अ. ४ उ १

१ सूत्र को धारण करने वाला शास्त्र पाठक पुरुष सूत्रधर कहलाता है।

२ ठाणांग और समवायांग सूत्र के ज्ञाता साधु सूत्रस्थविर कहलाते हैं।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सूयगडांग सूत्र के चौदहवें अध्ययनकी २७ गाथाएं	६४६	६	२३०	सूय अ १४
सूयगडांग सूत्र के तेईस अध्ययनों के नाम	६२४	६	१७३	
सूयगडांगसूत्र के दसवें समाधि अ०की २४गाथाएं	६३२	६	१६७	सूय अ १०
सूयगडांगसूत्र के दूसरे अ० के दूसरे उ०की३२गाथाएं	६७४	७	५६	सूय अ २ उ २
सूयगडांग सूत्र के नवें धर्मा-ध्ययन की छत्तीस गाथाएं	६८१	७	८७	सूय अ ६
सूयगडांग सूत्र के पाँचवें नरयविभत्ति अ०के दूसरे उद्देशे की पचीस गाथाएं	६४१	६	२१६	सूय अ ५ उ २
सूयगडांग सूत्र के पाँचवें नरयविभत्ति अ०के पहले उ०की सत्ताईस गाथाएं	६४७	६	२३६	सूय अ ५ उ १
सूयगडांगसूत्रके प्रथमद्वितीय दोनों श्रुतस्कन्धों के तेईस अध्ययनोंका विषय वर्णन	७७६	४	७६	
सूयगडांगसूत्र के वीरस्तुति अध्ययन कीउनतीस गाथाएं	६५५	६	२६६	सूय अ ६
सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्रकेवीसप्राभृतों का संक्षिप्त विषय वर्णन	७७७	४	२३०	
सेठ (कालसेठ)की पारि-णामिकी बुद्धि की कथा	६१५	६	७८	न सू २७ गा ७२,आव ह गा ६४६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सेवार्त्तक (छेवट्ट) संहनन	४७०	२	७०	पन्न.प २३ सू.२९३, ठा.६उ.३ सू ४९४, कर्म भा.१ गा.३९
[1] सैंतालीसदोषआहारके	१०००	७	२६५	पिं नि.गा ६६९
सैंतीसगाथाएं उत्तराध्ययन सूत्र के दसवें अध्ययन की	६८४	७	१३३	उत्त.अ.१०
[2] सोपक्रम आयु	३०	१	२१	तत्वार्थ.अध्या २सू.५२, भ.श. २० उ.१०सू.६८५
[3] सोपक्रम कर्म	२७	१	१९	विश अ ३सू.२० टी.
सोलह उत्पादना दोष	८६६	५	१६४	प्रवद्वा ६७गा.५६५-५६८, ध.अधि ३श्लो २२टी पृ ३८, पिं.नि गा ४०८, ४०९, ६२, ६३, पिं नि.गा ५८, ५९, ३-४, पंचा १३गा.१८-१९, ५-६
सोलह उद्गम दोष	८६५	५	१६१	
सोलहगाथाएंउत्तराध्ययन सूत्रकेपन्द्रहवें अध्ययन की	८६२	५	१५२	उत्त अ.१५
सोलहगाथाएंदशवैकालिक सूत्र की दूसरी चूलिका की	८६१	५	१४७	दश. चू २
सोलहगाथाएंबहुश्रुतसाधु की उपमा की	८६३	५	१५५	उत्त अ ११गा.१५-३०
सोलहगाथाएं भगवान् महावीर की वसतिविषयक	८७४	५	१८२	आचा अ ९उ २
सोलहगुणदीक्षालेनेवालेके	८६४	५	१५८	ध अधि.३ श्लो.७३-७८पृ १
सोलह नाम मेरु पर्वत के	८७०	५	१७१	सम.१६, जं.वक्ष.४सू.१०९
सोलह भंग आभवआदिके	८६८	५	१६८	भग.१६उ.४सू.६५४

१ पृष्ठ ३२१ की टिप्पणी देखो। २ जो आयु पूरी भोगे बिना आयु टूटने के सात कारणों में से किसी कारण से असमय में ही टूट जाय। ३ जिस कर्म का फल उपदेश आदि से नाश हो जाय।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सोलह भेद वचन के	८६६	५	१७०	पन्न प ११सू १७३, आचा श्रु २ चू १अ.१३उ १
सोलह महायुग्म	८७१	५	१७२	भ श ३५उ १ सू ८५५
सोलहविशेषणद्रव्यावश्यकके	८७२	५	१७६	अनु सू १३, विशे गा ८५१-५७
सोलह सतियां	८७५	५	१८५-३७५	ठा ६उ ३सू ६६१टी, ज्ञा अ १६, त्रि ष पर्व १,२,७,८,१०, पचा १६ गा ३१, चन्दन, राज, भरत. गा ८-१०, आव.ह
सोलह सतियों के लिये प्रमाण भूत शास्त्र	८७६	५	३७५	
सोलहस्थान(ग्रामादि)साधु के लिये कल्पनीय हैं	८६७	५	१६६	बृ उ १सू ६
सोलह स्वप्न चन्द्रगुप्तराजा के और उनका फल	८७३	५	१७८	व्यव चू हस्तलिखित
सौधर्म देवलोक का वर्णन	८०८	४	३१६	पन्न प २सू.५२
सौर्यदत्त की कथा	९१०	६	४६	वि श्र ८
१ स्कन्ध बीज	४६६	२	६६	दश अ ४
स्तनितकुमारकेदसअधिपति	७४०	३	४२०	भ श ३उ ८सू १६६
स्तम्भ की कथा औत्पतिकी बुद्धि पर	९४९	६	२६६	न सू २७ गा ६३ टी
२ स्तिबुकसंकेत पच्चक्खाण	५८९	३	४३	आव ह अ ६गा.१५७८, प्रव.द्वा ४
स्तूप की कथा पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	११७	उत्त (क)अ १गा ३टी, निर, न. सू २७गा ७४, आव ह.गा ९५१

१ जिस वनस्पति का स्कन्ध भाग बीज का काम देता है, जैसे शल्लकी आदि।

२ पच्चक्खाण करने में एक तरह का संकेत, पानी रखने के स्थान पर पड़ी हुई बूंदें जब तक सूख न जांय अथवा जब तक ओस की बूंदें न सूखें तब तक का पच्चक्खाण।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्तोक	५५१	२	२६३	जं.वक्ष.२ सू १८
स्त्यानगृद्धि निद्रा	४१६	१	४४३	पन्न प २३, कर्म भा १गा ११-१२
स्त्री कथा के चार भेद	१४६	१	१०७	ठा ४उ २ सू २८२ टी
स्त्रीकथा से होनेवाली हानि	१४६	१	१०८	ठा ४उ.२ सू २८२ टी.
स्त्री की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२६८	नं सू २७ गा.६३ टी
स्त्री के गर्भ में जीव उत्कृष्ट कितने काल तक रहता है?	६१८	६	१४१	भग श २उ ५ सू १०१, प्रव द्वा. २४१ २४२ गा १३६०
स्त्रीतीर्थंकर आश्चर्य	६८१	३	२७८	ठा १०उ ३सू ७७७,प्रव द्वा.१३८
स्त्रीलिंग सिद्ध	८४६	५	११६	पन्न प.१सू ७
स्त्री वेद	६८	१	४६	वृ उ ४, कर्म भा १गा.२२
स्थण्डिल के चार भांगे	१८२	१	१३७	उत्त अ २४ गा.१६
स्थण्डिल के दस विशेषण	६७६	३	२६४	उत्त.अ २४ गा १६-१८
स्थलचर	४०६	१	४३६	पन्न प १सू ३२,उत्त अ ३६गा १७०
स्थविर कल्प का क्रम	५२२	२	२५१	विशे.गा ७
स्थविरकल्प के १२ विशेषण	८०६	४	३१४	ध वि सू ३६
स्थविर कल्पस्थिति	४४३	२	४७	ठा ३उ ४सू २०६,ठा ६उ.३सू ५३०, वृ (जी) उ ६
स्थविरकल्पी यथालन्दिक	५२२	२	२६०	विशे गा ७
स्थविरकल्पी साधुओं के लिये १४ प्रकार के उपकरण	८२३	५	२८	पंच व गा ७७१-७७६
स्थविर तीन	६१	१	६६	ठा ३उ.३सू १५६
स्थविर दस	६६०	३	२३२	ठा १०उ.३सू ७६१
स्थविर पदवी	५१३	२	२४०	ठा ५उ ३सू.१७७ टी

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्थान तेईस साधु के उतरने योग्य तथा अयोग्य	६२३	६	१७०	आचा श्रु.२चू १अ २उ.२
स्थान परिहरणोपघात	६६८	३	२५६	ठा १०उ ३सू ७३८
१ स्थानातिग	३५७	१	३७१	ठा ५उ १सू ३६६
स्थापन दोष	८६५	५	१६२	प्रव द्वा ६७गा ५६५,ध अधि ३ श्लो.२२टी पृ ३८,पि नि गा ६२, पि वि गा ३, पचा १३ गा ५
स्थापना अनन्तक	४१७	१	४४१	ठा ५उ ३सू ४६२
स्थापना कर्म	७६०	३	४४१	आचा अ २उ १ नि गा १८३
स्थापना दोष	३४७	१	३५६	आव ह अ ३नि गा ११०७ पृ ५१७,प्रव द्वा २गा १०६
स्थापना निक्षेप	२०६	१	१८७	अनु सू १५०,न्यायप्र अध्या ६
स्थापनानुपूर्वी	७१७	३	३६०	अनु सू ७१
स्थापनानुयोग	५२६	२	२६२	विशे गा १३६०
स्थापनाप्रमाणनामके ७भेद	७१६	३	४००	अनु सू १३० गा ८५
स्थापनार्य	७८५	४	२६६	बृ उ १नि गा ३२६३
२ स्थापना सत्य	६६८	३	३६६	ठा १०सू ७४१,पन्न प ११ सू १६५,ध अधि ३श्लो ४१पृ १२१
स्थापिता आरोपणा	३२६	१	३३५	ठा ५उ.२ सू ४३३
स्थावर	८	१	५	ठा २उ ४ सू १०१
स्थावरकाय पाँच	४१२	१	४३७	ठा ५उ १सू ३६३

१ अतिशय रूप से स्थान अर्थात् कायोत्सर्ग करने वाला साधु।

२ सदृश या विसदृश आकार वाली वस्तु में किसी की स्थापना करके उसे उस नाम से कहना स्थापना सत्य है। जैसे शतरंज के मोहरों को हाथी घोड़ा आदि कहना अथवा 'क' इस आकार विशेष को 'क' कहना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्थावरजीवोंकीअवगाहना के अल्प बहुत्व के ४४ बोल	६६५	७	२५२	भ श.१६ उ ३ सू ६५१
स्थिति आठ कर्मों की	५६०	३	५६-८२	पन्न प २३ सू २६४, तत्त्वार्थ. अध्या ८, उत्त अ.३३
स्थिति की व्याख्या और भेद	३१	१	२१	ठा.२ उ ३ सू ८५
स्थिति घात	८४७	५	७८	कर्म भा २ गा.२
स्थिति नाम निधत्तायु	४७३	२	७६	भ श ६ उ ८ सू २५०, ठा ६ सू ५३६
स्थिति नारकी जीवों की	५६०	२	३१६	जी प्रति ३ सू ६० टी, प्रव द्वा. १७५ गा.१०७५-१०७६
स्थिति प्रतिघात	४१६	१	४४०	ठा ५ उ १ सू ४०६
स्थिति बन्ध	२४७	१	२३२	ठा ४ सू २६६, कर्म भा १ गा २
स्थिरीकरण दर्शनाचार	५६६	३	८	पन्न.प १ सू ३७ गा १२८, उत्त अ २८ गा.३१
स्थूल अदत्तादान का त्याग	३००	१	२८६	आव ह अ ६ पृ ८१७-८२६, ठा.५ उ.१ सू ३८६, उपा अ १ सू ६, ध.अधि.२ श्लो २५ पृ ५७
स्थूलअसत्य(मृषा)का त्याग	३००	१	२८८	
स्थूलप्राणातिपात का त्याग	३००	१	२८८	
स्थूलभद्र की पारिणामिकी बुद्धि की कथा	६१५	६	६५	आव ह.गा.६५०, नं सू २७ गा.७३
स्नातक	३६६	१	३८२	ठा ५ उ.३ सू ४४५, भ श.२५ उ.६ सू.७५१
स्नातक के पाँच भेद	३७१	१	३८६	
स्पर्श आठ	५६७	३	१०८	ठा ८ उ.३ सू ५६६, पन्न प.२३
स्पर्श नारकी जीवों का	५६०	२	३३६	जी.प्रति.३ सू.८७
स्पर्शनेन्द्रिय	३६२	१	४१६	पन्न प.१५ उ.१ सू १६१, ठा.५ उ.३ सू ४४३, जै प्र

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्पर्श परिणाम	७५०	३	४३४	ठा १० उ ३ सू ७१३, पन्न.प १३
स्मृति	३७६	१	३६५	रत्ना.परि.३ सू ३
स्याद्वाद	४६७	२	१७६,२११	
स्वदार सन्तोष व्रत	३००	१	२८६	आव ह अ ६ पृ ८२२, ठा ५ उ १ सू ३८६, उपा अ. १ सू. ६, ध. अधि २ श्लो २८ पृ ६६
स्वदार सन्तोष व्रत के पाँच अतिचार	३०४	१	२९८	उपा.अ.१ सू ७ टी.
स्व द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की अपेक्षा छः द्रव्यों का वर्णन	४२४	२	१२	आगम.
स्व द्रव्यादि की चौभंगी जीवादि द्रव्यों में	४२४	२	१२	आगम.
स्वप्न के नौ निमित्त	६३८	३	२०६	विशे गा १७०३
स्वप्न १४ मोक्षगामी आत्मा के	८२६	५	२०	भ.श १६ उ.६ सू ५८०
स्वप्न (महास्वप्न) १४ तीर्थङ्कर चक्रवर्ती के जन्म सूचक	८३०	५	२२	भ श १६ उ.६ सू ५७८, ज्ञा अ.८ सू ६५, कल्प सू ४
स्वप्न दर्शन के पाँच भेद	४२१	१	४४४	भ श.१६ उ ६ सू ५७७
स्वप्न दस भगवान् महावीर के और उनका फल	६५७	३	२२४	भ श.१६ उ ६ सू.५७६, ठा १० उ.३ सू ७५०
स्वप्न सोलह चद्रगुप्त राजा के और उनका फल	८७३	५	१७८	व्यव चू हस्तलिखित
स्वभाव	२७६	१	२५७	आगम, कारण., सम्मति भा ५ काण्ड ३ गा ५३
स्वयंबुद्ध सिद्ध	८४६	५	११७	पन्न प १ सू ७

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्वयंबुद्ध सिद्ध और प्रत्येक बुद्ध सिद्ध का अन्तर	८४६	५	११८	पन्न.प.१सू ७टी.
* स्वर सात	५४०	२	२७०	अनु सू १२७,गा २५-४६, ठा ७उ.३सू.५५३
स्वरों का फल	५४०	२	२७२	
स्वरों के उत्पत्ति स्थान	५४०	२	२७१	
स्वरों के तीन ग्राम	५४०	२	२७३	अनु सू १२७ गा.२६-४२, ठा ७उ ३सू ५५३,संगीत.
*स्वरों के तीन ग्राम की मूर्छना	५४०	२	२७३	
स्वलिंग सिद्ध	८४६	५	११६	पन्न प १सू ७
स्ववचननिराकृतवस्तुदोष	७२३	३	४११	ठा १०उ ३सू ७४३ टी
स्व वचन निराकृत साध्य-धर्म विशेषण पक्षाभास	५४६	२	२६१	रत्ना.परि ६सू.४४
स्वाध्याय	४७८	२	८६	उव सू २०,उत्त अ ३०गा.३०, प्रव द्वा ६गा २७१,ठा.६सू ५१९
स्वाध्याय का दृष्टान्त काल अननुयोग पर	७८०	४	२४०	आव ह.नि गा १३३,बृ.पीठिका नि गा.१७१
स्वाध्याय की व्याख्या,भेद	३८१	१	३६८	ठा ५उ ३सू ४६५
स्वाध्याय के पाँच भेद	६३३	३	१६५	उवसू २०,भ श २५उ ७सू८०२
स्थापनी अवस्था	६७८	३	२६८	ठा.१०उ.३सू ७७२
स्वाभाविक गुण	५५	१	३२	द्रव्य न प्रदी १२श्लो ८
स्वार्थानुमान	३७६	१	३६६	रत्ना.परि ३ सू १०
स्वाहस्तिकी (साहत्थिया) क्रिया	२६४	१	२७६	ठा.२उ १सू ६०, ठा ५उ.२ सू.४१९
स्वेद संकेत पच्चक्खाण	५८६	३	४३	आवह अ ६ नि,गा.१५७८, प्रव द्वा ४गा,२००

ह

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
हरिकेशीमुनि(संवरभावना)	८१२	४	३८६	उत्त अ १२
हरिवंश कुलोत्पत्ति आश्चर्य	६८१	३	२८४	ठा १० उ ३ सू ७७७, प्रव द्वा १३८ गा ८८६
हस्ति शुण्डिका	३५८	१	३७२	ठा ५सू ३९६टी ,ठा ५सू ४००
हाड़ाहड़ा आरोपणा	३२६	१	३३५	ठा ५उ.२सू ४३३
हानि छः प्रकार की	४२५	२	२४	आगम
हायणी अवस्था	६७८	३	२६८	ठा १० उ ३सू ७७२
हासनिःसृत असत्य	७००	३	३७२	ठा १०सू ७४१, पन्न प.११सू १६५, ध अधि ३श्लो ४१पृ १२२
हास्य कीउत्पत्ति के४स्थान	२५७	१	२४३	ठा ४ उ १ सू २६६
हास्य रस	६३९	३	२१०	अनु सू १२६गा ७६-७७
हास्योत्पादन	४०२	१	४२९	उत्त.अ ३६गा २६१,प्रव द्वा ७३
हिंसा का स्वरूप	४९७	२	१९०	
हिंसा के छःकारण	४६१	२	६३	आचा श्रु १अ १उ १सू ११
हीयमान अवधिज्ञान	४२८	२	२८	ठा ६उ ३सू ५२६,नसू १३
हीलित वचन	४५९	२	६२	ठा ६उ ३सू ५२७,प्रव द्वा २३५ गा १३२१, वृ (जी)उ ६
हुंडक संस्थान	४६८	२	६८	ठा ६सू ४९५,कर्म भा १गा ४०
हेतु	४२	१	२७	रत्ना परि ३ सू ११
हेतु	३८०	१	३९७	रत्ना परि ३ सू ११
हेतुअविरुद्धानुपलब्धि के सात भेद	५५६	२	२९८	रत्ना परि ३सू ९४-१०२
हेतु अविरुद्धोपलब्धि के छः भेद	४९५	२	१०४	रत्ना परि ३सू.६८-८२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
हेतु दोष	७२२	३	४०६	ठा १०उ ३सू ७४३
हेतु विरुद्धोपलब्धि के ७ भेद	५५५	२	२९६	रत्ना.परि ३सू ८३-९२
ह्रस्व संस्थान	५५२	२	२९३	ठा.१सू ४७,ठा ७उ ३सू ५४८

न्यूनाधिकमशुद्धं वा, यच्चा स्याद्धीप्रमादितम् ।
दुष्कृतं तस्य मिथ्याऽस्तु, क्षन्तव्यं तच्च ज्ञानिभिः॥

भावार्थ–श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के सा[ ]ों में तथा उनके विषयानुक्रमसूचक इस आठवें भाग में बुद्धि प्रमाद से जो न्यून, अधिक अथवा अशुद्ध लिखा गया हो उससे होने वाला पाप निष्फल हो एवं ज्ञानी पुरुष उसके लिये क्षमा करें ।

अन्तिम मंगल कामना

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः ।
काले काले च वृष्टिं वितरतु मघवा व्याधयो यान्तु नाशम्॥
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मा स्म भूज्जीवलोके ।
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रसरतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ॥

भावार्थ–सकल प्रजाजनों का कल्याण हो, राजा बलवान् और धर्मात्मा हो, वृष्टि यथासमय हुआ करे, सभी रोग नष्ट हो जायँ, दुर्भिक्ष(दुष्काल), चोरी और महामारी आदि दुःख संसार में कभी किसी भी प्राणी को न सतावें और रागद्वेष के विजेता श्रीजिनेश्वर देव द्वारा प्रवर्तित, सर्व सुखों को देने वाले धर्मचक्र का सदा सर्वत्र विस्तार हो ।

शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!